

नेपाल भूकम्प में एन डी आर एफ द्वारा किये
गये खोज एवं बचाव कार्य की गौरव गाथा

नेपाल भूकम्प : जिंदगी की तलाश



ओ पी सिंह
निशीथ उपाध्याय

नेपाल भूकम्प में एन डी आर एफ द्वारा किये
गये खोज एवं बचाव कार्य की गौरव गाथा

नेपाल भूकम्प : जिंदगी की तलाश

ओ पी सिंह

निशीथ उपाध्याय

प्रकाशक

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एन आई डी एम)

(गृह मंत्रालय, भारत सरकार)

भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (आई आई पी ए) परिसर,

5बी - आई पी स्टेट, महत्मा गांधी मार्ग,

नई दिल्ली - 110002 (भारत)

दूरभाष : 011-23702432, 23705583, 23766146

फैक्स : 011-23702442, 23702446

वेबसाइट : www.nidm.gov.in

© कॉपीराइट : राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली

प्रकाशित वर्ष : मार्च, 2016

ISBN : 978-93-82571-23-0

ओ पी सिंह, भारतीय पुलिस सेवा

महानिदेशक, एन डी आर एफ

बल निदेशालय, एन डी आर एफ, पर्यावरण भवन, 9वाँ तल, बी 2 विंग,
सी जी ओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, भारत

सभी सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक के लिखित अनुमति के बिना पुस्तक का कोई भी अंश पुनः प्रकाशित या इसका अन्य प्रयोग नहीं किया जा सकता है चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक माध्यम (जिसमें छायाप्रति, रिकार्डिंग, सूचना संग्रह उपकरण इत्यादि) ही क्यों न हो।

मुद्रक :

आई जी प्रिंटर्स प्रा. लि., नई दिल्ली-110020

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH



गृह मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110001
HOME MINISTER
INDIA
NEW DELHI-110001



संदेश

वर्ष 2015 में विश्व-समुदाय को अनेकानेक प्राकृतिक-आपदाओं का सामना करना पड़ा, जिसमें नेपाल में आया विनाशकारी भूकम्प प्रमुख है। इस प्राकृतिक आपदा ने हमारे पड़ोसी-राष्ट्र के सामने अनेक चुनौतियां उत्पन्न कर दी थीं। भूकम्प की सूचना मिलते ही हर संभव सहायता हेतु भारत सरकार द्वारा त्वरित-निर्णय लेते हुए राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF) की टीमें भेजने का निश्चय किया गया।

किसी भी आपदा के समय First Response अत्यंत महत्वपूर्ण होता है और यह बचाव व राहत कार्यों की दिशा तय करता है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में नेपाल-भूकम्प के माध्यम से प्राकृतिक आपदा के समय मानवीय-त्रास का केवल विवरण ही नहीं बल्कि उससे निपटने का प्रामाणिक और विश्वसनीय 'फर्स्ट हैंड लेखा' भी उपलब्ध है।

नेपाल में लगायी गयी टुकड़ियों का नेतृत्व बल के महानिदेशक श्री ओपी सिंह कर रहे थे। हर्ष का विषय है कि उन्होंने अपने अनुभवों को संकलित किया। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करेंगे। मैं उनके रचनाशील भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

18.02.16

(राजनाथ सिंह)

समर्पण

नेपाल भूकम्प में मारे गये
सभी जनों तथा उनके परिजनों

को समर्पित.....

अनुक्रम

प्राक्कथन	1
अध्याय एक : असहाय मानवता-भूकम्प का कहर	13
1. स्तब्ध बिलखता नेपाल	13
2. धरती काँपती रही	27
3. आप बीती	33
4. त्वरित कदम	46
5. प्रकृति तकनीक पर भारी पड़ी	60
अध्याय दो : एन डी आर एफ-अदम्य साहस, समर्पण की गौरव गाथा	69
1. पहला बचाव दल	69
2. असंख्य चुनौतियाँ, अडिग आपदा सेवा सैनिक	85
3. साथी हाथ बढ़ाना	86
4. सहभागिता की मिसाल	91
5. मानवता की जीत	96
6. चुनौतियाँ हुई पराजित	124
7. खोज एवं बचाव कार्य का समापन	126
8. अमिट छाप	130
9. मानवीय मूल्यों का समन्वय	133
अध्याय तीन : कुशल नेतृत्व	139

अध्याय चार : एन डी आर एफ - संसाधन एवं क्षमता	159
1. यात्रा वृत्तान्त	159
2. संसाधन	163
3. क्षमता	170
4. अंतर्राष्ट्रीय राहत एवं बचाव कार्य	179
5. देश में राहत एवं बचाव कार्य	181
6. तैयारी ही बचाव है	195
अध्याय पाँच : एन डी आर एफ - भविष्य की ओर	199
1. आत्मविश्लेषण	199
2. मंजिल की ओर हर कदम	211
उपसंहार : हम होंगे कामयाब	220
भूकम्प	223
अखबारों की सुर्खियों से	225
परिशिष्ट :	232
1. नेपाल : एक तथ्य	232
2. नेपाल : भूगर्भ विश्लेषण	236
3. 'ओछा' द्वारा प्रसारित विज्ञप्ति	242
आभार	244
स्रोत	246

प्राक्कथन

‘नेपाल भूकम्प 2015 : जिंदगी की तलाश’ एन डी आर एफ के कार्यों की एक बेहद प्रेरणादायक गौरव गाथा है जो एक पर्वतीय देश की धरती पर आयी सबसे भयानक प्राकृतिक आपदाओं में से एक मानवीय प्रयासों के द्वारा उबरने का एक वृहद संकलन है। मैं याद कर रहा हूँ कि कैसे इस भूकम्प के आने पर घटनाएं क्रमबद्ध तरीके से घटित हुई थीं।

शनिवार, 25 अप्रैल को मैं जब नई दिल्ली के द्वारका इलाके से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा शुभारम्भित एक आयोजन में सम्मिलित होने के उपरान्त लौट रहा था तो मुझे एन डी आर एफ के कंट्रोल रूम ने फोन पर बताया, “सर, कुछ समय पहले धरती तेजी से हिली है, ऐसा लगता है कि यह एक तेज तीव्रता का भूकम्प है, हमें बिहार से भूकम्प उपरान्त झटकों की रिपोर्ट मिली है। मैं आपको सारी जानकारी एकत्र करने के बाद विस्तार से सूचित करूंगा।” भारत के प्रधानमंत्री वहाँ मुख्य अतिथि के रूप में ‘नेशनल इंटेलिजेन्स ऐकेडमी’ के नव निर्मित भवन के शुभारम्भ के अवसर पर कुछ वरिष्ठ अधिकारियों, सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों तथा दिल्ली के कुछ जाने माने लोगों के साथ थे। मैंने उस अधिकारी को फोन पर कहा, “भारतीय मौसम विभाग से तुरन्त सम्पर्क करो तथा पटना स्थित इमरजेन्सी आपरेशन सेंटर से भी सम्पर्क करो”। जल्दी से जल्दी जानकारी हासिल करने के लिए मैंने अपने कुछ मित्रों को फोन किया और विदित हुआ कि उत्तर भारत एक तेज तीव्रता के भूकम्प से अभी-अभी गुजरा था। कुछ क्षणों के बाद ही भारतीय मौसम विभाग से भूकम्प की तीव्रता का पता चला जो शुरुआत में 7.3 मापा जा रहा था। बिहार में कुछ मानव क्षति की खबरों के साथ नेपाल के सबसे ज्यादा प्रभावित होने की खबरें आ रही थीं। एन डी आर एफ कंट्रोल रूम द्वारा मुझे भूकम्प का केन्द्रबिन्दु लामजुंग नेपाल में बताया गया जो

काठमाण्डू के उत्तरपूर्व में 80 किमी दूर स्थित था। दक्षिण एशिया के सबसे बड़े आपदा राहत बल के प्रमुख के रूप में मेरे भीतर तत्काल प्राथमिकताएं उमड़ने-धुमड़ने लगीं। कई योजनाओं, निर्देशों, आदेशों, मानक-प्रक्रियाओं के खाके अचानक ही मेरे मानस पर टिमटिमाने लगे। यद्यपि इस विपदा में हुए नुकसान का एकाएक मुझे अनुमान नहीं हो पाया था पर मुझे लगा कि पहाड़ में नुकसान की भयावहता अधिक भी हो सकती थी और बचाव अभियान भी मुश्किल होगा क्योंकि दुर्गम इलाकों में खोज और बचाव को संचालित करना हमेशा ही दुष्कर होता है। कार्यालयीन-व्यस्तता सहसा स्थगित सी हो गई थी। कुछ ही क्षणों के पश्चात् उपमहानिरीक्षक सुरजीत सिंह गुलेरिया ने फोन पर बताया कि नेपाल को अपने इतिहास के एक सर्वाधिक तीव्र भूकम्प का सामना करना पड़ा था और जान-माल के काफी नुकसान की आशंका व्यक्त की जा रही थी। मैंने कंट्रोल रूम को निर्देशित किया कि टीमों को तैयार रहने के निर्देश दिए जाएं तथा स्थिति के बारे में और पता लगाया जाए। अब तक फोन की घंटिया लगातार घनघनाना शुरू कर चुकी थीं।

कार से ही मैंने केन्द्रीय गृह सचिव को स्थिति से अवगत कराया। मैंने उन्हें बताया कि जैसे ही अन्य जानकारीयों उपलब्ध हो जाएंगी, हमें सी एस एस आर की कुछ टीमों को बिहार भेजना होगा। मैंने उन्हें यह भी कहा, "मैं एन डी आर एफ बटालियनों को हर स्थिति से निपटने के लिए सतर्क रहने का निर्देश दे रहा हूँ।"

मैंने कैबिनेट सचिव को फोन से यथास्थिति से अवगत कराया तथा एन डी आर एफ की टीमों को जरूरत पड़ने पर बिहार या नेपाल भेजने की तैयारी के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि वे तुरन्त नेशनल क्राइसिस मैनेजमेन्ट कमेटी की मीटिंग बुला रहे थे तथा सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों से वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए बात चीत करेंगे।

1 बजकर 45 मिनट पर दोपहर 'नेशनल क्राइसिस मैनेजमेंट कमेटी' की मीटिंग राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली की कैबिनेट सचिवालय में सभी सम्बन्धित सदस्यों के साथ शुरू हुई जिसमें नेपाल तथा भारत के पूर्वोत्तर में प्रभावित इलाकों में राहत एवं बचाव कार्य पर चर्चा हुई। कैबिनेट सचिव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के द्वारा बिहार, उत्तर प्रदेश, सिक्किम तथा

पश्चिम बंगाल के रेजिडेंट कमिशनरों से भी बातचीत की। भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक ने बताया कि 25 अप्रैल को 11 बजकर 41 मिनट पर एक भूकम्प की घटना घटित हुई थी जिसकी तीव्रता रिचर स्केल पर 7.9 मापा गया था और जिसका केन्द्र लगभग 21.1 डिग्री उत्तर, 84.6 डिग्री पूर्व अक्षांश पर नेपाल में उत्तर पश्चिम काठमाण्डू से लगभग 77 किमी दूर स्थित था। इसके पश्चात् भूकम्प के तीन झटके जो रिचर स्केल पर 6.1, 5.3 और 5.5 थे, क्रमानुसार घटित हुए थे। भारत में भूकम्प प्रभावित इलाके पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, दार्जिलिंग, सिक्किम और दिल्ली 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र' थे। बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के रेजिडेंट कमिशनरों ने उनके यहाँ से क्रमशः 8, 4, और 2 के हताहत होने की पुष्टि की। किसी और स्थान से जान के नुकसान की कोई खबर नहीं थी। उन्होंने बताया की सम्पत्ति की क्षति का अभी आकलन किया जा रहा था।

यह भी बताया गया कि बिहार में मुख्यतः प्रभावित जिले दरभंगा, सहरसा और सीतामढ़ी थे जबकि उत्तर प्रदेश में बाराबंकी, प्रतापगढ़, सिद्धार्थनगर, गोरखपुर और श्रावस्ती इलाके क्षतिग्रस्त हुए थे। इन राज्यों के मुख्य सचिवों और रेजिडेंट कमिशनरों ने बताया कि उस समय तक उन्हें केन्द्र से किसी तात्कालिक मदद की आवश्यकता नहीं थी तथा राज्य की सरकारें बचाव, राहत और पुनर्वास के लिए सारे जरूरी कदम उठा रही थीं।

मैने 'नेशनल क्राईसिस मैनेजमेंट कमेटी' के सभी सदस्यों को बताया कि एन डी आर एफ की चार टीमों बिहार के प्रभावित जिलों के लिए भेज दी गई थी और एक-एक एन डी आर एफ की टीमों वाराणसी और गोरखपुर में पहले से थीं जो राज्य सरकार की परिस्थितिजन्य माँग पर वहाँ बचाव कार्य के लिए उपलब्ध थी।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, नेपाल की सरकार ने भारत से बचाव एवं राहत टीमों, दवाएँ और उपकरणों के साथ चिकित्सा दल, क्षति आकलन के लिए टीमों तथा हवाई सर्वेक्षण के लिए वायुयानों का अनुरोध किया था। मीटिंग में उपस्थित सभी सदस्यों को यह भी बताया गया कि नेपाल में काठमाण्डू के अलावा सबसे अधिक क्षति ललितपुर और भक्तपुर इलाकों

में हुई थी। विदेश सचिव ने नेपाल में भारतीय मिशन के हवाले से यह भी निश्चित तौर पर बताया कि काठमाण्डू तथा पोखरा में हवाई पट्टियाँ व्यावसायिक उड़ानों के लिए बंद कर दी गई थी।

हमें यह जानकारी भी दी गई कि जिन वायुयानों को पूर्व में नेपाल से लखनऊ, पटना तथा बागडोगरा के लिए मोड़ दिया गया था उनके जरूरत पर उतरने की व्यवस्था कर दी गई थी। आपदा बचाव दल के प्रमुख के तौर पर, मैंने कमेटी को बताया कि एन डी आर एफ की 6 टीमें जो कि गाजियाबाद में थीं, को हिंडन हवाई अड्डे से भेजे जाने को तैयार थीं तथा भटिंडा से चार टीमें भेजने के लिए तैयार थीं। इन टीमों में प्रशिक्षित श्वान, खोज एवं बचाव के लिए उपकरण तथा संचार के लिए सेटेलाइट फोन थे।

मैं हर पल, नेपाल में भेजी जा रही एन डी आर एफ की टीमों तथा एन डी आर एफ मुख्यालय कन्ट्रोल-रूम के सम्पर्क में था। हमारे अधिकारी गण मुझे हर प्रगति से अवगत करा रहे थे। मुझे अगले दिन (26 अप्रैल) प्रातः ही काठमाण्डू जाने का निर्देश प्राप्त हुआ था। भारत सरकार यह चाहती थी कि विदेशी धरती पर एन डी आर एफ के इस वृहद खोज एवं बचाव अभियान की अगुवाई मैं स्वयं करूँ। दिन चढ़ते-चढ़ते आपदा का धुंधला चित्र साफ होने लगा था- काठमाण्डू की गलियाँ जो दुनिया भर के रंगबिरंगे सैलानियों से हमेशा गुलजार रहती थीं वहाँ एक सन्नाटा खिंच गया था जिसे सिर्फ मदद के लिए पुकारते लोगों की कातर चीखे काट रही थीं। नेपाल का 'कुतुब-मीनार' और उसकी गौरव-गाथा को सर्वत्र दिशाओं में फैलाने वाला धरहरा टॉवर अब शेष नहीं रह गया था, वह अपनी पूरी ऊँचाई के साथ जमींदोज हो चुका था। नेपाल के बाकी हिस्सों से भी इस प्रकार अभूतपूर्व क्षति की खबर आ रही थी। जहाँ पल भर पहले अगणित उन्मादों के क्षण थे अब वहाँ कभी न खत्म होने वाले अगणित अवसादों के क्षण ही शेष बचे थे। टी वी पर दिखाई पड़ने वाले भूकम्पित-नेपाल के कुछ दृश्य स्तब्ध करने वाले थे।

नेपाल में स्थिति भयावह थी, पहाड़ों पर पहाड़ धंस गये थे और पूरे गाँव का कहीं अता पता नहीं था। सड़कें गायब हो गयी थीं या कट गयी

थीं। इमारतें एक-दूसरे पर टिकी खड़ी थीं और वे कभी भी भरभरा कर गिर सकती थीं। यहां वहाँ मलवों में इंसान दबे-फंसे पड़े थे- जीवित और मृत दोनों। यह स्थिति हाथ-पांव फुलाने वाली और कर्तव्य-विमूढ़ करने वाली थी। मगर इसी समय त्वरित निर्णय भी लिये जाने थे। हमने अपनी प्राथमिकताएं तय की और बिना समय गंवाए जान बचाने की जंग शुरू की परन्तु आरम्भ में ही यह अहसास हो गया था कि नुकसान की तुलना में हमारे संसाधन अत्यंत अल्प हैं और इनसे आपदाग्रस्त नेपालियों की सम्पूर्ण अपेक्षाएं पूरी नहीं की जा सकेंगी।

भारतीय दल नेपाल पहुँचने वाले सभी बचाव दलों में सबसे पहले पहुँचा। स्थिति तब और भी भयावह प्रतीत हुई जब नेपालियों की विराट अपेक्षाओं का सामना करना पड़ा। इस विपदा के समय उनकी समस्त अपेक्षाएं भारतीय सहायता पर थीं किन्तु स्थिति विकट हो रखी थी। प्रकृति अपना काम कर चुकी थी..... आपदा अपना काम कर चुकी थी..... अब मनुष्यता का काम शेष था और मनुष्यता के इस अनुष्ठान में पड़ोसी होने के नाते भारतीय बचाव दल की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होने जा रही थी। बचाव कार्य के ऐन शुरुआत में ही अनेकानेक समस्याएं सामने खड़ी थीं। कुल मिलाकर शुरुआती संचालन अंधेरे में ही करना पड़ा था।

शनिवार, 25 अप्रैल 2015 को भूगर्भीय परतें जमीन में भीतर सरकी थीं, जो भूमि के कंपन तथा खिसकाव की कारक बनीं थीं। इन भू-गर्भीय सतहों के खिसकाव ने पूरे नेपाल में अलग-अलग तरीकों से वृहद स्तर पर जान और माल का नुकसान किया था। हजारों गाँव तबाह हो गए थे। जिन इमारतों का निर्माण सही ढंग से नहीं हुआ था वे सभी दूरस्थ शहर काठमाण्डू में धराशायी हो गए थे। जिन स्थानों पर सबसे ज्यादा नुकसान हुआ था, वे काठमाण्डू घाटी के कुछ हिस्से, भक्तापुर, ललितपुर, सिन्धुपाल चौक, गोरखा और धादिंग आदि इलाके थे। वहाँ के दृश्य भयावह और दर्दनाक थे। ये दृश्य कठोर से कठोर व्यक्ति का भी हृदय द्रवीभूत करने की क्षमता समेटे हुए थे। काठमाण्डू घाटी, भक्तापुर तथा ललितपुर में तो लोगों के सहमें चेहरों पर दुःख, भय और सदमें के मिले-जुले भाव थे। चारों तरफ पसरा सन्नाटा सांय-सांय कर स्थितियों को और भी भयावह बना रहा था।

25 अप्रैल के इस भूकम्प जिसने नेपाल में विनाश लीला की थी, ने सम्पूर्ण विश्व को झकझोर कर रख दिया था। यह हिमालय के इस देश की 80 सालों में आई सबसे अधिक विनाशकारी आपदा थी जो हजारों लोगों की मौत तथा सम्पदा के प्रलयकारी विनाश का कारण बनी थी। स्तब्ध नेपाली नागरिक, जो कि 30 लाख से ज्यादा की जनसंख्या वाली राजधानी काठमाण्डू के निवासी थे, अनायास ही सड़कों एवं गलियों में मतवाले से, विक्षिप्त हुए घूम रहे थे। वे अपने घरों के अवशेषों में अर्द्धविक्षिप्तावस्था में मानों अपनी पुरानी जिंदगी के हिस्से और परिवार के सदस्यों को ढूँढ़ते फिर रहे थे। दुनिया भर में अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाने वाला भ्रमण स्थल एक मिनट में आयी आपदा से ही धराशायी हो गया था। नेपाली लोगों के लिए पहली अंतर्राष्ट्रीय सहायता तथा आश्वासन हमारे प्रधानमंत्री की तरफ से ही पहुँचा जिन्होंने सर्वप्रथम इस प्रलयकारी आपदा से प्रभावित देश के राजनेताओं से बात चीत की तथा तुरन्त ही एन डी आर एफ की एक बड़ी खेप खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेज दी थी।

किसी भी आपदा के पश्चात् तेज और सुचारु रूप से समन्वय के साथ किया गया बचाव कार्य, सम्पदा और लोगों की जान के नुकसान को कम से कम करने की क्षमता रखता है। नेपाल की इस आपदा ने इसी सत्य को पुष्ट किया था, जिसमें दूरस्थ पर्वतीय इलाकों में मृत्यु - संख्या पल-पल बढ़ती जा रही थी। भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा दी गई मदद, वह भी ऐसे समय में जब नेपाल सीमित संसाधनों के साथ इस प्रलयकारी आपदा को झेलने में असमर्थ था, एक बहुत बड़ा सम्बल साबित हुई। मानवीय मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध भारत ने सर्वप्रथम दुःख की इस घड़ी में नेपाली लोगों की मदद की मशाल अपने हाथों में थाम ली थी। भारतीय बचाव दल एन डी आर एफ के अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्राप्त विभिन्न विधाओं में माहिर कार्मिक, जो पहली सात टीमों के साथ थे काठमाण्डू घाटी पहुँच चुके थे। ये टीम आपदा घटित होने के 6 घण्टों के अन्दर ही प्रभावित क्षेत्रों में पहुँच चुकी थीं और इसके आस - पास अपना खोज एवं बचाव अभियान शुरू कर दिया था।

मैं उनके इस निःस्वार्थ कार्य में अगले दिन 26 अप्रैल, 2015 को सम्मिलित होने वाला एन डी आर एफ का सर्वोच्च कमांडर था। मैं उन कुछ लोगों में शामिल था जिन्हें इस प्रलयकारी आपदा के पश्चात् नेपाल की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ था परन्तु इस अनुभव ने जीवन को देखने के मेरे दृष्टिकोण में एक अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया था। इसने मुझे जीवित रहने और हर क्षण जीवन को जी लेने की महत्ता समझा दी थी। मैं अनायास ही अकाल मृत्यु के बारे में सोचने लगा था और एहसास करने लगा था कि उस समय जीवित रहने का क्या मायने होता है जब शेष मृत्यु के शिकार बन गये हों। यह बिल्कुल किसी व्यक्ति के उस वक्तब्य जैसा था जब वह भूकम्प से धराशायी इमारतों के ऊपर चलते हुए इस विडम्बना से व्यथित था और उसने कहा "जीवन के मध्य, हम मृत्यु में समाहित हैं।"

आज जब विगत पे दृष्टिपात करता हूँ तो तो तोष होता है कि हमने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में कुछ मानवीय जिंदगियों को बचाने में सफलता पायी। भारतीय दल एन डी आर एफ द्वारा कुल मिलाकर 11 जिंदगियों को बचाया गया। ये वे लोग थे जो मकानों, दुकानों एवं भवनों के मलवे में गहरे दबे थे और सामान्य रूप से जिन तक पहुँचना किसी भी प्रकार संभव नहीं था। ये वे लोग थे जिन्होंने मलवे के नीचे से जिंदा बच निकलने की अपनी आशा को त्याग दिया था। जब भी मलवे में से कोई जीवित निकलता था तो जीवन का बिल्कुल एक नया रूप मेरे सामने आता था..... नया वैभव..... नया उल्लास.....नयी शुरुआत। मृत्यु की हर आशंका में जीवन की कीमत का बोध जागता था। मलवे से सुरक्षित निकलने वाला एक-एक जीवन एक आबाद शहर से कम नहीं लगता था। मलवे से निकलते शवों के शुरुआती दौर में थोड़े हतोत्साह के बाद कई ऐसे चेहरे भी निकले जिन्होंने जीवन में आशा, टुकड़ी में हौसला और कार्य में गति का संचार किया।

25 अप्रैल 2015 को नेपाल में आये विनाशकारी भूकम्प के बाद जिंदगी जैसे पूरी तरह से ठहर सी गयी थी। सभी व्यक्तियों का पूरा का पूरा ध्यान राहत एवं बचाव कार्य तक ही सीमित था, इसके अलावा जैसे कोई बात सोची ही नहीं जा सकती थी। हजारों लोग अस्थायी कैम्पों

में रह रहे थे। जो लोग सुरक्षित थे वो अपने सगे-सम्बधियों के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए बेचैनी में भागा दौड़ी कर रहे थे। यह सब वातावरण देखकर ऐसा लग ही नहीं रहा था कि जिंदगी कभी पहले जैसी सामान्य हो पायेगी। लेकिन मानव जीवन की शायद यही खूबसूरती है। जिस प्रकार पतझड़ के बाद पत्ते विहीन वृक्षों पर नन्ही-नन्ही कोपलें फूटती हैं, उसी प्रकार 3-4 दिन बीतते-बीतते बहुत धीरे ही सही लेकिन जिंदगी फिर से पहले वाली अपनी रफ्तार पकड़ने लगी, इसके छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण लक्षण दिखाई देने लगे। इक्का-दुक्का ही सही बाजारों में दुकाने खुलनी शुरू हो गयी। छोटे बच्चे अस्थायी बनाये गये कैम्पों के आस-पास खुले मैदानों में खेलते हुए दिखाई देने लगे। बारिश रुक गयी, आसमान साफ हो गया और बागमती नदी के किनारों पर दूर तक जलती हुई चिताओं में भी काफी कमी आ गई। सड़कों पर कुछ गाड़ियाँ चलती हुई दिखाई देने लगी। भूकम्प के साथ आई भयानक तबाही को देखते हुए यह छोटे-छोटे लक्षण काफी उत्साहवर्द्धक थे।

नेपाल में खोज एवं बचाव कार्य की एन डी आर एफ की यह गाथा जटिलतम परिस्थितियों में मानवता की सेवा की दास्तान बयान करती है। काठमाण्डू में खोज एवं बचाव कार्य के लिए एक स्थल से दूसरे स्थल जाते हुए सड़क के किनारे मलवे में बदले मकानों तथा अस्पतालों में जीवन का स्वरूप देखना एन डी आर एफ के सभी जवानों के लिए करुणाजनक अनुभव था। नेपाल के पीड़ितों के बीच मेरे द्वारा अपने जवानों को दृढ़तापूर्वक और अविरत कार्य करते देखना इस करुण-दृश्य-श्रंखला में एकमात्र दिलासा थी। हमारे जवानों को अपने महान देश की सीमा के बाहर इस विनाशकारी आपदा में मानवीय मदद की शुरुआत के लिए सिर्फ कुछ घण्टे दिये गए थे ताकि वे अपना आवश्यक सामान और जरूरी उपकरणों को अपने लिए तैयार कर लें। इस आपदा के समय, भारतीय सुरक्षा बलों, अर्द्धसैनिक बलों तथा बहुत सारे अन्य भारतीय संगठनों का सिर्फ और सिर्फ एक ही लक्ष्य था कि इस विषम परिस्थिति में प्रभावित समुदायों की मदद कैसे की जाए। नेपाल आर्मी, पुलिस और नेपाली नागरिकों ने इस अवसर पर एकजुट तथा एक लक्ष्य होकर बेहद प्रशंसनीय कार्य किया। मैं नतमस्तक हूँ उन सभी बचाव कर्मियों की निष्ठा, मानवता

के प्रति कटिबद्धता जो उन दुःखी नेपालियों की सेवा में तत्परता से आगे आये थे। भूकम्प के ये अनुभव इतने गहरे तथा इतनी सजीव संवेदनाओं से भरे हैं कि ये अपने शरीर, अपनी आत्मा, अपने मन की गहराई से इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि ये एक व्यक्तिगत सच्चाई बन जाते हैं जिसे आप अपने आप में समेट लेते हैं।

जैसा कि एडवर्ड सिम्पसन ने लिखा है, “भूकम्प कोई निष्कर्ष नहीं निकालते। ये अप्रत्यक्ष तुलनाओं और इतिहास में सजीव हो उठते हैं, जो लोकप्रिय अन्तरात्मा से कभी बाहर निकलते हैं और फिर समाहित हो जाते हैं। भूकम्प याद किए जाते हैं, लेकिन कुछ दूसरे तरीकों से भुला दिए जाते हैं, क्षणिक रूप में, स्मृति और विस्मृति एक दूसरे को स्पर्श करती हैं।”

जीवन बहुत सारे लोगों को दूसरा अवसर जरूर देता है। मैं जब आपदा से गुजरे नेपाल को अपनी बचाव टीमों के साथ, बचाव कार्यों के उपरान्त काठमाण्डू से दिल्ली जाने के लिये एयर इंडिया के विमान में सवार होने जा रहा था तब भी मेरे मन मस्तिष्क में आपदा के पश्चात् बचे लोगों की स्मृतियाँ विचरण कर रहीं थीं। मैंने एक पूरे समाज को शोकाकुल देखा था जिनकी भविष्य की अनिश्चितता और निराशा ने मुश्किलें और बढ़ा दी थीं। मैंने इस तरह की आपदाओं की पूर्व तैयारियों पर बहस सुनी है। जैसे - जैसे लोग इससे उबरने की कोशिश कर रहे थे वे ये भी जानते थे कि भविष्य में आने वाले भूकम्पों को रोका नहीं जा सकता। सन् 2002 में अंजार (गुजरात) का एक पीड़ित व्यक्ति मीडिया में चर्चा का विषय रहा था क्योंकि उसने अपने माता - पिता को 1956 के भूकम्प में खोया था तथा बच्चों को 2001 में।

मेरी यह किताब एन डी आर एफ के उन समस्त अधिकारियों एवं जवानों का अभिनन्दन है जिन्होंने नेपाल-भूकम्प के समय मानव जिंदगियों को बचाने का महती कार्य किया। इस अवसर पर मैं भारत सरकार के गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिनके निरंतर प्रोत्साहन से ही विदेशी धरती पर प्रतिकूल परिस्थितियों में सफल बचाव कार्य का निष्पादन हो सका। मैं अपनी कृतज्ञता भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोवाल, भारत के प्रधानमंत्री कार्यालय के अतिरिक्त प्रधान सचिव डॉ पी.के. मिश्रा एवं भारत के विदेश सचिव

डॉ एस. जयशंकर के प्रति भी प्रकट करता हूँ जिन्होंने नेपाल आकर हमारे बल के जवानों का उत्साह बढ़ाया था। मैं तत्कालीन केन्द्रीय गृह सचिव श्री एल.सी. गोयल के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनका सहयोग पूरे नेपाल-अभियान के दौरान सतत् रूप से मुझे उपलब्ध रहा। श्री बी.के. प्रसाद, अतिरिक्त सचिव, गृह मंत्रालय का मैं शब्दों में धन्यवाद नहीं कर सकता क्योंकि वह नेपाल-अभियान के दौरान सिर्फ मेरे साथ ही नहीं बल्कि पूरे बल के साथ एक स्तंभ के रूप में खड़े रहे। मेरा धन्यवाद राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य सचिव श्री आर.के. जैन, सदस्य ले. जनरल एन.सी. मारवाह, सदस्य श्री कमल किशोर, सदस्य डॉ डी.एन. शर्मा एवं प्रो. संतोष कुमार, कार्यकारी निदेशक एन आई डी एम को भी है जिन्होंने एन डी आर एफ के बचाव कार्य में हर संभव सहायता की एवं अपने अनुभवों से हमारा मार्गदर्शन करते रहे। काठमाण्डू स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारियों ने हमें नेपाल भूकम्प के समय खोज एवं बचाव अभियान के दौरान जो मदद की, उसे भूलाया नहीं जा सकता। भारतीय दूतावास के मार्गदर्शन के बिना यह कार्य संभव न था। मैं भारतीय राजदूत श्री रंजीत रे का अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने हर कदम पर एन डी आर एफ का साथ दिया तथा हमारे जवानों के बीच जाकर उनका उत्साह बढ़ाया। साथ ही साथ मैं धन्यवाद देता हूँ भारतीय दूतावास में नियुक्त अपने मित्र श्री प्रभात सिंह एवं तत्कालीन डिप्टी मिशन चीफ श्री पीयूष श्रीवास्तव को जिन्होंने मुझे एवं एन डी आर एफ के जवानों को हर संभव सहायता प्रदान की। मैं साधुवाद देता हूँ उन सारे प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के मित्रों को जिनकी नेपाल आपरेशन की अविरत अभिव्यक्ति हमारे लिए एक प्रेरणा थी।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक मात्र नेपाल-प्रेमियों या भूकम्प-शोधार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि सामान्य-जन के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। यदि भविष्य में होने वाली किसी भी आपदा में हम अंश बराबर क्षति भी कम कर पाए तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूंगा।

- ओ पी सिंह



नेपाल भूकम्प की तबाही का एक विहंगम दृश्य

असहाय मानवता-भूकम्प का कहर

1. स्तब्ध-बिलखता नेपाल

25 अप्रैल-2015 को आये 7.9 इकाई की तीव्रता वाले भूकम्प के मुख्य झटके का दायरा लगभग 120 किमी व 80 किमी (लम्बाई एवं चौड़ाई) काठमाण्डू की तरफ तथा भूकम्प केन्द्र से पूर्व की तरफ था।

नेपाल भूकम्प 25 अप्रैल 2015, दिन शनिवार, स्थानीय समयानुसार 11 बजकर 56 मिनट पर आया था, जिसकी तीव्रता रिचर पैमाने पर 7.9 इकाई थी। इसका व्यापक असर नेपाल में हेतादुआ, भरतपुर, विराटनगर, घोराही, काठमाण्डू, कीर्तीपुर और ललितपुर में था। इसके अतिरिक्त भारत में पटना, बेगूसराय, दरभंगा, मेरठ, फुलवारीशरीफ, रंगपो और सिलीगुड़ी में भी इसका व्यापक असर पड़ा। बांग्लादेश भी इससे अछूता नहीं रहा। इसके भालूका, ढाका, मेमन सिंह, धरवाड़ा और राजशाही इलाके भी प्रभावित हुए। भूटान की राजधानी थिम्पू भी प्रभावित हुआ। इस प्रकार मध्य नेपाल, उत्तर भारत, अधिकांश बांग्लादेश तथा भूटान के कुछ हिस्से कम्पित हो उठे तथा गंभीर रूप से प्रभावित हुए। यह एक बड़ा भूकम्प था क्योंकि अमेरिका भूगर्भ सर्वे के अनुसार 7.8 इकाई तीव्रता से अधिक आये भूकम्प को इस श्रेणी में रखा जाता है।

इस भूकम्प का केन्द्र-बिन्दु काठमाण्डू घाटी का उत्तर-पश्चिम लामजुंग जनपद था। संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था 'आफिस फार द कोआर्डिनेशन आफ ह्यूमैनिटेअरिअन् अफेयर्स' (ओछा) के आकड़ों के मुताबिक इस भूकम्प के कारण 7,365 लोगों की जान गयी, जबकि 14,355 लोग घायल हुए। इस भूकम्प का दुष्परिणाम ऐसा रहा कि 191,058 घर नेपाल में पूरी तरह तबाह हो गये तथा 175,162 घरों को नुकसान हुआ। नेपाल के भीतर 37,500 लोग आन्तरिक रूप से स्थानान्तरित हुए। सिर्फ काठमाण्डू में ही 28,240 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गयी। 25 अप्रैल 2015 को आये भूकम्प के केन्द्र-बिन्दु के आसपास लगभग 750,000 लोग रहते थे।

कुदरत का कहर जब टूटता है तो चारों तरफ तबाही का ऐसा मंजर छोड़ जाता है जो ताउम्र आँखों में समाया रहता है। नेपाल में शनिवार (25 अप्रैल) को आए भूकम्प ने भी ऐसे ही दिल दहला देने वाला मंजर छोड़ा था। भागो..... भागो ! मगर कहाँ ? पूरा नेपाल इस मकड़ जाल में उलझा हुआ था। शनिवार (25 अप्रैल) को आये भीषण भूकम्प के बाद से कुल 97 बार धरती काँप चुकी थी, जिससे पूर्व में मेची से पश्चिम में महाकाली तक चाहे पहाड़ हो या फिर मधेश (तराई-क्षेत्र), नेपाल के संपूर्ण भूभाग का जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया था। कोई अपनी अर्द्धांगिनी खो चुका था, किसी के सिर से माँ-बाप का साया छिना था तो किसी के बुढ़ापे का सहारा नहीं रह गया था। किसी के जीवन भर की कमाई तिनके की तरह उड़ गयी थी, तो कोई अपने पूरे-परिवार को खोकर बदहवास था।



भूकम्प की विभीषिका - असहाय नागरिक

रिचर पैमाने पर 7.9 इकाई की तीव्रता वाले भूकम्प ने नेपाल में 25 अप्रैल- 2015 को भूकम्प वाले दिन ही 4,600 लोगों की जान ले ली तथा लगभग 10,000 लोग घायल हुए। इस भूकम्प ने इस देश की प्राचीन ऐतिहासिक आठ धरोहरों में से पाँच को काठमाण्डू में ही ध्वस्त कर दिया तथा अरबों मूल्य की सम्पदा को क्षति पहुँचायी।

इस भूकम्प से नेपाल में 14 जिले प्रभावित हुए, जिनमें वो जिले जो सर्वाधिक प्रभावित हुए, वे सिन्धुपाल चौक, काठमाण्डू, नूआकोट, धादिंग, रसुआ, गोरखा, भक्तापुर व कावेरापाल थे।

केवल मध्य-क्षेत्र में 3,102 व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा 3,612 लोग घायल हुए। मध्य क्षेत्र के 15 जिलों में लोगों की जाने गयीं। एक सूत्र के अनुसार केन्द्रीय क्षेत्रीय पुलिस कार्यालय हेताउदा, सिन्धुपाल चौक में ही सिर्फ 1,376 मौतें हुई। नूवाकोट, धादिंग, रसुआ तथा कावें में क्रमशः 629, 369, 302 व 273 लोगों की मृत्यु नेपाल भूकम्प के कारण हुई जबकि 24, 34 तथा 24 लोग क्रमशः दोलखा, मकवानपुर तथा रामेचाप में मारे गये। चित्तवान, बारा और पारसा में क्रमशः 6, 5 व 5 मौतें हुई। सिन्धुपाल चौक की मृत्यु संख्या में से 2,988 लोगों का शव उनके परिजनों को प्राप्त हुआ था। पूरा प्रभावित नेपाल नाटक के बाद उजड़े रंगमंच जैसा लग रहा था।



एक पूर्णतः ध्वस्त मकान

29 अप्रैल- 2015 तक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार 5020 लोगों की मृत्यु तथा 10,227 लोग घायल हुए थे। मध्य क्षेत्र में 3098, काठमाण्डू घाटी में 1446, पश्चिम क्षेत्र में 413, पूर्व क्षेत्र में 51 तथा मध्य पश्चिम क्षेत्र में 2 मौतें हुई थी। जिनमें सिन्धुपाल चौक में 1587 तथा काठमाण्डू में 1034, नुआकोट में 638, गोरखा में 407, धादिंग में 373, रसुआ में 304, कावें में 274, भक्तापुर में 243, ललितपुर में 169, दोलखा में 60 मकवानपुर में 34, रामेढा में 26, शोलूखुम्बी में 22 मृत्यु हुई थी। नेपाल और भारत के हिस्सों में आये जलजले ने मानवता की चूल्हें हिला दी थी। इस प्राकृतिक त्रासदी ने अपनी आंशिक ताकत दिखायी और पूरी दुनिया को सकते में डाल दिया। अपने एक ही झटके से पूरी बस्ती को उजाड़ दिया और पीछे छोड़ गया सिर्फ चीत्कार, करुण-क्रदन, बेहाली और बेबसी।

लगभग आधे भारत के साथ-साथ हिमालय राष्ट्र नेपाल और उसके आसपास के देशों में आए भूकम्प ने पूरे क्षेत्र को हिला कर रख दिया था। नेपाल में भूकम्प ने बड़ी तबाही के निशान छोड़े थे।

नेपाल के भूकम्प के संदर्भ में विचार करें तो वहाँ पहले आए भूकम्प का केन्द्र जहाँ राजधानी काठमाण्डू की उत्तर पश्चिम दिशा में लामजुंग में रहा, वहीं इसके अगले दिन आए भूकम्प का केन्द्र काठमाण्डू से 80 किमी पूर्व कोटारी में था। बाद में आने वाले भूकम्प की तीव्रता प्रायः कम होती है, जिसे 'आफ्टर-शॉक' के रूप में जाना जाता है लेकिन कोटारी में आए भूकम्प की तीव्रता 6.9 आँकी गई, जो अप्रत्याशित ही कही जायेगी। हाल के भूकम्प से भले ही बड़ी तबाही नेपाल में हुई, लेकिन इसके झटके भारत, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, चीन आदि अन्य दक्षिण एशियाई देशों में भी महसूस किए गये। भारत में बिहार और उत्तर प्रदेश अधिक प्रभावित हिस्से थे जहाँ से कई लोगों के मरने की खबरें आ रही थीं।



परिजनों को खोने का दर्द

एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार कुल क्षति का आधा सिर्फ काठमाण्डू घाटी में ही हुआ जबकि आधी जनहानि शेष प्रभावित क्षेत्रों में हुई थी।

आश्चर्य की वजह यह भी थी कि देश की राजधानी काठमाण्डू में कई बहुमंजलीय इमारतों को भी नुकसान हुआ जो आधुनिक ढंग से कंक्रीट की बनी हुई थी। अन्य दूर दराज के स्थानों पर स्थानीय ईंट व मिट्टी से निर्मित भवनों को क्षति पहुँची थी, विशेषकर वे जो ढलानों पर निर्मित थीं। पहाड़ों पर बसी आबादी की बर्बादी का कारण भूस्खलन से तबाह हुए घर भी थे।

एक गाँव बोसान जो काठमाण्डू के उपनगर में स्थित है, नवनिर्मित दक्षिण काली नगरपालिका के अन्तर्गत आता है। यह एक पहाड़ी पर स्थित है। बोसान गाँव में लगभग 300 घरों की आबादी थी। आकड़ें बताते हैं कि इनमें 177 घर जो पत्थर व मिट्टी से बने थे, पूर्णतः नष्ट हो चुके थे। केवल कुछ दर्जन घर ही भूकम्प की मार सह सके थे।

मंदिर एवं मूर्तियों वाले काठमाण्डू शहर को कभी अपनी खूबसूरती पर नाज था। लेकिन भूकम्प त्रासदी के कारण चारों तरफ मौत का मातम और मलवे बिखरे पड़े थे। न्यूबाड़ी, बसुन्धरा, वसंतपुर और भक्तापुर का लगभग हर घर मानों कब्र में तब्दील हो गया था। कुदरत की नीयत इतनी क्रूर व भयानक थी कि हिमालय की शरण में भी नेपाल को कोई सुरक्षा नहीं मिली। सदियों से मानवता का रक्षक हिमालय ही सबसे बड़ा भक्षक बन बैठा था।



पूर्ण रूप से नष्ट हो चुका एक मंदिर

युद्ध भूमि में दुश्मनों के छक्के छुड़ा देने वाले गोरखा बगैर प्रतिरोध के अपने ही घर में शहीद हो गये थे। मुर्दों की संख्या इतनी थी कि पशुपति के आर्या घाट पर निर्वाण के लिए लंबा इंतजार करना पड़ रहा था। टीचींग सरकारी अस्पताल में पाँच दिन बाद भी लाशें बिखरी पड़ी थी। उस समय शवों की बदबू इतनी तेज थी कि दूर से भी इन्हें देखा नहीं जाता था। चारों तरफ प्राकृतिक तांडव के बस अवशेष ही अवशेष थे। इनकी शिनाख्त मुश्किल हो रही थी। यूनेस्को की आठ सांस्कृतिक धरोहरों में से एक काठमाण्डू दरबार की खूबसूरती अब थोड़ी सी ही हवा चलने पर भी गहरे सन्नाटे का आभास दिला रही थी। इन्हीं धरोहर पर जाने कितने मशहूर

हिंदी गाने फिल्माये गये थे, अब इन भग्नावशेषों की स्मृतियां इन्हीं गानों में जीवित हो उठेंगी। पुराने मंदिरों, महलों एवं गुलजार गलियों वाले 'दरबार-स्कवायर' में अब सन्नाटा छाया हुआ था। जिंदगी की तलाश कैसे की जाए? यहाँ तो डोजर जाने का रास्ता तक नहीं था।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू का आस्था और व्यापारिक गतिविधियों के लिए मशहूर हनुमान ढोका, कष्ट मंडप, इंद्रचौक, मखनटोल आदि इलाके समृद्धि के साथ-साथ मंदिरों के लिए भी जाने जाते थे। यहाँ इनकी भारतीय साड़ियों के बाजार के रूप में भी ख्याति थी। जलजले ने सिर्फ इंसान को ही नहीं तोड़ा, बल्कि आस्था से बनायी गयी दीवारें भी ढह गयी। कान्हा जी के मन्दिर नाम से पूरे नेपाल में प्रसिद्ध हनुमान ढोका का कृष्ण मन्दिर ध्वस्त हो गया था। इससे सटा देवी मंदिर व अन्य देवालय मलवे में तब्दील हो गये थे। यहाँ के लोगों की कान्हा के प्रति असीम श्रद्धा है। शनिवार (25 अप्रैल) की घटना याद कर दिल डोल उठता है। कान्हा जी का मंदिर ढह रहा था। मानव आस्था का प्राकृतिक तांडव से यह समीकरण साधारण मानव मन को असमंजस में डाल देता है, सैकड़ों टूटते-उठते नजर आते हैं। देवी मन्दिर सहित अन्य देवालय को भी, सब ने देखा लेकिन बचा नहीं सके। थोड़ी दूर स्थित कष्ट मंडप में रक्तदान को आए 150 लोग सब जमीन में समा गये। भरा-पूरा समृद्ध बाजार इंद्रचौक, मखनटोल समाप्त हो गया था। सारा ब्यवसाय एक पल में चौपट हो गया था। इंद्रचौक भारतीय साड़ियों के लिए जाना जाता था, खासकर राजस्थानी साड़ियों के लिए। सदियों से चली आ रही परंपरा, समृद्धि मिसाल एक पल में ध्वस्त हो चली थी। यहाँ राजस्थान समेत भारत के अन्य राज्यों के लोग शनिवार (25 अप्रैल) तक दिखते थे लेकिन जलजले के बाद कौन कहाँ गया ? अब तक पता नहीं।

पिछले डेढ़ दशक से यहाँ कारोबार जमा चुके राजस्थान के भिलवाड़ा निवासी मुकेश माहेश्वरी का कुदरत के इस कहर ने वहाँ रहने का इरादा ही बदल दिया। वे घर वापसी की तैयारी करने लगे। यहाँ व्यवसायियों की घनी आबादी थी। दुकान प्रथम और आवास चौथी मंजिल पर था। अचानक लगा कि सब कुछ हिल रहा था। सामने नजर गई तो भवन गिर रहे थे। वे किसी तरह माँ मोहनी देवी और पिता रामनारायण महेश्वरी को लेकर बाहर निकलने में सफल रहे थे, क्या करें किधर जाएं कुछ

समझ नहीं पा रहे थे और धरती का कंपन भी इस कदर हठी हो गया था कि रूकने का नाम ही नहीं ले रहा था।

बिंदास जीवन जीने का आदी काठमाण्डू अब फफक-फफक कर रो रहा था। तीन दिन बाद भी जनजीवन पूरी तरह डरा हुआ था तथा खामोश भी। भूकम्प के साथ-साथ बारिश ने लोगों का जीना मुहाल कर रखा था। शहर के किसी भी कोने में रासरंग नहीं था, न कोई आमदरफ्त। अगर कहीं लोगों की भीड़ पहुँच रही थी तो वह था शमशान घाट। स्थानीय निवासी विपिन खतिवाड़ा ने बताया कि पशुपति आर्या घाट में 24 घंटे चिताओं की लपटें उठ रही थी। यही हाल दूसरे शमशान घाटों का भी था। अंतिम संस्कार के लिए यहाँ पर भारी उठापटक मची हुई थी। एक ही चिता पर कई-कई शवों की अंतिम क्रिया की जा रही थी फिर भी लोगों में शोक की गहराई तक जाने का न तो समय था न स्थित, वे खुद ही अर्द्धविक्षिप्त से इधर-उधर घूम रहे थे मानों उनकी स्वयं की आत्मा की शान्ति की मृतकों से पहले आवश्यकता थी।

लकड़ियों की कमी के कारण लाशें पूरी तरह से जल भी नहीं पा रहीं थी। पशुपति नाथ घाट पर अंतिम संस्कार के लिए लाशों का ढेर लग रहा था। जमीन का हर कोना अधजली लाशों से अटा पड़ा था। इसी के आस-पास लोग भूख प्यास से बिलबिला रहे थे। मौत के मुँह में जाने से बच गये लोग जिंदगी का जश्न मनाने की स्थिति में नहीं थे, वे जानते नहीं थे कि जीवन की नौका के किस किनारे पर थे। भूकम्प ने जमीन से भी बड़ी दरार उनकी किस्मत में बना दी थी।

बचे हुए घरों में बुरी तरह दरारें पड़ चुकी थी। प्रत्येक होम 'स्वीट होम' या तो भदे घरों में तब्दील हो चुके थे या हाउस 'टूटे हाउस' बन चुके थे। छोटे बच्चे बहती हुई नाव के साथ हँसते हुए दौड़ते भागते हुए खेल रहे थे, वे किसी भी त्रासदी से अनभिज्ञ थे। बच्चों को यह पता नहीं चल पा रहा था कि यह सब क्या हो रहा था ? एक पल को उन्हें कैम्प की जिंदगी रोमांचक लगती थी तो दूसरे पल जरूरते उन्हें रोने को मजबूर कर देती थी। पानी के संकट से जूझ रहे लोगों ने जैसे-तैसे बारिश के पानी को ही पीने के लिए सहेजना शुरू कर दिया था। उन्हें इस बात का भी गम नहीं था कि ठंड बढ़ने के बाद खुले आसमान तले

रात कैसे गुजारेंगे। भूकम्प के बाद कई लोगों के पास सिर्फ शरीर पर पहने हुए कपड़े ही बचे थे।

खंडहर बने घर और वीरान गलियों में, महलों में रहने वालों को राहत शिविरों में पहुँचा दिया था। जर्जर हो चुके मकानों के बाशिंदें भी अंदर जाने के बजाये अपने ही घरों के बाहर शरणार्थी बने हुए थे। उनके चेहरे पर भय और भूख से चल रही लड़ाई साफ दिखायी देती थी।

25 अप्रैल 2015 के भूकम्प का सर्वाधिक प्रभाव सिन्धुपाल चौक जिले पर पड़ा तथा जन जीवन व सम्पदा का बहुतायात नुकसान हुआ। इस जनपद के 65,000 से ज्यादा मकान क्षतिग्रस्त हो गये थे। सर्वाधिक मौतें 2829 सिर्फ सिन्धुपाल चौक में ही हुई। सिन्धुपाल चौक जिले में भूकम्प उपरान्त भूस्खलन ने तबाही का जो मंजर दिखाया कि लगभग 100 लोग भूस्खलन के मलवे में दब गये। कुछ समय बाद वहाँ की दुर्गन्ध ने राजमार्ग से गीली मिट्टी को हटाने के लिए बाध्य किया। बारहा बिशे से तातोपानी के बीच दर्जनों जगह भूस्खलन की घटना हुई थी। धरती मां का अपने ही सपूतों से यह चरम वैराग्य समझ से परे था। इस पूरे रास्ते में ऊँचे पहाड़ व चोटियाँ हैं जिसकी वजह से वहाँ पर स्थित कई घर मलवों में बह गये। बारहा बिशे से तातोपानी आने वाले कुछ पैदल चलकर आये मुसाफिर बसों व कारों में फँसी लाशों के चश्मदीद गवाह बने। जिस समय भूकम्प आया तामाकोशी जल परियोजना के ऊँचे इलाके में सुरंग में काम चल रहा था। फलस्वरूप कई मजदूर व कार्मिक फँसे रह गये। सिन्धुपाल चौक के अधिकांश राजमार्ग में गंभीर दरारे पड़ गयी थी। यहाँ के निवासियों का कथन था कि लगभग 3,600 लोगों की यहाँ पर जानें गयी तथा करीब 1,000 लोग लापता हो गये।

भूकम्प से क्षत-विक्षत हुए नेपाल की स्थिति विकट बनी हुई थी। कई दुर्गम पहाड़ी गाँवों में सड़क सम्पर्क नहीं हो पा रहा था। गाँव के गाँव उजड़ गये थे। सिन्धुपाल चौक जिले के एक ही घर में सौ से अधिक लोगों के मरने की आशंका जताई गयी। इन सबके बीच एक मौन प्रत्यक्षदर्शी के लिए यह सब महसूस कर उसे जब कर लेना बेहद मुश्किल काम है। एक शादी समारोह में जुटे बाराती, दुल्हा, दुल्हन, समेत अतिथियों में किसी के भी बचने की उम्मीद नहीं थी। एवरेस्ट के लिए जाने वाले रास्तों में शवों को निकालने का काम जारी था। प्रत्यक्षदर्शियों

के अनुसार जिस दिन भारी भूकम्प आया था उस दिन साप्ताहिक अवकाश होने के कारण तातोपानी सीमा घूमने गये सैलानियों की संख्या अच्छी खासी थी। कौन कहाँ गया ? घर पहुँचा या नहीं ? इसकी जानकारी नहीं मिल पा रही थी।

काठमाण्डू की ऐतिहासिक व प्राचीन इमारतें पलक झपकते ही धाराशायी हो गयी थी। शनिवार (25 अप्रैल) को आये भूकम्प ने काठमाण्डू की प्राचीन धरोहर पहचान धरहरा मीनार को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया था। अधिकाधिक प्राचीन स्मारकों व भवनों को क्षति पहुँची थी। सम्पूर्ण परिवार जिनमें बच्चे तथा रिश्तेदार भी शामिल थे, घरों के मलवों में समा चुके थे।

धरहरा प्राचीन धरोहर काठमाण्डू की एक पहचान ही नहीं, अपितु कई स्थानीय लोगों के जीवकोपार्जन का माध्यम भी था। इस धरोहर का शनिवार (25 अप्रैल) को धाराशायी होना कई आम स्थानीय लोगों की जीविका का समाप्त होना था विशेषकर जो पर्यटन के व्यवसाय से जुड़े थे।

नेपाल में आये भूकम्प में ऐतिहासिक काष्ठमंडप सहित कई प्राचीन मंदिर ध्वस्त या बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये थे। काष्ठमंडप लकड़ियों से बना 16 वीं शताब्दी का स्मारक था। इससे ही देश की राजधानी का नाम काठमाण्डू रखने की प्रेरणा मिली थी। काष्ठमंडप के अलावा जो अन्य प्राचीन मंदिर ध्वस्त हुए, उनमें पंचतले मंदिर, नौ मंजिला बसंतपुर दरबार, दशावतार मंदिर और कृष्ण मंदिर भी था। नेपाली इतिहासकार पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ ने आंशका व्यक्त की कि ये स्मारक हमेशा के लिए लुप्त हो जायेंगे क्योंकि इनका पुनर्निर्माण तकनीकी दृष्टि से कठिन और बहुत महँगा होगा और यह जानकारी सारे विश्व के लिए किसी सदमे से कम नहीं थी। न्यूज पोर्टल इकांतिपुर के अनुसार श्रेष्ठ ने कहा था कि वे काठमाण्डू, भक्तपुर और ललितपुर में ज्यादातर ऐसे स्मारकों को खो बैठे थे, जिन्हें विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया था। उन्हें मूल स्वरूप में नहीं लौटाया जा सकता। शनिवार (25 अप्रैल) को आए 7.9 तीव्रता के भूकम्प और रविवार (26 अप्रैल) के दिन लगे झटकों ने काठमाण्डू में बसंतपुर दरबार चौक के मंदिरों को करीब 80 प्रतिशत नष्ट कर दिया था। धरहरा मीनार करीब 81 साल पहले 1934 में आए ऐसे ही भूकम्प में खंडित हो गयी थी। उस भूकम्प में दस हजार से अधिक लोगों की मौतें हुई थी। इसी

तरह पाटन और भक्तापुर में दर्जनों मंदिर और ऐतिहासिक भवन ध्वस्त हो गये थे या आंशिक रूप से उन्हें नुकसान पहुँचा था।



ध्वस्त हुई एक प्राचीन धरोहर

ज्यादातर उन घरों व इमारतों को सर्वाधिक नुकसान हुआ जो स्थानीय ईंट व गारे के द्वारा निर्मित थे।

ज्यादातर ध्वस्त या अत्यधिक क्षति ग्रस्त प्राचीन इमारतें चाहे स्वयंभूनाथ से बुद्धानाथ, आसान से इन्दिरा चौक से दरबार-स्कवायर काठमाण्डू, पाटन तथा भक्तापुर सभी ईंटों व स्थानीय मिट्टी से बने गारों से निर्मित थीं। विशेषकर भक्तापुर जहाँ की आवासीय संरचना सिर्फ ईंट व गारों से निर्मित थी वहाँ सर्वाधिक नुकसान हुआ।

भूकम्प प्रभावित नेपाल में पहाड़ का जनजीवन बदहवासी की स्थिति में था। रसुवा, गोरखा, धादिंग, सिन्धुपाल चौक आदि जिलों की स्थिति बेहद भयावह बनी हुई थी। पत्थर, मिट्टी और लकड़ी से बने घरों को महाविनाशकारी भूकम्प ने पलक झपकते ही कूड़े के ढेर में तब्दील कर दिया था। उसमें कोई अर्द्धविक्षिप्तावस्था में अपनी जमापूँजी ढूँढ़ रहा था, कोई जेवरात, कोई अन्न की बोरी तलाश रहा था तो कोई परिजनों की जिंदगियाँ। देखने से लगता था कि गाँव के गाँव की शेष आबादी मानसिक अवसाद में थी। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार लगभग 80 लाख लोग इस प्राकृतिक आपदा से प्रभावित हुए। यूनिसेफ के अनुसार लगभग 10 लाख बच्चों को तत्कालिक मदद की आवश्यकता आ पड़ी

थी। बहुत सारे लोग जो किसी तरह बच गये, खुले मैदान में रह रहे थे। अतः संक्रामक महामारी की आशंका उत्पन्न हो गयी थी। दूरगामी इलाकों में इंसान तथा जानवरों की लाशें समय बीतने के साथ सड़ने लगी थी इसलिए वहाँ पर संक्रामक बीमारियों के फैलने की आशंका बन गयी थी।

बुद्धवार (29 अप्रैल) की शाम तक कार्वे में मृतकों की संख्या 275 तक पहुँच चुकी थी, जबकि लगभग 150,000 लोग भूकम्प से प्रभावित हो चुके थे। कार्वे में भूकम्प की तबाही ने लोगों के वस्त्र, खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं को मलवों में दबा दिया था। ज्यादातर घर आधे-ध्वस्त हो चुके थे तथा आधे हिस्सों को भारी नुकसान पहुँचा था। अन्ततः स्थानीय समुदाय खुले आसमान के नीचे असहाय होकर आश्रय लेने को बाध्य थे। लगातार आ रहे कंपन उनके भय को और पुख्ता कर रहे थे वे अपने ही घरों के लिए अजनबी बन चुके थे न जाने कब कैसे प्रकृति घात कर बैठे। यही पर रावी ओपी इलाके में 1082 घर तबाह हो चुके थे तथा एक बच्चे की मृत्यु हुई थी। 12 मई 2015 तक कार्वे में 311 लोगों की मृत्यु इस भूकम्प से हो चुकी थी।

सांखू में एक सड़क 10 फीट चौड़ी है परन्तु सड़क के दोनों ओर के भवन व इमारते ढह गयी थी तथा सड़क पर चलना मुश्किल हो रहा था। नेपाली सेना के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल जगदीश चन्द्र पोखराल के अनुसार शनिवार (25 अप्रैल 2015) को आये भूकम्प के कारण नेपाल सेना के 6 कर्मिकों की भी मृत्यु हुई थी। नेपाल गृह मन्त्रालय के एक प्रवक्ता के अनुसार सर्वाधिक प्रभावित 14 जिलों के लगभग 80 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवा केन्द्र ध्वस्त हो गये थे। हालाँकि पानी की टंकी व ऊँचे टावरों को नुकसान की ज्यादा चर्चा नहीं हुई परन्तु ये बहुतायात लोगों को घायल करने के कारण बने। भूकम्प स्वयं में कई प्राकृतिक आपदाओं को जन्म देता है। बाढ़, भूस्खलन, भवनों का ध्वस्त होना, मृदा-द्रवीकरण, जमीनी-दरार इत्यादि।

नेपाल पुलिस के अनुसार भूकम्प में मारे गये 57 विदेशी नागरिकों में भारतीयों की संख्या 41 तक पहुँच गयी थी। भूकम्प के बाद एवरेस्ट पर आये तूफान से बेस कैम्प के गाँव में पर्वतारोहियों और ग्रामीणों के शव मिले। हिमालय पर्वत श्रेणियों में भूकम्प उपरान्त भारी हिमस्खलन हुआ

जिनमें कई पर्वतारोहियों की मृत्यु हुई थी, जिनमें एक प्रख्यात जापानी पुरुष पर्वतारोही भी था। कई विदेशी पर्यटक 'लास्ट-रिजार्ट', जो चीन की सीमा से सटे तातोपानी में स्थित था, भूकम्प के समय ठहरे हुए थे, उनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिल रही थी क्योंकि वहाँ तक पहुँचना दुर्गम था। इसलिए बुद्धवार (29 अप्रैल) तक कोई बचाव दल वहाँ के ध्वस्त रिजार्ट पर न पहुँच सका था। अतः विदेशी पर्यटकों की वास्तविक संख्या तथा उनकी नागरिकता की जानकारी नहीं मिल पा रही थी। रविवार (26 अप्रैल 2015) तक एवरेस्ट बेस कैम्प से 22 लोगों के भूकम्प के कारण आये हिमस्खलन में मृत्यु होने की खबर आ चुकी थी जबकि 61 लोग घायल हो चुके थे तथा दर्जनों लोगों की खबर नहीं मिल रही थी। शनिवार (25 अप्रैल) को आये भूकम्प के समय एक विज्ञप्ति के अनुसार 100 पर्वतारोही बेस कैम्प में थे, जिनमें 400 विदेशी पर्यटक थे। रविवार (26 अप्रैल) की शाम तक भारतीय सेना ने बेस कैम्प से 13 शवों को निकाल लिया था। नेपाल से लगे तिब्बत के भूकम्प प्रभावित एक कस्बे में 32 विदेशी पर्यटक फँसे हुए थे। वे वहाँ से निकाले जाने का इंतजार कर रहे थे। जब भूकम्प आया उस समय नौ समूहों के कुल 39 पर्यटक ज़ाम कस्बे में रुके हुए थे। यह चीन व नेपाल सीमा पर स्थित एक प्रमुख कस्टम चेक प्वाइंट है। शिन्हुआ ने तिब्बत पर्यटन ब्यूरो के युआन शिओरोंग के हवाले से बताया था कि सभी पर्यटक सुरक्षित थे।

जिस भूकम्प ने नेपाल में तबाही मचा दी थी, उसमें उत्तर प्रदेश की साहसी महिला श्रीमती अपर्णा एच एस, भारतीय पुलिस सेवा भी रूबरू हुई। वह एवरेस्ट की चोटी फतह करने के अदम्य साहसिक मिशन पर थी। शनिवार (25 अप्रैल) को भूकम्प आने के वक्त वह एडवांस बेस कैम्प पर ठहरी थी कि अचानक पथरों व बर्फ की बरसात शुरू हो गयी, उन्होंने खुले मैदान में आकर जान बचाई। उनकी टीम का दुनिया से 119 घंटे तक संपर्क कटा रहा।

शनिवार (25 अप्रैल) को आये भूकम्प ने हजारों लोगों की जान के साथ नेपाल के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी तथा उनके परिवार के चार सदस्यों को भी मौत के मुँह में लील लिया। वालीबाल के राष्ट्रीय प्रशिक्षक केशव लाल श्रेष्ठ की मृत्यु शनिवार को आये भूकम्प के दौरान हो गयी। नेपाल के राष्ट्रीय खेलकूद परिषद की विज्ञप्ति के अनुसार स्वर्गीय केशव लाल

श्रेष्ठ की मृत्यु अपने घर के धाराशायी होने से मलवे में दबकर हुई। नेपाल के एक मात्र एशियन खेल 2010 में पदक प्राप्त मुक्केबाज दीपक महाराजन ने अपने परिवार के चार सदस्यों को भूकम्प त्रासदी में खो दिया। इनके पारिवारिक घर बोसीगाँव में मकान ढहने से उनकी माँ, बड़े भाई, भाभी तथा भतीजे की मलवे में दब कर मृत्यु हो गयी थी।

आँखें सूज गई थी, अब भी कई लोगों को अपने नहीं मिल रहे थे। आखिर वे कहाँ थे ? निगाहें मलवों पर थीं, आशा के विरुद्ध आशा की अजब कहानी सामने थी कहीं इसी में कोई जीवित बचा हो। गिरे हुए भवनों का अवशेष अब भी हटाया जाना बाकी था। शंखपुरा में बुद्धवार (29 अप्रैल) को मलवे हटाने का कार्य शुरू हुआ। शंखपुरा की माया की तो दुनिया उजड़ गई। पति, बेटी, दामाद एक झटके में चल बसे थे। वह कहती थीं कि पाँच की लाश तो देख ली थी, काश नतनी बची हो। उसका चेहरा देखने की उसे बेचैनी थी। माया से मिलने आए परिजन खाने पर बैठे थे। उन्हें शाम को लौटना था। अचानक मकान हिलने लगा। फिर शोर मचा। घर का दरवाजा छोटा था। दो तीन लोग भाग कर निकले। इसी बीच दो मंजिला घर गिर गया। भीतर छह लोग फँस गये। बाद में पाँच के शव निकाले गये थे। कैसी विडम्बना थी, इन दर्दनाक घटनाओं का सिलसिला थमा ही नहीं।

भूकम्प से नेपाल में काठमाण्डू के बाद सबसे अधिक क्षति गोरखा जिले में हुई। नेपाल के भूकम्प में चर्चा में रहे गोरखा जिले में हर तरफ तबाही का मंजर था। वीरों की इस धरती को जो जख्म मिले थे, उन्हें भुलाने में सदियाँ निकल जायेंगी। तेज बारिश के कारण राहत एवं बचाव कार्य में बाधा पहुँच रही थी। भारतीय सेना के गोरखा रेजीमेन्ट में गोरखा जिले के लोग बड़ी संख्या में हैं। वीर गोरखाओं की इस धरती पर हर तरफ हृदय विदारक तस्वीर नजर आती थी। बचे हुए मकानों में शायद ही कोई ऐसा हो जिसमें दरार न पड़ गयी हो। विद्युत आपूर्ति लगातार पाँच दिनों तक बाधित रही। दुर्गम रास्तों के चलते जिला मुख्यालय तक सहायता पहुँचाने में दिक्कत हो रही थी। यहां तक की लारपाक में तो तीन दिन बाद जाकर हेलिकाप्टर पहुँच पाया। लेकिन धारपाक, शेरपानी व शोला गाँव में बुद्धवार की दोपहर में हेलिकाप्टर उतारने की जगह न होने की वजह के चलते गाँव के ऊपर से ही उसे वापस लौटना पड़ा।

बारपाक में तो सोमवार (27 अप्रैल) की शाम किसी तरह से हेलिकाप्टर से कुछ लोगों को निकाला गया था। लेकिन भूकम्प से सबसे अधिक प्रभावित गोरखा जिले के सालारपाक, गुमदा, बकरांग, मारचू, झंकम्पार शिलीकोट, शोला, शेरपानी, युमी, मानवर आदि गाँवों में बचाव दल नहीं पहुँच पा रहा था। गोरखा जिले के तीस से अधिक गाँवों में संचार व बिजली व्यवस्था भी पूरी तरह से ठप हो गयी थी।

मंगलवार (28 अप्रैल) तक 1200 घरों में से केवल चार घर ही सुरक्षित बचे थे। मंगलवार (28 अप्रैल) को हुई बारिश के बाद गाँवों में संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा भी बढ़ गया था। महिलाएं बच्चे व बुजुर्ग सभी को पानी का इंतजार था। रेणुका श्रेष्ठ, रोजमा श्रेष्ठ आदि महिलाओं का कहना था कि भूकम्प के बाद से हैडपम्प से गंदा पानी निकल रहा था। नगरपालिका ने पानी का टैंकर भेजा तो बच्चे, बूढ़े सभी बर्तन लेकर दौड़ पड़े थे।

नेपाल के सिमजुंग गाँव की हालत देख कर तबाही का सहज अंदाजा लगाया जा सकता था। गोरखा जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूर इस गाँव में कभी 90 घर थे जिनमें से सिर्फ 13 बचे थे और उनमें भी दरारे आ गयी थी। गाँव में बने स्कूल, अस्पताल, डाकघर सब तबाह हो गये थे। अधिकांश घर, स्कूल जमींदोज हो गये और गाँव से सात लोगों की अर्त्थी एक साथ उठी, जबकि दो दर्जन से अधिक लोग घायल थे। क्रिस्ट हास्पिटल, ग्लोबल हास्पिटल सहित कई अस्पतालों के बाहर व कमरों में लाशें पड़ी थी तथा इनसे दुर्गंध फैल रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति अपनी ही रचनाओं से अपनी अवमानना का मुखर होकर बदला ले रही हो और स्वयं मानव जीवन की इस दुर्दशा पर अट्टहास कर रही हो, चेतावनी दे रही हो सारे विश्व को कि अब बस संभल जाओ या तैयार हो जाओ। कलंकी, गोशाला, बालकुमारी, द्वारका, कटेश्वर चौक पर मंगलवार (28 अप्रैल) को चहल पहल देखी गयी थी।

नेपाल सरकार ने 26 अप्रैल 2015 को यह निर्णय लिया कि सरकारी तथा गैर सरकारी अस्पतालों में भूकम्प पीड़ितों की सहायता मुफ्त में की जायेगी।

2. धरती काँपती रही

शनिवार (25 अप्रैल) को आये 7.9 तीव्रता के भूकम्प के बाद लगातार आ रहे कंपन से लोग भयभीत थे। ये भूकम्प कम तीव्रता के थे तथा इनका अन्तराल समय के साथ-साथ बढ़ता जा रहा था। 26 अप्रैल 2015 की शाम आठ बजे राष्ट्रीय भूगर्भ विज्ञान केन्द्र ने तुरन्त पहले आये भूकम्प की तीव्रता 4 इकाई नापी जो 3 बजकर 17 मिनट पर आया था जबकि सोमवार (27 अप्रैल) तक 4 से अधिक तीव्रता वाले 10 भूकम्प उपरांत कंपन महसूस किये गये। शनिवार (25 अप्रैल) को 39 तथा रविवार (26 अप्रैल) को 28 झटके महसूस किये गये। शनिवार (25 अप्रैल) को आये 7.9 तीव्रता के भूकम्प के बाद रविवार (26 अप्रैल) को 6.9 तीव्रता का भूकम्प 12 बजकर 39 मिनट पर महसूस किया गया था। शनिवार (25 अप्रैल) को आये भूकम्प के बाद राष्ट्रीय भू-विज्ञान केन्द्र ने चेताया कि अगले 72 घंटों तक छोटे या बड़े भूकम्प के झटके महसूस किये जा सकते हैं। लगातार झटके आने की प्रवृत्ति व अवधि मुख्य भूकम्प की तीव्रता तथा सतह की संरचना पर निर्भर है। अधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार कंपन की तीव्रता व अवधि घट रही थी। 26 अप्रैल की सुबह 4.7 तीव्रता 6:25 बजे, 4.2 तीव्रता 8:15 बजे, 4.3 तीव्रता 9:59 बजे झटके महसूस किये गये। उसी दिन 10 बजकर 5 मिनट पर तथा 3 बजकर 17 मिनट पर दो और झटके 4 तीव्रता के आँके गये। राष्ट्रीय भू-विज्ञान केन्द्र की विज्ञप्ति ने नागरिकों को सचेत किया कि जिन घरों में दरारें पड़ गयी थी, उनमें प्रवेश न करे क्योंकि हो सकता है वह बार-बार झटकों से कमजोर हो चुकी हो। अतः जिन मकानों में कोई दरार व झुकाव नहीं हो उन्हें ही सुरक्षित मानकर प्रवेश करने की हिदायत दी जा रही थी।

रिचर पैमाने पर 3 से ज्यादा इकाई के भूकम्प से 100 से ज्यादा बार गोरखा धरती के इर्द गिर्द की जमीन काँप उठी थी। 25 अप्रैल 2015 के भूकम्प के प्रथम 2 घंटों के भीतर 12 बार धरती कम्पित हो उठी, जो भूकम्प केन्द्र से दक्षिण-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व में घटित हुआ।

भूकम्प आने के ठीक तीन मिनट बाद पहले झटके ने लगभग अधिकांश घरों को मलवों में बदल दिया था। दुर्भाग्यवश 26 अप्रैल 2015 को पुनः एक बार धरती ने कंपन किया। भक्तापुर घरेलू हवाई अड्डे पर

एकत्र यात्रियों व पर्यटकों ने महसूस किया कि हवाई अड्डे पर निर्मित स्तम्भ कंपन करने लगे थे तथा वहाँ पर स्थित प्रबन्धक व अधिकारियों ने सभी को हवाई पट्टी की तरफ भागने का निर्देश दिया, जहाँ पर कुछ हवाई जहाज पहले से ही खड़े थे। चारों तरफ एक अफवाह फैल रही थी कि एक और बड़ी तीव्रता का भूकम्प अगले कुछ दिनों में आने वाला था।

शनिवार (25 अप्रैल) के बाद से भूकम्प के 40 से अधिक झटके आ चुके थे। इनमें से कुछ झटके भारत में भी महसूस किये गये थे। रविवार (26 अप्रैल) को 6.9 का सबसे तेज झटका दिन में 12 बजकर 39 मिनट पर आया था। बाद में रात में भी झटके महसूस किये गये। भूकम्प का केन्द्र राजधानी काठमाण्डू से 60 किमी पूर्व में था। इस प्राकृतिक आपदा से करीब 66 लाख लोग प्रभावित हुए थे। इस बीच देर शाम आई आँधी व बारिश से राहत एवं बचाव के कार्य में बाधा आ रही थी। पहले भूकम्प के झटके और फिर खराब मौसम के कारण काठमाण्डू हवाई अड्डे को बंद कर दिया गया था। बिजली के अभाव में काठमाण्डू शहर अंधेरे में डूबा हुआ था। दुनिया भर के कई देशों ने नेपाल को राहत और मदद देने की पेशकश की। भारत, अमेरिका, चीन, पाकिस्तान और यूरोपीय संघ नेपाल की मदद कर रहे थे। रेडक्रास, ओक्सफैम, डाक्टर्स विदाउट बार्डर और क्रिश्चियन ऐड समेत कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने भी अपनी टीम भेजने का फैसला किया।

नेपाल में शनिवार (25 अप्रैल) को आये आठ दशक के सबसे शक्तिशाली भूकम्प के बाद भी लोगों की मुसीबत कम होने का नाम नहीं ले रहीं थी। रविवार (26 अप्रैल) को लगातार आते रहे झटकों से लोगों में दहशत बनी रही। झटकों का अहसास होते ही खौफजादा लोग घरों से निकलकर खुले स्थानों की ओर भागने लगते थे। इस बीच भूकम्प से हताहतों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी। भूकम्प के बाद आम लोगों के साथ ही बड़े नेताओं और अधिकारियों में भी खौफ था। विडंबना ही कहे कि देश के राष्ट्रपति श्री राम बरन यादव और उनके सुरक्षा गार्डों को शनिवार (25 अप्रैल) की रात टेंट में गुजारनी पड़ी। राष्ट्रपति आवास के कुछ हिस्सों में दरार आने की वजह से अधिकारियों ने उन्हें टेंट में ही ठहराने का फैसला किया। उल्लेखनीय था कि 'शीतल-निवास' लगभग डेढ़ सौ साल पहले ब्रिटिश शैली की तर्ज पर बनाया गया था।

अधिकारियों ने बताया कि तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कुमार कोइराला का आवास भी भूकम्प से बुरी तरह प्रभावित हुआ था। उनके आवास का मुख्य द्वार क्षतिग्रस्त हो गया था।

नेपाल में बृहस्पतिवार (30 अप्रैल) को 3.9 तथा 4.7 तीव्रता के दो झटकों ने दहशत पैदा कर दी थी। क्षतिग्रस्त सड़कों व बारिश के कारण ग्रामीण इलाकों में मदद पहुँचाना मुश्किल हो रहा था। अधिकांश गाँव पहाड़ियों पर थे, इससे परेशानियाँ और बढ़ गयी थी। गाँव वालों को इस तरह की किसी आपदा से निपटने के लिए ना तो संसाधन थे ना ही ट्रेनिंग। वे ऐसी अवस्था में अपना बचाव करने में असमर्थ हतप्रभ इधर-उधर खड़े थे। बार-बार आ रहे झटके उन्हें सामान्य नहीं होने दे रहे थे। नियति ही बता सकती थी कि उन्हें इस भयंकर आपदा से उबरने में कितने वर्ष लग जाएंगे।

12 मई-2015 को 25 अप्रैल-2015 (7.9 इकाई) के पश्चात सबसे बड़ा झटका आया। जिसे गोरखा-भूकम्प के रूप में जाना गया। यह 150 किमी पश्चिम में था। इन दोनों अवधि के अन्तराल में आये भूकम्प के झटकों ने बहुत सी सतहों की संरचनाओं को बिखेर दिया था। 12 मई-2015 को आये पुनः झटके का मुख्य आकार लगभग 55×30 किमी था। यह भूकम्प 25 अप्रैल 2015 के भूकम्प के केन्द्रबिन्दु से पूर्व की तरफ स्थित था।

25 अप्रैल 2015 को आये भूकम्प उपरान्त, कई इमारतें एक तरफ को झुक गयी थी तथा पुनः बार-बार धरती के कंपन से न केवल उन इमारतों में रहने वालों के लिए खतरे का कारण बन गयी अपितु उस के आस पास रहने वालों के लिए भी खतरे का कारक बन सकती थी। अतः इर्द-गिर्द भय व्याप्त था।

पर्यटक जिन होटलों में रुके थे वहाँ पर कंपन की बारम्बारता को देखते हुए प्रबन्धकों ने परिसर के खुले क्षेत्र में रहने की इजाजत दे दी थी। भूकम्प के प्रत्येक कंपन पर लोग बाहर निकल कर भागने लगते थे। होटलों के गलियारों में पर्यटक एकत्रित रहते थे तथा रात्रि में कई बार बाहर उन्हें निकल कर भागना पड़ता था। यह प्रक्रिया 30 अप्रैल 2015 तक चलती रही। धरती के कम्पित होने के कारण कोई भी अपने घरों व

इमारतो में नहीं जा रहा था। बच्चे हँसते हुए खेल-कूद रहे थे लेकिन वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्यों वे अपने घरों में नहीं जा पा रहे थे। जिससे कि वह अपना गृहकार्य सम्पन्न कर सकें। नवजात शिशु दूध के लिए चीख रहे थे। अधिकांशतः इलाकों में विद्युत सेवा ठप थी। पीने के पानी की प्रत्येक बूंद बहुमूल्य थी। सभी उसे सहेजना चाह रहे थे। इन्हीं परिस्थितियों में दादी व नानियां स्टील के गिलास में चाय पीने से मना कर रही थी क्योंकि वह अच्छी तरह से पानी से धुले हुए नहीं थे।

एक सप्ताह पश्चात् पुनः नेपाल में झटके आने लगे थे। रिचर पैमाने पर इसकी तीव्रता 4.5 आँकी गयी थी। किसी अनहोनी की आशंका देख लोग अपने घरों से बाहर भागते हुए दिखायी दिये। पोखरा, गोरखा, अबू खैरनी, सिगंजुम, नारायण घाट आदि शहरों से घंटे भर तक लोग घरों के बाहर चर्चा कर समय गुजारते दिखे। बाजारों में अफरा तफरी का माहौल रहा। दुकानदार दुकान छोड़ कर भागे, तो मकान मालिक अपना आशियाना। कहीं किसी का कुछ अपना पराया नहीं था सब एक समान स्थिति में थे।

नेपाल 'खाने-पानी' संस्थान के कर्मी मोहर गुरुंग ने बताया कि रूक-रूक कर आ रहे भूकम्प के झटको ने लिपिंग में बहुत बड़ी चट्टान गिरा दी थी। चट्टान में दबे 14 शव निकाले गये, वहाँ कितने लोगों की मौत हुई थी इसका सही आकलन नहीं हो पा रहा था। यहाँ पर्यटकों से भरे छोटे बड़े कुल 15 वाहन गये थे जिनमें एक भी साबुत नहीं बचा था। भाटकोसी के पहाड़ों से पत्थरों का गिरना जारी था, जो अभी भी एक बड़ी समस्या बनी हुई थी। इसे सोच पाना भी बेहद भयावह था।

भूकम्प की त्रासदी के बीच अस्तित्व बचाने के लिए जूझ रहे गोरखा जिले पर फिर प्रकृति ने कहर बरपाया। मंगलवार (28 अप्रैल) की रात नौ बजे तक इस जिले को छह बार भूकम्प ने हिलाया। अब धरती के डोलने की घटना की कल्पना से ही लोग सिहर रहे थे। सुबह भूकम्प की तीव्रता रिचर पैमाने पर 5.8 बतायी गयी। 2 घण्टे की यह अवधि यहाँ के लोगों के लिए दुख के पहाड़ों के बीच दहशत भरी रही। लोग जान बचाने के लिए खुले व सुरक्षित स्थान की तरफ दौड़ रहे थे। बारिश के चलते स्थिति और खराब हो गयी थी। बरसात की परवाह किये बगैर लोग भीगते रहे।

अधिकतर लोग तो शहर छोड़ नीचे 36 किमी दूर अन्त खैरी कस्बे में चले गये। पोखरा निवासी वीरेन्द्र वजारा ने 12 घंटे के अंदर छह बार आए भूकम्प को त्रासदी भरा बताया था। आपबीती सुनाते हुए उनकी आँखों से आँसू छलक उठते थे। उन्होंने बताया कि मंगलवार (28 अप्रैल) की रात नौ बजे पहला झटका आया तो वह शिविर में लोगों के साथ थे। इसके बाद तो भूकम्प आने का क्रम शुरू हो गया। आधी रात 12 बजे व भोर में चार बजे दूसरी और तीसरी बार भूकम्प आया। बुद्धवार (29 अप्रैल) की सुबह छह बजे आए भूकम्प के झटकों से लोग बुरी तरह हिल गये थे।



राष्ट्रीय राजमार्ग पर पड़ी दरारें

गोरखा एवं आसपास के जिलों में मंगलवार (28 अप्रैल) की शाम से आरम्भ हुई मूसलाधार बारिश दूसरे दिन भी जारी रही। भीगते हुए लोगों को रात बितानी पड़ी। नेपाल में भूकम्प के झटकों से मरीज इस कदर डरे हुए थे कि अस्पताल के अंदर भी नहीं जाना चाह रहे थे। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी लोग खुले आसमान के नीचे टेंट में उपचार कराना बेहतर समझ रहे थे। 75 वर्षीय केदार प्रसाद श्रीवास्तव के पेट की सर्जरी होनी थी। शनिवार के बाद से लगातार आ रहे भूकम्प के झटकों के डर से उन्होंने अस्पताल के अंदर इलाज कराने से इंकार कर दिया। उनका अब काठमाण्डू मेडिकल कालेज के बाहर टेंट में इलाज चल रहा था। बारिश, मच्छर और ठंड होने के बाद भी मरीज अस्पताल के भीतर जाने से बच रहे थे। ज्यादातर घायलों का इलाज अस्पताल के बाहर टेंट में ही हो रहा था। डा संजिप्ता पंथ के मुताबिक मरीजों को जब अस्पताल

के भीतर शिफ्ट करने को कहा गया तो उन लोगों ने अंदर इलाज कराने से साफ मना कर दिया। मरीजों के साथ अस्पताल के डाक्टर भी भूकम्प के लगातार झटकों से भयभीत थे। एक और चिकित्सक मनोज शाह का कहना था कि वे कर भी क्या सकते थे, अगर उन्हें मरीजों का इलाज करना है तो उन्हें खुद भी सुरक्षित रहने की जरूरत थी। शुरुआत के दो दिनों तक अस्पताल के भीतर मरीजों का इलाज किया गया था, लेकिन बार-बार आ रहे कंपनों के कारण अब मोबाइल आपरेशन थियेटर में उपचार हो रहा था।

नेपाल की तरह भारत के कई राज्यों में भी 6.9 की तीव्रता वाले भूकम्प के झटके रविवार (26 अप्रैल) को भी लगे। राजधानी दिल्ली, एन सी आर से लेकर बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल और आसाम तक धरती फिर हिल उठी। रूक-रूक कर झटके लगते रहे। रविवार (26 अप्रैल) को दोबारा आए भूकम्प से बिहार में 43 और लोग मारे गये। इससे राज्य में भूकम्प से मरने वालों की संख्या बढ़कर 101 हो गयी थी। उत्तर प्रदेश में रविवार को 12 और लोगों की मौत हो गयी। एक दिन पहले यहाँ पर 23 लोगों की जान गयी थी। लगातार आये झटकों की वजह से बिहार और उत्तर प्रदेश के स्कूलों में सोमवार (27 अप्रैल) और मंगलवार (28 अप्रैल) को छुट्टी कर दी गयी थी।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, बस्ती व नेपाल सीमा से सटे सिद्धार्थनगर एवं महाराजगंज जिले में कई मकानों में दरारे पड़ गई थी। अयोध्या स्थित प्राचीन शीशमहल मंदिर की दीवार दरक गई थी। आगरा में तीन बार झटके महसूस किए गये थे। रविवार (26 अप्रैल) दोपहर 12:39 बजे पहला झटका आने के बाद अपरान्ह 14:15 बजे दूसरा और ठीक 15:00 बजे तीसरा झटका लगा। यह सभी झटके 30 से 35 सेकेण्ड तक जारी रहे।

भूगर्भ शास्त्रियों का मानना है कि भूकम्प के उपरान्त झटकों का कारण जमीनी सतह द्वारा प्रत्यास्थता विकृति ऊर्जा का ह्रास होना था, जो कि भ्रंश में समाहित थी। यही कारण था कि सभी भूकम्प उपरान्त कंपन लगातार निम्न तीव्रता तथा बारम्बारता में घटित हो रहे थे। यदि विश्व के सर्वाधिक तीव्रता वाले भूकम्पों का अध्ययन किया जाये तो यह

विदित होता है कि इस प्रकार भूकम्प के उपरान्त झटके एक या दो सप्ताह तक आते रहते हैं। भूगर्भ शास्त्री यह भी कहते हैं कि अभी तक कभी भी हिमालय क्षेत्र में दो बड़े भूकम्प एक के बाद एक घटित नहीं हुए हैं। डॉ. दीपक चामलिंग, प्रख्यात भूगर्भ ज्ञानी के अनुसार एक बड़ा भूकम्प पश्चिम नेपाल विशेषकर नेपाल व देहरादून के बीच के क्षेत्र में कई वर्षों से संभावित था। सन् 1505 में घटित देहरादून भूकम्प तथा सन् 1934 में आये नेपाल-बिहार भूकम्प के बीच लगभग 500 वर्षों तक विकृति ऊर्जा संचयित हो रही थी, जब कि कोई बड़ा भूकम्प घटित नहीं हुआ था। शोधकर्ताओं के अनुसार विकृति संचयन की दर इस क्षेत्र में अत्यधिक थी। इसलिए इस परिक्षेत्र में सावधान व सतर्क रहने की चेतावनी पूर्व में दी गयी थी।

3. आप बीती

एक विदेशी पर्यटक टाम ग्रीनस्मिथ जिसने उस समय काठमाण्डू में कैम्प किया था, ने एक दैनिक अखबार को पत्र लिख कर उस विहंगम दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया था -

“मैं इस समय काठमाण्डू में था। यहाँ अत्यन्त ही भयावह व दयनीय स्थिति थी। वह इसलिए कि मैं यहाँ के लोगों की त्रासदी देख रहा था तथा प्रभावित जन समुदाय के हादसों का वर्णन सुन रहा था। हालाँकि काठमाण्डू में अनगिनत लोगों की मृत्यु हुई थी परन्तु भयावह तथा सर्वाधिक त्रासदी का शिकार पर्वतीय आबादी थी। वहाँ पर अस्पतालों में क्षमता से ज्यादा घायल मौजूद थे यहाँ तक कि खुले घावों के लिए स्प्रिट का प्रयोग किया जा रहा था जबकि बरामदों में स्वास्थ्य कर्मचारियों के सामने प्रतिदिन घायलों का अम्बार लगा हुआ था। दूर पर्वत घाटी ‘योलमों’ जहाँ से मैं लौटा था, एक सूचना के अनुसार वहाँ की पूरी आबादी बर्बाद हो चुकी थी, खाद्य सामग्री भी बर्बाद हो चुकी थी।”

कुछ विदेशी महिला पर्यटक जो सिर्फ प्राथमिक उपचार में प्रशिक्षित थीं, वे चिकित्सक बन कर दूर-दराज के इलाकों में भूकम्प ग्रसित लोगों का उपचार कर रहीं थी।

प्रतिष्ठित भारतीय लेखक, स्तम्भकार व सांसद श्री एम जे अकबर उस प्रलयकारी भूकम्प के दिन (25 अप्रैल-2015) काठमाण्डू घाटी में ही

थे। इन्होंने एक राष्ट्रीय दैनिक को अपनी आपबीती का वर्णन इस प्रकार किया था-

“मैं शनिवार (25 अप्रैल) की प्रातः जब भूकम्प आया काठमाण्डू के एक होटल के ‘व्यापारिक केन्द्र’ में कम्प्यूटर पर बैठा था। होटल की मैनेजर एक तिब्बती युवती थी। उसने अचानक कम्प्यूटर के स्क्रीन की तरफ इशारा किया। होटल तुरन्त एक नशेड़ी की तरह व्यवहार करने लगा, जिसका पैर मानों जमीन से अलग हो, इस प्रकार पूरा होटल कम्पित हो उठा। वह समय भँवर में फँसे होने जैसा था। मैंने तुरन्त अपना फोन व कागज कम्प्यूटर से उठाया तथा युवती की तरफ भागने के लिए चिल्लाया। उसने हमारी चीख पर ध्यान देने की बजाय एक होटल के कर्मचारी को भयवश जकड़ लिया। दोनों मानों ठंडे पड़ गये हो। मैंने उन दोनों को दरवाजे की तरफ घसीटने का प्रयत्न किया। दरवाजे का शीशा टूटकर बिखर गया तथा अपने कब्जों को छोड़कर लटक गया था। इस प्रकार सौभाग्य से मैं बाहर की तरफ भागने में सफल हुआ। गलियारा खाली था, चीजे इधर से उधर बिखरी पड़ी थी। मैं मुख्य द्वार से बाहर भागा। जब धरती संभली, होटल की सीढ़ियों में लोग जमे दिखाई दिये। उस दिन शाम तक कंपन आते रहे, हम सभी छह घण्टों तक बाहर ही रहे। कुछ ही लोगों को भूख महसूस हो रही थी बाकी सदमे के कारण भूखे रहे। एक पुरातन स्मारक जो होटल के बगल में था वह इस आपदा का गवाह बना। पूरे स्मारक में आसमान से कड़कती बिजली की तरह एक बड़ी दरार बन गयी थी मानों स्मारक ने अपनी स्वयं की ऊपर से छवि ली हो।”

बारपेक ग्राम विकास समिति के अन्तर्गत मान्दरे निवासी 66 वर्षीय गोथेलाल गुरुंग, एक मलवे के ढेर के इर्द-गिर्द घूम रहा था। वह मलवा कुछ समय पूर्व उसका घर था। यह स्थान उसके परिवार का कब्रिस्तान भी बन गया, जहाँ वह अपने परिवार के सात सदस्यों का संसाधनों के अभाव में व अकेला होने के कारण अन्तिम संस्कार भी न कर सका तथा सभी को वहीं मलवे में दफनाना पड़ा जिसमें उसका पुत्र तथा पौत्र भी शामिल थे। गुरुंग के अनुसार पूरा गाँव एक कब्रिस्तान में परिवर्तित हो चुका था। इस प्रकार की आप बीतियों को सुनकर बड़ी-बड़ी बातें करने वाली मानव जाति की स्थिति इस ब्रह्माण्ड में एक छोटे असहाय कृमि सी प्रतीत होती थी।

काठमाण्डू निवासी पार्वती गौतम के अनुसार 25 अप्रैल के भूकम्प के कारण उसके पुराने घर की दरारे मकड़ी के जाल की भाँति बन गयी थी तथा भवन एक तरफ झुक गया था। घर की दीवारें एवं छत की दरारें ऐसी प्रतीत हो रही थी मानों कोई नदी कई डेल्टाओं से होकर गुजर रही थी। पार्वती को हर पल यह डर लगा रहा कि उसकी मृत्यु कभी भी हो सकती थी। यही कारण था कि वह कई दिनों तक अपने बच्चों के साथ खुले मैदान में रात काटती रही।

चिटवान की बुजुर्ग महिलाओं के अनुसार उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी में कभी भी इमारतों को इस तरह कंपन करते महसूस नहीं किया था। ज्यादातर लोग सड़कों पर आ गये थे, यही अनुभव हेताउदा तथा बीरगंज में भी था। लोग अपनी जिंदगी के लिए घरों से निकलकर सड़कों पर दौड़ रहे थे। सारा दृश्य प्रकृति की विनाशलीला का भयानक चरमोत्कर्ष प्रतीत होता था जिसने सभी को शब्दहीन मूक दर्शक बना दिया था।

मलेशिया के पूर्व मानव-संसाधन मंत्री श्री फाँग-चान-आन नेपाल भूकम्प के दौरान नेपाल में फोटोग्राफी अभियान के तहत भक्तापुर में ही थे। उन्होंने अपनी आपबीती एक दैनिक में प्रकाशित की उनके अनुसार 25 अप्रैल 2015 को वह नेपाल की प्राचीन राजधानी भक्तापुर में भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने उस दिन प्रातः से वहाँ प्राचीन दुकानों व स्तूपों के साथ हिन्दू साधुओं की फोटो ली, जो वहाँ मन्दिरों में अपनी मान्यताओं का निर्वाह कर रहे थे। बच्चे गलियों में दौड़ रहे थे। उन्होंने बताया कि वह एक मुस्कराते हुए साधू की फोटो जो एक प्राचीन स्तूप के साथ खड़ा था खींच रहे थे तभी अचानक उन्होंने अनुभव किया कि सतह से जोर से आवाज आ रही थी। उनका मित्र मशहूर व अनुभवी फोटोग्राफर डेनियल वांग अचानक चिल्लाया “सीधे खड़े रहो! सीधे खड़े रहो! भूकम्प आ रहा है”। वे चारों तुरन्त मुड़े तथा एक दूसरे का चेहरा स्तब्ध होकर निहारने लगे और दृढ़ता के साथ अपने हाथों से एक दूसरे के कंधों को पकड़ लिया जिससे वे लोगों की भगदड़ तथा आसपास की इमारतों के गिरने से अपने आप को बचा सके। जमीन से कड़कड़ाती आवाज लगभग 30 सेकेण्ड बाद बंद हो गयी थी। वे जिस छोटी सी जगह पर खड़े थे, खूब जोर का गर्द से भरा धमाका हुआ तथा पूरा स्थान पत्थरों के टुकड़ों से पट गया।

फॉग चान आन ने स्तूप की तरफ नजर दौड़ायी जहाँ पर साधू बैठा था। परन्तु वह जगह अब मलवों में बदल चुकी थी, सिर्फ प्राचीन पत्थर निर्मित हाथी किसी तरह शेष था। लोग इधर से उधर सहायता की पुकार में दौड़ रहे थे। पर्यटकों का समूह पतली संकरी गलियों के काफी हाउस से निकल कर बाहर सुरक्षित स्थानों पर भाग रहा था। वे इसलिए सुरक्षित स्थानों पर भाग रहे थे क्योंकि तब तक कॉफी हाउस का नुकसान नहीं हुआ था, उन्हें वह साधू कहीं नहीं दिखा।

उन्होंने वर्णन किया कि वह अपने भारी फोटोग्राफिक उपकरणों के साथ संकरी गलियों से बाहर निकल रहे थे। वे सभी टूटे पत्थरों, मलवों तथा झूलते बिजली व केबिल के तारों के बीच बचते-बचाते दौड़ते हुए भक्तापुर के निकास से निकल रहे थे। मुख्य सड़कों में दरार आ गयी थी। वहाँ पूर्णतया अफरा-तफरी का दृश्य था। लोगों का समूह ईंटों व पत्थरों के मलवों को हटाने का प्रयास कर रहा था जिससे उनमें अपने परिजनो को खोज सकें। बच्चे भयवश चीख रहे थे तथा बेचैनी में इधर-उधर भाग रहे थे। भक्तापुर का घरेलू हवाई अड्डा बन्द कर दिया गया था तथा हजारों यात्री निःसहाय बाहर खड़े प्रस्थान स्थल पर प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी जगहों पर इंटरनेट संचार व्यवस्था बाधित थी, जिससे वे बाहर क्या घटित हो रहा था की जानकारी प्राप्त नहीं कर पा रहे थे।



बाधित एवं ध्वस्त हुई विद्युत एवं संचार सेवा

सिन्धुपाल चौक निवासी रेशम गिरी ने कभी सोचा भी नहीं था कि उनका नया बना मकान शनिवार को आये भूकम्प में भरभराकर ताश के

पत्तों की तरह बिखर जायेगा। जिसने उनके सारे परिवार को मकान के साथ विनाश लीला का शिकार बना डाला था। उनका नया मकान भूकम्प के झटके को सहन नहीं कर सका था, फलस्वरूप उनकी पत्नी, पुत्र तथा साली की मलवे में दबकर मृत्यु हो गयी थी। रेशम गिरी बिलख रहे थे “पहले मैंने अपनी पत्नी व पुत्र को खोया, मेरे पास खाने के लिए भी कुछ नहीं है, इससे अच्छा होता कि मैं भी मर जाता”। वास्तव में ऐसे अवसर पर स्वयं का जीवन बढ़ा बेईमानी लगने लगता है जब आप अपने प्रियजनों को एक साथ खो चुके हों।

अंजू सिटलिंग स्थानीय अध्यापिका की आंशका उचित ही थी कि यदि यह भूकम्प किसी अधिकारिक कार्य दिवस के दिन घटित होता तो प्रभावित लोगों की संख्या के अनुमान की कल्पना भर से वे सभी सिहर उठती थीं।

काठमाण्डू निवासी कमल जी. सी. के अनुसार उन्होंने अपने जीवन का पहला व नया अनुभव देखा कि उनका घर लगभग 20 डिग्री एक तरफ झुक गया था। वह किसी तरह घर से निकल कर भागने में सफल हुए। उन्होंने यह भी बताया कि भूकम्प का सबसे भयानक परिणाम रुक-रुक कर आ रहा कंपन था क्योंकि ये झटके पहले से ही कमजोर हुई इमारतों को जमींदोज करने में सक्षम थे। वे सभी इतने भयभीत थे कि वे हल्के से झटके या भ्रम में आये झटके में भी खुले मैदान की तरफ भाग रहे थे। उनकी चार वर्षीय पुत्री बार-बार भागने के कारण इतनी घबरायी हुई थी कि वह लगातार चीख रही थी।

बीरगंज छपकैया के इंजीनियर रवि कर्ण ने बताया कि अधिकारिक रूप से कपिलवस्तु के 12 मजदूर रसुवा में लापता थे। मैलुगं हाइड्रो पावर में 30 मजदूर कार्यरत थे, जिनमें से सिर्फ 18 का ही पता चल पाया था। जान बचाकर घर पहुँचे मानसिंह धर्ती ने बताया कि काम करते हुए अचानक पहाड़ हिलने लगा, चट्टाने गिरने लगी, अंधेरा छा गया और फिर- कुछ भी होश नहीं रहा। दूसरे दिन उन्होंने अपने आपको पेड़ों की झुरमुट में पाया था।

भोटसिया की 90 साल की आइती तमांग की व्यथा दिल दहलाने वाली थी। उन्होंने आठ-नौ साल की उम्र में भी एक बार भीषण भूकम्प की मार झेली थी और आज पुनः इस बुढ़ापे में भी। बेटा-बहू, पोता-पोती सभी

को मलवे के ढेर में से निकालने की अंतहीन चेष्टा में वे अपनी काया को घसीटती थी पर कुछ भी हासिल नहीं हो पाता था। इसी तरह भक्तापुर की 92 वर्षीय रत्नमाया प्रजापति थीं, जिन्हें पूरे वार्ड के लोग आमा (माँ) कहते थे। उन्होने भी दोनों भीषण भूकम्पो को अपनी खुली आँखों से देखा था। गोमा भट्टराई की पत्नी को खुद पर आश्चर्य हो रहा था कि वह 14 दिन की अपनी बच्ची के साथ कैसे बच गयी थी, उनका पति कतार में नौकरी करता था।

काठमाण्डू से 20 किमी दूर स्थित गाँव शंखपुरा थाली नदी के किनारे जंगल से सटा है। वृद्ध प्रेस कर्मी वग्नचार्य ने बताया कि इतनी बड़ी विपदा उन्होने पहले कभी नहीं देखी थी। सन् 1934 में जब भूकम्प आया था तो वे तीन साल के थे। इस बार तो सब कुछ आँखों के सामने घटित हुआ था। सात हजार की बस्ती में 750 लोगों की तो मौत हो गयी थी। एक हजार घरों में 700 ध्वस्त हो चुके थे। इसी तरह की क्रूर विनाशलीला की शिकार मायापोखरी निवासी कविताबाई की भी थी। बच्चे हेमल (8 वर्ष) का शव बुद्धवार (29 अप्रैल) को मलवे में मिला था। पशुपति आर्य घाट पर दाह-संस्कार हुआ। उसका रो-रो कर बुरा हाल था। थक जाने पर वह नेपाली भाषा में बुदबुदाने लगती थीं लेकिन उनका दर्द प्रखरतम रूप से सर्वज्ञात था।

बागमती नदी के तट पर दर्जनों चिताए अंधेरे को चीर रही थी। शनिवार की तबाही के बाद यहाँ चिताओं की आग नहीं बुझ रही थी। रोज सैकड़ों शवों का दाह संस्कार किया जा रहा था। इन्हीं में से एक चिता के पास खड़ा था शंकर प्रधान। जिस पर तो मानो आसमान ही टूट पड़ा हो। वह नंगे पैर एकटक चिता की लपटों को देख रहा था। उसने एक दो नहीं बल्कि 18 परिजनों का अंतिम संस्कार किया था। भूकम्प के समय शंकर के परिवार में एक धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन था। परिवार के सदस्यों की शांति और सुरक्षा के लिये यह आयोजन किया जा रहा था। उस समय परिवार के 30 सदस्य घर पर ही थे। अचानक धरती का कांपना शुरू हुआ और इमारत हिलने लगी। कुछ लोग भागने में कामयाब रहे। इसी बीच तेज आवाज के साथ चार मंजिला इमारत धूल के गुबार में बदल गयी। 18 लोग जिंदा फँसे रह गये थे, इसमें एक भी जिंदा नहीं बच सका।

युवा वर्ग धरहरा टॉवर की सीढ़ियों पर बैठ कर साथ जीने-मरने की कसमें खाते थे। सुखद भविष्य के सपने देखते थे। टॉवर पर अपने प्यार की निशानियाँ बनाया करते थे। जलजले के दिन दर्जनों ऐसे प्रेमी युगल पल भर में जिंदा दफन हो गये। रोहित व आरती भी उन बदनसीब जोड़ों में से एक थे। इनके अलावा सुप्रिया-महर्जन, सूरज-सुनिश्ठा, नानो-महर्जन समेत करीब पाँच दर्जन प्रेमी युगल भी भूकम्प का शिकार हो गये थे। काठमाण्डू के युवाओं का दिल यहाँ धड़कता था तभी तो जो बच गये वे यहाँ आकर प्यार के अपने बनाये निशान को फिर ढूँढ़ते फिर रहे थे। जलजले ने प्यार के इजहार के रूप में पहचान बना चुके धरहरा टॉवर को कब्रगाह बना दिया था। व्यवसायी संजय थापा समेत कई अन्य लोगों ने कहा कि इसकी 330 सीढ़ियों को एक-एक कर पार करते प्रेमी युगल हसीन सपने बुना करते थे। इसकी हर सीढ़ी किसी न किसी प्रेमी युगल की प्रेम कहानी की गवाह थी। भीमसेन टॉवर के नाम से भी चर्चित धरहरा टॉवर अब इतिहास बन चुका था। टॉवर को नेपाल के पहले राजा भीमसेन ने बनवाया था। मलवा हटाने के क्रम में एक से बढ़कर एक हृदयविदारक दृश्य देखने को मिल रहे थे। जमींदोज हो चुके धरहरा टॉवर, जिसके ऊपर चढ़कर सैलानी पूरे काठमाण्डू को देखने का लुत्फ उठाते थे। मलवा हटाते समय आपस में लिपटे एक दंपति के शव को देखकर सभी का दिल पिघल उठा। तीन माह पूर्व मनीषा रिजाल नामक 22 वर्षीय जो बाहुनडी (झापा) निवासिनी थी की शादी सिन्धुली के निशांत खड़का से हुई थी। नवदम्पती शनिवार को ही काठमाण्डू पहुँचे थे और धरहरा पर चढ़ने गये थे। उन्हें कहाँ पता था कि इस टॉवर पर चढ़ने के बाद वे फिर कभी उतर ही नहीं पायेगे।

मलवे में तब्दील हो चुकी इमारत से 33 घंटे बाद जीवित बचायी गयी स्थानीय महिला सुनीता सितौला ने अपना खौफनाक अनुभव बयान किया कि ऐसा लग रहा था कि वह तबाही के बाद किसी दूसरी दुनिया में आ गयी थी। वह अपने परिवार के साथ पाँच मंजिले घर में रहती थी। भूकम्प आने के वक्त पति और बच्चे किसी तरह घर से निकलने में कामयाब रहे लेकिन वह कई अन्य लोगों के साथ इमारत ढहने से दब गयी थी। मलवा निकालने के दौरान केवल वहीं जिंदा बची थी। इमारत के नीचे दबे अन्य लोग मारे गए थे। यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता था कि उनके इस हादसे से उबरने में शायद सारी उम्र निकल जाए।

नेपाल में आये भूकम्प से दुनिया की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर फँसे पर्वतारोहियों की मुसीबत रविवार (26 अप्रैल) को फिर हिमस्खलन होने के कारण बढ़ गयी थी। भारतीय पर्वतारोही अर्जुन बाजपेयी ने मकालू बेस कैम्प से फोन पर बताया था कि अभी-अभी एक और हिमस्खलन हुआ था। ताजा हिमस्खलन पहले की अपेक्षा उनके कैम्प के नजदीक था, लेकिन वे सुरक्षित थे। एक अन्य पर्वतारोही ऐड्रिगन बैलिंगर ने ट्वीट किया था- एक और बड़ा हिमस्खलन, बर्फ की चट्टानें कैम्प के उत्तरी हिस्से पर गिरी थी। शनिवार हिमस्खलन से कुछ पर्वतारोही बर्फ में दफन हो गये थे। इस कैम्प में हिमस्खलन से 30 टेंट दब गये थे। गूगल कंपनी के एकजीक्यूटीव कॅलिजेनिया निवासी डैन फ्रेडिनबर्ग की हिमस्खलन से मौत हो गयी थी। वह अमेरिकन मेडिसन माउन्टेनियरिंग टीम के सदस्य थे। इस दल में शामिल गूगल के तीन और लोग सुरक्षित थे। इसी टीम के बेस कैम्प के डाक्टर की भी मौत हो गयी थी। नेपाल पर्यटन मंत्रालय के अनुसार करीब एक हजार पर्वतारोही जिसमें 400 विदेशी थे, बेस कैम्प या चोटी के पास फँसे थे। 22 घायलों को हेलिकाप्टर से निकालकर पास के गाँव में पहुँचाया गया था। इस काम में भारतीय वायुसेना के हेलिकाप्टर भी जुटे थे। उन्होंने 61 पर्वतारोहियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया तथा बर्फ में दबे 19 शवों को निकाला। 54 वर्षीय एक भारतीय पर्वतारोही अंकुर बहल अन्य साथियों के साथ कैम्प-2 में सुरक्षित थे। उन्हें कैम्प-1 से कैम्प-2 में भेजा गया था।

नेपाल में आये भूकम्प में अमेरिकी फिल्म एडिटर मिशेल पेज तथा उनके पति डेनियम एडम भी सौभाग्य से सुरक्षित बच गये थे। 58 वर्षीय मिशेल ने 'स्पाइडर मैन' और 'द प्लेयर' जैसी फिल्मों के लिए काम किया था। रेडक्रास संगठन ने पहले उनके नाम को लापता लोगों की सूची में डाल रखा था। रेडक्रास की वेबसाइट और उनके फेसबुक अकाउन्ट के अनुसार वह जीवित बताये गये।

इजरायली नागरिक अमिताई ने अपनी आप बीती का बयान किया "भूकम्प का ऐसा मंजर उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। काठमाण्डू में ही सैकड़ों लोगों की जान गई थी। पूरा शहर तबाह हो चुका था। ऐसे समय में पूरी दुनिया को नेपाल का साथ देना चाहिए"। भूकम्प के बाद असली समस्या वहाँ लगातार छोटे-मोटे अतंराल पर आ रहे झटके थे।

मकान जर्जर हो चुके थे। लोग घरों में जाने से परहेज कर रहे थे। पूरा काठमाण्डू सड़कों पर था हालाँकि उन्होंने अपने देश के दूतावास में शरण ले रखी थी। एयरपोर्ट पर हजारों यात्री विमान के इंतजार में रात से ही बैठे थे। काठमाण्डू एयरपोर्ट पर अफरातफरी का माहौल था।

मलेशिया में एक कारखाने में काम करने वाले 31 वर्षीय जनक बी. के. शनिवार को आये भूकम्प (25 अप्रैल) से पाँच दिन पूर्व ही अपनी माँ का अन्तिम संस्कार करके लौटे थे। उनका गाँव ओकलडोंगा जो कि माउन्ट एवरेस्ट के समीप था, भूकम्प उपरान्त आये हिमस्खलन से पूर्ण रूप में बह कर साफ हो गया था जिसमें उनके तीन साथियों की मृत्यु हो गयी थी।

काठमाण्डू निवासी प्रमोद मिश्रा ने बताया कि वे 24 अप्रैल 2015 को देर तक बिस्तर पर अध्ययन करते रहे। सोने से पूर्व उन्होंने निर्णय लिया था कि सुबह वह काठमाण्डू के मन्दिर में जायेंगे तथा अपनी स्वर्गीय माँ को याद करेंगे। उन्हें क्या पता था कि नियति यह चाह रही थी कि वह प्रातः उठें और सिर्फ अपनी माँ ही नहीं अपितु नेपाल की हजारों माँओं की याद में प्रार्थना करें।

सिन्धुपाल चौक के कई ग्रामीण अपने-अपने घरों के मलवों में चावल, मक्का व खाने की वस्तुएँ तलाशते देखे गये, जबकि उन स्थानों पर दुर्गन्ध भी आ रही थी। सैकड़ों मवेशियों की लाशें बिखरी पड़ी थी। संगाचौक, चौतारा जो जिला सिन्धुपाल चौक का मुख्यालय था, वहाँ मलवों व ध्वस्त इमारतों में मृतकों के दबे होने से दुर्गन्ध आ रही थी। बचाव कर्मियों के लिए यह दुर्गन्ध नई नहीं थी लेकिन पहली बार महसूस करने वालों के लिए यह असहनीय तो थी ही अन्न-जल ग्रहण करना भी मुश्किल हो रहा था। जिला मुख्यालय में लगभग 90 प्रतिशत भवन ध्वस्त हो चुके थे तथा स्थानीय लोग बाहर खुले में दिन-रात काटने के लिए बाध्य थे। जिला मुख्यालय मंगलवार तक एक भुतहा स्थान सा दिख रहा था क्योंकि स्थानीय लोग स्थानीय बाजार केन्द्रों से पलायन कर चुके थे। जिन घरों में दरारे नहीं पड़ी थी, उन घरों में भी लोग घुसने व रात व्यतीत करने के बारे में सोचकर भयभीत हो रहे थे।

भूकम्प से मची तबाही के बाद दुखों का समंदर बने गोरखा जिले का भारत से गहरा नाता रहा है। महायोगी गुरु गोरखनाथ ने इसी भूमि के

कालिका मंदिर में तपस्या की थी। भूकम्प के चलते यह मंदिर पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था। प्रशासन ने दुर्घटना की आशंका में फिलहाल पर्यटकों के लिए इसे बंद कर दिया था। तिब्बत सीमा से सटे गोरखा जिले को प्राकृतिक आपदा ने बदरंग कर दिया था।

“वो भयानक मंजर भुलाए नहीं भूल सकता। ताश के पत्ते की तरह ढहती इमारतें, लाशों के ढेर, हर तरफ चीख पुकार” काठमाण्डू से लौटे बबलू सिंह ठाकुर नेपाल में आई त्रासदी की चर्चा करते - करते एकाएक चुप हो जाते थे। उनका चेहरा साफ बयौं करता था कि भूकम्प से जुड़ी खौफनाक यादों को भूलाने में लम्बा अरसा लगेगा। उन्होंने त्रासदी के पलों को ऐसे बँया किया, उन्होंने कहा कि भूकम्प वाले दिन शनिवार होने के चलते नेपाल में साप्ताहिक अवकाश था, काठमाण्डू से सटे शांतिनगर में खाना खाने के बाद वह टीवी देख रहे थे कि अचानक पौने बारह बजे घर हिलने लगा। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाते, बाहर से चीख-पुकार की आवाजें आने लगी। वे बिना कुछ सोचे समझे बाहर भागे। वहाँ का नजारा देखा तो आश्चर्यचकित रह गये। इमारतें पेड़ - पौधों की तरह हिल रही थी कई इमारतें देखते ही देखते जमींदोज हो गयी। क्षेत्र का प्रवेशद्वार उसी समय एक सार्वजनिक वाहन पर गिर गया, जिसमें 15 लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी थी।



मलवों में दबा एक सार्वजनिक वाहन

चारो ओर चीख पुकार का आलम था। यह हालात भूकम्प के दिन का था। इसके बाद के निरन्तर झटकों ने हालात को बद् से बद्तर बना दिया था।



निरन्तर झटकों के कारण विध्वंस

नेपाल के काठमाण्डू से जिदंगी को जीत कर लौटे चार भारतीयों ने अपनी आपबीती सुनाई। उनके सामने अभी भी चंद सेकेण्ड में नष्ट होने वाली मीनार धरहरा टावर व उस समय के हालात दिखायी दे रहे थे। जपचा के ऊँचा अमीरपुर गाँव के निवासी ऋषिपाल सिसौदिया ने बताया कि वह नेपाल के काठमाण्डू में दूर संचार विभाग में काम करते थे। 25 अप्रैल को भूकम्प के समय वह दूर संचार विभाग में अपने तीन भारतीय सहयोगियों के साथ जेनरेटर को ठीक करने का प्रयास कर रहे थे। इसी दौरान उन्हें भूकम्प की आहट महसूस हुई। लोग इमारतों से निकलकर मैदान की तरफ भागने लगे। उनका साथी सुभाष बिल्डिंग के मलवे के नीचे दब गया। किसी तरह जान बचाकर उसे मलवे के नीचे से निकाला गया। उसका हाथ टूट गया परन्तु जान बच गयी। इसी दौरान दूर-संचार विभाग के सामने खड़ी वर्षों पुरानी धरहरा मीनार चंद मिनट में मलवों में तब्दील हो गयी। ऋषिपाल अपने साथियों को लेकर मैदान में आ गये थे।

काठमाण्डू से तीन किमी दूर रामेछाप गाँव में सहेली की बिटिया की शादी में शामिल होने गयी कोलकाता की गीता देवी को देखकर भूकम्प के खौफ को महसूस किया जा सकता था। विदाई के कुछ देर बाद आए भूकम्प से वह क्षेत्र कराह उठा। गीता दो साथियों के साथ अनजानी राहों

पर खुद को बचाने के लिए दौड़ पड़ी। उनकी आँखों ने इमारतों को रेत बनते और मदद की गुहार लगाते लोगों को सदा के लिए सो जाते देखा। वह तीन दिन बाद उस ठिकाने पर पहुँची जहाँ के माहौल ने यह विश्वास दिलाया कि अब वह सुरक्षित थी लेकिन उस हादसे से गुजरने के बाद यर्थात् को स्वीकार कर पाना मुश्किल हो रहा था। गीता ने बताया कि 23 अप्रैल को सहेली के घर शादी के बाद काठमाण्डू घूमने की योजना थी। यही सोचकर 25 अप्रैल सुबह वह सहेली के घर से जल्दी निकली। सुंदर वादियों के बीच खुशनुमा मौसम ने यात्रा को सुहावना बना दिया था। अभी आधा रास्ता भी तय नहीं किया था कि अचानक बस हिलने लगी। ड्राइवर ने बस रोकी, सभी यात्री नीचे उतरे और सड़क पर बैठ गये। तभी पहाड़ी पर बने एक मकान की खिड़की से पाँच लोग मदद की गुहार लगाते दिखे। देखते ही देखते वह इमारत रेत की तरह पहाड़ों से टकराते हुए नीचे आ गिरी थी।

हैदराबाद निवासी चन्द्र मोहन ने बताया कि वे बिजनेस मीटिंग के सिलसिले में काठमाण्डू गये थे। भूकम्प आया तो वे अपने होटल में थे। एकाएक जमीन हिलने लगी। पहले तो उन्हें लगा मानो चक्कर आ रहा हो। वे सभलने की कोशिश करने लगे, तभी उनकी नजर कमरे की खिड़की और दरवाजों पर पड़ी जो काफी तेजी से हिल रहे थे। यह देख वे तेज गति से चीखते हुए बाहर सड़क पर पहुँच गये। इसी बीच उनकी आँखों के सामने होटल की तीन मंजिले भरभराकर गिर गयी। वे भूतल में थे इसलिए बच गये।

मुम्बई निवासी हर्षद ने नई दिल्ली हवाई अड्डे पर बताया कि वे कंपनी के काम से काठमाण्डू गये थे। शनिवार की सुबह वे कार से निकले, लेकिन रास्ते में ही भूकम्प आ गया। संयोग से ड्राइवर ने जहाँ कार रोकी वह खुली जगह थी। उन लोगों की आँखों के सामने कई इमारतें जमींदोज हो गयीं। कुदरत का कहर व मौत का ऐसा खौफनाक मंजर उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। मलवे से निकाली गयी लाशों के ढेर कई जगह लगे हुए थे।

आसाम की महिला किसान रूमावा ने आँखों देखी बर्बादी का बयान इस प्रकार किया, जब भूकम्प आया तब वे काठमाण्डू में एशियाई देशों के किसानों के लिए धुरीखेल कस्बे में आयोजित सम्मेलन में हिस्सा ले रही

थी। यह संयोग की बात थी कि यह आयोजन खुली जगह पर हो रहा था। एकाएक धरती हिलने लगी। पूरा पंडाल गिर गया। हालाँकि किसी की जान नहीं गई, लेकिन जब वे लोग वहाँ से निकले तो काठमाण्डू में हर तरफ चीत्कार सुनाई दे रहा था। लोगों के दिलों दिमाग पर भूकम्प का ऐसा खौफ था कि वे घर के भीतर नहीं जा रहे थे।



पुनः झटकों का खौफ : सड़क पर पसरी जिंदगी

जम्मू के उधमपुर की रेनू ने भले ही आस्ट्रेलिया की नागरिकता भी ले ली थी, लेकिन वह खुद को कश्मीरियत का ब्रांड एम्बेसडर मानती थी। मंगलवार (28 अप्रैल) की दोपहर गाजियाबाद में स्थित इंदिरापुरम स्थित 'विंडर पार्क सोसायटी' के सदस्यों को इस स्तब्धकारी सूचना पर भरोसा ही नहीं हो रहा था कि उनकी कश्मीरी गर्ल एवरेस्ट पर हिमस्खलन के बाद वहाँ की फिजाओं में खो गई थी। रेनू फोतेदार को दुनिया में ट्रांस पर्सनल काउंसलर के तौर पर भी पहचाना जाता था। स्विट्जरलैण्ड से चलकर 24 अप्रैल यानि शुक्रवार को एवरेस्ट के बेस कैम्प पहुँची थी। उनका इरादा इस अभियान को दो महीने देकर जून में रोमानिया में होने वाली इंटरनेशनल कांफ्रेंस में शिरकत करना था। एवरेस्ट के बेस कैम्प पहुँचने के बाद रेनू फोतेदार ने अपने दोनों बेटों तथा पति से बात की थी। रविवार (26 अप्रैल) को जब एवरेस्ट पर हिमस्खलन हुआ तो बेटे तुषार ने उनकी तलाश शुरू कर दी। पति लोकेश एवरेस्ट की चढ़ाई में मदद करने वाले शेरपाओं के साथ बेस कैम्प पहुँचे तथा रेनू के शव की शिनाख्त की। मंगलवार (28 अप्रैल) को वह शव लेकर काठमाण्डू पहुँचे थे।

नेपाल में आये विनाशकारी भूकम्प में चमत्कारिक रूप से जिदंगी बचने के भी उदाहरण सामने आये। एक शिशु 22 घंटों तक मलवे में दबा रहा और उसकी माँ इस दौरान न तो सो सकी न हीं उसे भूख लगी। बचाए गये पाँच माह के बच्चे सोनित अवाल की माँ रसमिल अवाल ने बताया कि कुछ हाथ की दूरी पर बच्चा मदद के लिये रो रहा था। अपनी सीमित ताकत और कमजोर हो गये हो गये हाथ से बच्चे के पिता मलवे के कुछ पत्थरों को हटा पाये थे। जिस समय भूकम्प आया उस समय बच्चा चार मंजिले घर के ऊपरी हिस्से में सो रहा था। झटके में एक आलमारी उसके ऊपर आ गिरी थी जिसके कारण ही वह दबने से बच गया। बच्चे को सिर्फ सिर पर एक खरोच के अलावा और कोई नुकसान नहीं हुआ था।

मानवता से बड़ा कोई धर्म और न ही कोई पेशा होता है। इसे चरित्रार्थ किया सी एन एन के रिपोर्टर डा संजय गुप्ता ने भूकम्प से बुरी तरह घायल एक किशोरी की जान बचाकर। 45 वर्षीय डा संजय उन दिनों नेपाल में भूकम्प की रिपोर्टिंग के लिए गये हुए थे। इस दौरान उनका सामना 15 साल की एक किशोरी से हुआ। शनिवार (25 अप्रैल) को आए शक्तिशाली भूकम्प के तेज झटकों के बाद वह एक दीवार के नीचे आ गयी थी।

नेपाल समेत भारत के कुछ राज्यों को हिला देने वाले भूकम्प ने एक बार फिर प्रकृति के सामने मानव को बौना साबित कर दिया था। अकेले नेपाल में भूकम्प के झटकों ने हजारों लोगों की जान ले ली और बड़े पैमाने पर घरों को उजाड़ दिया था। भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग लगातार चलने वाली भयानक प्रकृति की यह एक और विनाशलीला थी।

4. त्वरित कदम

भारतीय दूतावास, काठमाण्डू ने फौरन अपनी सूची के अनुसार भारतीयों की खोज बिन शुरू कर दी। प्रत्येक भारतीय एक दूसरे से सम्पर्क कर रहा था। सर्वप्रथम वक्तव्य भारतीय प्रधानमंत्री का आया जो समस्त प्रभावित क्षेत्रों में स्वतः प्रसारित हो गया कि भारत ने राहत एवं बचाव कार्य की पहल की थी जिस पर हर भारतीय को गर्व था विशेषतया जब वह नेपाल की धरती पर हो। उसी रात तक भारतीय वायुसेना के चार

भारत वाहक विशाल वायुयान एन डी आर एफ की टीमों, बचाव उपकरणों एवं संसाधन के साथ त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई पट्टी पर उतर चुके थे।

भारतीय राजदूत श्री रंजीत रे स्वयं त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। उन्होंने समस्त भारतीय राहत एवं बचाव कार्य का सुचारु संचालन उसी दिन (25 अप्रैल 2015) से सुनिश्चित करने में मुख्य भूमिका निभाई। भारतीय दूतावास का प्रत्येक सदस्य मानवीय सेवा का दूत बना था।

भारत ने भारतीय वायुसेना का एक भारवाहक विमान 25 अप्रैल को खोज एवं बचाव दल के साथ भेजा, जो काठमाण्डू के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने वाला पहला विमान था। यह विमान एन डी आर एफ के बचाव दल व उपकरणों के साथ भूकम्प घटित होने के 6 घंटों के भीतर काठमाण्डू पहुँच गया था।

त्रासदी के छह घण्टे के भीतर राहत सामग्री और बचाव दल के साथ काठमाण्डू में पहला विमान भारत का ही उतरा था। शनिवार (25 अप्रैल) को भूकम्प आने के एक घंटे के भीतर भारत के प्रधानमंत्री घटना से प्रभावित बिहार और सिक्किम के मुख्यमंत्रियों तथा भूटान में भारतीय दूतावास तथा नेपाल के राष्ट्रपति से बात कर चुके थे।

शनिवार (25 अप्रैल) की देर रात भी वायुसेना का 'सी-17 ग्लोब मास्टर' गुसनेक लाइट में रवाना किया गया था। यह तकनीकी सिर्फ आपात स्थिति में ही इस्तेमाल की जाती है। हिंडेन एयरफोर्स स्टेशन के बेस कैम्प से रविवार सुबह दो 'सी-17 ग्लोब मास्टर' विमानों को राहत व बचाव कार्य के लिए नेपाल रवाना किया गया। इस विमान में एन डी आर एफ की टीमों राहत सामग्री व बचाव दल थे।

वायुसेना के दस विमान राहत एवं बचाव कार्य में लगाये गये थे। हिंडेन एयरबेस से पौने आठ बजे 'सी- 17 ग्लोब मास्टर' से एन डी आर एफ के 120 जवान राहत सामग्री के साथ नेपाल के लिए रवाना हुए थे। टीमों अपने साथ आवश्यक दवाएं, खाने-पीने के सामान और बचाव कार्य के लिए आवश्यक उपकरण ले गयी थी। दूसरा 'सी- 17 ग्लोब मास्टर' विमान करीब नौ बजकर चालीस मिनट पर सेना की एक टुकड़ी को लेकर रवाना हुआ था।



नेपाल के लिए रवाना होते एन डी आर एफ के सदस्य

भूकम्प से तबाह हुए नेपाल को भारत सरकार ने जिस तत्परता के साथ मदद मुहैया करायी उसकी सराहना होना स्वाभाविक था। यह उल्लेखनीय है कि नेपाल में भूकम्प आने के साथ ही भारत सरकार न केवल सक्रिय हो गयी बल्कि जन धन की हानि का विवरण आने के पहले ही इसकी व्यवस्था कर ली गई कि पीड़ित और प्रभावित लोगों को कैसे जल्दी से जल्दी सहायता उपलब्ध करानी थी। यही कारण था कि भूकम्प आने के कुछ घंटों के भीतर भारत के राहत, खोज एवं बचाव दल आवश्यक सामग्री के साथ नेपाल की धरती पर पहुँचने में सक्षम साबित हुए।

नेपाल में भारत द्वारा बचाव के लिए आवश्यक तत्परता का प्रदर्शन लगातार देखने को मिल रहा था। जैसे-जैसे जानकारी मिल रही थी कि वहाँ के लोगों को किन चीजों की आवश्यकता है, वैसे-वैसे आवश्यक उपाय किये जा रहे थे। विमानों के साथ-साथ सड़क मार्ग से वहाँ फँसे भारतीयों और दुनिया भर के पर्यटकों को निकालने का काम शुरू हो गया था। तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भारत ही था जो नेपाल को हर तरह की सहायता उपलब्ध कराने में समर्थ था।

नेपाल में भारत के राजदूत श्री रंजीत रे ने कहा था कि वहाँ बड़ी संख्या में भारतीय थे। सीमाये खुली हुई थी और बगैर वीजा के एक दूसरे के देश में आया जा सकता था। फिलहाल उनकी प्राथमिकता घायलों, वृद्ध लोगों, बच्चों और महिलाओं पर केन्द्रित थी। एक टीवी चैनल से भारतीय राजदूत ने कहा कि व्यावसायिक उड़ाने संचालित हो रही थी तथा एयरपोर्ट खुला हुआ था। दूतावास ने विशेष व्यावसायिक विमानों को भी काम में लगाया था। वे भारत के विभिन्न हिस्सों के लिए बस सेवाएं शुरू करने जा रहे थे। इसलिए वहाँ से जाना चाहने वाले भारतीयों को डरने की जरूरत नहीं थी। वहाँ स्थित भारतीय दूतावास ने सोमवार (27 अप्रैल) को नेपाल में फँसे अपने नागरिकों को निकालने के लिए काठमाण्डू से गोरखपुर के लिए बस सेवाएं शुरू कर दी थी। शनिवार को जब नेपाल में विनाशकारी भूकम्प आया तब नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कोइराला थाईलैण्ड में थे। वह इण्डोनेशिया में एक अंतर्राष्ट्रीय काफ़्रेस में हिस्सा लेने के बाद इलाज के लिए बैंकाक में ठहरे थे।

कूटनीति में सांस्कृतिक रिश्ते को महत्व देने की बात भारत के प्रधानमंत्री हमेशा से करते रहे थे, लेकिन जब पड़ोसी देश नेपाल पर मुसीबत आई तो उन्होंने अपनी बात पर अमल कर एक नई मिसाल भी पेश कर दी थी। नेपाल में शनिवार को आए भूकम्प के कुछ ही घंटे बाद से प्रधानमंत्री ने वहाँ पहुँचायी जा रही मदद की कमान पूरी तरह सँभाल रखी थी। प्रधानमंत्री न सिर्फ नेपाल प्रशासन से सीधे सम्पर्क में थे बल्कि भारत की तरफ से चलाए जा रहे आपरेशन की पूरी निगरानी भी कर रहे थे।

नेपाल में भूकम्प के 30 घंटों के भीतर प्रधानमंत्री तीन बार अपनी कैबिनेट की बैठक कर चुके थे। प्रधानमंत्री राहत एवं बचाव आपरेशन का संचालन कर रहे विदेश सचिव के सम्पर्क में भी थे। विदेश सचिव, रक्षा सचिव, व गृह सचिव की समिति उन्हें लगातार इस आपरेशन की गतिविधियों से अवगत करा रही थी। गृह सचिव प्रधानमंत्री को देश में भूकम्प प्रभावित राज्यों की ताजा स्थिति की सूचना दे रहे थे। कैबिनेट सचिव व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार भी प्रधानमंत्री को विशेष सूचनाओं से अवगत करा रहे थे।

भारत के प्रधानमंत्री ने रविवार (26 अप्रैल 2015) को 'मन की बात' कार्यक्रम में भूकम्प की त्रासदी झेल रहे नेपाल के ऑसू पोछने, हाथ थामने

और साथ देने का विश्वास दिलाया। प्रधानमंत्री ने कहा कि नेपाल में आए भूकम्प ने पूरी दुनिया को हिला दिया था। इस भयानक त्रासदी में हम नेपाल के साथ खड़े थे। उन्होंने नेपाल का दुःख अपना दुःख बताया था। भारी व व्यथित मन से रेडियो पर बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा था कि नेपाल के भूकम्प में फँसे लोगों को जिंदा निकालना, राहत कार्य में लगे लोगों की प्राथमिकता होगी। भारत के प्रधानमंत्री ने कहा कि सवा सौ करोड़ भारतवासियों के लिए नेपाल अपना था। उनका दुःख हमारा था। आपदा के इस मुश्किल समय में भारत हर नेपाली के आँसू पोछेगा, उसका हाथ भी पकड़ेगा तथा उनका साथ भी देगा।

राहत एवं बचाव की समीक्षा के लिए भारतीय प्रधानमंत्री ने रविवार (26 अप्रैल) को भी एक उच्चस्तरीय बैठक की। उन्होंने इस काम की रफ्तार और तेज करने का निर्देश दिया। बैठक में वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, गृह मंत्री, रक्षा मंत्री तथा कैबिनेट सचिव सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे।

नेपाल से लेकर भारत तक भूकम्प की त्रासदी से निपटने में अपनी सक्रियता के लिए भारत सरकार की चौतरफा भूरि-भूरि प्रशंसा हुई थी। भारत के प्रधान मंत्री ने राहत एवं बचाव कार्य की निगरानी में अपने चार वरिष्ठ मंत्री उतार दिये थे। नेपाल से सटे बिहार के रक्सौल में सोमवार (27 अप्रैल) को ही केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने वहाँ स्थापित बेस कैम्प की शुरुआत की। नेपाल में चल रहे राहत कार्य के लिए दूसरे सामान के साथ-साथ पेट्रोल-डीजल सबसे अहम था। अतः पेट्रोलियम मंत्री ने रक्सौल से इसकी आपूर्ति सुनिश्चित की।

भारत सरकार की ओर से स्पष्ट संकेत दिया गया था कि वह राहत एवं बचाव से लेकर पुनर्निर्माण तक नेपाल के साथ खड़ी रहेगी तथा नजर भी रखेगी। भारत के रक्षा सचिव ने बताया था कि भारतीय सेना की 18 चिकित्सीय टीमें नेपाल में सक्रिय थी। वहाँ पर तीन फील्ड अस्पताल स्थापित किये गये थे। प्रत्येक में लगभग 45 मरीज भर्ती किये गये थे तथा उनका इलाज किया जा रहा था। पड़ोसी देश नेपाल में भारतीय सेना, वायुसेना और एन डी आर एफ की 16 टीमें वहाँ पर खोज एवं बचाव कार्य में जुटी थी।



नेपाल पहुँचते ही खोज एवं बचाव कार्य में जुटी एन डी आर एफ की टीम

भारत के विदेश सचिव ने बताया कि राहत एवं बचाव के लिए 13 सैन्य विमान, तीन नागरिक विमान और पाँच हेलिकाप्टर भेजे गये थे। इनके जरिये 2 टन चिकित्सा सामग्री, 10 टन कंबल और 22 टन भोजन नेपाल में पहुँचाया गया था। वायुसेना की उड़ानों में चिकित्सा दल, इंजीनियरिंग टास्क फोर्स, पानी, भोजन, एन डी आर एफ, मेडिकल उपकरण, कंबल और टेंट आदि वहाँ पहुँचाये जा रहे थे। रक्षा मन्त्रालय के अनुसार रविवार (26 अप्रैल) शाम तक वायुसेना की विभिन्न उड़ानें वहाँ से 1500 भारतीयों को भारत पहुँचा चुकी थी। शनिवार (25 अप्रैल) को वायुसेना के विमान से 545 भारतीयों को काठमाण्डू के हवाई अड्डे से नई दिल्ली लाया गया। शनिवार- रविवार को आधी रात के बाद पहुँचे 'सी-17 ग्लोबमास्टर-3' में 101 लोग लाये गये। रविवार (26 अप्रैल) तड़के 'आई एल-76' से 152 लोग दिल्ली पहुँचे जबकि उसी दौरान 'ग्लोब मास्टर' की दूसरी उड़ान से 237 यात्री सुबह भारत पहुँचे। इसी तरह सोमवार (27 अप्रैल) की शाम ग्लोब मास्टर की एक और उड़ान 237 यात्रियों को लेकर भारत पहुँची। भूकम्प आने के उपरांत 23 घंटों में विभिन्न उड़ानों के जरिये भारतीय हेलीकाप्टरों ने 203 लोगो को बचाया था।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से रविवार (26 अप्रैल) को सुबह वायुसेना के 6 'एम आई-17' हेलीकाप्टर राहत सामग्री लेकर नेपाल के लिए रवाना हुए थे। वायुसेना के हेलीकाप्टरों की 37 उड़ानों से 203 भारतीयों को सुरक्षित वापस लाया गया। जिन इलाकों में हेलीकाप्टर नहीं उतर पा रहे थे, वहाँ राहत सामग्री हेलीकाप्टर से गिरायी जा रही थी।



त्रिभूवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरता भारतीय वायुसेना का विमान

भारतीय सेना में कार्यरत नेपाल के गोरखा सैनिकों को खास तौर पर राहत काम में लगाया गया था। यह एक पड़ोसी देश की संकट के समय में मित्र राष्ट्र को मदद करने की उच्चतम मिसाल थी। वे दूर-दराज के इलाकों में जाकर अपने वतन के लोगों के जख्मों पर मरहम रख रहे थे। वायुसेना के तीन विमान सिर्फ राहत सामग्री पहुँचाने में लगे रहे तथा भारत के 12 हेलिकाप्टर इन सामानों को प्रभावित इलाकों तक पहुँचा रहे थे। इनकी मदद से 24 टन राहत सामग्री दूर-दराज के इलाकों में पहुँचायी जा रही थी।

भारतीय विदेश सचिव ने बताया कि भारतीय वायुसेना की उड़ानों के जरिए 15 देशों के 170 नागरिकों को भी सुरक्षित भारत लाया गया था। सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल के अनुसार 251 विदेशी नागरिक सड़क के रास्ते भारत आये थे। विभिन्न भारतीय एजेंसियों के प्रयासों से 741 नेपाली नागरिकों को प्रभावित इलाकों से निकालकर सुरक्षित जगहों पर पहुँचाया गया था। भारतीय सेना ने माउन्ट एवरेस्ट बेस कैम्प से 19 पर्वतारोहियों को बचाया था।

नेपाल में भूकम्प से आई भारी तबाही के कारण हुई जानमाल की क्षति के बाद जिस तत्परता से भारत ने वहाँ राहत पहुँचाने का काम किया, उसकी दुनिया भर में सराहना हो रही थी। युद्ध स्तर पर जिस तेजी से कुदरत के कहर से नेपाल में फँसे लोगों को सुरक्षित ठिकानों तक पहुँचाने में भारत सरकार जुट गयी वह एक राजनैतिक दृढ़ता तथा कुशल नेतृत्व का परिचायक था। मानवता को बचाने के लिए तत्पर भारतीय सरकार को नेपाल की सरकार का भी त्वरित सहयोग मिला। जिसके कारण राहत कार्य संभव हो सका। त्रासदी के चंद घंटों के अन्दर जहाज के जहाज राहत सामग्री व बचाव दल के साथ भारत से भेजे गये। राहत बचाव दल ने अपनी जान की परवाह किये बिना पीड़ितों को हर संभव मदद की। पूरी दुनिया भारत की इस आपदा प्रबंधन की प्रशंसा कर रही थी।

भारतीय वायु सेना द्वारा लाये गये राहत एवं बचाव संसाधनों के साथ एन डी आर एफ ने तुरन्त दिन-रात लगातार बचाव कार्यों में नेपाल सरकार के साथ काम करना शुरू कर दिया। यह अभियान भूकम्प झटके के छह घण्टे के बाद ही आरम्भ हो गया था।



नेपाल की धरती पर उतरते एन डी आर एफ के सदस्य

10 सदस्यीय चीन के बचाव दल को भारतीय वायुसेना ने दिपालदान्दा, सिन्धुपाल चौक में राहत कार्यों के लिए पहुँचाया तथा बाहर सुरक्षित पहुँचने में मदद की। सिंगापुर के एक स्वास्थ्य दल को भी भारतीय वायुसेना के द्वारा लार्पाक पहुँचाया गया।

भारतीय सेना के हेलिकाप्टरों ने 207 टन राहत सामग्री लाने के लिए कुल 449 उड़ानें भरी तथा लगभग 900 घायलों को आपदा की जगह से सुरक्षित स्थलों पर पहुँचाया। इस प्रक्रिया में 1,700 अलग-अलग देशों के नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाला गया।

भारत के द्वारा उठाया गया यह राहत कदम सिर्फ भारत सरकार की तरफ से उच्चतम प्रतिबद्धता एवं संवेदनशीलता की पराकाष्ठा ही नहीं थी, अपितु भारत की जनता व राज्य सरकारों ने भी गम्भीरता दिखाते हुए मानवीयता के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की मिसाल कायम की थी। लगभग दो दर्जन से अधिक भारतीय राज्यों ने तात्कालिक कदम उठा कर नेपाल भूकम्प पीड़ितों के लिए सहायता मिशन स्वतः शुरू कर दिया था। तत्पश्चात, भारतीय वायुसेना की 32 उड़ानों में 520 टन राहत सामग्री जिसमें टेन्ट, कंबल, दवाईयाँ, रसोईघर, खाद्य सामग्री, पीने का पानी, भारी यांत्रिक उपकरण, एम्बुलेंस, जल-शुद्धीकरण संयंत्र, ऑक्सीजन, जेनरेटर, दो पूर्णकालिक फील्ड सेना चिकित्सालय जिनमें 18 चिकित्सीय टीमें, 18 इंजीनियरिंग टीमें तथा 16 एन डी आर एफ की टीमें नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में खोज एवं बचाव कार्य के लिए झोंक दी गयी थी।

आठ 'एम आई- 17' तथा पाँच 'ए एल एच' भारतीय सेना के हेलीकाप्टर जो कि काठमाण्डू व पोखरा में राहत एवं बचाव कार्य में जुटे थे, 26 अप्रैल तक 207 टन राहत सामग्री ला चुके थे। यह भारत के द्वारा राहत एवं बचाव कार्य के लिए भारत के बाहर का अभी तक का सबसे बड़ा कदम था।

राहत के कई मायने होते हैं, परन्तु सही मायने में पीड़ित तब राहत की साँस लेता है, जब वह सुरक्षित अपनी धरती पर कदम रखता है। 25 अप्रैल 2015 के भूकम्प के उपरान्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय बचाव दल ने 4,179 पीड़ित लोगों को हवाई मार्ग से सुरक्षित बाहर निकाला तथा लोगों को बचाया था।

भारतीयों के पास गर्व करने के कई कारण थे परन्तु जिस कारण ने सभी का दिल जीत लिया था वह यह था कि वहाँ पर किसी को विशेष

वरीयता नहीं दी गयी थी। बचाव कार्य में सभी समतुल्य थे। सिर्फ एक विशेष तरजीह दी गयी थी वह भी, उन महिलाओं के लिए जिनके गोद में बच्चे थे।



बचाव कार्य में जुटा एन डी आर एफ का बचाव दल

नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की सुविधा के लिए इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर रेल यात्री काउन्टर खोला गया। रेलवे अधिकारियों के अनुसार यह सुविधा 28 अप्रैल 2015 से ही शुरू कर दी गई थी। इस आरक्षण काउन्टर ने काम करना शुरू कर दिया था। टर्मिनल- 3 पर रेल आरक्षण काउन्टर खोला गया था। नेपाल में फाँसे भारत व दूसरे देशों के पर्यटक काफी संख्या में रोजाना दिल्ली आ रहे थे। दिल्ली से इन्हें दूसरे शहरों में जाने में परेशानी न हो, इसके लिये भारतीय रेल प्रशासन ने कई कदम उठाये। वहीं उन भूकम्प पीड़ितों को मुफ्त टिकट भी उपलब्ध करवाया जा रहा था, जिनके पास पैसे नहीं थे।

नेपाल से आये भूकम्प प्रभावित लोगों के लिए भारतीय रेलवे ने पहल की। भारत के विभिन्न हिस्सों से राहत सामग्री पहुँचाने के लिए भारतीय रेलवे ने विशेष प्रबंध किया था। रेलवे ने बिहार के रक्सौल तक राहत सामग्री पहुँचाने का जिम्मा लिया। यह सेवा निःशुल्क थी, इसके लिए रेलवे बोर्ड ने सभी जोन महाप्रबन्धकों को बकायदा सर्कुलर के जरिये निर्देश

जारी किया था। एन डी आर एफ ने नई दिल्ली, रक्सौल एवं बागडोगरा से नेपाल के लिए भेजी जा रही राहत सामग्री एवं संसाधनों को सुचारू रूप से रेल व सड़क मार्ग से भेजे जाने में स्थानीय प्रशासन को सहयोग दिया। नेपाल से हजारों की संख्या में आ रहे भारतीयों को सकुशल घर तक पहुँचाने के लिहाज से तीन मुफ्त रेल सेवा भी शुरू कर दी गयी थी।

देश की लगभग सभी प्रमुख मोबाईल सेवा प्रदान करने वाली कम्पनियों ने नेपाल कॉल करने की दरों में भारी कटौती कर दी थी। इन कम्पनियों ने नेपाल में कॉल करने की दर को आधा कर एक रुपये प्रति मिनट कर दिया था। 'एयरसेल' ने अगले दो दिनों के लिए नेपाल कॉल करने के लिए कोई भी शुल्क नहीं लेने की घोषणा की। साथ ही नेपाल में फँसे ग्राहकों से कोई रोमिंग शुल्क न लेने का निर्णय लिया। 'वोडाफोन', 'एम टी एस', 'वीडियोकॉन', 'आईडिया' ने सिर्फ एक रुपये प्रति मिनट की दर से नेपाल कॉल करने पर शुल्क लेने का निर्णय किया था।

भूकम्प प्रभावित जन समुदाय एक दूसरे से सीधे सम्पर्क साध सके तथा उन्हें मोबाइल रिचार्ज के लिए भटकना न पड़े, इसके लिए नेपाल की दो मुख्य दूरसंचार सुविधा देय संस्थाओं ने अपने ग्राहकों को नेपाल के भीतर मुफ्त काल तथा एस एम एस की सुविधा बहाल की। 'नेपाल टेलिकाम' ने अपने सभी प्रीपेड व पोस्ट पेड ग्राहकों को मुफ्त अनगिनत काल व एस एम एस की सुविधा प्रदान की थी। 'एन सेल' ने बोनस शेष राशि व 50 मुफ्त एस एम एस प्रतिदिन की सेवा बहाल की। नेपाल टेलिकाम के प्रवक्ता के अनुसार लोगों को दुकाने बन्द होने के कारण मोबाइल फोन रिचार्ज के लिए भटकना न पड़े, आवागमन की सुविधा बाधित होने के कारण ग्राहकों को अनगिनत काल करने में परेशानी न हो, इसके लिहाज से एस एम एस तथा डाटा सुविधा भी दी जा रही थी। नेपाल भूकम्प के उपरांत जिस प्रकार हर क्षेत्र से मदद आई तथा उसका सजग समन्वय अपने आप में एक अविस्मरणीय उदाहरण है, मानवीय मूल्यों के उच्च स्तर का। भूकम्प प्रभावित इलाकों में जहाँ विद्युत सेवा बाधित थी वहाँ पर मोबाइल टावरों के लिए चलायमान डीजल जेनरेटरों की सुविधा दूरसंचार सेवा प्रदान करने वाली संस्थाओं ने सुनिश्चित की जिससे उपभोक्ताओं को लगातार संचार सुविधा का लाभ मिलता रहे।

नेपाल में रविवार (26 अप्रैल) को दोबारा आए भूकम्प के बाद काठमाण्डू में फँसे भारतीय अंडर 14 बालिका फुटबाल टीम को सैन्य विमान से सुरक्षित स्वदेश ले आया गया था। बालिका फुटबाल टीम के लिए यह अनुभव किसी बेहद जोश भरी फुटबाल प्रतिस्पर्धा के सारे अवयवों से कहीं कम नहीं था।

31 सदस्यीय अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली का चिकित्सक दल तथा गुजरात के चिकित्सको के दल ने रात-दिन (24 घंटे) राष्ट्रीय ट्रामा केन्द्र, काठमाण्डू में काम करना आरम्भ किया। यहीं शांतिकुँज हरिद्वार से 11 सदस्यीय चिकित्सक दल काठमाण्डू के विभिन्न इलाकों में पीड़ित जन समुदाय की सेवा में जुट गया था। इन सभी समन्वित सहायता कार्यों ने इन विषम परिस्थितियों में भी नेपालवासियों के हृदय में मानवता के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण देने की नींव रखी थी।

भारतीय दूतावास, काठमाण्डू की एक विज्ञप्ति के अनुसार दो लंगर (सामुदायिक रसोई) पंजाब व हरियाणा से आये थे, जिन्होंने सर्वाधिक त्रासदी के शिकार लोगों के लिए भक्तापुर तथा कुपोण्डल में लंगर संचालित किया, जिनके द्वारा प्रत्येक स्थान पर 10,000 पीड़ितों को प्रतिदिन भोजन कराया गया।

नेपाल में भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने काठमाण्डू में लंगर लगाने का फैसला किया। इसके साथ ही दिल्ली से रोजाना 25 हजार भोजन के पैकेट नेपाल में रविवार (26 अप्रैल) से भेजे जाने लगे। कमेटी के पदाधिकारियों ने भारत में नेपाल के राजदूत श्री दीप उपाध्याय से भी मुलाकात की। इसके अतिरिक्त भारत से 450 ट्रकों के द्वारा लगभग 4,500 टन राहत सामग्री, जिसमें खाद्य सामग्री, पेय जल, औषध, टेन्ट, कंबल, तारपोलिन तथा पॉलिथीन उत्तर प्रदेश व बिहार राज्य से तुरन्त खाना कर दी गई थी जो सड़क मार्ग से प्रभावित क्षेत्रों में पहुँचने लगी थी।

नेपाल का आम नागरिक खुद को भारत की संस्कृति से समरस महसूस करता है और संकट की घड़ी में भारत से मिल रही सहायता को पूर्ण सहृदयता से ग्रहण कर रहा था। यह भारतीय संस्कृति में पोषित विश्व बन्धुत्व का प्रत्यक्ष उदाहरण था। 26 मई 2015 को नेपाली सेना के

प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल जगदीश चन्द्र पोखराल ने अखबारों को बताया कि भारत ने सबसे बड़ा राहत व बचाव दल नेपाल में भेजा था। 26 अप्रैल को प्रातः तक भारत ने कुल 384 सदस्यीय एन डी आर एफ के खोज एवं बचाव दल जिनमें प्रशिक्षित श्वान भी थे, को भेजा था जो विदेश से आयी किसी भी सहायता में प्रथम, शीघ्र, सर्वाधिक एवं विशाल था। 26 अप्रैल की प्रातः तक भारत ने चार भारवाहक विमान, राहत, खोज एवं बचाव दल एवं सामग्री के साथ भेज दिये थे। भारत के द्वारा राहत एवं बचाव कार्य में 14 अत्याधुनिक हेलिकाप्टर भेजे गये, जिनमें 6 काठमाण्डू में सुबह (26 अप्रैल) ही उतर चुके थे।

नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कुमार कोइराला ने भूकम्प में मारे गये प्रत्येक मृतक परिवार को एक लाख नेपाली रुपये की तात्कालिक सहायता की घोषणा की। नेपाल के प्रत्येक चिकित्सालय को सुविधा से सम्पन्न करने का प्रयास शुरू कर दिया गया। ज्यादातर पीड़ित काठमाण्डू से लगे जनपदों सिन्धुपाल चौक, नूवाकोट, धादिंग व रसुआ में थे। अस्पताल के सूत्रों के अनुसार ज्यादातर घायल सिर में आन्तरिक चोट, हड्डी टूटने, ज्वाइन्ट अलग होने, रीढ़ की हड्डी पर चोट तथा ब्लैडर के फटने के कारण आ रहे थे। बीर-अस्पताल ने सभी से अपील की थी कि उन्हें मदद के लिए धनराशि नहीं, बल्कि काम करने वाले चिकित्सीय उपकरण व संसाधन चाहिए थे।

आवश्यक खाद्य पदार्थों की आपूर्ति की आवश्यकता को देखते हुए भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में नेपाल के औद्योगिक मन्त्रालय ने नूडल्स, बिस्कुट व चूरा खरीदने का निर्णय लिया। यह पदार्थ उत्पादकों ने लागत राशि में ही देने का निर्णय किया, जिससे आपदा प्रभावित लोगों तक पहुँचाया जा सके। व्यवसायी समाज का व्यावसायिका से हटकर मानवीय मूल्यों को समयानुसार महत्व देना, सचमुच प्रशंसनीय कदम था।

नेपाल में सभी बैंको व वित्तीय संस्थाओं ने शनिवार से लगातार तीन दिनों तक ग्राहक सेवा को बहाल रखने का कदम उठाया, विशेषकर 'ग्राहक भुगतान सुविधा'। प्रत्येक ग्राहक के लिए एक दिन में अधिकतम राशि निकासी 50,000 रुपये निर्धारित की गयी जिससे प्रत्येक नागरिक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

इन सभी परोपकारों ने निःस्वार्थ सेवा की ज्वाला को चारों तरफ धधका दिया था। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की मदद कर रहा था। भूकम्प के उपरान्त कुछ ही घण्टों में नेपाल पुलिस सड़कों पर थी तथा सीमित संसाधनों से लोगों को सहायता पहुँचा रही थी। वह किसी तरह भूकम्प प्रभावित पीड़ितों को नजदीक के अस्पताल तक पहुँचा रहे थे। सेवा-भाव की इस कदर अनोखी व अनूठी मिसाल पहले देखी नहीं थी। यहाँ तक कि चिकित्सक व स्वास्थ्य कार्मिक नंगे पैर ही पीड़ितों की मदद करते देखे गये। प्रत्येक पड़ोसी बिना किसी भेद-भाव के एक दूसरे से शरण, खाना, पानी का उपयोग साझा कर रहे थे। हवा में निःस्वार्थ सेवा भाव तैर रहा था, कोई इसके संक्रमण से अछूता नहीं रह पाया था। यहाँ तक कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसका उतना ही प्रभाव था।

नेपाल सरकार ने तीन दिन का राष्ट्रीय-विपत्ति घोषित कर दिया था जो मंगलवार (28 अप्रैल) से प्रारम्भ हुआ। इस दौरान नेपाल व बाहर के देशों में नेपाल का राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका दिया गया था। यह भूकम्प के दौरान मारे गये नागरिकों के शोक व सम्मान के लिए था।

अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सीय दल को नेपाल के विभिन्न इलाकों में भेज दिया गया था। 60 सदस्यीय चीन के चिकित्सीय दल को धुलीखेल तथा एक ब्रिटेन के चिकित्सीय दल को सिन्धुपाल चौक भेजा गया था।

संयुक्त राष्ट्र संघ महासचिव बान की मून ने भूकम्प प्रभावित नेपाल को रविवार (26 अप्रैल) को आश्वासन दिया कि विश्व निकाय वहाँ एक बड़ा राहत अभियान चलाएगा और मानवीय संकट से निपटने में उसकी मदद करेगा। मून ने नेपाल सरकार और भूकम्प प्रभावित लोगों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए कहा था कि संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय खोज व बचाव अभियान के समन्वय में सरकार की मदद करेगा। संयुक्त राष्ट्र व सहयोगी संस्थाओं ने 42.1 बिलियन राशि (415 मिलियन अमेरिकी डालर) की तात्कालिक सहायता माँगी जिससे कि अविलम्ब राहत कार्य प्रारम्भ कर सकें। अमेरिका ने भूकम्प प्रभावित नेपाल के लिए 90 लाख डालर की सहायता राशि देने की घोषणा की।

5. प्रकृति तकनीकी पर भारी पड़ी

विद्युत सेवा कई जगहों पर बाधित रही थी। टेलिफोन संचार व्यवस्था सुचारु रूप से नहीं हो पा रही थी। भूकम्प के फौरन बाद मोबाइल संचार व्यवस्था इतनी सघन हो गयी कि एक दूसरे का कुशलक्षेम प्राप्त नहीं हो पा रहा था। प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार व संबंधियों का कुशल क्षेम जानने के लिए भयवश बात करना चाहता था। विदेशों में फँसे नेपालवासी भी अपने संबंधियों को फोन से सम्पर्क करने का प्रयत्न कर रहे थे। संतोषप्रद बात यह थी कि लोग अपनों को खोजने के लिए सामाजिक मीडिया का प्रयोग कर रहे थे। इस माध्यम से पीड़ित लोग एक दूसरे से सम्पर्क साधने में सफल हो रहे थे। फेसबुक के माध्यम से नेपाल भूकम्प आपदा की वर्तमान स्थिति यथावत संचारित की जा रही थी, लोग ट्विटर पर भी सक्रिय थे। गूगल ने 'अर्थक्वेक फाइन्डर' ऐप तथा फेसबुक ने 'मार्क-सेफ' ऐप का प्रयोग करने के लिए जन समुदाय की सेवा शुरू की थी।

सड़क व दूरसंचार व्यवस्था बाधित होने के कारण भूकम्प उपरान्त आपदा की सही तस्वीर नहीं प्राप्त हो पा रही थी। सड़कें मलबों से बाधित थी तथा बचाव कार्यों में चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही थी। इस बचाव कार्य के लिए भारी मशीनों व उपकरणों की कमी महसूस हो रही थी। ऐसे समय में अपने देश की भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक आपदाओं की संभावनाओं को ध्यान में रखकर पहले से की गयी तैयारी बचाव व राहत कार्य को सहज ही सरल बना देती है।

अधिकांशतः लोग काठमाण्डू से पलायन कर रहे थे। आवश्यकता यह थी इस पलायन को कैसे नियन्त्रित किया जाये क्योंकि ज्यादातर लोग सिर्फ 'रक्तश-क्षेत्र' से बाहर निकल जाने के लिए बेताब थे। जबकि वे इस तथ्य से अनभिज्ञ थे कि घाटी के बाहर निकलने के लिए पूर्व-पश्चिम राजमार्ग से होकर जाना पड़ता था जो कि पत्थर की पहाड़ियों से होकर गुजरता था। 26 अप्रैल के भूकम्प के पुनः झटके के कारण यह पहाड़ी 'संरचना-भ्रंश' का शिकार बन चुकी थी तथा सदैव खतरे की आंशका को

जन्म दे रही थी। नेपाल में भूकम्प के बाद बड़े पैमाने पर हुई जानमाल की वजह धरती का कंपन नहीं बल्कि इमारतों का ढहना रहा जो भूकम्प के बाद अनगिनत झटके से ज्यादा प्रभावित हुए थे।

भूकम्प की त्रासदी झेल रहे नेपाल में पर्यटन उद्योग को भारी नुकसान पहुँचा था। यहाँ के प्रमुख पर्यटन केन्द्र पोखरा को जलजले से काफी नुकसान पहुँचा। दहशत के कारण विदेशी सैलानियों की आवाजाही रुक गयी। जो सैलानी यहाँ घूमने के लिए आये थे वे भूकम्प के खतरे को देखते हुए वापस लौटने लगे थे। अपने खूबसूरत नजारों के लिए दुनिया भर में विख्यात पोखरा के अलावा मुक्तिधाम, लुम्बिनी, जनकपुर, मनोकामना, गोरखनाथ, कालिका देवी मंदिर सहित अन्य पर्यटन स्थलों पर विदेशी पर्यटकों की चहलकदमी रुकने से सन्नाटा पसरा हुआ था। काठमाण्डू तो सदमें से उबर ही नहीं पा रहा था। शनिवार (25 अप्रैल 2015) को आये भूकम्प ने नेपाल के सात जिलों गोरखा, सिन्धुपाल चौक, धादिंग, काठमाण्डू, भक्तपुर, ललितपुर व रसुवा को सबसे अधिक तबाह किया था। ये वही जिले थे, जिनके प्राकृतिक सौन्दर्य पर नेपाल का पूरा पर्यटन उद्योग टिका था। अपनी प्राकृतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहर के कारण विदेशी सैलानियों को हर पल लुभाने वाले नेपाल के अधिकांश हिस्सों में उदासी छायी हुई थी।

उदास पोखरा के रास्तों पर पसरे सन्नाटे को भारतीय सेना का विशालकाय 'एम आई-17' हेलिकाप्टर रह-रह कर तोड़ रहा था। जगह-जगह सड़को के धँसने से आवागमन ठप हो गया था।

पोखरा से 60 किमी पहले स्थित अबू खैरनी कस्बों के ढाबों पर विरानी थी। मन बहादुर थापा ने बताया कि भूकम्प ने उन्हें तोड़कर रख दिया था। यदि पर्यटकों की आवाजाही फिर शुरू नहीं हुई तो रोटी का संकट खड़ा हो जायेगा। भूस्खलन के चलते भी पोखरा, गोरखा एवं आसपास के इलाकों को जोड़ने वाले रास्ते बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके थे। चमेरा गुफा तो भूकम्प के दिन से ही बंद हो गयी थी।

नेपाल में शक्तिशाली भूकम्प हिमालय को झीलों के लिए खतरे की घंटी बन चुका था। हिमालय में काफी ऊँचाई पर बनी ग्लेशियर झीलों को भूकम्प विनाशकारी बना सकता था। इन चुनौतियों के मद्देनजर सरकार ने

हिमालय की झीलों की निगरानी के साथ ही ऐसी स्थिति से निपटने के उपायों पर काम करना शुरू कर दिया था।

अमेरिका के मिशिगन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने यह चेताया कि नेपाल में आने वाले समय में भूस्खलन का खतरा हो सकता था। मानसून की बारिश के दौरान इसकी आशंका प्रबल थी। विश्वविद्यालय की प्रोफेसर मरीन क्लार्क और उनकी दो सहयोगियों ने विश्लेषण कर यह जानकारी दी थी। शोधकर्ताओं के मुताबिक काठमाण्डू के उत्तर में नेपाल-तिब्बत सीमा पर और माउण्ट एवरेस्ट के पश्चिम में भूस्खलन की आशंका थी। उनका कहना था कि शनिवार को आए भूकम्प में बहुत सी जगहों पर चट्टानें धंसने की घटनाएं हुईं किंतु ऐसे कई ढलाव कमजोर हो गये होंगे जो आगे आने वाले झटकों के उपरान्त गंभीर खतरा बन सकते थे। संभावित खतरे वाला इलाका 8,200 फीट से ऊपर और 17,550 वर्ग मील में फैला था।

भूगर्भ शास्त्रियों के अनुसार स्पष्ट निष्कर्ष निकलता था कि झटका 5 से 8 गुना बढ़ सकता था। विशेषकर थर्मल, आशीन, सुन्धरा, पाटन, बालाजू तथा घाटी के दक्षिण पूर्व आदि क्षेत्र। मौजूदा आँकड़ों के आधार पर क्षति की संभावना भक्तापुर, काठमाण्डू तथा पाटन में अधिकाधिक थी। यही कारण था कि मध्य क्षेत्र की तुलना में घाटी की बाह्य सीमा में ज्यादा क्षति देखने को मिली। इसीलिए घाटी के किनारे वाले क्षेत्रों में अत्यधिक नुकसान हुआ।

भूगर्भ शास्त्रियों का मानना था कि काठमाण्डू घाटी में 500 मीटर मोटी एक के बाद एक चिकनी मिट्टी की परत और रेत की परत है, जो नाटकीय रूप से भूकम्प की तीव्रता में आठ गुना वृद्धि कर देती है। यह कथन असत्य है कि विशाल भूकम्प से ज्यादा नुकसान पहुँचता है तथा कम तीव्रता का भूकम्प कुछ नहीं करता, बल्कि यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। क्षति इस तथ्य पर निर्भर करती है कि हमारे संसाधन व संरचना किस हद तक इस स्वाभाविक प्रक्रिया को वहन कर सकते हैं। विशेषज्ञों ने 7.9 तीव्रता के भूकम्प के बाद यह चेतावनी दी थी कि काठमाण्डू शहर के बहुतायात भवन व इमारतें कमजोर हो चुकी थी तथा किसी भी भूकम्प के उपरान्त झटकों से मलबे में बदल सकती थी।

काठमाण्डू व ललितपुर के कई इलाके ऐसे भी थे जहाँ लगा ही नहीं कि भूकम्प से कोई प्रभाव पड़ा है लेकिन जब घाटी के किनारे की तरफ देखा जहाँ से पहाड़ी क्षेत्र शुरू होता है तो वहाँ पर चारों तरफ तबाही का मंजर था। भक्तापुर, शाख और बंगमती में भारी तबाही हुई थी। सतह संरचना ने घाटी के किनारों पर तेज झटका देकर घाटी की तरंगों की तीव्रता में वृद्धि कर दी। तरंगे चट्टान संरचना से टकराकर वापस लौटी तथा उनके कारण झटकों में वृद्धि हुई थी। इसलिए इन क्षेत्रों में सर्वाधिक क्षति हुई। वैज्ञानिकों के अनुसार क्षति का कारण भूगर्भ तरंगों तथा ऊर्जा का उत्तरोत्तर वृद्धि करना था।

संयुक्त राष्ट्र संघ की मानवीय प्रमुख ने काठमाण्डू का दौरा किया तथा उन्होंने सर्वप्रथम राहत के लिए सुरक्षित शिविर की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने काठमाण्डू के समस्त भवनों एवं इमारतों का आकलन किये जाने की आवश्यकता पर जोर दिया जिससे लोग सुरक्षित रह सकें परन्तु काठमाण्डू के बहुतायात निवासी इस प्रक्रिया के सम्पन्न होने की प्रतीक्षा वहन नहीं कर सकते थे। वे अपने मकानों में दिन के क्षणों में कुछ पल के लिए विश्राम कर लेते थे, परन्तु वह शाम होने के उपरान्त अपने-अपने घरों में प्रवेश करने से डरते थे। जिनके घरों की क्षति नहीं पहुँची थी, वे भी अपने घरों के दरवाजों व खिड़कियों को सदैव खुला छोड़ते थे जिससे वह पुनः झटकों के समय घरों से बाहर निकल सकें।



जीवन भर की जमा पूंजी अब क्षतिग्रस्त मकान

विध्वंसकारी नेपाल भूकम्प (25 अप्रैल-2015) ने तथा तदुपरान्त बारम्बार आये कंपन ने नेपाल के स्कूल तथा कालेजों को भयंकर नुकसान पहुँचाया था। पूर्व प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय चाहे वह सरकारी अथवा गैर सरकारी हो सभी का नुकसान इतना व्यापक था कि उन्हें कम से कम दो सप्ताह तक प्रारम्भिक रूप से बन्द करना पड़ा।

शिक्षा-विभाग ने सर्वाधिक प्रभावित जनपदों के सभी शैक्षणिक संस्थानों जिनमें काठमाण्डू में स्कूल व कालेज भी शामिल थे, उन्हें बन्द रखने का निर्णय लिया। शिक्षा विभाग की आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार शनिवार को आये भूकम्प के कारण लगभग 100 स्कूल व कालेज के भवन आंशिक रूप से ध्वस्त हो गये थे जिनमें तकरीबन एक दर्जन स्कूल सिर्फ काठमाण्डू के ही थे।

‘दरबार हाईस्कूल’ जो नेपाल का प्रथम आधुनिक स्कूल था, जिसका इतिहास एक शताब्दी से अधिक था, भी उन स्कूलों में था जो सम्पूर्ण रूप से ध्वस्त हो चुके थे। यह स्कूल सन् 1854 में स्थापित हुआ था। इसी प्रकार काठमाण्डू का पदमोदया और जुद्धो ओदया, ललितपुर पाटन सेकेण्डरी, मदन स्मारक, त्रिपदमा, भक्तापुर का श्रीकृष्ण तथा बागेश्वरी स्कूल सभी जमीन की सतह पर जा मिले थे।

नेपाल के सबसे बड़े तथा सबसे पुराने विश्वविद्यालय त्रिभुवन विश्वविद्यालय के मुख्य प्रशासनिक भवन को भी सर्वाधिक नुकसान हुआ था। कुलपति, प्राक्टर व रजिस्ट्रार का कार्यालय पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। प्रशासनिक भवन से लगे योजना व अंतर्राष्ट्रीय भवन भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये थे।

बाल्कू के परीक्षा नियन्त्रक का कार्यालय भी क्षतिग्रस्त हो गया था, जिसके कारण समस्त परीक्षायें जो अगले सप्ताह निर्धारित थी उसे स्थगित करना पड़ा। त्रिभुवन विश्वविद्यालय के केन्द्रीय कार्यालय का नुकसान कल्पना से परे था। राष्ट्रीय प्रशासनिक कालेज, पाटन बहुउद्देशीय परिसर, सनोथिमी परिसर तथा नेपाल वाणिज्य परिसर भी आंशिक अथवा पूर्ण रूपेण नष्ट हो चुके थे।

नेपाल के शिक्षा मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति जारी कर सर्वाधिक प्रभावी क्षेत्रों के सभी कालेज व स्कूलों को एक माह तक बन्द करने का निर्णय

लिया। इस अवधि में आगामी सरकारी अवकाशों को पठन व पाठन के रूप में रूपान्तरित करने की घोषणा की गई। यही नहीं सभी परीक्षाओं को स्थगित कर मई व जून के माह में संचालित करने के निर्देश दिये गये। इन परिस्थितियों में आपदा के कारण कार्य काल की क्षति का बुद्धिमत्तापूर्ण प्रबन्धन अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि यह निकट व दूरगामी भविष्य को प्रभावित करता है।

बचाव दल के अनुसार, बारपेक, लापार्क, सिमजंगा, गुमडा व बी. के. सेटेलमेंट के लगभग सभी घर ध्वस्त हो चुके थे तथा मलवे में तब्दील हो चुके थे। इन इलाकों में सर्वाधिक जन क्षति पहुँची थी। स्थानीय निवासियों को यहाँ तक पैदल चलना मुश्किल हो रहा था क्योंकि सड़कों पर दरारें पड़ चुकी थी। भूकम्प के उपरान्त पुनः हो रहे झटकों तथा बारिश ने जगह-जगह भूस्खलन की स्थिति पैदा कर दी थी, जिससे राहत एवं बचाव कार्य में बाधा पहुँच रही थी।

नेपाल की पहाड़ियाँ प्राकृतिक सौन्दर्य की पराकाष्ठा है, परन्तु वे इतनी दूर दराज तथा दुर्लभ रास्तों से जुड़ी हैं कि वहाँ वाहन के द्वारा नहीं पहुँचा जा सकता है। किसी भी प्रकार की राहत व मदद के लिए दुर्गम रास्तों से गुजरना था जिसके लिए अधिकाधिक समय लग सकता था। भौगोलिक रूप से दूर-दराज व अगम्य क्षेत्रों, परिवहन की सुविधा का अभाव तथा अत्यन्त ही कठिन खराब मौसम की चुनौतियाँ सभी मौजूदा संसाधनों एवं योजनाओं पर भारी पड़ रहीं थीं। इसलिए सर्वाधिक प्रभावित दूर दराज क्षेत्रों में राहत व बचाव कार्य के क्रियान्वयन में कठिनाई हो रही थी।

काठमाण्डू के विभिन्न कोने से लगभग 101,500 लोग सड़क मार्ग से बुद्धवार (29 अप्रैल) तक पलायन कर चुके थे। सिर्फ रविवार (26 अप्रैल 2015) से लगभग 436906 लोग काठमाण्डू घाटी को छोड़कर जा चुके थे। लोग बार-बार आने वाले भूकम्प के झटकों से इतने भयभीत थे कि वे शीघ्राति-शीघ्र ही अपने परिजनों के पास जाने के लिए अधीर हो रहे थे। नेपाल के नागरिक भी भूकम्प के झटकों की पुनरावृत्ति से भयभीत थे तथा वे अपने मूल-स्थान पर शीघ्र पहुँचने के लिए तत्पर थे। धाधिंग

का उत्तरी क्षेत्र जो कि सर्वाधिक प्रभावित हुआ था वहाँ राहत एवं बचाव कार्य के लिए हेलीकाप्टर उड़ान भर रहे थे परन्तु उन दुर्गम स्थलों पर उतरने का पर्याप्त सुरक्षित स्थान न होने के कारण वे उड़ान भरकर वापस आ रहे थे। जो पीड़ितों के साथ-साथ बचाव कर्मियों के लिए भी निराशाजनक स्थिति थी।

भूकम्प के झटकों ने दशरथ स्टेडियम के तीन मुख्य द्वारों को ध्वस्त कर दिया था। राष्ट्रीय खेल परिषद का मुख्य प्रशासनिक भवन, तरुणताल व टेनिस कोर्ट की दीवार भी ध्वस्त हो चुकी थी। स्टेडियम का मुख्य द्वार, फुटबॉल मैदान का प्रवेश द्वार तथा सेना मुख्यालय के मुख्य द्वार को भी क्षति पहुँची थी। बारपक में स्थानीय निवासी घरों के मलवों की लकड़ी का प्रयोग अपने परिजनों के शवों के जलाने के लिए कर रहे थे। क्या कभी किसी ने मानवता की इस दर्दनाक स्थिति की कल्पना की थी ? इस कदर असहाय मानव, विश्व के लिए एक प्रत्यक्ष चेतावनी के अलावा कुछ भी न था। अपनी ही सृजनात्मकता का प्रयोग कर जिस काष्ठगृह को मनुष्य ने अपने जीवन पर्यन्त सुख चैन का घरौंदा बनाया था वही काष्ठ आज अपने ही परिजनों के शवों को जलाने के प्रयोग में आ रहा था। यह निश्चित रूप से नियति का क्रूरतम अभिलेख था।

संकट की घड़ी में नेपाल की मदद में जुटी सरकार ने भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव अभियान को सटीक ढंग से चलाने के लिए सेटेलाइट का सहारा लिया। इसरो ने अपने रिमोट सेंसिंग सेटेलाइटों की प्रोग्रामिंग भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों की तस्वीर लेने के लिए कर दी थी। साथ ही इसरो विदेशी सेटेलाइटों की तस्वीरे हासिल करने में जुट गया था। इसरो के सेटेलाइट 'रिसोर्ससेटिंग-2', 'लिंग-3' व 'लिंग-4' ने भूकम्प आने से महज पौन घंटे पहले ही उस क्षेत्र की तस्वीरे ले ली थी। काठमाण्डू से करीब 80 किमी पश्चिमोत्तर में यह भूकम्प 11:48 बजे आया, जबकि इसरो के सेटेलाइटों ने 10:35 बजे इस क्षेत्र की तस्वीर लेने के

लिए इंटरनेशनल चार्टर से भी संपर्क साधा था। जिससे भूकम्प उपरांत क्षति आकलन की प्रक्रिया आसान हो गयी थी।

नेपाल में यह समय शादियों का होता है। भूकम्प की वजह से यह सब रूक गया था। 02 मई को नदी के किनारे कुछ जोड़े बहुत ही सादगी पूर्ण तरीके से सामूहिक विवाह बन्धन में बँध रहे थे। बड़ी त्रासदी से उबरने में समय लगता है पर जिंदगी ठहरती नहीं आगे बढ़ती जाती है। भूकम्प से तबाह नेपाल में एक फ्रांसीसी महिला और उसके नेपाली पुरुष मित्र ने आपस में शादी रचाकर यहीं बताने का प्रयास किया। लंदन में एक एन जी ओ में प्रवक्ता के रूप में काम करने वाली महिला ने शादी के बाद कहा कि विवाह करने का फैसला छोटा था लेकिन यह एक महत्वपूर्ण संदेश है कि जिंदगी चलती रहती है। यह देखकर बड़ा सुखद सा अहसास हुआ तथा यह विश्वास और मजबूत हुआ कि अब जिंदगी तेजी से सामान्य हो जायेगी। यही मानव जीवन की सच्चाई है और एक बहुत बड़ा संदेश भी कि मुसीबत चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, जीवन को फिर से सामान्य होना ही होगा। हालांकि त्रासदी इतनी बड़ी थी कि सब कुछ पहले जैसा करने में सालों लग जायेंगे लेकिन लोगों के इन छोटे-छोटे प्रयासों ने यह दिखा दिया कि इन्सान वही है जो हिम्मत ना हारे और लगातार आगे बढ़ता रहे।



शोभा-भगवती ब्रिज क्षेत्र में ध्वस्त बहुमंजलीय इमारत में खोज एवं बचाव कार्य

एन डी आर एफ - अदम्य साहस और समर्पण की गौरव गाथा

1. पहला बचाव दल

25 अप्रैल 2015 को नेपाल में 7.9 इकाई की तीव्रता के भूकम्प की सूचना प्राप्त होते ही भारत सरकार ने एक सजग और उदार पड़ोसी के रूप में तुरन्त राहत एवं बचाव दल को नेपाल भेजने का निर्णय लिया। जैसे ही एन डी आर एफ की टीमों को भूकम्प प्रभावित नेपाल भेजने का निर्देश प्राप्त हुआ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश), भटिंडा (पंजाब), कोलकाता (प. बंगाल), तथा पटना (बिहार) स्थित बटालियनों की टीमों ने खोज एवं बचाव कार्य के लिए प्रस्थान करने का सिलसिला शुरू कर दिया। एन डी आर एफ के कर्मिकों के साथ खुद की व्यक्तिगत व सामाजिक उलझने भी होती है परन्तु आपदा की सूचना प्राप्त होते ही प्रत्येक बचाव कर्मी आपदा की घड़ी में खोज एवं बचाव कार्य के लिए स्वयं उद्वेलित हो उठता है। बचाव टीमों का सक्रिय सदस्य के रूप में जाने की एक होड़ सी लग जाती है। मानवता के प्रति इस समर्पण को देखकर विश्व के इस अपने आप में अनोखे बल का महानायक होने की एक सुखद अनुभूति होती है तथा रोम-रोम गर्व से भर उठता है। धन्य है यह भारत की धरती तथा धन्य है मूलमंत्र 'आपदा सेवा सदैव'। बचाव कर्मियों में भूकम्प से व्यथित नेपाल की सहायता के लिए तत्परता का अन्दाजा उनकी तीव्र गति से प्रस्थान के लिए की गई तैयारी से लगाया जा सकता था। पीड़ितों के लिए संवेदनशीलता उनके चेहरों और तैयारी सम्बन्धित गतिविधियों में परिलक्षित हो रही थी। एन डी आर एफ गाजियाबाद की चार टीमों, जिनमें खोज एवं बचाव कर्मी भी थे, प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, कमाण्डेंट के नेतृत्व में उसी दिन 25 अप्रैल 2015 को अपराह्न 2 बजकर 5 मिनट पर हिण्डन एयर बेस पर सभी आवश्यक उपकरणों एवं संसाधनों के साथ पहुँच गयी थीं।



नेपाल के लिए वायुमार्ग से प्रस्थान की तैयारी

इनमें से एक टीम कुलीश आनन्द, सहायक समादेष्टा के नेतृत्व में तत्काल भारतीय वायुसेना के हवाई जहाज 'हर्कुलिस सी-130' द्वारा नेपाल के लिए रवाना हो गयी। एन डी आर एफ की यह पहली टीम, जिसमें एक छोटी चिकित्सीय टीम भी थी, ने सर्वप्रथम काठमाण्डू की धरती पर कदम रखा था। इस प्रकार नेपाल की धरती पर पहला खोज एवं बचाव दल, जो कि एन डी आर एफ की टीम थी, ने भूकम्प आने के 5 घण्टे 20 मिनट के भीतर ही प्रभावित क्षेत्र पर पहुँच कर अपना कार्य शुरू कर दिया था और इसका गौरव भारतीय एन डी आर एफ को ही जाता है। यह पूरे नेपाल में सबसे पहला खोज एवं बचाव दल था।



नेपाल की धरती पर पहला विदेशी खोज एवं बचाव दल, एन डी आर एफ

काठमाण्डू हवाई अड्डे से नेपाली सेना के गाइड की मदद से टीम के सदस्यों को तुरन्त ही विभिन्न स्थानों पर खोज एवं बचाव अभियान के लिए भेज दिया गया था। इसके बाद ही 2 और टीमों ने जिसमें 96 खोज एवं बचाव कर्मी थे, प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, कमाण्डेंट के नेतृत्व में वायुसेना के विमान 'सी-17' से हिण्डन हवाई पट्टी से काठमाण्डू के लिए उड़ान भरी थी। यह दो टीमों काठमाण्डू हवाई अड्डे पर 25 अप्रैल 2015 को ही सायं 7 बजकर 15 मिनट पर पहुँच गयी।

नेपाल पहुँचने पर त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एन डी आर एफ की टीम को स्वयं नेपाल में भारत के राजदूत श्री रंजीत रे एवं श्री प्रभात सिंह, (भारतीय दूतावास) ने वहाँ की वर्तमान स्थिति तथा एन डी आर एफ से अपेक्षाओं के विषय में जानकारी दी थी।



काठमाण्डू हवाई अड्डे पर भारतीय राजदूत द्वारा यथास्थिति की जानकारी

एन डी आर एफ की दो अन्य टीमों जिनमें 92 कार्मिक थे, हिण्डन हवाई पट्टी पर शाम (25 अप्रैल 2015) 6 बजकर 5 मिनट पर सभी आवश्यक उपकरणों एवं संसाधनों के साथ नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य के लिए पहुँच गयी थी। हिण्डन हवाई पट्टी पर प्रतीक्षारत 3 टीमों में से सिर्फ 20 कार्मिकों को ही भारतीय वायुसेना के विमान 'आई एल-76' में जगह मिली तथा वे 26 अप्रैल 2015 की प्रातः 1 बजे नेपाल पहुँच गये थे। रविवार (26 अप्रैल 2015), को सभी शेष राहत कर्मियों को पालम तकनीकी हवाई अड्डे से 'आई एल-76' के द्वारा काठमाण्डू ले जाया गया जहाँ से वे काठमाण्डू में दोपहर 1 बजकर 50 मिनट पर पहुँच गये थे। एन डी आर एफ के उप महानिरीक्षक, उत्तर क्षेत्र, रणदीप कुमार राणा भी इन राहत कर्मियों के साथ थे।



त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उत्तरी एन डी आर एफ की टीम

इसी क्रम में भटिंडा (पंजाब) स्थित एन डी आर एफ की बटालियन से चार टीमों, जिनमें 160 खोज एवं बचाव कर्मी थे, उसी शाम 9 बजकर 05 मिनट पर भारतीय वायुसेना के विमान 'आई एल- 76' के द्वारा काठमाण्डू पहुँच गए थे। इस प्रकार भूकम्प वाले दिन ही एन डी आर एफ की 7 टीमों नेपाल की धरती पर प्रभावित क्षेत्रों में खोज एवं बचाव कार्य में जुट गयीं थी। इन सदस्यों में कमाण्डेन्ट प्रदीप श्रीवास्तव भी शामिल थे। इन सभी बचाव कर्मियों ने सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में पीड़ितों को बचाने के कार्य में सारी ताकत झोंक दी थी।

नेपाल भूकम्प के बाद नेपाल सेना द्वारा 'मल्टी नेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' नेपाली सेना के मुख्यालय के परिसर में स्थापित किया गया था। अतः 'मल्टी नेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' में पहुँचने वाला पहला खोज व बचाव दल एन डी आर एफ ही था। 26 अप्रैल को ही एन डी आर एफ के कमाण्डेन्ट प्रदीप कुमार श्रीवास्तव तथा द्वितीय कमानाधिकारी प्रशांत पंत ने 'मल्टी नेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' का भ्रमण किया तथा वहाँ पर उन्हें नेपाली सेना के कर्नल (आपरेशन) नरेश सुबा ने काठमाण्डू में हुई क्षति के विषय में जानकारी दी। उस समय एन डी आर एफ की टीमों बस पार्क एरिया, सूर्यामधि, भक्तापुर, शिवमंदिर, गंगबू, स्वयंभू तथा सीतापाइला आदि सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में पहले से ही खोज एवं बचाव कार्य जारी रखे हुए थीं।

26 अप्रैल 2015 को एन डी आर एफ के महानिदेशक ओ पी सिंह सायं: 8 बजे नेपाली सेना मुख्यालय पहुँचे तथा वहाँ पर कर्नल नरेश सुबा ने एन डी आर एफ के महानिदेशक को यथास्थिति के विषय में जानकारी दी। नेपाल की तत्कालीन स्थिति जानने के बाद महानिदेशक ने प्रशान्त पंत, द्वितीय कमानाधिकारी को नेपाली सेना मुख्यालय से समन्वय स्थापित रखने के लिए वहाँ संलग्न रहने का निर्देश दिया, जिससे खोज एवं बचाव कार्य में बेहतर सहयोग एवं समन्वय स्थापित किया जा सके। 'मल्टी नेशनल मिलिट्री कोऑर्डिनेशन सेन्टर' में प्रतिदिन सुबह 8 बजे सभी देशों द्वारा स्थिति की समीक्षा के लिए बैठक होने लगी।

27 अप्रैल 2015 को निशीथ उपाध्याय के नेतृत्व में कोलकता से एन डी आर एफ की तीन टीमों, जिनमें कुल 118 खोज एवं बचाव कर्मी शामिल थे, एयर इंडिया के विशेष विमान से काठमाण्डू के लिए उड़ान भरी। काठमाण्डू के त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर खराब मौसम तथा सघन हवाई यातायात होने के कारण इस विशेष विमान को काठमाण्डू में उतारने की स्वीकृति नहीं मिली। फलस्वरूप इस एयर इंडिया के विशेष विमान को वापस कोलकता उतारा गया। यह एक मुश्किल समय था क्योंकि नेपाल की भयावह स्थिति में तुरन्त पहुँचने का संकल्प और यातायात का उसी समय अवरुद्ध होना झुंझलाहट पैदा कर रहा था हालांकि यातायात हर आपदा के समय मुश्किलें बढ़ा ही देता है। इसी क्रम में पुनः दूसरे दिन (28 अप्रैल 2015) इस विशेष विमान ने कोलकता हवाई अड्डे से सुबह 7 बजे उड़ान भरी तथा 3 टीमों को 2 घण्टे पश्चात् काठमाण्डू में उतार दिया गया था।

27 अप्रैल 2015 को एन डी आर एफ, पटना (बिहार) से तीन टीमों को सड़क मार्ग से नेपाल के प्रभावित क्षेत्रों के लिए प्रस्थान करने का निर्देश दिया गया जिसके फलस्वरूप मनीष रंजन, द्वितीय कमानाधिकारी के नेतृत्व में तीन टीमों जिनमें कुल 145 खोज एवं बचाव कर्मी थे तथा चार प्रशिक्षित श्वान दस्ते भी शामिल थे, अपने आवश्यक उपकरणों एवं संसाधनों के साथ नेपाल के लिए निकल पड़ी। ये तीनों टीमों सड़क मार्ग से 29 अप्रैल 2015 की प्रातः 3 बजे नेपाल के प्रभावित क्षेत्र काठमाण्डू पहुँच गयी थीं।

28 अप्रैल 2015 की बैठक में नेपाली सेना ने स्थिति की पुनर्समीक्षा की जिसके बाद सभी टीमों को कार्य क्षेत्र वितरित किये गये। 28 अप्रैल 2015 को एन डी आर एफ के महानिदेशक 12 बजकर 30 मिनट पर सेना मुख्यालय में आये तथा उन्होंने स्वयं सभी के साथ स्थिति की समीक्षा की। इसी सिलसिले में महानिदेशक ओ पी सिंह ने नेपाली सेना के प्रमुख जनरल गौरव एस जे बी राणा से भी मुलाकात की। 28 अप्रैल 2015 को 'ओछा' (ऑफिस फार द कोऑर्डिनेशन ऑफ ह्यूमैनिटेअरिअन् अफेयर्स) ने त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के परिसर में 'ओसेक' (आन साईट आपरेशन सेन्टर) स्थापित किया। 'इनसाराग' (इन्टरनेशनल सर्च एण्ड एडवाइजरी ग्रुप) की सभी 18 टीमों 'ओछा' के निर्देशन पर कार्य कर रही थी। उस दिन नेपाल में 76 टीमों खोज एवं बचाव अभियान में लगी हुई थी। 'ओछा' के द्वारा प्रतिदिन सुबह 8 बजे तथा सायं 6 बजे बैठक की जाती थी ताकि रोज के कार्यों की समीक्षा की जा सके। एन डी आर एफ के प्रतिनिधि के रूप में प्रदीप कुमार श्रीवास्तव इसमें भाग लेते थे। इस बैठक के दौरान एन डी आर एफ द्वारा किये जा रहे बचाव कार्यों के बारे में सभी देशों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया जाता था।

अभी तक भूकम्प प्रभावित नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य के लिए एन डी आर एफ की 16 टीमों भूकम्प आने के प्रथम दिन से 3 दिनों के भीतर आपदा खोज एवं बचाव कार्य तथा मानवीय सहायता के लिए लगातार कार्य कर रही थी। इन सभी टीमों को स्थानीय नेपाली सेना ही विभिन्न सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में खोज एवं बचाव कार्यों के लिए अवश्यकतानुसार भेज रही थी क्योंकि राहत एवं बचाव कार्य के संचालन के लिए नेपाली सेना ही मुख्य केन्द्रीय संस्था के रूप में कार्य कर रही थी। समस्त राहत एवं बचाव कार्यों के समन्वय की जिम्मेदारी नेपाली सेना ने संभाली थी तथा वे प्रत्येक राहत एवं बचाव कार्यस्थल पर गाइड के कर्तव्यों का भी निर्वाह कर रहे थे। टीमों को उनके कंट्रोल रूम के निर्देशानुसार प्रभावित कार्यस्थल तक पहुँचाने का कार्य भी नेपाली सेना द्वारा किया जा रहा था।

एन डी आर एफ द्वारा नेपाल भूकम्प के उपरान्त किये गये खोज एवं बचाव कार्य की समीक्षा करने पर यह सर्वमान्य सत्य के रूप में उभरकर

आया कि यह बल विश्व पटल पर तेजी से उभर रहे अपने आप में अनूठे बल की गौरवशाली गाथा का एक उत्कृष्ट नमूना था। एन डी आर एफ ने न सिर्फ अपने मानवीय मूल्यों और कर्तव्यनिष्ठा से पहले बचाव दल के रूप में पहचान बनायी थी अपितु अपनी उपलब्धियों से समस्त मानव जगत को अचम्बित भी कर दिया था। नेपाल की जनता एन डी आर एफ की कार्य कुशलता व कार्य प्रणाली तथा मानवीयता से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकी थी। त्रासदी के दिन से ही प्रारम्भ किये गये कार्यों का लेखा-जेखा इस तथ्य का गवाह बन गया कि एन डी आर एफ ने नेपाल के समस्त मानव मनः पटल पर एक अमिट छाप छोड़ी थी। हर उपलब्धियों के बाद नेपालवासियों का एन डी आर एफ के लिए भावविह्वल जयघोष बचाव कर्मियों को भी उद्वेलित तो कर ही देता था उनका प्रेम हमें अपने कार्य की तरफ और प्रेरित एवं समर्पित कर रहा था।

25 अप्रैल 2015 को प्रथम बचाव दल, जो काठमाण्डू पहुँचा था, उसे हवाई अड्डे पर स्थापित 'रिसेप्शन डिपार्चर सेन्टर' (आर डी सी) के निर्देशानुसार सूर्यामधि (भक्तापुर) भेजा गया। इस टीम ने पूरी रात वहाँ पर खोज एवं बचाव कार्य किया तथा वहाँ एक ध्वस्त ढाँचे से एक जीवित व्यक्ति को बाहर निकाला और फिर वही जयघोष। इन सभी कार्यों के बीच मृत्यु को इतने नजदीक से महसूस करना, शवों की सड़ाधं, परिजनों का विलाप हमें रोबोट सा भावना शून्य बना देता है। यहां तक कि रोजमर्रा की आवश्यकताएं, भूख, प्यास का कोई एहसास नहीं होता। प्रकृति के समझ, मानव जीवन की असहायता लगातार कचोटती है और यही हमें एक जुट होकर इससे संघर्ष करने की शक्ति देती है। एन डी आर एफ की अन्य दो टीमों को ललितपुर भेजा गया था, वहाँ दोनों खोज एवं बचाव कार्य में जुट गयीं थीं। इनमें से एक टीम ने चौमाती में खोज एवं बचाव कार्य प्रारम्भ किया तथा वहाँ एक ध्वस्त इमारत के मलवे से 3 जीवित व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। परिजनों का प्रेम देखते ही बनता था। इस दौरान एक टीम ने 'शोभा भगवती ब्रिज' जो कि काठमाण्डू में ही स्थित है के तट पर ध्वस्त हुई बहुमंजलीय इमारत में खोज एवं बचाव कार्य प्रारम्भ किया। इस टीम ने यहाँ पर 5 दिनों तक लगातार खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा था।



24 × 7 जारी रखा गया खोज एवं बचाव कार्य

एक अन्य दूसरी टीम ने नेपाल के प्रधानमंत्री निवास के निकट स्थित आयकर भवन बालूवाटर में उसी रात खोज एवं बचाव कार्य को अंजाम दिया तथा रात्रि में ध्वस्त ढाँचे से एक मृत शरीर को बाहर निकाला जबकि दूसरी तरफ भटिंडा से आयी एक टीम को 'सीतापाइला' भेजा गया था। जहाँ दूर-दराज से सुने जा रहे समाचारों में शवों की संख्या महत्वपूर्ण होती है वहीं एक बचाव कर्मी के लिए यह उनकी भावनात्मक सहनशीलता का परीक्षण और परिजनों के लिए एक हृदय विदारक घटना होती है जिसे वहाँ उपस्थित रहकर ही समझा जा सकता है। टीम ने वहाँ पहुँचते ही खोज एवं बचाव कार्य प्रारम्भ कर दिया था। टीम ने कठिन परिस्थितियों के बावजूद घरों के मलवों से 7 मृत शरीरों को निकाला। कभी-कभी परिजनों का असहनीय विलाप तथा एन डी आर एफ बचाव कर्मियों के लिए अश्रुपूरित कृतज्ञता हमें भी विचलित कर देती थी किन्तु बचाव कर्मियों की कर्तव्यनिष्ठा कभी भी प्रभावित नहीं हुई। दूसरी भटिंडा की टीम को सीधा 'गंगंबू' क्षेत्र में भेजा गया, जहाँ पर उन्होंने पूरी रात खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा तथा इनके अथक प्रयासों से उसी रात 3 जीवित पीड़ितों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया था, यह एक बड़ी उपलब्धि थी। एन डी आर एफ की दो और टीमों को भी सर्वाधिक भूकम्प प्रभावित क्षेत्र भक्तापुर भेजा गया। इन दोनों टीमों ने सूर्य विनायक सेना कैम्प के निर्देशानुसार भक्तापुर के विभिन्न प्रभावित क्षेत्रों में खोज एवं बचाव के कार्य को फौरन प्रारम्भ कर दिया था। एन डी आर एफ ने बचाव कार्यों के कुशल संचालन के लिए नेपाली सेना की कॉम्बैट इंजीनियरिंग बटालियन

के परिसर में अपना 'कंट्रोल-रूम' (ई ओ सी) स्थापित किया था। यहीं से एन डी आर एफ के समस्त बचाव कार्यों का संचालन शुरू हो गया था। विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही टीमों के बीच यहां से वी एच एफ के द्वारा संचार व्यवस्था स्थापित की गयी थी। साथ ही एच एफ संचार व्यवस्था भी स्थापित की गयी थी। जिससे विभिन्न कार्यों के समन्वय में बड़ा सहयोग मिला। इसके अतिरिक्त एन डी आर एफ मुख्यालय, नई दिल्ली तथा विभिन्न बटालियन मुख्यालयों से सीधा सम्पर्क साधने के लिए क्यू डी ए (क्विक डिप्लायमेन्ट एंटीना) स्थापित किया गया था।

26 अप्रैल को सभी टीमों ने विभिन्न स्थानों पर खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा। कुछ टीमों को अपने पूर्व के स्थानों से कार्य समाप्त होने के उपरान्त बिना विश्राम नये आवश्यक प्रभावित क्षेत्रों में लगाया गया तथा सभी ने खोज एवं बचाव कार्य में बिना असुविधा की परवाह किये सारी ताकत झोंक दी थी। एक टीम ने बचाव कार्य को अनवरत् जारी रखने के लिए शोभा भगवती ब्रिज पर ही अपना बेस स्थापित कर लिया था। उन्होंने दिन-रात बचाव कार्य का क्रम जारी रखा तथा ध्वस्त हुई बहुमंजिली इमारत से 5 शव बाहर निकाले। परिजनों के कोलाहल और धन्यवाद प्रेषण के बीच लगातार शवों के समीप रहकर बचाव कर्मियों का भावना शून्य हो जाना एक आम बात है, मैं एक ऐसे बचाव कर्मी से मिला जो बचाव कार्य में इस कदर लिप्त था कि उसकी कोहनी में लगी चोट का खून सूखने के बाद भी उसके सहयोगियों के ध्यान दिलाने पर ही वह उसे महसूस कर पाया, वह अचम्भित अवस्था में यह जानने की चेष्टा कर रहा था, उसे चोट कब लगी होगी और बचाव कर्मियों के लिए यह एक सामान्य घटना है। यहीं से एक उप टीम चौमाती क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेज दी गयी, वहाँ से भी उन्होंने 5 शव निकाले थे। भटिंडा से आयी टीम ने सूर्यामधि-क्षेत्र के विभिन्न ईलाकों में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा तथा वहाँ से 6 शवों को बाहर निकाला था। सूर्यामधि और भक्तापुर में खोज एवं बचाव कार्य समाप्ति के उपरान्त, तीन टीमों को महाराजगंज ब्रिगेड क्षेत्र में बचाव कार्य के लिए भेजा गया। एक टीम ने बालूवाटर क्षेत्र में आयकर भवन परिसर में खोज एवं बचाव कार्य सम्पन्न किया और वहाँ से 5 शवों को बाहर निकाला। तत्पश्चात् इस टीम को बसुन्धरा नामुनवाल क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजा गया। इस टीम ने बसुन्धरा क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य के दौरान एक ध्वस्त इमारत से एक जीवित व्यक्ति को बाहर निकाल लिया था जबकि

एक अन्य टीम ने सीतापाइला तथा स्वयंभू के क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर बचाव कार्य जारी रखा था और उनके अथक प्रयासों से इस कार्य क्षेत्र से 9 शवों को बाहर निकाल कर उनके परिजनों को सौंप दिया था। दूसरी तरफ एक अन्य टीम ने गंगबू क्षेत्र में बचाव कार्य जारी रखा तथा वहाँ से 2 जीवित व्यक्तियों को सुरक्षित निकाला और यहीं से 2 लोगों के शवों को भी निकाला गया था। गाजियाबाद की एन डी आर एफ की तीन अन्य टीमों भी काठमाण्डू में लगभग 2 बजे दिन में पहुँच गयी थी। इन टीमों को सीधे ए डी ए छावनी भेजा गया वहाँ से ये टीमों शाम तक खोज एवं बचाव कार्यों में लगा दी गयी थी।

27 अप्रैल 2015 को एन डी आर एफ की एक टीम काठमाण्डू के मच्छापोखरी इलाके में खोज एवं बचाव कार्यों के लिए भेजी गयी। इस टीम ने कई ध्वस्त इमारतों में बचाव कार्य जारी रखा तथा इस दौरान इस क्षेत्र से एक जीवित व्यक्ति को काफी मशक्कत के बाद सुरक्षित निकाला। इन सभी घटनाओं में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि ध्वस्त इमारत के अंदर बेहद संकरी जगहों में घुसे बचाव कर्मियों के सुरक्षित बाहर आने तक, इन्हें बाहर से सहायता दे रहे सहयोगी लगातार अपने साथियों की सुरक्षा के लिए अपने-अपने कार्यों के साथ अपने स्थानों से ही सुरक्षा पर नजर रखे थे। यह सब देख रहा व्यक्ति एन डी आर एफ की टीम भावना पर नतमस्तक था। इसी दिन शोभा भगवती ब्रिज पर लगातार काम कर रही टीम ने 4 शवों को निकाला तथा यहाँ की उप टीम ने चौमाती क्षेत्र से 2 शवों को निकालने में सफलता प्राप्त की थी। एन डी आर एफ की एक अन्य टीम ने बसुन्धरा क्षेत्र में 'नामुना' से एक शव निकाला था। एक अन्य टीम जो 'कोपान' में खोज एवं बचाव कार्य कर रही थी, उसने वहाँ से एक शव निकाला तथा 49,789 मात्र नेपाली मुद्रा मलवे के भीतर से प्राप्त की थी जिसे स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। इसी दिन एक टीम ने रामकोट क्षेत्र में ध्वस्त हुई इमारतों में खोज व बचाव कार्य के दौरान फँसे हुए 4 शवों को बाहर निकाला। ब्रिजेश्वरी में कार्यरत टीम ने बचाव अभियान के दौरान प्राप्त हुए कुछ बहुमूल्य सामानों को स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया था। दूसरी टीम ने 'चौमाती' इलाके के एक ध्वस्त भवन में बचाव कार्य किया तथा इस दौरान इस टीम ने 4 शवों को मलवों से बाहर निकाला था। सीतापाइला में खोज एवं बचाव कार्य में लगी टीम ने 6 शवों को बाहर निकाला। इसके बाद इसी टीम ने 'बाल्कू' में खोज एवं बचाव कार्य सम्पन्न किया। एक टीम न्यू बस पार्क क्षेत्र में

खोज एवं बचाव कार्य कर रही थी तथा वहाँ ध्वस्त तीन इमारतों से 6 शवों को बाहर निकाला था। खोज एवं बचाव कार्य में तेजी लाने तथा निर्विघ्न बचाव कार्य जारी रखने के प्रयासों में नया आयाम तब जुड़ गया, जब सशस्त्र सीमा बल के 18 वाहनों की टुकड़ी ने एन डी आर एफ के कन्ट्रोल-रूम में उपस्थिति दर्ज करायी। इन वाहनों को विभिन्न इलाकों में चल रहे खोज एवं बचाव कार्यों में जुटी एन डी आर एफ की टीमों का अंग बनने के लिए भेज दिया गया था। इस सभी बचाव कार्यों को सुदृढ़ संचार तथा यातायात व्यवस्था नया जीवन और गति प्रदान कर रहे थे।

28 अप्रैल को भी शोभा भगवती ब्रिज पर लगातार कार्यरत टीम ने ध्वस्त बहुमंजली इमारत से 3 शव बाहर निकाले। उसी दिन न्यू बस पार्क क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य कर रही टीम ने तीन अलग-अलग जगहों पर बचाव कार्य के दौरान 7 शव बाहर निकाले थे। इसी टीम ने न्यू बस पार्क क्षेत्र में स्थित 'तान्हू' होटल से नेपाली सेना में कार्यरत सेना के मेजर का शव निकाला था, जिसे देखने उमड़ा जन सैलाब बचाव कर्मियों से हाथ मिलाकर कृतज्ञता व्यक्त कर रहा था। टीम ने 'गंगबू' क्षेत्र में 'जनप्रिय' होटल के ध्वस्त मलवों में से 4 शवों को बाहर निकाला था। 'चौमाती' क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य की टीमों ने 4 शव बाहर निकाले थे। इसी प्रकार एन डी आर एफ की टीमों ने समस्त दिन 'कोपन', 'बसुन्धरा टोल', 'सीतापाइला', 'गणेशस्थान', 'गंगबू' तथा 'ब्रिजेश्वरी' में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा था। कोलकता से आयी एन डी आर एफ की तीन टीमों निशीथ उपाध्याय के नेतृत्व में एयर इण्डिया के विशेष विमान से सुबह लगभग 09 बजकर 30 मिनट पर काठमाण्डू अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुँची। इन टीमों ने काठमाण्डू हवाई अड्डे पर ही संचालित एन डी आर एफ के कन्ट्रोल रूम से सम्पर्क साधा तथा तदुपरान्त भारतीय दूतावास स्थित केन्द्रीय विद्यालय में अपना बेस स्थापित किया। पहुँचने के तुरन्त बाद ही एक टीम ने 'तिलगंगा नया बस स्टैण्ड' में एकत्र भारतीय जन समुदाय की भारत वापसी में सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया। इस टीम ने 18 बसों के द्वारा बिहार के लिए 800 तथा 24 बसों द्वारा 1150 लोगों को उत्तर प्रदेश में सुरक्षित भेजने में पूरा सहयोग दिया। इन कठिन परिस्थितियों से निकले पर्यटकों की कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि बचाव कार्य की सारी थकान मिटा देती थी लेकिन छत-विछत शवों के बीच रहकर तथा उनके परिजनों का क्रंदन एक गहरा मानसिक अघात देता था जिसका अहसास बचाव कार्य से लौटने के बाद होता था। जब दैनिक दिनचर्या

के बीच कई बार ये घटनाएं फिल्म की रील की तरह बार-बार दस्तक देती और हम इन्हें भूलाने का असफल प्रयास करते तथा इसकी गंभीरता परिवार जनों से बाँट भी नहीं पाते। अनायास ही ये जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण उलट-पलटकर रख देता। इसकी दूसरी टीम ने काठमाण्डू के धरहरा क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य जारी कर दिया।

29 अप्रैल को शोभा भगवती ब्रिज पर कार्यरत टीम ने खोज एवं बचाव कार्य रात-दिन जारी रखा तथा ध्वस्त बहुमंजलीय भवन से 7 शव निकाले तथा कई कीमती सामानों को भी निकाला जिसे स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। इसी प्रकार एक अन्य टीम ने बसुन्धरा क्षेत्र के 'नामूना टोल' से 6 शवों को बाहर निकाला। यहीं से कुछ बहुमूल्य सामान भी प्राप्त हुए थे, जिन्हें घटनास्थल पर मौजूद स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया। नेपाल सरकार के गृहमन्त्री श्री राम देव गौतम तथा नेपाल में भारत के राजदूत श्री रंजीत रे ने एन डी आर एफ के महानिदेशक ओ पी सिंह के साथ शोभा भगवती ब्रिज व उसके समीप एन डी आर एफ द्वारा चलाये जा रहे अनवरत् खोज एवं बचाव कार्यों का अवलोकन किया तथा बचाव कर्मियों के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।



एन डी आर एफ के बचाव कार्य का अवलोकन करते नेपाल के गृहमन्त्री

एन डी आर एफ की एक टीम ने 'भाल्कू' क्षेत्र से खोज एवं बचाव कार्य के दौरान 2 शव तथा कुछ कीमती सामानों को निकाला। नेपाल के

तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कुमार कोईराला तथा नेपाली सेना प्रमुख ने बालाजू बाईपास क्षेत्र में कार्यरत एन डी आर एफ के खोज एवं बचाव कार्यों का अवलोकन किया। यहाँ पर काम कर रही टीम ने 3 शवों को बाहर निकाला। गणेशस्थान (गंगबू) क्षेत्र में टीम ने खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा तथा 4 शवों एवं कुछ कीमती सामानों को भी निकाला था। यही पर खोज एवं बचाव कार्य कर रही दूसरी टीम ने बचाव कार्य के दौरान 3 शव निकाले थे जबकि 'चौमाती' क्षेत्र के एक ही ध्वस्त ढाँचे से एक टीम ने 4 शवों को बाहर निकाला तथा उनके परिजनों को स्थानीय पुलिस को सौंप दिया। 'तिलगंगा नया बस्ती बस स्टैण्ड' पर उमड़े भारतीय समुदाय के जन सैलाब को सुरक्षित भारत भेजने का क्रम जारी था। भारतीय राज्य सरकारें भी अपनी क्षमता से नेपाल राहत एवं बचाव कार्यों में सहयोग कर रही थी। यहाँ पर कार्यरत टीम ने बिहार सरकार की 20 बसों द्वारा 1600 भारतीय नागरिक तथा उत्तर प्रदेश सरकार की 80 बसों द्वारा 5000 भारतीय नागरिकों को सड़क मार्ग से भेजने में भारतीय दूतावास के अधिकारियों के साथ सहयोग किया था। इसी दिन यही से उत्तराखण्ड की 10 बसों द्वारा 500 भारतीय नागरिक सुरक्षित भारत भेजे गये। सीतापाइला में ध्वस्त हुई एक बहुमंजलीय इमारत से राहत एवं बचाव कार्य के दौरान टीम ने एक स्थानीय नागरिक का शव निकाला। एन डी आर एफ, पटना से 3 टीमों मनीष रंजन, द्वितीय कमानाधिकारी के नेतृत्व में काठमाण्डू में प्रातः 3 बजे सड़क मार्ग से पहुँच गयी थी। इन टीमों को नेपाल आर्म्स पुलिस बल के 'बालेम्भू' स्थित कैम्प में भेजा गया। वहाँ पहुँचकर इन टीमों ने अपना बेस कैम्प स्थापित किया था।

30 अप्रैल को कोलकता से आयी एन डी आर एफ की टीम ने शोभा भगवती ब्रिज पर खोज एवं बचाव कार्य में लगी टीम से कार्य भार ग्रहण किया तथा खोज एवं बचाव कार्य को निर्विघ्न जारी रखा। शोभा भगवती ब्रिज से प्रतिस्थापित टीम को केन्द्रीय विद्यालय स्थित बेस में भेज दिया गया। इसी दिन टीम ने शोभा भगवती ब्रिज से 2 शवों को बाहर निकाला। टीम ने 'गंगबू' क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा तथा एक ध्वस्त भवन से एक शव को बाहर निकाला। ब्रिजेश्वरी इलाके में पिछले तीन दिनों तक लगातार खोज एवं बचाव कार्य जारी रखी हुई टीम ने एक ध्वस्त ढाँचे से 4 शवों को बाहर निकाला था। एक टीम ने खोज एवं बचाव कार्य के लिए 'असन दरबार स्कवायर' में मोर्चा सँभाला हुआ था। जबकि तीन अन्य टीमों ने 'चौमाती' क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा। एक टीम ने 'जन

सेवा गेस्ट हाउस', जो कि भूकम्प के उपरान्त ध्वस्त हो चुका था, में खोज एवं बचाव कार्य को जारी रखा। 'तिलगंगा नया बस्ती बस स्टैण्ड' पर स्थित टीम ने 1200 भारतीयों को बिहार सरकार की 21 बसों द्वारा, उत्तर प्रदेश की 30 बसों के द्वारा 1300 भारतीय तथा 1400 भारतीयों को उत्तराखण्ड की 26 बसों द्वारा भारत सुरक्षित भेजने में अहम भूमिका निभायी। एक अन्य टीम को 'थामेल' क्षेत्र में खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजा गया था।

01 मई 2015 को दो टीमों को 'गौरी शंकर गेस्ट हाउस' जो न्यू बस पार्क क्षेत्र में था, वहाँ पर खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजा गया। यह गेस्ट हाउस बहुत ही सँकरी गली में था तथा यह आंशिक रूप से जमीन के भीतर चला गया था। आसपास बने गेस्ट हाउस भी धाराशायी हो गये थे तथा कुछ एक दूसरे के ऊपर झुके हुए थे जो कि बचाव कर्मियों के लिए स्वयं की सुरक्षा की मुश्किलें पैदा कर रहा था किन्तु बचाव कर्मियों के कार्य की अनवरत गति पर इसका कोई प्रभाव नहीं दिख रहा था। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल, भारत के विदेश सचिव डॉ. एस जयशंकर तथा नेपाल में भारत के राजदूत श्री रंजीत रे ने एन डी आर एफ के द्वारा चलाए जा रहें खोज एवं बचाव कार्य को देखने कार्यस्थल पर गये तथा इस बल के साहसिक कार्यों से अवगत हुए। इन्हें कार्यस्थल पर एन डी आर एफ के महानिदेशक ओ पी सिंह ने बल द्वारा किये गये बचाव कार्यों के बारे में जानकारी दी।



न्यू बस पार्क क्षेत्र में एन डी आर एफ के कार्यों से अवगत होते भारत के सुरक्षा सलाहकार

‘चौमाती’ क्षेत्र में 2 ध्वस्त इमारतों में खोज एवं बचाव कार्य टीम के द्वारा जारी रहा तथा यहाँ से एक शव भी निकाला गया। इस टीम ने यहाँ से 15 मवेशियों के शवों को भी निकाला जिन्हें स्थानीय प्रशासन को सौंप दिया गया था। ‘तिलगंगा नया बस्ती बस स्टैण्ड’ पर भारतीयों को सुरक्षित वापस भेजने का सिलसिला जारी रहा। एक टीम ने बिहार सरकार के द्वारा भेजी गयी 12 बसों में 550 भारतीय तथा उत्तर प्रदेश की 42 बसों में 530 भारतीयों को सुरक्षित वापस भारत भेजने में मदद की। एक अन्य टीम ने गणेश मंदिर (गंगबू) में ध्वस्त बहुमंजिले भवन के बेस मेन्ट में फँसी हुई महिला का शव निकाला। ब्रिजेश्वरी इलाके में टीम द्वारा खोज एवं बचाव कार्य जारी रहा। एन डी आर एफ की टीमों ने बालाजू में संगम टोल, धर्मस्थली, मित्रा विहार (गंगबू), व्हाइट गुम्पा तथा स्टनगल में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा। तिलगंगा नया बस्ती बस स्टैण्ड से टीम ने बिहार सरकार की 8 बसों के द्वारा 208 भारतीयों को भारत भेजने में मदद की।

02 मई 2015 को ब्रिजेश्वरी क्षेत्र में कार्य कर रही टीम ने खोज एवं बचाव कार्य सम्पन्न किया तथा एक बच्चे का शव निकाला। तिलगंगा नया बस्ती बस स्टैण्ड से भारतीयों को स्वदेश भेजने का क्रम चलता रहा। वहाँ स्थित टीम ने बिहार सरकार के द्वारा भेजी गयी 8 बसों से 280 भारतीयों को स्वदेश भेजने में मदद की। नेपाली सेना के निर्देशानुसार 4 टीमों को शांखू भेजा गया। लगातार चलाये गये खोज एवं बचाव कार्य के उपरान्त टीम ने शोभा भगवती ब्रिज पर कार्य को अंततः पूर्ण किया। यह टीम वापस अपने बेस स्थान केन्द्रीय विद्यालय, भारतीय दूतावास में आ गयी। दो टीमों ने गौरी शंकर गेस्ट हाउस में ध्वस्त इमारत में खोज एवं बचाव कार्य के क्रम को जारी रखा। तीन टीमों ने क्रमशः सीतापाइला, व्हाइट गोम्पा तथा स्यूछतर क्षेत्रों में खोज एवं बचाव कार्य को जारी रखा था। जब कि शेष टीमों को अपने-अपने बेस स्थानों पर सजग व सतर्क रहने का निर्देश दिया गया।

03 मई 2015 को दो टीमों ने गौरी शंकर गेस्ट हाउस में खोज एवं बचाव कार्य को जारी रखा। एक टीम ने इस ध्वस्त हुए गेस्ट हाउस से 3 शव निकाले। शांखू क्षेत्र में केंद्रित 4 टीमों ने चालाखू टोल तथा सालसा टोल में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखा। शोभा भगवती ब्रिज पर पुनः एक टीम को खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजा गया तथा एक टीम को पुनः ब्रिजेश्वरी क्षेत्र में बचाव कार्य के लिए भेजा गया। भारतीय दूतावास

स्थित एक टीम ने भूकम्प पीड़ितों को भारतीय दूतावास, काठमाण्डू परिसर में 105 टेन्ट तथा 520 कंबल वितरित किये। पटना की एन डी आर एफ की टीमों को बीर अस्पताल के ट्रामा सेन्टर में भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए तैनात किया गया।

04 मई 2015 को नेपाली सेना प्रमुख जनरल गौरव जे बी राणा ने चार एन डी आर एफ की टीमों के बेस शांखू का दौरा किया। उन्होंने खुले हृदय से एन डी आर एफ द्वारा किये गये राहत एवं बचाव कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।



नेपाली सेना प्रमुख एन डी आर एफ के संसाधनों का अवलोकन करते हुए

एक टीम, जो गौरी शंकर गेस्ट हाउस में राहत एवं बचाव कार्य कर रही थी, ने भूमितल से एक शव निकाला। जब तक शव या जीवित व्यक्तियों के पाए जाने की सभी संभावनाएं समाप्त नहीं हो जाती, बचाव कार्य जारी रहता है किन्तु समय बितने के साथ संभावनाएं समाप्त होती जाती है और बचाव कार्य राहत कार्य में परिवर्तित होने लगता है। इसी क्रम में गौरी शंकर गेस्ट हाउस परिसर में राहत एवं बचाव कार्य को विराम दिया गया। पटना से आयी एन डी आर एफ की तीन टीमों अभी भी 'बीर अस्पताल' के ट्रामा सेन्टर में मदद प्रदान करती रही। नेपाल सरकार ने स्थिति की समीक्षा की तथा सम्पूर्ण खोज एवं बचाव कार्य को विराम देने की घोषणा कर दी।

फलस्वरूप, 05 मई 2015 को एन डी आर एफ की टीमों ने खोज एवं बचाव का सफल अभियान समाप्त करने के बाद स्वदेश वापसी की तैयारी शुरू कर दी थी।

2. असंख्य चुनौतियाँ, अडिग आपदा सेवा सैनिक

25 अप्रैल 2015 को नेपाल में आये भूकम्प के कुछ ही घण्टों बाद, अदम्य साहसी एन डी आर एफ की टीमों ने नेपाल की धरती पर कदम रखा था।

गाजियाबाद से आये एन डी आर एफ के कमाण्डेंट प्रदीप कुमार श्रीवास्तव के अनुसार प्रायः भूकम्प उपरान्त पहला दिन बचाव कार्य के लिए अति महत्वपूर्ण होता है। समय बीतने के साथ स्थितियों में चुनौतियाँ कम होती जाती हैं। परन्तु नेपाल भूकम्प के उपरान्त बचाव कार्य में प्रतिदिन की चुनौतियाँ, पिछले दिन की ही भाँति, हर रोज नयी चुनौतियाँ लेकर आती थीं। प्रत्येक बचाव कार्य में न्यूनतम व आवश्यक ही बचाव कर्मियों को लगाया जा रहा था तथा वह भी एक निर्धारित संतुलित अनुपात में। हर ध्वस्त इमारत खतरनाक स्थितियों में परिवर्तित हो चुकी थी, जो किसी भी एक झटके व कंपन से भर-भराकर मलबों के ढेर में तब्दील हो सकती थी। इसलिए लगभग प्रत्येक बचाव कर्मियों के साथ एक सुरक्षा कार्मिक तैनात किया गया था ताकि किसी भी प्रकार के सम्भावित खतरे के उत्पन्न होने पर वह तुरन्त खतरे का इशारा कर सके। जिससे बचाव कर्मियों प्रत्येक परिस्थितियों में सुरक्षित ही रहे। अत्यधिक शोर व कंपन करने वाले उपकरणों के प्रयोग को रोकना पड़ा था।



एन डी आर एफ द्वारा पीड़ित से सम्पर्क साधने का प्रयास

हालाँकि विध्वंस प्रत्येक जगह पर हुआ था, परन्तु एन डी आर एफ द्वारा काठमाण्डू में जीवित भूकम्प प्रभावित पीड़ितों को सुरक्षित बाहर निकालना समस्त जन समुदाय के बीच विश्वास तथा समर्पण का अलख जगाना था। एन डी आर एफ के इस सफल अभियान के फलस्वरूप सभी आस-पास के पीड़ित जन समुदाय भी एन डी आर एफ से अपने-अपने सम्बन्धियों को मलवों में दूढ़ने व बचाने के लिए गुहार लगाने लगे थे। बहुत कम समय में एन डी आर एफ ने नेपाल वासियों का विश्वास जीत लिया था। वे उन्हें भगवान के भेजे दूत की तरह मानते थे, उनकी अपेक्षाएं और आशाएं चरम पर थीं।

एन डी आर एफ की टीमों काठमाण्डू घाटी के विभिन्न प्रभावित क्षेत्रों में खोज एवं बचाव कार्य कर रही थीं। पूरे अभियान को नेपाली सेना ही संयोजित कर रही थी। वे ही प्रत्येक टीम को गाइड मुहैया करा रहे थे। एन डी आर एफ ने पहले 12 घंटों में पूरी रात बचाव कार्य किया था। विशेषकर ललितपुर, सीतापाइला, गंगबू तथा भक्तापुर में इन सभी जगहों पर काफी नुकसान हुआ था। नेपाली सेना एन डी आर एफ की टीमों को उन ध्वस्त इमारतों पर कार्य करने के लिए ले जा रही थी, जहाँ पर जीवित लोगों के फँसे या दबे होने की संभावना थी। लगभग 35 बचाव कर्मियों की अगुवाई करते हुए निरीक्षक राज कुमार, नेपाली सेना द्वारा दिये गये गाईड की मदद से ललितपुर 11 बजे रात में पहुँचे थे। उस टीम ने वहाँ की अत्यधिक विपरीत परिस्थितियाँ का आकलन करने के बाद तुरन्त ही खोज एवं बचाव कार्य में प्रारम्भ कर दिया था। इस टीम ने यहाँ पर आयकर विभाग भवन से एक पुरुष का शव निकाला। टीम के अधिकारी के अनुसार पुरुष का शव एक ध्वस्त ढाँचे में दबा हुआ था जो कि भारी मात्रा में मलवों से दबा हुआ था। टीम के बचाव कर्मियों ने हाथ से प्रयोग करने वाले उपकरणों तथा हल्के उपकरणों का प्रयोग करके धीरे-धीरे मृत शरीर को बाहर निकाला था। यह एक जटिल स्थिति थी तथा आपदा सेवा सैनिकों ने चार घंटों के भीतर शव को ध्वस्त ढाँचे से बिना किसी नुकसान के बाहर निकाल लिया था। ललितपुर काठमाण्डू घाटी के सर्वाधिक भूकम्प प्रभावित तीन जिलों में से एक था।

3. साथी हाथ बढ़ाना

सीमित संसाधनों एवं उपकरणों के बावजूद नेपाली सेना ने 25 अप्रैल 2015 के तुरन्त बाद अपने कार्मिकों को प्रभावित क्षेत्रों में जाने का

निर्देश दे दिया था। नेपाल सरकार ने समस्त राहत एवं बचाव अभियान को 'नेशनल इमरजेन्सी आपरेशन सेन्टर' के माध्यम से संचालित किया। इसके लिए उन्होंने त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अतिरिक्त समन्वय एवं सम्पर्क के लिए 'रिसेप्शन एण्ड डिर्पाचर सेन्टर' तथा 'मल्टीनेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' से भी सीधा सम्पर्क साध रखा था। नेपाल में सम्पूर्ण राहत एवं बचाव अभियान का समन्वय नेपाल सेना के द्वारा ही किया जा रहा था जो कि प्रारम्भिक क्षति आकलन के आधार पर समस्त राहत एवं बचाव दल को प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँचाने में मदद कर रही थी। 'मल्टीनेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' को 26 अप्रैल 2015 को स्थापित किया गया। जहाँ से समस्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय राहत एवं बचाव दलों को समन्वित व संचालित किया जा रहा था। भूकम्प ने नेपाल में जो क्षति पहुँचायी थी वह कल्पनाओं से परे थी। नेपाली सेना ने लगभग अपने समस्त कार्मिकों को सर्वाधिक भूकम्प प्रभावित जिलों तथा आस-पास के क्षेत्रों में तुरन्त तैनात कर दिया था। नेपाली सेना मुख्यालय ने अपने सभी मुख्यालयों, यूनिटों तथा उप यूनिटों को यह निर्देश दिया था कि वह अपने-अपने क्षेत्र में खोज एवं बचाव अभियान में लगे राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय दलों को सम्पूर्ण सहयोग मुहैया करायें। इस अभियान को और अधिक बल तब मिला जब 'मल्टी नेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' के माध्यम से पड़ोसी मित्र राष्ट्रों एवं लगभग दो दर्जन राष्ट्रों ने राहत एवं बचाव कार्य में पूरा सहयोग दिया। पहले छह घण्टों में मदद की अंतर्राष्ट्रीय गुहार पर अमल करने वाला देश बना भारत। तत्पश्चात कई देश इसमें शामिल होते चले गये। भारतीय दल एन डी आर एफ प्रत्येक प्रभावित क्षेत्रों में सहयोग एवं सहभागिता की मिसाल कायम कर रहा था। इसका परिणाम प्रत्यक्ष देखा जा सकता था कि नेपाल जन समुदाय का सभी मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय दलों में सर्वाधिक विश्वास तथा अपनत्व भारतीय बचाव दल ने ही पाया था।

नेपाल सेना ने मानवीय सहायता के लिए तत्पर सभी राष्ट्रों के दलों, जिनमें भारत के अतिरिक्त चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, नार्वे, आस्ट्रेलिया, कनाडा, जापान, ब्राजील, दक्षिण कोरिया, रूस इत्यादि के साथ समन्वय स्थापित किया था। नेपाल सेना ने भूकम्प प्रभावित पीड़ितों के बचाव व आवश्यक वस्तुओं को दूर-दराज के इलाकों में पहुँचाने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी।

भारत ने अपने पड़ोसी राष्ट्र नेपाल की पीड़ा को अपना समझते हुए सर्वप्रथम एन डी आर एफ की 10 टीमों को नेपाल भेजा था। यही नहीं शीर्ष स्तर पर सहयोग एवं समन्वय स्थापित करने के लिए भारत सरकार ने एन डी आर एफ के महानिदेशक ओ पी सिंह को नेपाल में चलाये जा रहे बचाव अभियान की अगुवाई करने के लिए वहाँ भेजा था। सौभाग्यवश एन डी आर एफ के चलाये गये बचाव अभियान को महानिदेशक ओ पी सिंह के द्वारा शुरू से अन्त तक एक बेहतरीन शीर्ष नेतृत्व मिला। भारत के प्रधानमंत्री ने नेपाल के प्रधानमंत्री को चौतरफा सहयोग का भरोसा दिलाया था। भारतीय सेना ने अपने तीन शीर्ष कमाण्डरो को वायुसेना के पाँच हेलीकाप्टरों के साथ नेपाल भेजा था।

15 मई 2015 को भारतीय प्रधानमंत्री तथा उनके समकक्ष चीन ने नेपाल की स्वतन्त्रता एवं अखण्डता को बगैर प्रभावित किये यह साझा रूप से निर्णय लिया कि वे संयुक्त रूप से नेपाल को उसके पुनर्त्थान, पुनर्स्थापन, पुनर्निर्माण तथा विकास में पूरा सहयोग देंगे।

नेपाल भूकम्प के बाद सभी राष्ट्रों ने हिमालय की गोद में बसे आहत देश की मदद के लिए हाथ बढ़ाया था। चीन ने कई राहत एवं बचाव दल भेजे थे, जिनमे प्रशिक्षित श्वान, टेन्ट, कंबल तथा हेलीकाप्टर शामिल थे। इन्हे 26 अप्रैल की प्रातः नेपाल की धरती पर उतारा गया था। काठमाण्डू स्थित ब्रिटेन के दूतावास ने घोषणा की वे 18,000 घायलों को चिकित्सा सुविधा, 1000 प्राथमिक चिकित्सालयों का पुनर्निर्माण, 3000 बच्चों के टीकाकरण तथा 48,000 महिलाओं को परिवार नियोजन में मदद करेंगे। काठमाण्डू स्थित अमेरिकी दूतावास के हवाले से घोषणा हुई थी कि वे लगातार नेपाल के पुनर्निर्माण के कार्यक्रम में सहयोग देंगे। इसके अतिरिक्त आपातकालीन शिविर, स्वच्छ-सुरक्षित पेय जल, स्वच्छता किट तथा सर्वाधिक प्रभावित जिलों में स्वच्छता अभियान में भी करने का आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त अमेरिकी दूतावास ने कानून व्यवस्था तथा न्याय व्यवस्था की संस्थाओं को भूकम्प उपरान्त उभरने में मदद करने का आश्वासन दिया। जापान ने 14 मिलियन अमेरिकी डालर की आपातकालीन सहायता राशि की घोषणा की। जिसका उपयोग खाद्य सामग्री, आपातकालीन चिकित्सा सुविधा, शेल्टर, स्वास्थ्य, पेयजल व स्वच्छता में किया जाना था। इस राशि का उपयोग भूकम्प प्रभावित

पीड़ितों के लिए विश्व खाद्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय रेड-क्रास, यूनिसेफ इत्यादि के माध्यम से किया जाना था।

विकीपीडिया के अनुसार विश्व समुदाय द्वारा नेपाल भूकम्प पीड़ितों को मानवीय सहायता का कुछ इस प्रकार सहयोग प्राप्त हुआ था, जिन्होंने समाचार एजेन्सी के अनुसार अल्जीरिया ने मदद के लिए 70 कार्मिक, औषधियाँ तथा अन्य वस्तुएँ नेपाल भूकम्प उपरान्त भूकम्प पीड़ितों के लिए भेजी थी। आर्थिक मदद की तात्कालिक एक मुश्त पैकेज की घोषणा के अतिरिक्त आस्ट्रेलिया ने नेपाल की सहायता के लिए दो आपदा प्रबन्धन टीम तथा कुछ मानवीय सहायता विशेषज्ञ भेजे थे। इसी प्रकार 'आस्ट्रेलिया रेड क्रॉस' ने कई 'खोज एवं बचाव' दल नेपाल भेजे थे। भूटान के राजा श्री जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक ने स्वयं भूटान के राहत एवं बचाव दल का नेतृत्व किया। भूटान के 6 सदस्यीय चिकित्सा दल का नेतृत्व भूटान के प्रधानमन्त्री तथा स्वास्थ्य मन्त्री ने किया था तथा वे स्वयं दल के साथ ही आये थे। फ्रांस ने भी प्रारम्भिक बचाव दल, काम आने वाले उपकरण तथा राहत सामग्री नेपाल भेजी थी। जर्मनी की 'फेडरल एजेंसी फॉर टेक्नीकल रिलीफ' ने 26 अप्रैल 2015 को ही अपनी 'रैपिड डिप्लायमेन्ट यूनिट वाटर एंड सैनिटेशन एबराड' (सेवा) को नेपाल में तैनात कर दिया था। ग्रीस ने भी नेपाल से अपना 'खोज एवं बचाव दल' भेजने का प्रस्ताव किया था। इंडोनेशिया ने भी अपने 'खोज एवं बचाव दल' तथा चिकित्सीय दल को राहत सामग्री के साथ भेजा था। इजराइल ने अपने 'खोज एवं बचाव' दल के साथ चिकित्सीय दल को भी नेपाल भेजा तथा नेपाल को हर संभव मदद देने का विश्वास दिलाया था। 26 अप्रैल 2015 को ही इजराइल ने 2 विमानों के साथ अपने 'खोज एवं बचाव दल' को तमाम आवश्यक चिकित्सीय सामग्री के साथ जिसमें सभी उपकरण भी थे, नेपाल भेज दिया था। भूकम्प आने के दिन जापान सरकार ने आपातकालीन सहायता की घोषणा कर दी थी। जापान की 'जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी' ने नेपाल में जापान के विदेश मंत्रालय के विशेषज्ञ, राष्ट्रीय पुलिस एजेंसी, बचाव दल, प्रशिक्षित श्वान दस्ता, संचार उपकरण, चिकित्सक तथा आपदा राहत विशेषज्ञों को भेजा था। दक्षिण कोरिया ने नेपाल भूकम्प पीड़ितों की मदद के लिए अपने 'खोज एवं बचाव दल' को भेजा था। नीदरलैंड्स का 'शहरी खोज एवं बचाव दल' जिसमें 62 बचाव कर्मी तथा 8 श्वान दल भी शामिल थे, को नेपाल में राहत एवं बचाव अभियान में शामिल

होने के लिए भेजा था। न्यूजीलैण्ड ने भी अपना शहरी 'खोज एवं बचाव दल' एवं बचाव विशेषज्ञों की टीम को नेपाल में भेजा था। पाकिस्तान ने अपने 'पाकिस्तान वायुसेना' का एक भारवाहक विमान नेपाल के राहत एवं बचाव अभियान के लिए काठमाण्डू में उतारा था। जिसमें जीवन रक्षक आपातकालीन औषधियाँ, 30 बिस्तर का अस्पताल, सेना की खाद्य सामग्री, कंबल, टेन्ट तथा अन्य राहत की आवश्यक वस्तुएँ शामिल थी। पाकिस्तान ने सेना के चिकित्सक, चिकित्सीय कार्मिक, आपदा प्रबन्धन के विशेषज्ञ, विशेष 'खोज एवं बचाव' दल के प्रशिक्षित श्वान भी भेजे थे। पोलैण्ड ने अपने फायर विभाग से बचाव दल, चिकित्सक तथा प्रशिक्षित श्वान नेपाल में राहत एवं बचाव अभियान के लिए भेजे थे। रूस ने अपना 50 सदस्यीय विशेषज्ञ बचाव दल तथा भूकम्प आपदा में कार्य किये हुए अनुभवी विशेषज्ञ दल नेपाल भेजे थे। इनके साथ 'अत्याधुनिक स्वचालित बचाव उपकरण' भी थे। सिंगापुर की 'सिविल डिफेंस टीम' जिसमें 'खोज एवं बचाव दल' शामिल थे, को नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य के लिए भेजा था। श्रीलंका ने आपातकालीन राहत सामग्री के साथ विशेषज्ञ दल जिनमें चिकित्सक, चिकित्सीय कार्मिक तथा जीवन रक्षक दवायें भी थी को नेपाल भेजा था। स्विटजरलैण्ड का विशेषज्ञ दल जिनमें चिकित्सक, भवन आकलन कर्त्ता तथा जल परीक्षण विशेषज्ञ शामिल थे को नेपाल में भेजा था। राहत सामग्री के अतिरिक्त स्वीडन ने 'खोज एवं बचाव दल' तथा प्रशिक्षित श्वान के दस्ते को नेपाल भेजा था। थाइलैण्ड ने चिकित्सीय एवं बचाव दल को नेपाल भेजा था। इसके अलावा आवश्यक राहत सामग्री तथा राहत व बचाव के कार्य में भागीदारी थाइलैण्ड ने सुनिश्चित की। टर्की ने भी अपने एक राहत एवं बचाव दल को नेपाल भेजा था। आर्थिक मदद के अतिरिक्त ब्रिटेन ने 'खोज एवं बचाव दल', चिकित्सीय दल तथा आपदा प्रबन्धन विशेषज्ञ को नेपाल के राहत अभियान में उतारा। अमेरिका ने अपने एक 'खोज एवं बचाव दल' को नेपाल भेजा। 26 अप्रैल को 'वर्जीनिया टास्क फोर्स-1' को नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य के लिए लगाया गया था। लास-एंजिल्स के काउंटी 'शहरी खोज एवं बचाव दल' 'कैलीफोर्निया टास्क फोर्स-2' को नेपाल भेजा गया था।

'ओछा' के अनुसार नेपाल भूकम्प उपरान्त राहत एवं बचाव कार्य के लिए सम्पूर्ण विश्व से 31 देशों ने सहयोग दिया था। इस प्रकार कुल 2,242 लोग राहत एवं बचाव अभियान में लगे थे। 31 देशों की कुल 76

टीमो ने इस अभियान में हिस्सा लिया था। इनके साथ नेपाल में खोज एवं बचाव कार्य के लिए 135 प्रशिक्षित श्वान तैनात थे। पूरे अभियान में 16 लोगो को जीवित बचाया गया था तथा 1,182 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गयी थी। इस अभियान में भारत की अहम भूमिका थी। जिसमें एन डी आर एफ की 16 टीमों जिनमें 720 बचाव कर्मी तथा 8 प्रशिक्षित श्वान भी थे। नेपाल भूकम्प के राहत एवं बचाव कार्य के दौरान एन डी आर एफ सम्पूर्ण विश्व में जिस प्रकार एक जुटकर होकर त्वरित मदद पहुंचाई उसने सम्पूर्ण मानवता को आशान्वित और गौरवान्वित कर दिया है।

4. सहभागिता की मिसाल

नेपाल में 25 अप्रैल के बाद चलाया गया राहत एवं बचाव कार्य का समस्त विश्व में एक मात्र सबसे बड़ा बचाव अभियान था। विश्व के 31 देशों की 76 टीमों इस हिमालय में राहत एवं बचाव कार्य में लगी रही थी। जिनमें 16 टीमों सिर्फ भारत की एन डी आर एफ की ही थी। नेपाल सरकार के अनुरोध पर 'शहरी खोज एवं बचाव दल' ने रात-दिन 24 घंटे नेपाल में भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में पीड़ितों को खोजना, निकालना तथा प्रारम्भिक आवश्यक चिकित्सीय सुविधा प्रदान करने में जुटी रही। कुल 76 टीमों में 18 टीमों 'इण्टरनेशनल सर्च एंड रेस्क्यू एडवाइजरी ग्रुप' (इनसराग) द्वारा प्रमाणित थी। नेपाल भूकम्प उपरान्त चलाये गये राहत एवं बचाव अभियान में विश्व की अनेक स्वयंसेवी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने सहभागिता की मिसाल कायम की थी। इनमें से कुछ प्रमुख हैं जिन्होंने नेपाल के बचाव अभियान में अपना योगदान दिया था। 'आफिस फार द कोआर्डिनेशन आफ ह्यूमैनिटेरियन अफेयर्स' (ओछा) ने नेपाल में अंतर्राष्ट्रीय समन्वय में अहम भूमिका निभायी थी। नेपाल में यह संस्था अपनी सहयोगी 'यू एन डिस्टास्टर एण्ड एसेसमेन्ट कोआर्डिनेशन' के माध्यम से सक्रिय थी तथा नेपाल में सभी अंतर्राष्ट्रीय टीमों के बीच सामंजस्य एवं समन्वय स्थापित कर रही थी। हिमालय राष्ट्र नेपाल में पहुँचने के बाद, इस संस्था ने जमीनी हालात का आकलन किया तथा हवाई अड्डे के समीप 'स्वागत एवं प्रस्थान केन्द्र' (आर डी सी) तथा 'आन साइट ऑपरेशन सेन्टर' (ओसेक) स्थापित किये। 'स्वागत एवं प्रस्थान केन्द्र' को त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर स्थापित किया

गया। इस केन्द्र के माध्यम से नेपाल में सभी अंतर्राष्ट्रीय टीमों के बीच बेहतर समन्वय तथा मानवीय सहायता का प्रभावी निर्गतीकरण किया गया था। इस 'स्वागत एवं प्रस्थान केन्द्र' पर एन डी आर एफ को वाहन एवं गार्ड प्रदान किये गये थे तथा प्रभावी क्षेत्रों में भेजा गया था। इस केन्द्र के माध्यम से राहत को सहजता से प्रभावी क्षेत्रों में भेजा गया था। एन डी आर एफ तथा भारतीय दूतावास को इसी केन्द्र के माध्यम से आपरेशन बेस मुहैया कराया गया जहाँ से एन डी आर एफ ने खोज एवं बचाव अभियान चलाया था। 'ओछा' द्वारा स्थापित 'ओसेक' का मुख्य कार्य सभी अंतर्राष्ट्रीय राहत एवं बचाव दल तथा नेपाल सरकार के बीच समन्वय स्थापित करना था। 'ओसेक' ने ही अंतर्राष्ट्रीय टीमों के लिए खोज एवं बचाव कार्य करने के लिए क्षेत्रों का निर्धारण किया था। 'ओसेक' नियमित रूप से प्रातः एवं सायं बैठक आयोजित करता था, जिसमें सभी अंतर्राष्ट्रीय टीमों अपना प्रतिदिन का अनुभव, चुनौतियाँ तथा तकनीकी आवश्यकताओं की समीक्षा करती थी। यह बैठक नियमित रूप से नेपाली सेना के मुख्यालय में 'मल्टीनेशनल मिलिटरी कोऑर्डिनेशन सेन्टर' के माध्यम से आयोजित की जाती थी। 'ओसेक' ने अंतर्राष्ट्रीय मानवीय संस्थाओं के लिए सहयोग, समन्वय तथा सूचना प्रबन्धन के लिए एक फर्श तैयार किया था।



‘ओसेक’ की बैठक में खोज एवं बचाव कार्यों की गतिविधियों की जानकारी लेते महानिदेशक

संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रयास 'ओछा' के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ ने अन्य मानवीय राष्ट्रों एवं गैर-सरकारी संगठनों को नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य के लिए प्रेरित किया। इन संगठनों का कार्य क्षेत्र खाद्य, पौष्टिकता, सम्पदा, साफ-सफाई, सुरक्षा, शिक्षा, आपातकालीन आश्रम, कैम्प प्रबन्धन, कैम्प समन्वय, रसद एवं आपातकालीन संचार की दिशा में तात्कालिक तथा दूरगामी मदद करना था। इसी आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने समय-समय पर नेपाल की मदद के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपील की थी तथा संयुक्त राष्ट्र विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नेपाल सरकार के साथ स्वास्थ्य क्षेत्र में सहभागिता की थी। इस प्रकार काठमाण्डू में 'हेल्थ इमरजेन्सी आपरेशन सेन्टर' सभी स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग करने के लिए स्थापित किया गया था। नेपाल में भूकम्प प्रभावित पीड़ितों की स्वास्थ्य सुविधा के लिए 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने 40,000 लोगों को तीन महीने के 'हेल्थ किट' की व्यवस्था तथा दस सदस्यीय चिकित्सीय टीम को नेपाल में तैनात किया था।

इण्टरनेशनल फेडरेशन आफ रेड क्रॉस : 'इण्टरनेशनल फेडरेशन आफ रेड क्रॉस' तथा 'रेड क्रॉसेन्ट सोसाइटी' ने भी अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से नेपाल पीड़ितों के लिए आर्थिक सहायता की अपील की थी। लगभग 35 लाख अमेरिकी डालर के द्वारा 'नेपाल रेड क्रॉस सोसाइटी' की मदद का अश्वासन दिया गया था जिससे लगभग 75,000 लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। नेपाल के सहभागी बनकर अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रॉस ने स्वास्थ्य देखभाल, आश्रम, जीविकोपार्जन में मदद, बिछड़ों को मिलाना, सुरक्षित अंतिम संस्कार तथा आपदा के दौरान क्षति कम करने की दिशा में प्रयास किया।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार मई 2015 तक 330 मानवीय संस्थाओं ने लगभग 2,220 सहयोग की गतिविधियाँ आयोजित कीं थीं। इन गतिविधियों के द्वारा काम के बदले धन, कैम्प प्रबन्धन, खाद्य वितरण, स्वयं संगठनों का प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सबन्धी सेवा की आपूर्ति, राहत सामग्री की आपूर्ति एवं वितरण कार्य सम्पन्न कराये थे।

एक्शन ऐड: इस संस्था ने नेपाल में लगभग 48,500 लोगों के पास आपातकालीन सहायता जैसे खाद्य, औषधियाँ, तारपोलीन एवं 'हाईजीन किट' पहुँचायी थी। इस संस्था के द्वारा नेपाल भूकम्प उपरान्त विशेषकर महिलाओं तथा बच्चों के लिए 'सेफ-स्पेस' निर्मित करने की दिशा में भी कार्य किया गया।

ब्रिटिश रेड क्रॉस: अति आवश्यक आपूर्ति खाद्य एवं आश्रम के अतिरिक्त इस संस्था के स्वयं सेवियों ने मलवों में दबे पीड़ितों को भी तलाशने का काम किया था। इस संस्था ने काठमाण्डू में एक 'रक्त कोष' की स्थापना की, जिससे भूकम्प में बचे घायल पीड़ितों को आवश्यकता पड़ने पर मुफ्त रक्त दिया जा सके।

कैफोड: कैथोलिक एड एजेन्सी 'कैफोड' ने तुरन्त 50,000 पाउन्ड की तात्कालिक सहायता नेपाल को दी तथा 3 मिलियन पाउन्ड की मदद देने का अश्वासन दिया था। 'कैफोड' के स्थानीय संयोजकों ने पीड़ितों को खाद्य, आश्रय, आपातकालीन राहत मुहैया कराया थी जिनमें गिरजाघरों में शरण लिये हुए लोग भी शामिल थे।

'केयर' स्वयंसेवी संस्था ने नेपाल के भूकम्प पीड़ितों को 10,000 अस्थायी आश्रम, तैयार खाद्य पदार्थ, जल शुद्धिकरण तथा शौचालय निर्माण संयंत्र में मदद की थी।

कैथोलिक रिलीफ सर्विसेज: नेपाल के साथ मिलकर इस गैर सरकारी संगठन ने नेपाल के भूकम्प पीड़ितों (10,000 परिवारों) को आपातकालीन आश्रम, कंबल, पेय जल शुद्धिकरण तथा 'हाईजीन-किट' मुहैया कराया। इस संस्था ने प्रारम्भिक मदद के रूप में 825,000 अमेरिकी डालर की मदद की।

'क्रिश्चियन ऐड' नेपाल में स्थित सहयोगी संगठन की मदद से भूकम्प प्रभावित पीड़ितों तक मदद पहुँचाने में कामयाब रहे। इस संस्था ने राहत सेवा में सरकार का सहयोग किया तथा पीड़ितों के बीच 100,000 जल शुद्धिकरण किट वितरित किये।

हैण्डीकैप इन्टरनेशनल: इस संस्था ने काठमाण्डू के अस्पतालों में चिकित्सीय उपकरण उपलब्ध कराये तथा घायलों की मदद के लिए सहयोगी दलों को भेजा था। इस संस्था ने भूकम्प से प्रभावित पीड़ितों के स्थायी रूप से विकलांग होने से बचाने के लिए कार्य किया।

इन्टरनेशनल मेडिकल कार्प: इस गैर सरकारी संस्था ने बचे हुए पीड़ितों को आपातकालीन देखभाल सुविधा प्रदान की तथा स्वास्थ्य सम्बंधी आपूर्ति की। इस संस्था ने 'गोरखा' जिले में 'मोबाइल मेडिकल

यूनिट' की स्थापना की थी, जिसे भविष्य में और प्रभावित स्थानों पर चलाने की योजना भी थी।

इस्लामिक रिलीफ: इसके स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं ने पीड़ितों की तात्कालिक आवश्यकताओं का आकलन किया तथा उन्हें खाना, आश्रम, पानी, किचन सेट तथा 'हाइजीन-किट' मुहैया कराया था।

आक्सफाम ने नेपाल भूकम्प पीड़ितों को आवश्यक वस्तुएँ तथा अस्थायी शिविरों में शौचालय के निर्माण में अहम भूमिका निभायी थी।

प्लान: इस चैरिटी संस्था ने नेपाल में लगभग 7000 लोगों को 'शेल्टर-किट' जिसमें तारपोलीन, गद्दे, मच्छरदानी तथा कंबल शामिल था, बंटवाए थे।

सेव द चिल्ड्रेन: इनके स्वयंसेवकों ने तारपोलीन, बच्चों के खाद्य कई प्रभावित जिलों में वितरित किये जिनमें बच्चों के कपड़े, कंबल तथा साबुन इत्यादि भी शामिल थे।

टियरफण्ड:- इस संस्था ने अपनी सहायता का केन्द्र बिंदु आश्रय, खाद्य पदार्थ व स्वच्छता ही रखा था। इस संस्था के स्वयंसेवियों ने भूस्खलन तथा पहाड़ी इलाकों में जाकर दूर दराज में पीड़ितों को मदद पहुँचायी थी।

यूनीसेफ: इस संस्था का केन्द्र बिन्दु शुद्धपेय जल, सफाई, पौष्टिक पदार्थ, शिक्षा तथा बच्चों की सुरक्षा था। इन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में जाकर 'ओ आर एस' तथा 'जिंक सप्लीमेंट' को पीड़ितों के मध्य वितरित किया। इस संस्था ने दूर-दराज के इलाकों में चिकित्सा सुविधा के लिए टेन्ट मुहैया कराये थे।

'वाटर ऐड' स्थानीय स्वयंसेवियों के साथ मिलकर आपातकालीन शुद्ध पेय जल, हाइजीन-किट, जल शुद्धिकरण टेबलेट, शौचालय तथा पानी निकासी के लिए गड्ढों की खुदाई में मदद की थी।

वी हेल्प नेपाल: यह एक अंतर्राष्ट्रीय नेपाल के स्वयंसेवियों की संस्था है जिनके पास सदियों से भूकम्प उपरान्त राहत एवं बचाव कार्य का पर्याप्त अनुभव है। काठमाण्डू तथा आसपास के इलाकों में सम्पर्क साध कर इनके स्वयंसेवियों ने तात्कालिक ध्यान केन्द्रित करने वाले क्षेत्र व समुदाय की पहचान की है। वे इस प्रयास पर अमल करते हैं कि किस

तरह सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में मदद पहुँचायी जाये। यह संस्था स्थानीय स्तर पर उपलब्ध लघु व मध्यम स्तर की संस्था तक पहुँचकर पीड़ितों को राहत तथा स्थानीय संसाधन सुनिश्चित करवाती थी।

विश्व खाद्य संगठन: इस संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था ने सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य पदार्थ तथा आपातकालीन सुविधाओं को मुहैया कराया। इसने अन्य संस्थाओं को भी रसद आपूर्ति की थी। इस कार्य के लिए इसने काठमाण्डू अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अपना राहत शिविर स्थापित किया था।

वर्ड विजन: इस संस्था ने नेपाल में प्राथमिक उपचार किट, गद्दे, कंबल तथा प्लास्टिक के डिब्बे तथा अस्थायी आश्रय मुहैया कराने की दिशा में काम किया था।

अमेरिकन जियुश वर्ड सर्विस: इस संस्था ने नेपाल की सहयोगी संस्था को स्वास्थ्य सुविधा, खाद्य सामग्री तथा रसद सामग्री मुहैया करायी थी। इन्होंने विशेषकर तिब्बत शरणार्थी, समाजिक रूप से पिछड़े, दूर दराज के इलाकों में रहने वालों को अपना लक्ष्य बनाया था।

5. मानवता की जीत

एन डी आर एफ के कुशल खोज एवं बचाव अभियान ने नेपाल में मानवीय सहायता की मिसाल कायम की थी। अपने अभियान के दौरान एन डी आर एफ ने 11 जीवित पीड़ितों को मलवों एवं ध्वस्त भवनों से बाहर निकाला था। कुछ ऐसे बचाव अभियान थे जो मील का पत्थर साबित हुए थे। इन सभी बचाव अभियानों में तमाम कठिन व विकट परिस्थितियों के बावजूद मानवता की जीत हुई थी। इनमें कुछ प्रमुख थे:-

सूर्यामधि बचाव अभियान : एक 16 वर्षीय किशोरी जिसकी पहचान बाद में आलीशा के रूप में की गयी थी, भारतीय एन डी आर एफ द्वारा अथक प्रयासों के बाद बचायी गयी पहली जीवित पीड़िता थी। आलीशा को भूकम्प वाले दिन ही जीवित बचाया गया था। यह न सिर्फ भारतीय बचाव दल द्वारा बचायी गयी पहली जीवित पीड़िता थी, बल्कि नेपाल की धरती पर किसी भी विदेशी बचाव दल द्वारा बचायी गयी पहली पीड़िता थी। आलीशा, लगभग 12 घंटों से एक चार मंजिली इमारत में दबी हुई थी, जो लगभग पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी थी।



मलवों में फंसी सोलह वर्षीय किशोरी आलीशा

काठमाण्डू पहुँचने के बाद एन डी आर एफ की एक टीम को सर्वाधिक प्रभावित भक्तापुर में सूर्यामधि जाने का निर्देश मिला। जहाँ पर एक 16 वर्षीय किशोरी एक चार मंजिल ध्वस्त इमारत में फँसी हुई थी। यह इमारत भूकम्प आने के कारण पूर्ण रूपेण मलवे में तब्दील हो गयी थी। एक पतले छिद्र के द्वारा पीड़ित लड़की की जगह का अंदाजा लगाया जा सकता था। लेकिन वहाँ अँधेरा होने के कारण कुछ कर पाना कठिन था। इसकी वजह लगातार आ रहे भूकम्प के झटके तथा ध्वस्त इमारत के मलवों की अस्थिरता का खतरा भी था। बचाव कार्य काफी जोखिम भरा था क्योंकि ध्वस्त चार मंजिला इमारतें तीन तरफ से बुरी तरह से क्षति ग्रस्त बहुमंजिला इमारतों से घिरी हुई थी। लगातार रूक-रूककर आ रहे झटकों से इमारतों के गिरने का खतरा बना हुआ था क्योंकि किसी भी भूकम्प के बाद आ रहे झटके स्वयं भूकम्प से ज्यादा क्षति पहुँचाते हैं। जिससे बचाव अभियान में जुटे कार्मिकों को भी खतरा हो सकता था। प्रारम्भिक आकलन के बाद कुलीश आनन्द, सहायक समादेष्टा तथा निरीक्षक कश्मीर सिंह ने यह निर्णय लिया कि केवल तीन कार्मिक, उपनिरीक्षक चेतन शर्मा, आरक्षक संजय कुमार तथा आरक्षक रवि ही फँसी हुई पीड़िता तक पहुँचने का प्रयास करेंगे।

कार्यस्थल से सुरक्षित दूरी पर इलाके को प्रकाशमय बनाने के लिए जेनरेटर की व्यवस्था की गयी। इसके बाद मलवों को इस प्रकार हटाने का काम शुरू हुआ कि मुख्य ध्वस्त इमारत पर कोई असर न हो सके। पीड़िता तक पहुँचने के छिद्र को 3-4 फीट चौड़ा किया गया



कठिन परिस्थितियों में पीड़िता तक पहुँचने का प्रयास

जिसके द्वारा पीड़िता को देखा जा सकता था। वह जीवित थी, परन्तु बचाव दल के समक्ष चुनौती यह थी कि उसे सुरक्षित बाहर निकाला जाये। उसके दोनों पैर दो दिशाओं में फँसे हुए थे। वह ऊपर नीचे लटक रही थी। इसके अतिरिक्त दो लकड़ी के खम्भे उसके समक्ष काफी दृढ़ता से लगे हुए थे जो बचाव कार्मियों को बाधा पहुँचा रहे थे। यह संभव नहीं था कि उन दोनो लकड़ी के खम्भों को खुदाई करके या काट के निकाला जा सके क्योंकि वे गिरे हुए मलवों को स्थिरता प्रदान कर रहे थे।

भीतर की यथास्थित का पुनः आकलन किया गया तथा बचाव दल के अधिकारी ने निर्णय लिया क्योंकि बगैर पीड़िता के पैरों को मुक्त कराये उसे बाहर नहीं निकाला जा सकता था, अतः टीम में मौजूद सिविल अभियन्ता की निगरानी में टीम ने पुनः दूसरा प्रवेश छिद्र बनाना शुरू कर दिया था। इस कार्य के लिए उपलब्ध खुदाई के उपकरण काम में नहीं लाये जा सकते थे, इसलिए मलवों में प्राप्त लोहे की छड़ों से घटना स्थल पर ही अनौपचारिक खुदाई के उपकरण तैयार किये गये। तीन घण्टे की मशक्कत के बाद, बचाव दल ने एक और 4 फीट का प्रवेश छिद्र बनाया जो कि पीड़िता के पैरों की तरफ था। इस प्रकार उसके पैरों को बगैर चोट पहुँचाये मुक्त कराया गया। तत्पश्चात् टीम ने कार्य स्थल पर उपलब्ध लकड़ी के टुकड़ों की मदद से प्रवेश द्वार को स्थायित्व प्रदान किया तथा लकड़ी के दोनो खम्भों को काट दिया, जो टीम के बचाव कार्मियों को पीड़िता तक पहुँचने में बाधा पहुँचा रहे थे।



नेपाल में प्रथम जीवित पीड़िता को सुरक्षित निकालते एन डी आर एफ के सदस्य

बचावकर्मी हर तरफ से सुरक्षा सुनिश्चित करने के बाद बड़ी सावधानी से 'बैक-बोर्ड' को पीड़िता के नीचे रखने में सफल हुए, तदुपरान्त पीड़िता को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया था। पीड़िता जिसकी शिनाख्त आलीशा के रूप में हुई, को एन डी आर एफ की चिकित्सीय टीम ने प्राथमिक उपचार दिया तथा उसे स्थानीय पुलिस की उपस्थिति में उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया। जिसके बाद उसे बेहतर चिकित्सा प्रबन्धन के लिए चिकित्सालय ले जाया गया था।

“एन डी आर एफ पहला विदेशी बचाव दल था जिसे मैं पहली बार मिल रहा था” यह उद्गार स्थानीय निवासी गंजुल शर्मा के थे, जिन्होंने समस्त बचाव अभियान को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने यह स्वीकार किया कि एन डी आर एफ की टीम ने पूरी रात काम किया तथा स्थिति को बड़ी कुशलता व योग्यता से परिपूर्ण किया था। उन्होंने आगे कहा था “एक नेपाली नागरिक होने के कारण हम सभी अभिभूत हो रहे हैं कि हमारा पड़ोसी देश भारत हमारी मदद के लिए सबसे पहले आया” इस तरह के वक्तव्यों ने एन डी आर एफ के उत्साह में वृद्धि की थी।

मच्छापोखरी बचाव अभियान : 27 अप्रैल को एन डी आर एफ की एक टीम कुलीश आनन्द, सहायक समादेष्टा के नेतृत्व में 'बालाजू' क्षेत्र में 'मच्छा पोखरी' भेजी गयी। इस बचाव दल ने 'लुमिनी लाली गेस्ट हाउस' में पहुँचने से पूर्व कई ध्वस्त इमारतों एवं भवनो में खोज एवं बचाव अभियान को

अंजाम दिया था। स्थानीय सूत्रों के हवाले से ज्ञात हुआ कि 'लुमिनी लाली गेस्ट हाउस' के मलवों में कुछ जीवित लोगों के फँसे होने की संभावना थी। पाँच मंजिला इमारत 'पैन-केक' के स्वरूप में ध्वस्त हो चुकी थी तथा पूर्णतया मलवे में तब्दील हो चुकी थी। कार्यस्थल पर उपलब्ध जे सी बी वहाँ मलवों को हटाने में विफल हो रही थी क्योंकि खम्भों के टूटे हुए हिस्से रूकावट पैदा कर रहे थे। स्थानीय पुलिस की सहायता से एन डी आर एफ की टीम स्थानीय भीड़ जो अस्थायी ध्वस्त इमारत पर खड़ी थी, को कार्य स्थल से हटाने में कामयाब रही। 'हाइड्रोलिक स्प्रेडर' तथा 'कटर' से दल के बचाव कर्मियों ने लोहे की छड़ों व सरिया को दीवार के खम्भों से काट दिया जिससे भारी मलवों को आसानी से हटाया जा सका था। कुछ समय पश्चात् दल के बचाव कर्मियों ने मलवे में फँसे एक पीड़ित के पैर को देखा। यह एक महिला का पैर था जो दो पत्थरों की पट्टियों के बीच फँसा हुआ था। उसका शरीर एक सँकरी खाली जगह में लेटा पड़ा था। पत्थर की पट्टियों को 'एयर लिफ्टिंग बैग' की मदद से लगभग आधा फीट उठाया गया तथा इस प्रकार खाली जगह को और चौड़ा किया गया। इसके बाद पीड़िता की स्थिति की पड़ताल की गयी। वह जीवित थी परन्तु उसका कन्धा एक लकड़ी के खम्भे से दबा हुआ था। बगैर लकड़ी के खम्भे को काटे हुए उसको बाहर नहीं निकाला जा सकता था। इस लकड़ी के खम्भे को जो बहुत ही सँकरी जगह पर था 'रेसीप्रोकेटिंग-सॉ' के द्वारा बड़ी सावधानी से काटा गया जिससे की पीड़िता को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचे। इसके बाद पीड़िता को बैक-बोर्ड की मदद से बाहर निकाला गया।



जीवित पीड़िता को सुरक्षित निकाल कर प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करता एन डी आर एफ

बिना समय बर्बाद किये एन डी आर एफ के चिकित्सीय दल ने उस महिला जिसकी पहचान श्रीमती सुनमाया पत्नी गंगा बहादुर, (जो गेस्ट हाउस का मालिक था) के रूप में हुई, को प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध करायी तत्पश्चात् उसे बेहतर चिकित्सा सुविधा के लिए अस्पताल भेज दिया गया।

‘नामुना-टोल’ वसुन्धरा बचाव अभियान : 26 अप्रैल अपराह्न 01 बजकर 30 मिनट पर एन डी आर एफ की एक टीम राजकुमार के नेतृत्व में ‘वसुन्धरा’ इलाके में ‘नामुना टोल’ पर भेजी गयी थी। यहाँ पर एक पॉच मंजिला आवासीय इमारत ‘पैन-केक’ की हालात में ध्वस्त हो गयी थी। यह ध्वस्त इमारत गिरने के साथ-साथ पश्चिम की तरफ लगभग 20 फीट सरक भी गयी थी। पूरी इमारत 6 फीट ऊँचे मलवे में तब्दील हो चुकी थी। स्थानीय लोगो ने बताया कि यह खण्डित इमारत पहले सिर्फ दो मंजिल थी, परन्तु बाद में इस पर तीन मंजिलें और निर्मित की गईं। एक बच निकले पीड़ित व्यक्ति महेन्द्र सिवौला ने बताया कि उसकी पत्नी सुनीता सिवौला जो ध्वस्त ढाँचे में फँसी रह गयी थी, तब भी जिन्दा थी। 8 से 10 व्यक्तियों की मलवों में ही दबे रहने की आशंका थी। टीम कमाण्डर ने पहले यथास्थित का आकलन किया। उसने अपनी बचाव कार्य करने वाली टीम के लिए ध्वस्त इमारत से 80 मीटर दूर अपना ‘स्टेजिंग-एरिया’ निर्धारित किया।



नामुना टोल में पीड़िता को सुरक्षित निकालने को प्रयासरत एन डी आर एफ के सदस्य

निरीक्षक करम सिंह तथा उप निरीक्षक संतोष कुमार को कार्य स्थल के लिए सुरक्षा अधिकारी नियुक्त किया गया जिससे वह समय-समय पर अपने दायित्व की बदली भी कर सके। इस टीम ने तकनीकी खोज की परन्तु किसी जीवित व्यक्ति के मिलने का कोई संकेत नहीं मिला। टीम ने 'चिपिंग-हैमर' का प्रयोग करते हुए कई तरफ से ध्वस्त इमारत में 'हारिजंटल-एप्रोच' बनाने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने 'बोल्ट-कटर' तथा अन्य उपकरणों का भी प्रयोग किया क्योंकि वहाँ पर पीड़ित महिला की ठीक-ठीक यथास्थित से कोई अवगत नहीं था। जब वे एक ध्वस्त इमारत के पिछले हिस्से में काम कर रहे थे, तभी एक बचाव कर्मी ने कुत्ते की आवाज सुनी। तुरन्त बचाव दल ने कुत्ते को सुरक्षित निकालने के लिए मलवों में छिद्र बनाना शुरू कर दिया और इसी प्रयास के दौरान उन्हें एक महिला की दर्द से कराहने की आवाज सुनायी दी। मुख्य आरक्षक शरद चन्द्र, आरक्षक योगेन्द्र सिंह तथा आरक्षक आर सिलवम ने उस कराहती आवाज की तरफ छिद्र को और चौड़ा किया तथा लगभग 20 फीट तक रेंग कर पीड़िता के पास अन्दर पहुँचे। यह एक जोखिम भरा काम था क्योंकि कुछ समय के अन्तराल पर भूकम्प के झटके भी आ रहे थे। नेपाल भूकम्प पीड़ित खोज एवं बचाव कार्य के दौरान बचाव कर्मियों को लगभग सभी कार्यों में ध्वस्त इमारतों के उनके ऊपर गिर जाने का खतरा लगातार बना रहा क्योंकि भूकम्प के बाद के झटके तब तक बिल्कुल नहीं रुके जब तक बचाव कार्य की संभावनाएं समाप्त नहीं हो गई। पीड़िता महिला के पास पहुँचकर बचाव कर्मियों ने उसे बड़ी मुश्किल से यह भरोसा दिलाया कि उसे शीघ्र ही बाहर निकाल लिया जायेगा। महिला की मनःस्थिति का अन्दाजा उसके चेहरे में देखकर लगाया जा सकता था।

फँसी हुई महिला के इर्द-गिर्द फैले मलवों को हटाया गया तथा उस महिला को लगभग 5 फीट तक किसी तरह सुरक्षित लाया गया था। तत्पश्चात् उसे बैंक बोर्ड की मदद से जगह बनाते हुए बाहर निकाल लिया गया। एन डी आर एफ के चिकित्सीय दल ने इस महिला को प्राथमिक उपचार देने के बाद त्रिभुवन मेडिकल कॉलेज काठमाण्डू भेज दिया ताकि उसे बेहतर चिकित्सा दी जा सके। महिला को जीवित बचा पाने की संतुष्टि अपने चर्मोत्कर्ष पर थी जब सुनीता सिवौला स्वयं मेडिकल कॉलेज से निवृत्त होने के पश्चात् अपने परिवार के साथ उसी स्थल पर आयी तथा बचाव दल से मिलकर उन्हें धन्यवाद दिया। वह पल समस्त

एन डी आर एफ की टीमों के लिए अभूतपूर्व पल था। उसकी आंखों से निकले कृतज्ञता के आंसूओं ने हमें बचाव अभियान में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरणा दी थी।

‘गंगबू’ बचाव कार्य : एन डी आर एफ की एक टीम को 25 अप्रैल को ‘गंगबू’ क्षेत्र में गणेश मंदिर के पास एक ध्वस्त इमारत में खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजा गया था। जहाँ पर एक नेपाली सेना के कार्मिक की पत्नी के ध्वस्त इमारत में फँसे होने की आशंका थी। यहाँ पर देखा गया कि उसका एक पैर दो भारी कंक्रीट के खम्भों में फँसा था तथा इसी पैर में एक लोहे की राड उसे भेद रही थी। शेष शरीर रेंगने की स्थिति में फर्श और छत के बीच एक छोटी सी जगह में फँसा हुआ था। वह अपने शरीर को हिला भी नहीं सकती थी। उसकी हालात इतनी दयनीय थी कि देखते ही रोगंटे खड़े हो जाते थे। बचाव दल ने उसे बाहर निकालने का प्रयास किया परन्तु भूकम्प के उपरान्त आने वाले झटकों से यह संभव नहीं हो पा रहा था। भूकम्प के झटके रुकने के बाद उसके पैर के ऊपर कंक्रीट के पत्थर को ऊपर उठाने के लिए ‘लिफ्टिंग बैग’ का प्रयोग किया गया, परन्तु यह प्रयास भी व्यर्थ गया। टीम के बचाव कर्मी उसके फँसे हुए पैर तक नहीं पहुँच पा रहे थे। परिस्थितियों ने बचाव के लिए अन्य उपायों पर विचार करने के लिए विवश कर दिया था। तत्पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि ध्वस्त इमारत के पीछे की तरफ प्रवेश द्वार बनाया जाये। इमारत के पिछले हिस्से से मलवों को हटाने के दौरान बचाव टीम ने दो शवों को भी निकाला था। शाम ढलने के साथ, अंधेरा होने लगा था। अतः बचाव कर्मियों ने अपने जेनरेटर के द्वारा इलाके को प्रकाशमय किया। अव्यवस्थित तथा अस्थिर मलवों के बीच बचाव कर्मियों ने ‘चिपिंग हैमर’ तथा अन्य उपकरणों की मदद से पीड़ित महिला की तरफ पहुँचने के लिए रास्ता बनाना शुरू कर दिया था। बचाव कर्मियों के लिए अतिरिक्त कार्य जगह को सुरक्षित करना भी जरूरी था क्योंकि वहाँ उपस्थित जन समुदाय के कारण कार्य को जारी रखने में बाधा पहुँच रही थी। पूरी रात बचाव कार्य जारी रखा गया। सुबह 5 बजे, सूरज की पहली किरण पर बचाव कर्मी पीड़िता के पैर को देख सके थे। पूरी रात की थकान उस समय पलभर में गायब हो गयी थी, जब पीड़िता महिला की हालत बचाव कर्मियों ने देखी- उसका पैर पूरा नीला तथा सुन्न पड़ गया था जो उसकी स्थिति को और गंभीर बनाता जा रहा था। उसी समय पुनः भूकम्प का झटका आया जब वे मलवों को हटा ही रहे थे। अब नये मलवों ने उनका काम और बढ़ा दिया था।



गंगबू क्षेत्र में ध्वस्त हुई इमारत में जीवन की तलाश

इसी दौरान एक बचाव कर्मी को भी चोट लगी तथा उसके हाथ से खून निकलने लगा। आवश्यक चिकित्सा सुविधा देने के बाद बचाव कार्य को पुनः जारी रखा गया। 26 अप्रैल दोपहर 12 बजे बचाव दल इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि पीड़िता के पैर को बगैर काटे उसके जीवन को नहीं बचाया जा सकता था। इस दिशा में चिकित्सकों की टीम को घटना स्थल पर बुलाया गया। परन्तु इस चिकित्सीय टीम ने पर्याप्त स्थान तथा प्रकाश न होने के कारण पैर को काटने में असमर्थता व्यक्त की। अब प्राथमिकता किसी भी प्रकार उस पीड़िता को बचाने की थी तदुपरान्त बचाव दल ने भारी खम्भों तथा लोहे की छड़ों को काटने को निर्णय लिया। जिससे उसके पैर को मुक्त किया जा सके। लगातार कुछ घंटों तक कार्य करने के पश्चात् एन डी आर एफ की टीम ने इस महिला को क्षति न पहुँचाते हुए बाहर निकाल लिया था। इसके बाद पीड़िता को प्राथमिक उपचार करने के बाद फौरन सेना अस्पताल, काठमाण्डू भेज दिया गया। जब इस घटना स्थल पर खोज एवं बचाव कार्य समाप्त हुआ तब शाम के 4 बज रहे थे। इस टीम ने यहाँ पर 17 से 18 घण्टों तक बगैर खाये पिये बचाव कार्य जारी रखा था, परन्तु उनके चेहरों पर तनिक भी थकान नहीं झलक रही थी क्योंकि उन्होंने अपनी कुशलता से एक पीड़ित को जीवित जो बचा लिया था। इन क्षणों में एक जीवन को सकुशल बचा लेने की खुशी सारी थकान को काफूर कर देती है।

तान्हू होटल : ऐसी चुनौती को स्वीकारा जिसे सभी ने अपनी असमर्थता व्यक्त की थी। 27 अप्रैल एन डी आर एफ की एक टीम निरीक्षक हीरा लाल के नेतृत्व में न्यू बस पार्क इलाके में 'तान्हू होटल' में भेजी गयी थी। जहाँ पर नेपाल सेना के मेजर तथा कुछ अन्य लोग फँसे हुए थे। यह एक छह मंजिला इमारत थी जिसका भूतल व प्रथम तल पूरी तरह दब चुका था तथा शेष तल बुरी तरह लटक गये थे। इस होटल की इमारत ने मुश्किलें और बढ़ा दी थीं क्योंकि इसके आस पास की इमारतों ने इसे लगभग दबा कर रख दिया था।

इसके भीतर नेपाली सेना के मेजर पद के अधिकारी का शव फँसा हुआ था, जिसका कुछ हिस्सा दिखायी दे रहा था। लेकिन शव के पास पहुँचना मुश्किल था। एन डी आर एफ की टीम को यह चुनौती भरा कार्य उस स्थिति में दिया गया था, जब चीन व इजरायल के बचाव दलों ने इस चुनौती को सुरक्षा के लिए खतरा तथा अत्यधिक खतरे की संभावना को देखते हुए अस्वीकार कर दिया था। एन डी आर एफ की इस टीम ने पास स्थित होटल की दीवार से प्रवेश करने का निर्णय किया। इसके लिए ड्रीलिंग व चिपिंग 27 अप्रैल को प्रातः 7 बजे से शुरू की गयी थी। यह एक अत्यन्त ही सँकरा रास्ता था जहाँ प्रकाश भी नहीं आ रहा था।



विकट परिस्थितियां प्रस्तुत करता 'तान्हू होटल' घटना स्थल

कई घण्टों तक काम करने तथा लगभग 30 फीट 'एल' आकार का प्रवेश बनाने के बाद यह पता चला कि यह कामयाब मार्ग नहीं होगा। उप टीम कमाण्डर ने पुनः यथास्थित का निरीक्षण किया तथा निर्णय लिया कि पीछे के रास्ते से प्रवेश बनाया जाये लेकिन इस मार्ग में स्थितियाँ बद से बदतर थी तथा लगातार बारिश ने मुश्किलों को और बढ़ा दिया था। टीम ने पुनः निर्णय लिया कि सामने से प्रवेश बनाया जाये जिसके लिए काँच की दीवार रास्ते में रूकावट डाल रही थी। शीशे की दीवार को तोड़ा गया तथा कुशलता से मलवों को हटाते हुए प्रवेश बनाया गया।

इसके लिए कई जगहों पर इमारत को तात्कालिक स्थायित्व देने के लिए मौजूदा संसाधनों से 'शोरिंग' भी करनी पड़ी थी। इस प्रक्रिया में बचाव दल ने कई और शवों को भी निकाला था, जो क्षति विक्षत हाल में पाये गये थे। बचाव कार्य को शाम 7 बजकर 30 मिनट पर जेनरेटर में आयी तकनीकी त्रुटि के कारण रोकना पड़ा था। बचाव कार्य को पुनः दूसरे दिन प्रातः 6 बजकर 30 मिनट पर प्रारम्भ किया गया तथा कुछ घण्टों के प्रयास के उपरान्त आखिरकार बचाव दल नेपाली सेना के मेजर के मृत शरीर तक पहुँच गये थे। यह शव सीधा जमीन पर पड़ा हुआ था तथा एक भारी भरकम शटर का दरवाजा उनके शरीर पर गिरा हुआ था। यहाँ पर एक बहुत सँकरी जगह थी, जहाँ पर बचाव कर्मियों के काम करने के लिए जगह कम पड़ रही थी। इसके अतिरिक्त बचाव कार्य जारी रखने की वजह से लगातार उत्पन्न हो रहे मलवे तथा समीप मलवा हटाने के लिए बुल्डोजर के काम करने के कारण भी बाधा हो रही थी।



अनवरत खोज एवं बचाव अभियान की एक झलक

जैसे जैसे बचाव दल मृत शरीर के नजदीक पहुँच रहा था वैसे वैसे वह नीचे उत्पन्न हुई खाली जगह में सरकने लगा था। बचाव दल ने उस मृत शरीर को रस्सी से बाँधना चाहा जिससे उसे सरकने से रोका जा सके, परन्तु नजदीक पहुँचने पर देखा कि उसका शरीर सीढ़ियों पर था तथा बुरी तरह से सीढ़ियों के विभिन्न कदमों में दबा हुआ था। यह मृत शरीर नेपाली सेना के अनुदेशक मेजर विनोद का था जो लम्बे व भारी कद के थे। जिसकी वजह से बचाव दल के लिए चुनौती पैदा हो रही थी। मृत शरीर को रस्सी से बाँधकर खींचने की योजना को त्यागना पड़ा क्योंकि इससे मृत शरीर की और क्षति हो सकती थी। बचाव दल ने 'हाइड्रोलिक जैक' की मदद से शरीर पर पड़े लोहे के शटर को उठाकर, सीढ़ियों को काटना शुरू किया था, साथ ही यह भी सुनिश्चित किया कि वह मृत शरीर नीचे न गिर जाए। आवश्यक जगह बनने के बाद ही मृत शरीर को 28 अप्रैल की शाम 6 बजकर 50 मिनट पर बाहर निकाला जा सका था। उस समय काफी तेज बारिश हो रही थी। नेपाली सेना के कार्मिक जो घटना स्थल पर थे वे एन डी आर एफ के बचाव कार्य के प्रत्यक्षदर्शी थे, वे एन डी आर एफ की कार्य कुशलता व दक्षता से अभिभूत हो उठे थे। इन्हीं में एक मृतक मेजर का बैच साथी था जो सारा समय वहाँ उपस्थित रह कर बचाव दल को सहयोग प्रदान करता रहा था। यह हम सभी के लिए भी बेहद भावुक अवसर था। मेजर के साथी को अपने मित्र के लिए संवेदनाएं तथा हमारे लिए कृतज्ञता से हम अनछुए नहीं रह सके थे, हमने नेपाल नागरिकों के पास जो अपनत्व और भाईचारा महसूस किया था वह हमें लगातार हिम्मत और जोश दे रहा था। शायद, भारत के साथ एक समान सांस्कृतिक इतिहास भी इस बंधुत्व का कारण था।

शोभा भगवती ब्रिज, बचाव अभियान का केन्द्र बिन्दु : एन डी आर एफ के बचाव कार्य की पराकाष्ठा शोभा भगवती ब्रिज पर चलाया गया खोज एवं बचाव कार्य था। यहाँ पर एक बहुमंजलीय इमारत में काफी संख्या में लोग फँस गये थे। शोभा भगवती ब्रिज के ठीक एक सिरे पर एक पाँच मंजिला भवन पूरी तरह 'पैन-केक' की स्थिति की तरह ध्वस्त हो चुका था। इस इमारत में भूतल पर दुकानें थी तथा प्रथम तल पर व्यायामशाला थी। शेष ऊपरी तीन मंजिलों पर निवासीय फ्लैट बने हुए थे। ध्वस्त ढाँचे में गैस के रिसाव की गन्ध आ रही थी तथा मकानों की स्थिति

सर्वाधिक अस्थिर थी। इसके अतिरिक्त बगल के भवन लटक रहे थे तथा हल्के से भूकम्प के झटके से भी धाराशायी होने की संभावना प्रबल थी। इस ध्वस्त बहुमंजिल इमारत से स्थानीय समुदाय ने पहले ही 5 जीवित व्यक्तियों तथा मृतकों को बाहर निकाल लिया था। 50 से अधिक लोगो के इस ध्वस्त इमारत में अभी भी फँसे होने की संभावना थी। एन डी आर एफ की एक टीम राजकुमार मलिक, सहायक समादेष्टा के नेतृत्व में 26 अप्रैल को प्रातः 4 बजे पहुँची थी। इस टीम ने अपना 'ऑपरेशन-बेस' शोभा भगवती ब्रिज पर स्थापित किया था। टीम अधिकारी तथा टीम ने सर्वप्रथम यथास्थिति का आकलन किया। सर्वप्रथम ढाँचे को कुछ स्थायित्व प्रदान किया गया, जिसके लिए आस-पास के संसाधनों का प्रयोग हुआ। तकनीक व प्रशिक्षित श्वानों के द्वारा ध्वस्त इमारत का परीक्षण किया गया। प्रारम्भिक परीक्षण में किसी के जीवित रहने तथा दबे मलवे में फँसे होने के संकेत नहीं मिले थे, परन्तु दो मृत शरीरों की जगह को पहचाना गया था। इन दोनों मृत शरीरों तक पहुँचने के लिए लम्बवत- दिशा में दो जगहों पर प्रवेश बनाने का निर्णय लिया गया।



शोभा भगवती ब्रिज में ध्वस्त हुई बहुमंजलीय इमारत में बचाव कार्य

इस प्रक्रिया के लिए 'चिपिंग हैमर', 'आर आर सॉ' तथा अन्य आवश्यक उपकरणों का प्रयोग किया गया था। ध्वस्त मलवे में से एल पी जी गैस के

रिसाव के कारण सिर्फ हाइड्रोलिक औजारों का ही प्रयोग, गैस रिसाव के रुकने तक किया जा सका था। काफी परिश्रम के बाद टीम ने पहला शव सुबह 9 बजकर 30 मिनट पर निकाला। यह एक लड़की का शव था। इस टीम को लगातार बचाव अभियान जारी रखने की आवश्यकता थी। अतः इस टीम ने 24 x 7 स्थिति में कार्य किया तथा प्रत्येक निर्धारित अन्तराल के बाद बचाव कर्मियों की बदली करते रहे थे परन्तु बचाव कार्य अनवरत जारी रखा था। इस प्रकार बचाव कार्य जारी रखा गया तथा वर्षा व भूकम्प के झटके भी इस खोज एवं बचाव दल के कार्य में कोई खलल नहीं डाल सके। प्रथम दिन केवल 2 ही शव निकाले गये। पाँच दिन तथा छह घण्टे यहाँ पर खोज एवं बचाव अभियान लगातार चलता रहा था। इस दौरान ध्वस्त बहुमंजिली इमारत का प्रत्येक तल, तह के रूप में बदल चुका था। प्रत्येक हिस्से की खोज की गयी तथा इस प्रक्रिया में 15 शवों को बाहर निकालकर उनके परिजनों को स्थानीय पुलिस की मदद से सुपुर्द किया गया। इस बचाव दल ने अपने खोज एवं बचाव अभियान के दौरान कई बहुमूल्य वस्तुएँ तथा नगदी भी बरामद की थी। जिसे स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया। 30 अप्रैल को कोलकता से आयी एन डी आर एफ की एक टीम ने पहले कार्य कर रही टीम का कार्यभार संभाला। इस नयी टीम ने 3 मई तक बचाव कार्य अनवरत जारी रखा तथा छह शव और निकाले। इस प्रकार शोभा भगवती ब्रिज से कुल 21 शव एन डी आर एफ के द्वारा निकाले गये थे।



ध्वस्त इमारत के तलों को काटकर किये जा रहे बचाव कार्य की झलक

ब्रिजेश्वरी बचाव कार्य : परिस्थितियों पर विजय गाथा का एक प्रत्यक्ष प्रमाण था ब्रिजेश्वरी बचाव अभियान। एन डी आर एफ की एक टीम निरीक्षक विनोद कुमार के नेतृत्व में ब्रिजेश्वरी इलाके में एक पाँच मंजिली आवासीय इमारत जो कि पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी थी, में खोज एवं बचाव कार्य के लिए लगायी गयी थी। इस ध्वस्त इमारत में एक तल दूसरे तल से लगा हुआ था। स्थानीय लोगो के अनुसार इस इमारत में 25 कमरे थे। स्थानीय नागरिको ने इस ध्वस्त इमारत से 2 जीवित तथा 2 शवों को पहले ही निकाल लिया था। इन्हीं सूत्रो के अनुसार तीसरी मंजिल तथा ध्वस्त ढाँचे में 5 लोगो के फँसे होने की आशंका थी। प्रारम्भिक पड़ताल के बाद प्रशिक्षित श्वान दस्तों ने इस ध्वस्त इमारत का निरीक्षण किया परन्तु किसी प्रकार के जीवित पीड़ितों की संभावना न प्राप्त हो सकी थी। इमारत पूरी तरह से अस्थिर हो चुकी थी। इस ध्वस्त इमारत में 'शोरिंग' भी संभव नहीं थी क्योंकि मलवे में उपलब्ध लकड़ी के टुकड़े इतने मजबूत नहीं थे कि वह पाँच मंजिली इमारत को स्थिरता दे सकते। इस जगह पर कार्य करने के लिए पर्याप्त जगह भी नहीं थी तथा रास्ते बहुत सँकरे थे।



ध्वस्त इमारत में एन डी आर एफ द्वारा जिंदगी की तलाश

प्रथम दो दिन टीमों ने मलवों को हटाने का कार्य किया तथा ऊपर से नीचे आने के लिए प्रवेश बनाया। तमाम कोशिशों के बावजूद बचाव दल फँसे हुए पीड़ितों की यथास्थित की जानकारी नहीं प्राप्त कर सका। जे सी बी भी वहाँ पर कारगर सिद्ध नहीं हो पा रहा था। बचाव दल ने दो दिन के बचाव कार्य के दौरान भारी मात्रा में बहुमूल्य वस्तुओं को बरामद

किया था, जिसे स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। तीसरे दिन जाकर ही बचाव दल ऊपर के दो तलों को हटा सके थे तथा 3 शवों की जगहों को निर्धारित कर सके थे, जो मलवों में दबे हुए थे। मलवों को हटाना मुश्किल था क्योंकि इस दिशा में प्रयास पूरी इमारत को भरभराकर गिरने का कारण हो सकता था। चौथे दिन टीम ने पुनः पत्थर की पटियों को काटना तथा फर्श में छिद्र बनाना शुरू किया, जिससे शेष शवों तक पहुँचा जा सके। शाम होने तक 4 और शवों को निकाला गया था। एक और पीड़ित बच्ची की अभी भी मलवे में दबे होने की खबर आ रही थी। बचाव दल ने यह खबर पाते ही तुरन्त पुनः खोज अभियान जारी रखा तथा शाम को 8 बजे जाकर लड़की का शव निकाला जा सका था, छह दिनों के निरन्तर अथक प्रयासों के बाद यह कार्य पूरा हुआ था।

सीतापाइला, अपेक्षाओं पर खरा उतरना : 25 अप्रैल को एन डी आर एफ की एक टीम लोकेन्द्र सिंह, सहायक समादेष्टा के नेतृत्व में काठमाण्डू में 'सीतापाइला' इलाके में खोज एवं बचाव अभियान के लिए भेजी गयी थी। यहाँ पर एक पाँच मंजिली इमारत पूरी तरह 'पैन केक' के स्वरूप में धाराशायी हो चुकी थी। दो अलग इमारतें एक बाँयी तथा दूसरी दाँयी तरफ ध्वस्त पाँच मंजिल इमारत की तरफ झुकी हुई थी, जो बचाव कर्मियों के लिए अतिरिक्त असुरक्षा पैदा कर रही थी। स्थानीय प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इस ध्वस्त पाँच मंजिली इमारत में निवासीय तथा व्यावसायिक गतिविधियाँ होती थी तथा इसके द्वितीय तल में चर्च भी था।

स्थानीय लोगों ने यह भी बताया कि कुछ आसानी से निकाले जा सकने वाले पीड़ितों को स्थानीय जन समुदाय ने पहले ही निकाल लिया था तथा अभी भी कुछ पीड़ितों की भारी खम्भों, दीवारों तथा मलवों में दबे होने की आशंका थी। इस ध्वस्त इमारत से पीड़ितों को निकालना एक अत्यन्त ही कठिन कार्य था। भारी संख्या में स्थानीय भीड़ तथा मीडिया के लोग बड़ी तन्मयता से एन डी आर एफ की कार्य प्रणाली को देख रहे थे।

इस प्रकार बचाव दल के कार्मिकों पर अतिरिक्त मानसिक दबाव भी था। प्रारम्भिक आकलन के फलस्वरूप टीम कमाण्डर ने ध्वस्त ढाँचे में लम्बवत प्रवेश छिद्र बनाने का विचार किया। बचाव दल ने छत को काटना तथा मलवों को हटाने का कार्य शुरू किया। इसके लिए उपलब्ध सभी उपकरणों एवं संसाधनों का प्रयोग हुआ था। इस बचाव अभियान के समय भूकम्प के पुनः झटके बचाव दल की सुरक्षा को बार बार चुनौती

दे रहे थे तथा इससे बचाव अभियान की अवधि में बढ़ोत्तरी भी हो रही थी। इस टीम के द्वारा 16 घण्टों तक अनवरत बचाव अभियान जारी रखा गया तथा इस दौरान उन्होंने इस ध्वस्त बहुमंजिला इमारत से 16 शवों को बाहर निकाला। एन डी आर एफ की कार्य कुशलता, साहस तथा उच्च कोटि के समर्पण की स्थानीय प्रशासन, नेपाली सेना, मीडिया तथा स्थानीय जन समुदाय ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। यद्यपि हम स्वयं जानते थे कि यह एक खतरों से भरा बेहद कठिन लक्ष्य था जिस पर हमने विजय पायी थी।



सीतापाइला में ध्वस्त हुये भवन में खोज एवं बचाव कार्य

बाला जू बाईपास, असमर्थता में समर्थता : 29 अप्रैल की प्रातः 6 बजकर 30 मिनट पर नेपाली सेना ने एन डी आर एफ की एक टीम को एक नयी जगह बालाजू बाईपास पर खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजा था। यहाँ पर एक चार मंजिला इमारत अजीबों-गरीब तरह से ध्वस्त हो चुकी थी। इसमें भूतल सुरक्षित तथा यथावत था। पहली तीन मंजिल 'पैनकेक' की तरह ध्वस्त हो रखी थी। चौथी मंजिल अपने मूल स्थान से फिसल कर बगल की इमारत से जा लगी थी। प्रारम्भिक पूछताछ से यह जानकारी प्राप्त हुई कि इस ध्वस्त इमारत में तीन पीड़ितों का शरीर फँसा हुआ था जिसमें दो महिलायें भी थीं तथा तीसरा व्यक्ति भारतीय था जो पेशे से प्लम्बर था। इमारत के मालिक ने स्पष्ट किया कि पूर्व में अमेरिका तथा चीन के बचाव दल यहाँ आ चुके थे तथा यह कह कर बगैर बचाव कार्य किये वापस चले गये थे कि इस घटना स्थल पर

अत्यधिक खतरे की स्थिति के कारण वे बचाव कार्य करने में असमर्थ थे। यह पहला अवसर नहीं था ऐसे बहुत से अवसरों पर एन डी आर एफ ने चुनौतियों को स्वीकारा था जहाँ बाकि अन्य अंतर्राष्ट्रीय बचाव दल अत्यधिक खतरने की आशंका से अपने हाथ खड़े कर चुके थे शायद इसका कारण एन डी आर एफ कर्मियों पर आत्म विश्वास और नेपाल से बंधुत्व ही था। 'बुल्डोजर' तथा 'क्रेन' वहाँ तक सँकरी गली होने के कारण नहीं पहुँच सकते थे। एन डी आर एफ की टीम ने इस इमारत का आकलन किया तथा पाया कि एक व्यक्ति का पैर मलवे में दबा हुआ दिखायी दे रहा था। इस पीड़ित व्यक्ति तक सीधे नहीं पहुँचा जा सकता था क्योंकि वह द्वितीय तल पर फँसा हुआ था तथा पूरी तरह मलवे में दबा हुआ था। बचाव दल ने निर्णय लिया कि इस पीड़ित तक माउन्टेन रेस्क्यू विधि के द्वारा पहुँचा जा सकता था। रस्से के एक सिरे को एक ढाँचे के द्वारा बाँधा गया था जो पूरी तरह स्थायी नहीं था। इसलिए खतरे को कम करने के लिए रस्से के एक सिरे को कुछ लोगों ने जकड़ भी रखा था। दो बचाव कर्मियों को एक सिरे से बाँधकर, फँसे हुए व्यक्ति की जगह पर छोड़ दिया गया। उनका काम मलवों को हटाना तथा एक खिड़की बनाना था जिससे फँसे हुए व्यक्ति तथा उसके आस पास के इलाके को देखा जा सके। उन्होंने इशारे से बताया कि वहाँ पर भारी खम्भे थे जिन्हें तोड़ा नहीं जा सकता था तथा कुछ सीढ़ियाँ अत्यन्त ही सकरी थी। अतः टीम ने दूसरा रास्ता बनाने का निर्णय लिया तथा इसके लिए उन्होंने बगल की इमारत की बालकनी तथा खिड़की से प्रवेश करने का विचार किया। मलवों के बीच रास्ता बनाते हुए उन्होंने सीढ़ियों को भी खोजना शुरू किया। कुछ घंटों बाद बचाव दल द्वितीय तल पर पहुँचने में कामयाब हो गये थे परन्तु वहाँ पर जगह बहुत ही कम थी। फँसे हुए व्यक्ति तक सिर्फ रेंगकर ही पहुँचा जा सकता था। बचाव दल के सदस्यों ने रेंगना शुरू किया तथा एक रस्सी की मदद से वह इमारत के मालिक की पत्नी के मृत शरीर के पास पहुँचे। इस महिला का मृत शरीर लगभग 11 बजे सुबह जाकर बाहर निकाला जा सका। हम मकान मालिक तथा जनसमुदाय का शोकाकुल आभार कभी नहीं भुला सकेगे, यही मानवीय संवेदनाएं हमें इतनी भावनात्मक तथा शारीरिक रूप से कठिन परिस्थितियों में बने रहने की शक्ति प्रदान कर रही थी।



महिला के शव को सुरक्षित निकालते एन डी आर एफ के सदस्य

इसी समय यहाँ पर चीन का एक बचाव दल आया तथा उन्होंने एन डी आर एफ के साथ कार्य करने की इच्छा जाहिर की। परन्तु स्थानीय समुदाय तथा नेपाली सेना ने उन्हें यहाँ कार्य करने के लिए मना कर दिया। पास के मलवे से एन डी आर एफ ने एक और शव को बाहर निकाला। मलवा हटाने के बाद एक रस्सी को पुनः बाँधा गया तथा खींच लिया गया। अब तीसरे व्यक्ति को खोजना बाकी था। इसके स्थान के बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं प्राप्त हुई थी। लगभग 1 बजकर 30 मिनट पर जब एन डी आर एफ की टीम, तीसरे फँसे व्यक्ति को तलाश रही थी तभी नेपाल के तत्कालीन प्रधानमन्त्री सुशील कुमार कोइराला तथा नेपाली सेना के प्रमुख जनरल गौरव एस जे बी राणा इस घटना स्थल पर पहुँचे तथा एन डी आर एफ के बचाव कार्य की खुलकर सराहना की। इस दौरान बचाव कार्य वर्षा के बावजूद जारी रहा। लगभग एक घंटे के उपरान्त एन डी आर एफ के संवेदनशील उपकरणों के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त हुई कि प्रथम तल पर भी एक मृत शरीर है। यह मृत शरीर बाथरूम में फँसा हुआ था, स्थिति बहुत ही भयानक थी। व्यक्ति का शरीर बगल की इमारत की दीवारों में सैण्डविच की तरह दबा हुआ था। मृत शरीर खड़ी अवस्था में था तथा संभवतः यहाँ फँसने के काफी समय तक जीवित रहा होगा। बाथरूम के ऊपर एक छोटा सा छेद था जो मलवे से भरा पड़ा था। मलवा हटाने के बाद इस छेद को और चौड़ा किया गया तथा मृत शरीर को ऊपर

खींचकर निकाल लिया गया। उस समय 29 अप्रैल, शाम के 6 बजकर 30 मिनट हो रहे थे। इस बचाव कार्य को एक भारी भीड़ घेर कर देख रही थी। कुछ नेपालियों ने हाथ मिलाकर हमें आभार प्रकट किया तो कुछ बुर्जुगों से आशिर्वाद मिला, जब कि शोकाकुल परिजन बचाव कर्मियों के गले लगकर अश्रुपूरित आभार प्रकट कर रहे थे।

सीतापाईला, एम सी फास्ट फूड, अपेक्षाओं पर खरा उतरना :
29 अप्रैल को कोलकता से आयी एन डी आर एफ की एक टीम जो 'धरहरा टावर' परिसर में खोज एवं बचाव अभियान कर रही थी, उसने अपना अभियान सुबह 11 बजे समाप्त कर दिया। तत्पश्चात् इस टीम को सीतापाईला क्षेत्र में बचाव कार्य के लिए जाने का निर्देश प्राप्त हुआ। यह टीम शैलेन्द्र सिंह यादव, उप समादेष्टा के नेतृत्व में नेपाली सेना के अधिकारी मेजर शैलेन्द्र के साथ सीतापाईला के लिए रवाना हुई तथा टीम सुबह 11 बजकर 30 मिनट पर 'एम सी फास्ट फूड', सीतापाईला पहुँच गयी। वहाँ पर पहले से ही मौजूद निशीथ उपाध्याय, द्वितीय कमानाधिकारी इस टीम की प्रतीक्षा कर रहे थे। 'एम सी फास्ट फूड' एक चार मंजिला इमारत थी जिसमें यह रेस्तराँ स्थित था। यह इमारत बुरी तरह से ध्वस्त होकर 'पैन-केक' का रूप धारण कर चुकी थी। इस इमारत के बेस-मेन्ट में एक सभागार था। भूकम्प के घटित होने के समय इसके बेस-मेन्ट में 'जडी-बूटी विक्रेता संघ' की बैठक हो रही थी। इमारत के ध्वस्त होने के कारण कई लोग इसमें दब व फँस गये थे। जिन्हें बचाव अभियान के दौरान निकाला जा चुका था परन्तु स्थानीय जन समुदाय के सूत्रों के अनुसार अभी भी एक व्यक्ति के फँसे होने की संभावना थी, जिसे निकाला नहीं जा सका था। टीम के घटनास्थल पर पहुँचने से पूर्व ही निशीथ उपाध्याय ने सम्पूर्ण स्थिति की जानकारी प्राप्त कर ली थी तथा यथास्थिति का आकलन कर लिया था। यह ध्वस्त इमारत मुख्य सड़क के किनारे ही स्थित थी। टीम के पहुँचने पर निशीथ उपाध्याय ने शैलेन्द्र सिंह यादव, उप समादेष्टा तथा टीम कमाण्डर निरीक्षक जसविन्दर सिंह को बचाव कार्य की रूपरेखा के विषय में जानकारी दी तथा बचाव कार्य प्रारम्भ करने का निर्देश दिया। श्वान दस्तों की मदद से खोज कार्य शुरू किया गया परन्तु फँसे व्यक्ति के स्थान को चिन्हित नहीं किया जा सका। स्थानीय पुलिस की मदद से कार्य क्षेत्र का सुरक्षा घेरा बनाया गया क्योंकि एन डी आर एफ की टीम के पहुँचते ही जन सैलाब उमड़ चुका था। मुख्य सड़क के दोनो किनारों पर जन समुदाय बचाव कार्य को टकटकी लगाकर

निहार रहा था। घटना स्थल पर नेपाली पुलिस तथा सेना के सदस्य भी उपस्थित थे। ध्वस्त इमारत पूरी तरह से नीचे धँस गयी थी जिससे 'बेस-मेन्ट' में पहुँचना मुश्किल था। 'विकिटम लोकेटिंग कैमरे' को कई प्रयासों से ध्वस्त मलबों में देखने का प्रयास किया गया परन्तु विफल होने पर यह निर्णय लिया गया कि 'बेस-मेन्ट' में प्रवेश करने के लिए जगह बनायी जाये।



बेसमेंट में फँसे पीड़ित से सम्पर्क साधते एन डी आर एफ के सदस्य

निशीथ उपाध्याय ने इस कार्य के लिए 'शोरिंग' करने का निर्देश दिया। तदुपरान्त मौजूदा संसाधनों एवं 'हाइड्रोलिक-जैक' की मदद से ध्वस्त इमारत के 'बीम व स्तम्भों' को अस्थायी स्थायित्व प्रदान किया गया। इस दिशा में प्रगति व प्रवेश के साथ शव की दुर्गन्ध तेज होती गयी। दुर्गन्ध की दिशा व तीक्ष्णता ने फँसे व्यक्ति तक पहुँचने की दिशा सुनिश्चित की। मानव शव की दुर्गन्ध इतनी तीव्र थी कि बचाव कर्मियों की बदली करनी पड़ रही थी। भीतर प्रवेश करने के लिए जगह-जगह पर 'कटर' तथा 'लिफ्टिंग बैग' का प्रयोग किया गया था।

अन्ततः अपराह्न 1 बजकर 55 मिनट पर अथक प्रयासों के बाद शव को बाहर निकाल दिया गया और उसे स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया था। स्थानीय लोगों तथा पुलिस ने शव की शिनाख्त अर्जुन बहादुर के. सी., पुत्र श्री बीर बहादुर के. सी., उम्र 55 वर्ष, निवासी बालाजी मठ पोखारी, सीतापाइला, काठमाण्डू के रूप में की गई। यह व्यक्ति 'जड़ी-बूटी विक्रेता संघ' का अध्यक्ष था। एन डी आर एफ के इस बचाव अभियान का समस्त जन सैलाब, नेपाली सेना तथा पुलिस प्रत्यक्षदर्शी

बनी रही। सभी ने इस कार्य की भरपूर प्रशंसा की थी क्योंकि पूर्व में कई विदेशी बचाव दल 'अत्यधिक खतरे की संभावना' बताकर वापस जा चुके थे। एन डी आर एफ के इस अभियान के दौरान नेपाल के प्रधान मंत्री तथा भारत के राजदूत कार्यस्थल से होकर गुजरे थे। नेपाली सेना के वरिष्ठ अधिकारी तथा नेपाल पुलिस के महानिदेशक ने स्वयं कार्य स्थल पर आकर एन डी आर एफ के कार्यों की सराहना की तथा सफल अभियान के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। निशीथ उपाध्याय ने कार्य स्थल पर उपस्थित नेपाली, भारतीय तथा विदेशी मीडिया से बात की तथा इस कठिन एवं सफल बचाव अभियान की जानकारी दी। एन डी आर एफ के इस कार्य के दौरान कुछ समय के लिए नीदरलैंड, स्विटजरलैंड तथा रूस के बचाव दल प्रत्यक्षदर्शी बने रहे थे।



विविक्त लोकेटिंग कैमरा के द्वारा ध्वस्त हिस्से का अवलोकन

बाला जू गणेश मन्दिर अभियान, 'भारत की जय' : 30 अप्रैल को कोलकता से आयी एन डी आर एफ की एक टीम प्रातः 7 बजकर 40 मिनट पर 'बाला जू' क्षेत्र में स्थित 'गणेश मन्दिर' के पास खोज एवं बचाव कार्य के लिए भेजी गयी। इस टीम के साथ नेपाली सेना का गाइड भी था। यहाँ पर गणेश मन्दिर से लगी एक बहुमंजिला इमारत भूमि में नीचे धँसने के साथ-साथ बाँयी तरफ सरक भी गयी थी। यह बहुमंजिला इमारत बहुत ही जटिल रूप से ध्वस्त हुई थी। इमारत ध्वस्त होने के साथ सामने की तरफ झुक भी गयी थी। इस इमारत तक पहुँचने का रास्ता बहुत ही सँकरा था। वहाँ तक गाड़ी का पहुँचना भी मुश्किल था। ध्वस्त

इमारत का मलवा सामने मन्दिर के ऊपर तथा आस पास बिखरा पड़ा था। प्राचीन गणेश मन्दिर को कोई क्षति नहीं पहुँची थी। इस बहुमंजिला इमारत में 'शॉपिंग काम्पलेक्स' था। इस इमारत के पीछे तथा बाँयी तरफ का भवन भी ध्वस्त हो गया था। यह क्षेत्र पूरी तरह से आवासीय था तथा जगह-जगह पर छोटी दुकानें थी। निशीथ उपाध्याय ने ध्वस्त इमारत का परीक्षण तथा प्रारम्भिक आकलन किया। शॉपिंग काम्पलेक्स के मालिक से प्राप्त समाचार के अनुसार भूतल पर स्थित 'कैश-काउन्टर' पर कार्यरत एक महिला के अभी तक दबे होने की आशंका थी। उसे अभी तक तलाशा नहीं जा सका था। इस घटना स्थल पर कई विदेशी बचाव दल आकर वापस लौट चुके थे। स्थानीय लोगो ने बताया कि एक विकसित देश का बचाव दल यह कहकर वापस लौट गया था कि वे मृतक शरीर के लिए अपने बचाव कर्मियों की जान खतरे में नहीं डाल सकते। ध्वस्त इमारत में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ी हुई थी। इमारत के नीचे घँसने की वजह से प्रथम तल पर रखा सारा स्टोर जमीन से नीचे जा चुका था। श्वानो के द्वारा ध्वस्त इमारत के परिसर का परीक्षण कराया गया, परन्तु कोई पहचान तथा सूत्र नहीं मिल सका। 'विकिटम लोकेटिंग कैमरे' के द्वारा जमीन की सतह के नीचे के स्थान का अवलोकन करने का प्रयास किया गया, परन्तु यह संभव नहीं हुआ क्योंकि शॉपिंग स्टोर का सारा सामान दब कर जगह-जगह फँसा हुआ था। कुछ मलवा हटाने के बाद पाया गया कि भूतल के ऊपर दो बीमो ने 'सैंडविच' की तरह परत बना रखी थी। भूतल का फर्श व छत दोनों एक दूसरे से चिपक गये थे। घटना स्थल पर नेपाली पुलिस तथा स्थानीय लोगो का जमावड़ा लगा हुआ था। 'गणेश-मन्दिर' तिराहे के दोनों छोर पर स्थानीय लोगो का हूजूम उमड़ पड़ा था। इमारत अत्यधिक खतरनाक स्थिति में सामने की तरफ झुकी हुई थी तथा यही एक मात्र दिशा थी जहाँ से बचाव कार्य शुरू किया जा सकता था।

निशीथ उपाध्याय ने टीम कमाण्डर तथा उप निरीक्षक (अवर अभियन्ता) को बुलाकर इस ध्वस्त इमारत की जटिलता, प्रवेश करने की दिशा तथा माध्यम के विषय पर निर्देश दिया। निशीथ उपाध्याय ने एक

अवर अभियन्ता (सिविल) को कार्यस्थल पर 'सुरक्षा-अधिकारी' नियुक्त किया तथा उसे सिर्फ और सिर्फ ध्वस्त इमारत पर लगातार नजर रखने का दायित्व दिया गया। ध्वस्त इमारत की दरारों पर रंग से निशान लगाये गये जिससे उनके अन्तराल का लगातार आकलन किया जा सके। निशीथ उपाध्याय ने ध्वस्त इमारत की शेष ऊँचाई के लगभग डेढ़ गुने की दूरी को इमारत के झुके भाग से खाली करवाने के लिए उपस्थित नेपाल पुलिस को निर्देश दिया। इस प्रक्रिया में इस सुरक्षित दूरी के अन्तर्गत आने वाले घरों को भी खाली करवा दिया गया तथा एन डी आर एफ के कार्मिक एवं संसाधनों को भी इस न्यूनतम सुरक्षित दूरी से बाहर स्थानान्तरित किया गया।

निशीथ उपाध्याय ने यह निर्देश दिया कि इस परिधि के भीतर सिर्फ नियुक्त 'सुरक्षा अधिकारी' तथा आवश्यक बचाव कर्मी ही रहेंगे। उन्होंने सभी टीम के कार्मिकों को निर्देश दिया कि कोई भी कंपन उत्पन्न करने वाले उपकरणों का प्रयोग न करे। इसी प्रक्रिया में ध्वस्त इमारत के समीप खड़ी 'जे सी बी मशीन' को भी नेपाल पुलिस की मदद से ध्वस्त इमारत से दूर हटा दिया गया। जिससे किसी भी भारी मशीन व उपकरण से सड़क तथा जमीन में तनिक भी कंपन न हो सके। तत्पश्चात् भूतल में प्रवेश बनाने के लिए मलवों को हटाने का कार्य शुरू हुआ। मलवा हटाने के बाद कार्य करने के हिस्से में 'शोरिंग' का प्रयास किया गया जिससे हल्के कटर का प्रयोग किया जा सके। वहाँ उपलब्ध लकड़ी के टुकड़े की मदद से निचले हिस्से को स्थायित्व देने का प्रयास किया गया। इस बचाव कार्य के दौरान रुक-रुक कर कभी-कभी बारिश भी हो रही थी जिससे बचाव कार्य में बाधा पहुँच रही थी। निचले हिस्से को लकड़ी के टुकड़े तथा 'हाइड्रोलिक जैक' के द्वारा शोरिंग करने के बाद हल्के कटर के द्वारा प्रवेश के लिए जगह बनाने का प्रयास शुरू किया गया। परन्तु 'सुरक्षा अधिकारी' ने सूचना दी कि ध्वस्त इमारत के बीच पड़ी दरारें गहरी तथा चौड़ी हो रही थी। दरारों के ऊपर लगाये गये निशान से यह तथ्य सामने आया था। निशीथ उपाध्याय ने तुरन्त बचाव कार्य को रोकने का निर्देश दिया तथा यह निर्णय लिया गया कि

झुकी हुई ध्वस्त इमारत के समस्त हिस्से को स्थायित्व प्रदान किये बिना बचाव कार्य न किया जाये। इस समय शाम के 6 बजकर 20 मिनट हो रहे थे। यह कार्य पूर्ण प्रकाश में भी बेहद खतरनाक था तथा छोटी सी भूल भी बचाव कर्मियों की सुरक्षा का खतरा पैदा कर सकती थी। ऐसे अवसरों पर धैर्य ही एकमात्र मित्र होता है। अतः बचाव कार्य रोक दिया गया। परन्तु इस प्रयास में शव की दुर्गन्ध आने लगी थी जिससे यह संकेत मिल गया था कि प्रवेश की दिशा में कोई त्रुटि नहीं है तथा इसी दिशा में शव दबा हुआ है।

1 मई की सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर पुनः बचाव कार्य शुरू किया गया। निशीथ उपाध्याय ने अजीब तथ्य यह पाया कि रात में आये भूकम्प के झटके से ध्वस्त इमारत की स्थिति पर कोई असर नहीं हुआ था। वह इमारत ज्यों की त्यों बनी हुई थी। ध्वस्त तथा सामने झुकी इमारत को 'शोरिंग' करने के लिए संसाधन जुटाये गये। मलवों तथा घर के आस-पास बिखरे लकड़ी के खम्भों को एकत्रित किया गया। ध्वस्त इमारत की ऊँचाई ज्यादा होने के कारण, लम्बे लकड़ी के खम्भों के दो टुकड़ों को जोड़-जोड़ कर बनाया गया।



शोरिंग की तैयारी करते एन डी आर एफ के सदस्य

बड़ी मशक्कत से शेष बचे हुए इमारत के हिस्से को स्थायित्व दिया गया। 'शोरिंग' का कार्य समाप्त होते ही, समस्त सावधानियों के साथ प्रवेश द्वार बनाते हुए भूतल में उतरने का प्रयास किया गया।



सामने की तरफ झुकी इमारत को स्थायित्व देने की प्रक्रिया

जितना भीतर प्रवेश करते उतना ही शव की दुर्गन्ध तीक्ष्ण होती जाती थी। अन्ततः अथक प्रयास के पश्चात् दल के बचाव कर्मी रेंगते हुए मृत शरीर तक पहुँचे जो भूतल की सीढ़ियों पर फँसी हुई थी, मानो भूकम्प के दौरान महिला ने 'कैश-काउन्टर' से बाहर भागने का प्रयास किया हो। शव को शाम 5 बजे बाहर निकाला गया। शव के बाहर निकालते ही जन सैलाब उमड़ पड़ा था। असंख्य महिलायें विलाप कर रही थी। समस्त समुदाय मृत शरीर को रोते हुए हाथ जोड़ कर भावभीनी विदाई दे रहा था। मृत शरीर महिला का था जिसे घटना स्थल पर उपस्थित पुलिस को सौंप दिया गया था। महिला की शिनाख्त कुमारी गुरुग, उम्र 34 वर्ष, पुत्री वीर भान गुरुग, निवासी लिम्मा, धुवाकोट-9, जिला गोरखा के रूप में हुई थी। अपार भीड़ एकत्र हो चुकी थी, यहाँ तक कि शव को ले जाने वाली 'एम्बुलेन्स' को रास्ता बनाना मुश्किल हो रहा था। खोज एवं बचाव कार्य समाप्त होने के पश्चात् उपस्थित जन सैलाब एन डी आर एफ के कार्य से इतना अभिभूति था कि सभी बढ़कर बचाव कर्मियों की फोटो ले रहे थे तथा हाथ मिलाकर धन्यवाद देने वाली की होड़ लगी हुई थी। महिलाये विलाप करती हुई हाथ जोड़कर एन डी आर एफ के सदस्यों का अभिवादन कर रही थी। इस दृश्य ने सभी के हृदय को झकझोर कर रख दिया था। एन डी आर एफ का यह खोज एवं बचाव अभियान अत्यन्त ही चुनौती पूर्ण था, जिसमें ध्वस्त इमारत तथा आस-पास के सटे भवनो को और क्षति न पहुँचाते हुए

बचाव कार्य सम्पन्न किया गया था। निशीथ उपाध्याय ने बचाव स्थल पर उपस्थित मीडिया कर्मियों को सम्बोधित किया तथा बचाव कार्य के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा की। खोज एवं बचाव कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् एन डी आर एफ के इस दल को बाहर निकलना मुश्किल हो रहा था, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति इन्हे छूना तथा हाथ मिलाना चाहता था। गलियों से बाहर निकलकर आने में काफी विलम्ब हुआ क्योंकि जन समुदाय बचाव दल को रोक कर हाथ मिलाते तथा तस्वीर खींच रहे थे। गलियों के दोनों तरफ खड़े स्थानीय समुदाय ने 'भारत की जय' का उदघोष किया। दो दिन तक चले इस अभियान की समाप्ति पर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मानवता हर सीमाओं तथा बंदिशों से मुक्त होकर जीत दर्ज करा रही हो।

बाबा गेस्ट हाउस बचाव अभियान : कोलकता से आयी एन डी आर एफ की टीम को 2 मई को 'गंगबू' क्षेत्र में स्थित 'बाबा गेस्ट हाउस' में खोज एवं बचाव अभियान के लिए भेजा गया था। इस टीम के साथ नेपाली सेना का एक अधिकारी मेजर शैलेन्द्र गाइड के रूप में था। टीम सुबह 7 बजकर 50 मिनट पर घटना स्थल पर पहुँच गयी थी। यह गेस्ट हाउस 'गौरी शंकर गेस्ट हाउस' से सटा हुआ था। इस इलाके में गेस्ट हाउस बहुतायत की संख्या में थे तथा सभी अत्यन्त ही सँकरी गलियों में स्थित थे। वहाँ सिर्फ पैदल ही जाया जा सकता था। ज्यादातर गेस्ट हाउस बुरी तरह ध्वस्त हो चुके थे। 'बाबा गेस्ट हाउस' पूरी तरह से ध्वस्त होकर जमीन पर बिखर चुका था। यह एक बहुमंजिला गेस्ट हाउस था जो पूरी तरह 'पैन-कैक' का स्वरूप ले चुका था। इस ध्वस्त इमारत के ऊपर बगल का एक ध्वस्त गेस्ट हाउस गिर कर टिका हुआ था। यह क्षेत्र पूरी तरह कंक्रीट के जंगल की तरह सघन था। निशीथ उपाध्याय ने प्रारम्भिक सूचना स्थानीय लोगों से प्राप्त की तथा ध्वस्त हिस्से का परीक्षण किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस ध्वस्त इमारत में कई अन्य बचाव दल द्वारा बचाव अभियान सम्पन्न किया जा चुका था, परन्तु अभी भी तीन व्यक्तियों के फँसे होने की आशंका थी। घटना स्थल पर मानव शव की दुर्गन्ध आ रही थी। समीप पहुँचना मुश्किल हो रहा था। इस ध्वस्त इमारत के आस पास की ध्वस्त इमारत में बचाव कार्य कई विदेशी बचाव दलों के द्वारा किया जा रहा था। कोरिया, जापान तथा ओमान के बचाव दल अलग-अलग हिस्से में बचाव कार्य कर रहे थे। चारों तरफ मलवा बिखरा पड़ा था। प्रारम्भिक आकलन के पश्चात् शैलेन्द्र सिंह यादव, उप समादेष्टा तथा टीम कमान्डर निरीक्षक जसविन्दर सिंह ने आ रही तीक्ष्ण दुर्गन्ध की दिशा में प्रवेश करने का कार्य शुरू करवाया। मलवों को हटाने का कार्य शुरू किया गया। मलवों में उपलब्ध संसाधनों की मदद से 'शोरिंग' का काम किया गया। परन्तु प्रवेश करना

मुश्किल हो रहा था। प्राप्त सूचना के अनुसार शव प्रथम तल की सीढ़ियों पर दबे हुए थे। इसके लिए दो बीम तथा एक दीवार को काटना था। बचाव अभियान के दौरान बीच में बारिश भी राहत कार्य में व्यवधान पहुँचा रही थी। शोरिंग के प्रत्येक चरण पर दुर्गन्ध की तीव्रता को कम करने के लिए 'फिनायल' का छिड़काव करना पड़ रहा था। 'हाइड्रोलिक-जैक' व 'लिफ्टिंग बैग' का प्रयोग किया जा रहा था। शोरिंग के फलस्वरूप कुछ प्रवेश बनाकर पुनः शोरिंग करनी पड़ रही थी तथा प्रवेश के लिए सिर्फ रेंगकर ही बढ़ना पड़ रहा था। इस दौरान कई विदेशी मीडिया भी घटना स्थल पर आये तथा एन डी आर एफ के बचाव अभियान को कवर किया। इन सभी मीडिया कर्मियों को निशीथ उपाध्याय ने एन डी आर एफ के बचाव अभियान के बारे में बताया। ज्यादातर मीडिया कर्मियों का प्रश्न था कि शवों को निकालने के लिए बचाव कर्मियों को खतरा उठाया जाना चाहिए या नहीं। अन्ततः नेपाली सेना तथा पुलिस के आग्रह पर बचाव कार्य शाम 6 बजकर 30 मिनट पर रोक दिया गया।

3 मई की प्रातः 7 बजकर 30 मिनट पुनः बचाव कार्य शुरू किया गया। कार्यस्थल पर पर्याप्त स्थान न होने तथा मलवों के बिखरे होने की वजह से सिर्फ सीमित सदस्यों को ही कार्य पर लगाया जा रहा था, बाकी सदस्य दूर एक खुले हुए क्षेत्र में एकत्र किये गये थे। बचाव कर्मियों की एक अवधि के बाद तब्दीली की जा रही थी क्योंकि तीक्ष्ण दुर्गन्ध की वजह से काम करना मुश्किल हो रहा था। इस ध्वस्त इमारत के दूसरे हिस्से में काम कर रही दक्षिण कोरियाई दल ने बचाव कार्य के लिए एन डी आर एफ के संसाधनों का भी प्रयोग किया था।



शोरिंग के उपरान्त प्रवेश करने की प्रक्रिया का कुशल संचालन

अन्ततः अपराह 1 बजकर 20 मिनट पर एक पुरुष का शव बड़ी मशक्कत से बाहर निकाला गया। इस शव की शिनाख्त रमेश पौडवाल, उम्र 21 वर्ष के रूप में हुई। ठीक 10 मिनट पश्चात पुनः एक पुरुष शव को बाहर निकाला गया, जिसकी शिनाख्त प्रकाश पौडवाल, उम्र 17 वर्ष के रूप में हुई। इन शवों को बाहर निकालने के पश्चात् एन डी आर एफ के बचाव कर्मियों का हौसला बढ़ गया तथा वे तीसरे शव को बाहर निकालने में जुट गये। अपराह 2 बजकर 57 मिनट पर तीसरे व आखिरी शव को बाहर निकाला गया। यह शव भी पुरुष का था जिसकी शिनाख्त कृष्णा रागामी, उम्र 23 वर्ष के रूप में हुई। तीनों शवों को नेपाली पुलिस के माध्यम से उनके परिजनो को सौंप दिया गया था। शवों को बाहर निकालते ही जन सैलाब उमड़ पड़ा था। परिजनों के आग्रह पर शवों को सुरक्षित इनके पैतृक स्थान पर ले जाने के लिए एन डी आर एफ ने मदद की। तीनों शवों को बाहर निकालते समय एन डी आर एफ ने इस बात को विशेष महत्व दिया था कि शवों को किसी भी प्रकार कोई क्षति न पहुँचे। यही कारण था कि उनके परिजन जो लगातार वहाँ उपस्थित थे, बचाव दल के सदस्यों की सराहना कर रहे थे तथा उनको धन्यवाद दे रहे थे। खोज एवं बचाव अभियान सम्पन्न होने के पश्चात निशीथ उपाध्याय ने उपस्थित मीडिया कर्मियों को सफल बचाव अभियान के विषय में जानकारी दी।

6 चुनौतियाँ हुई पराजित

भूकम्प आने के बाद खोज एवं बचाव कार्य के लिए उत्पन्न चुनौतियाँ कई चीजों पर निर्भर करती हैं, जिसमें से कुछ मलबे में फँसे व दबे हुए पीड़ित की यथास्थिति, इमारत किस प्रकार की हैं तथा किस दिशा में ध्वस्त होती है, इमारत में प्रयोग किये गये संसाधनों की जानकारी इत्यादि। यह सभी मिलकर किये जाने वाले बचाव कार्य से गंभीरता व दक्षता की माँग करती है जिससे बचाव कार्य में कुछ मिनट से कुछ दिन भी लग सकता है। इमारत किस प्रकार ध्वस्त होती है, उसी के अनुसार बचाव कर्मी तथा संसाधनों की आवश्यकता होती है। सम्पूर्ण रूप से ध्वस्त हुई इमारतों में बचाव कार्य में काफी वक्त लगता है क्योंकि पीड़ित व्यक्ति या शव मलबों के नीचे दबे होते हैं और यह सही अन्दाज लगाना महत्वपूर्ण होता है कि किस प्रकार दबे हुए पीड़ितों तक पहुँचने के लिए प्रवेश बनाया जाये, जो कि बचाव में लगे कर्मियों की मदद करने में अक्षम होते हैं क्योंकि वे स्वतः चोट के कारण चल फिर नहीं सकते या वे बेहोशी

की हालत में पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में बचाव दल के ऊपर अतिरिक्त भार बन जाता है। परन्तु इन परिस्थितियों में बचाव दल की स्वयं की सुरक्षा विशेषकर कार्य करते समय, पर कोई विशेष खतरा नहीं होता है। जबकि दूसरी तरफ यदि कोई इमारत आंशिक रूप से बर्बाद होती है, तो ज्यादातर स्थितियों में स्थानीय जन समुदाय का ज्यादा शारीरिक नुकसान न होने के कारण वे बचाव कार्य में भी मदद करते हैं। इस प्रकार बचाव कार्य तेजी से किया जाता है परन्तु ऐसी स्थितियों में अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त इमारत कभी भी पुनः झटकों के कारण धाराशायी हो सकती है। नेपाल भूकम्प के उपरान्त एन डी आर एफ के सदस्यों को वहाँ पर दोनों परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ा था। इस प्रकार प्रत्येक कार्य स्थल की परिस्थितियाँ अलग-अलग थीं तथा सभी जगहों पर एन डी आर एफ की टीमों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही थी। अतः टीमों को प्रत्येक कार्य स्थल पर परिस्थितियों के अनुसार ही अपने उपकरणों एवं संसाधनों के उपयोग का चयन करना पड़ रहा था तथा वे समय के साथ-साथ आवश्यक तरीकों को अपना रहे थे।

नेपाल भूकम्प उपरान्त एन डी आर एफ द्वारा चलाये गये खोज एवं बचाव अभियान में तेजी लाने तथा क्षति का सही व शीघ्र आकलन करने के लिए एन डी आर एफ ने 'यू ए वी-नेत्र' का भी प्रयोग किया। 26 अप्रैल को 'यू ए वी- नेत्र' का प्रयोग नेपाल भूकम्प के बचाव अभियान में प्रयोग करने का निर्णय लिया गया था। इसके लिए एक अधिकारी, एक अधीनस्थ अधिकारी, एक मुख्य आरक्षक तथा एक सिपाही का दल तैयार किया गया। 'यू ए वी नेत्र' के माध्यम से दूर-दराज के इलाके में हुए नुकसान की सही जानकारी प्राप्त की गयी थी, विशेषकर जहाँ एन डी आर एफ की तैनाती होनी थी। इसके आधार पर बचाव कार्य की प्राथमिकता तथा उपयोग में लाने वाले आवश्यक उपकरणों की योजना एवं तैयारी की गयी। इसकी मदद से क्षति के इलाके की जानकारी प्राप्त की गयी तथा फिल्म भी तैयार की गयी थी। बेस कैम्प की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थान तथा आपदा प्रभावित क्षेत्र तक पहुँचने के लिए सुरक्षित मार्ग की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती थी।

28 अप्रैल की सुबह 'यू ए वी नेत्र' को काठमाण्डू में शोभा भगवती ब्रिज के ऊपर स्थापित किया गया तथा इससे छाया चित्र प्राप्त किया गया। 29 अप्रैल को अपरिहार्य कारणों के कारण 'यू ए वी नेत्र' की उड़ान

को रोकने का निर्देश दिया गया था। भारत के सुरक्षा सलाहकार के दौरे के समय यह निर्णय लिया गया कि 'नेत्र' के द्वारा काठमाण्डू में 'गौरी शंकर गेस्ट हाउस', न्यू बस पार्क एरिया की फोटोग्राफी की जाये।



एन डी आर एफ के 'नेत्र' द्वारा क्षति का आकलन

7 खोज एवं बचाव कार्य का समापन

इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता कि सच्चे आपदा प्रबन्धन का सम्पूर्ण चक्र तब पूरा होता है जब आपदा प्रभावित पीड़ितों की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। बचाव, आपातकालीन राहत तथा शीघ्र पुनर्निर्माण के बीच प्रत्यक्ष रूप से विभेद होना चाहिए। आपदा के फौरन उपरान्त राहत एवं बचाव की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। इस प्रक्रिया में खोज एवं बचाव अभियान सुरक्षित स्थानों पर स्थानान्तरण, आपातकालीन जीवन रक्षक चिकित्सा, सुविधा तथा भारी संख्या में कैजुअल्टी प्रबन्धन शामिल है। सर्वप्रथम एवं प्राथमिक बचाव तंत्र स्थानीय समुदाय, प्रशासन, पुलिस, अग्निशमन विभाग तथा सिविल डिफेंस ही होते हैं। तत्पश्चात् इन लोगों को विशेषज्ञ एवं तकनीकी से परिपूर्ण राहत एवं बचाव दल का सहयोग मिलता है। जब एक बार पीड़ितों को रिलीफ कैम्प में ले जाया जाता है तो वहाँ से तात्कालिक सहायता प्रारम्भ होती है। प्रारम्भिक पुनरुत्थान अभियान में क्षति का आकलन, क्षति,

पुनर्निर्माण तथा जीविका की बहाली की आवश्यकता होती है जिससे आम जीवन पुनः नियमित रूप से बहाल हो सके। इन सभी कार्यों के लिए जन संपर्क एवं मीडिया का सहयोग बहुत आवश्यक होता है।

जन-जीवन धीरे-धीरे सामान्य होने लगा था। शोभा भगवती ब्रिज, जहाँ हमारी एन डी आर एफ की टीम 25 अप्रैल की रात से ही लगातार बचाव कार्य में लगी हुई थी, से थोड़ी दूरी पर स्थित अपनी छोटी सी दुकान को मूल रूप से चितवन जिला के रहने वाले श्री सुरेश कुमार ने 29 अप्रैल को फिर से खोल लिया था तथा पूछने पर उन्होंने बताया “लोगों को सामान की आवश्यकता है और मुझे घर चलाने के लिए पैसों की, ऐसे में जिंदगी को तो जल्दी पटरी पर लाना ही होगा।” काठमाण्डू शहर में लगाये गये 16 अस्थायी कैम्पों में रह रहे लोगों की संख्या में भी दिन-प्रतिदिन कमी आ रही थी। टुंडिखेल पार्क में बनाये गये अस्थायी कैम्प में रहने वाला बीकेश भी अपने परिवार के साथ घर वापस जाने के लिए अपना सामान बाँध रहा था। उसने पूछने पर बताया “बहुत हो गया कैम्प में रहना, जिंदगी की फिर से शुरुआत घर जाकर ही करनी होगी। स्कूल तो अभी बन्द है, इसलिए घर को ठीक करने में परिवार की मदद करूंगा। मेरी पालूत बिल्ली भूकम्प के बाद से नहीं मिल रही है उसको ढूँढना भी जरूरी है।” यह कहानी भूकम्प में सुरक्षित बच गये ज्यादातर परिवारों की थी। काठमाण्डू शहर में बिजली व्यवस्था भी तेजी से सामान्य हो रही थी, जिसकी वजह से भी लोगों को सामान्य होती जिंदगी का अहसास मिल रहा था।

एन डी आर एफ द्वारा त्वरित एवं कुशल खोज एवं बचाव अभियान के अन्तर्गत 11 जीवित पीड़ितों को भूकम्प उपरान्त बचाया गया, जिन्हें ध्वस्त इमारतों एवं भवनों से निकाला गया था। लगभग सौ भूकम्प के झटकों तथा विपरीत खराब मौसम के बावजूद एन डी आर एफ की 16 टीमों को खोज एवं बचाव कार्य में लगाया गया था। यह अभियान भूकम्प के दिन अर्थात् 25 अप्रैल 2015 से ही शुरू कर दिया गया था तथा 4 मई 2015 तक चलाया गया था। एन डी आर एफ ने नेपाल में कुल 86 जगहों पर बचाव अभियान चलाया था तथा इसके अन्तर्गत 133 शवों को निकाला गया था। इन टीमों के द्वारा बचाव अभियान के दौरान कई कीमती सामानों तथा नेपाली राशि भी बरामद किया था जिसे स्थानीय

पुलिस को सौंप दिया गया था। नेपाल सरकार द्वारा खोज एवं बचाव कार्य को एक विभागीय विज्ञापित के अनुसार 4 मई 2015 को खत्म कर दिया गया था। अतः एन डी आर एफ ने भी 4 मई 2015 को अपना 'खोज एवं बचाव' कार्य समाप्त किया था, जिससे भूकम्प प्रभावित पीड़ितों एवं क्षेत्रों में पुनर्स्थापन एवं पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया जा सके।



निकाले गये शव को ले जाते एन डी आर एफ के सदस्य

3 मई 2015 को नेपाली सेना ने 'खोज एवं बचाव' अभियान को समाप्त करने का निर्णय लिया था, जिसकी आधिकारिक घोषणा 4 मई 2015 को की गयी थी। 4 मई 2015 को भटिंडा बटालियन की चार टीमों को खोज एवं बचाव के कार्य क्षेत्र से वापिस बुलाने का निर्देश दिया गया तथा उन्हें वापस भारत लौटने के लिए तैयार रहने को कहा गया था। इन चारों टीमों को 4 मई 2015 को त्रिभुवन हवाई अड्डे पर एसेम्बली क्षेत्र में रात 10 बजकर 30 मिनट पर एकत्रित कर दिया गया था। ये चारों टीमों भारतीय वायुसेना के भारवाहक विमान 'आई एल -76' के द्वारा त्रिभुवन हवाई अड्डे से 5 मई 2015 को सुबह 5 बजे उड़ान भर कर प्रातः 7 बजे चण्डीगढ़ वायुसेना के हवाई अड्डे पर पहुँच गयीं थी। वहाँ से सड़क मार्ग से वापिस भटिंडा के लिए उसी दिन रवाना हो गयी थी।

नेपाल सरकार द्वारा खोज एवं बचाव कार्य के समापन की घोषणा के पश्चात् एन डी आर एफ को कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले इस बल के

महानिदेशक ओ पी सिंह 5 मई 2015 को काठमाण्डू से दिल्ली के लिए रवाना हो गये थे। एन डी आर एफ के अदम्य साहस व कर्तव्यनिष्ठा को देखते हुए नेपाली सेना प्रमुख जनरल गौरव एस जे बी राणा तथा नेपाल सरकार ने एन डी आर एफ को 'प्रशस्ति-पत्र' दिया जिसे इस बल के उपमहानिरीक्षक रणदीप कुमार राणा ने 7 मई को नेपाली सेना के मुख्यालय, काठमाण्डू में बल की तरफ से ग्रहण किया था। 8 मई 2015 को शेष एन डी आर एफ के सदस्य वापस भारत लौट गये थे।

काठमाण्डू स्थित एन डी आर एफ के 'कन्ट्रोल रूम' के निर्देशानुसार पटना बटालियन की तीनों टीमों काठमाण्डू से 5 मई 2015 की प्रातः 6 बजकर 30 मिनट सड़क मार्ग से भारत के लिए रवाना हुई तथा 6 मई 2015 को वापस वाहिनी मुख्यालय 'भीटा', पटना, बिहार पहुँच गयी थी।

6 मई 2015 को अपराह्न 2 बजकर 25 मिनट पर गाजियाबाद बटालियन की दो टीमों काठमाण्डू हवाई अड्डे से 'इण्डिगो' की फ्लाइट से तथा एक टीम त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से 'जेट एयरवेज' के द्वारा नयी दिल्ली के लिए रवाना हुई थी। गाजियाबाद बटालियन की शेष तीन अन्य टीमों दिनांक 7 मई 2015 को सायंकाल 3 बजे त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से भारतीय वायुसेना के हवाई जहाज 'आई एल-76' के द्वारा 'पालम तकनीकी हवाई अड्डे' के लिए रवाना हो गयी थी।

नेपाली सेना के काम्बैट इंजीनियरिंग बटालियन के परिसर में स्थापित एन डी आर एफ के कन्ट्रोल रूम ने 7 मई 2015 की प्रातः 8 बजे कार्य करना बन्द कर दिया था तथा वे भारत वापसी की तैयारी के साथ अपनी टीमों में जा मिले थे।

कोलकता बटालियन की तीन टीमों जो काठमाण्डू में भारतीय दूतावास स्थित केन्द्रीय विद्यालय में अपने बेस कैम्प में थी, उनमें से दो टीम निशीथ उपाध्याय के नेतृत्व में दिनांक 7 मई 2015 की प्रातः 8 बजे सड़क मार्ग से सशस्त्र सीमा बल की पाँच गाड़ियों के द्वारा काठमाण्डू से वापस भारत के लिए रवाना हुई तथा उसी दिन सायं 4 बजे भारत की सीमा पर रक्सौल में प्रवेश किया। वहाँ से वे रेल यातायात के माध्यम से हावड़ा के लिए रवाना हो गयी थी। कोलकता बटालियन की शेष एक टीम ने 7 मई 2015 को एयर इण्डिया के विमान से काठमाण्डू से सायं 4 बजकर 5 मिनट पर

कोलकता के लिए उड़ान भरी थी तथा उसी दिन सायं 6 बजे कोलकता हवाई अड्डे पर पहुँच गयी थी।

8 अमिट छाप

एन डी आर एफ ने नेपाल में खोज एवं बचाव कार्य के समापन पर वहाँ जन समुदाय के मनः पटल पर मानवता की एक अमिट छाप छोड़ी थी। हर कोने से एन डी आर एफ के त्वरित गति से किये गये खोज एवं बचाव अभियान की सराहना हो रही थी। इस बल के महानिदेशक ओ पी सिंह जब एन डी आर एफ के सफल अभियान के समापन के पश्चात् एयर इण्डिया के विमान से लौट रहे थे, तब उनके मन व मस्तिष्क में नेपाल भूकम्प की आपदा से बचे हुए जन समुदाय की पीड़ा की छवि बारम्बार उभर रही थी। उन्होंने वहाँ के लोगों के दुःखों का अहसास करीब से किया था। प्रत्येक नेपाली की अनिश्चितता तथा उनकी पीड़ा का अहसास मानव होने के नाते मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देने वाली एन डी आर एफ ही समझ सकती थी और इसीलिए यह विश्व का अपने आप में अनूठा बल वहाँ अपनी कसौटी पर खरा उतरा था।

पहला अंतर्राष्ट्रीय प्रयास तथा विश्वास भारत की तरफ से आया था। इसी दिशा का कदम एक मजबूत तथा संसाधनों से लैस भारत के खोज एवं बचाव दल एन डी आर एफ को तुरन्त नेपाल की मदद के लिए भेजा जाना था। किसी भी आपदा के पश्चात् त्वरित एवं समन्वित बचाव कार्य आपदा के परिणामों को प्रभावित कर सकता था, जिससे जन की क्षति को कम तथा सम्पत्ति के होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। इसी के साथ एन डी आर एफ ने नेपाल में बचाव कार्य किया था।

अपने सीमित संसाधनों के कारण नेपाल अकेले इस विपदा से नहीं निपट सकता था। अतः भारत की तरफ से पूर्ण सहयोग के विश्वास ने नेपाल के पीड़ित नागरिकों के जख्मों को मरहम लगाने का काम किया था। अपनी प्रतिबद्धता के प्रति समर्पण के तहत भारत ने मानवीय सहायता के मद्देनजर, राहत एवं बचाव कार्य में अग्रणी भूमिका निभायी थी। इसका पहला बचाव (7 टीमें) जिसमें सभी विधाओं से प्रशिक्षित तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्राप्त लोग भी शामिल थे, काठमाण्डू भूकम्प आपदा के 6 घण्टों के भीतर ही पहुँच गये थे तथा रात-दिन लगातार खोज एवं बचाव कार्य

प्रारम्भ कर दिया था। यह कार्य घाटी में भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों तथा आसपास के इलाकों में सम्पन्न हुआ था।

एन डी आर एफ संभवतः विश्व का एक मात्र बल है, जो सिर्फ आपदा मोचन के लिए ही तैयार रहता है। इसने खोज एवं बचाव कार्य नेपाल की राजधानी के दक्षिणी हिस्से तथा उपनगरों में किया था। इसके पूर्व एन डी आर एफ की टीमों ने काठमाण्डू के उत्तरी, उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर-पूर्व इलाकों के 24 स्थानों पर खोज एवं बचाव कार्य किया था। त्वरित गति से भूकम्प आपदा उपरान्त लोगों को बचाते हुए जिसमें पहले ही लगभग 5000 लोग मारे जा चुके थे। भारत की एन डी आर एफ ने 7 लोगों को जीवित विभिन्न स्थानों से अपने बचाव अभियान के अन्तर्गत पहले 12 घण्टों में बचा लिया था। इनमें से कुछ पीड़ित भारी दीवार के नीचे दबे मिले थे। इसके लिए बचाव दल को काफी सावधानी बरतनी पड़ी जिससे उसे दोबारा ध्वस्त होने से रोका जा सके। कई जगहों पर बचाव दल को प्रत्येक 10 मिनट के भीतर पुनः लोहे व कंक्रीट को जगह बनाने के लिए काटना पड़ा था। लगातार आ रहे भूकम्प के झटकों ने एन डी आर एफ की टीमों के बचाव कार्य को और कठिन व जटिल बना दिया था।

नेपाल में एन डी आर एफ के बचाव अभियान का हर एक प्रयास खुद के लिए नये हालात पैदा कर रहा था। प्रत्येक हालत से निपटने के लिए, नयी तकनीकी, अलग उपकरण, अलग बचाव दल तथा अलग-अलग विधि का प्रयोग करना पड़ा था परन्तु एन डी आर एफ की प्रत्येक बचाव टीम हर कसौटी पर खरी उतर रही थी।

जैसे ही एन डी आर एफ की टीमों ध्वस्त इमारतों एवं भवनों का आकलन करती थी, उसमें सर्वप्रथम सुरक्षित रास्ते बनाये जाते थे। किस प्रकार किसी भी संभावित पीड़ित तक शीघ्र कैसे पहुँचा जा सके, उसकी रणनीति बनाई जाती थी। इसके लिए हर ध्वस्त इमारत को स्थानीय उपलब्ध संसाधनों से स्थायित्व प्रदान किया जाता था। पीड़ित के वास्तविक फँसे हुए शरीर के स्थान को खोजना एवं पहचानना एन डी आर एफ की प्राथमिकता थी, जिससे त्वरित, सुरक्षित बचाव अभियान जारी रखा जा सके। इन दलों के विशेषज्ञ सदस्यों ने आवाज पहचानने वाले उपकरण, प्रशिक्षित श्वान तथा स्थानीय घटना स्थल पर उपलब्ध प्रारम्भिक जानकारी के आधार पर फँसे पीड़ित तक पहुँचने के लिए शीघ्र, सुरक्षित

तथा समुचित प्रवेश आकार की तात्कालिक योजना बनायी, तदुपरान्त अपने खोज एवं बचाव दल को अंजाम दिया था।

स्थिति व परिस्थितियों के अनुसार एन डी आर एफ की टीमों ने छोटे, मध्यम तथा भारी तकनीकी उपकरणों का बचाव कार्य के लिए आवश्यकतानुसार उपयोग किया था। एन डी आर एफ के साहसिक कार्मिकों ने बगैर समय गँवाये प्रत्येक बचाव अभियान को कुशलता से सम्पन्न किया था क्योंकि वे तमाम तकनीकी आवश्यक उपकरणों से लैस थे। इन उपकरणों के माध्यम से आवाज को सुना जा सकता था, पीड़ित की जगह को पहचाना, कंक्रीट व लोहे की सतह को काटा जा सकता था, जिससे किसी भी जीवित फँसे व दबे हुए पीड़ित तक शीघ्रता से पहुँच कर उसे बचाया जा सकता था।



क्रेन की मदद से एन डी आर एफ के सदस्य बचाव अभियान को जारी रखते हुए

एक बचाव अभियान के अन्तर्गत एन डी आर एफ की टीम ने एक महिला को सुरक्षित निकाला था जो भूकम्प आने से 36 घण्टों तक अपनी 'मीट की दुकान' के मलवे में दबी रह गयी थी। 43 वर्षीया तंका सिवौला ने जीवित बचे रहने की आशा छोड़ दी थी, जब तक की उसे एन डी आर एफ के बचाव दल द्वारा मलवा हटाने की ध्वनि सुनायी नहीं दी थी। उस मलवे में दबे 14 लोगो में सिर्फ सिवौला ही जीवित बची थी।

नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों में बचाव कार्य करते समय नेपाली सेना ने समन्वय स्थापित किया था। एन डी आर एफ ने स्थानीय प्रशासन तथा

नेपाली सेना के साथ सम्पूर्ण सहयोग एवं समन्वय स्थापित करते हुए 11 पीड़ितों को जीवित निकाला था तथा इस बचाव अभियान के अन्तर्गत 133 नेपाली समुदाय व विदेशियों के शव को निकाला था। एन डी आर एफ की चिकित्सीय टीम ने विभिन्न प्रभावित स्थानों पर चिकित्सा शिविर लगाये थे। इस चिकित्सा अभियान के अन्तर्गत 'शोभा भगवती ब्रिज', 'तिलगंगा', तथा 'न्यू बस पार्क एरिया' स्थानों पर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के दौरान 1,219 पीड़ितों को सहायता पहुँचायी गयी थी। एन डी आर एफ द्वारा नेपाल में चलाये गये खोज एवं बचाव अभियान ने भारत एवं नेपाल के मध्य मैत्रीय कीर्तिमान स्थापित किया था। यह अभियान सार्वभौमिक रूप से सफल रहा तथा एन डी आर एफ की नेपाल में भूमिका से प्रभावित स्थानीय समुदाय, नेपाल की सरकार तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने अत्यन्त ही सराहा था। भारत के एन डी आर एफ ने नेपाल के भूकम्प से प्रभावित असहाय जन समुदाय के चहेरे पर मानवीय सहायता की अनूठी मिसाल दिखा कर संतोष परिपूर्ण मुस्कराहट बिखेरी थी।

9. मानवीय मूल्यों का समन्वय

एन डी आर एफ ने नेपाल में आये भूकम्प के दिन 25 अप्रैल 2015 से खोज एवं बचाव कार्य के समापन 5 मई 2015 तक मानवीय मूल्यों का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया था। अपने खोज एवं बचाव अभियान के दौरान कभी नेपाल की जनता को यह अहसास नहीं होने दिया गया कि उनकी धरती पर कोई विदेशी बचाव दल कार्य कर रहा था। एन डी आर एफ के प्रत्येक कार्मिक ने नेपाल के दुःख दर्द को स्वाभाविक रूप से अपना लिया था। प्रत्येक संस्था चाहे वह नेपाली सेना, नेपाल की पुलिस तथा नेपाल की सरकार हो सभी ने भारत के इस अनूठे बचाव दल एन डी आर एफ में अपनत्व की झलक देखी थी। नेपाल की सांस्कृतिक धरोहर, सभ्यता, संस्कृति, संवेदना व उनकी जीवन शैली व कार्य प्रणाली को एन डी आर एफ ने अपने प्रयास तथा बचाव अभियान के दौरान अक्षुण्ण रखा। यही कारण था कि मानवीय मूल्यों को अपना मापदण्ड बनाकर काम कर रहे एन डी आर एफ के प्रति प्रत्येक नेपाल के नागरिक का हृदय गर्व से भर उठता था। इसकी स्पष्ट झलक प्रत्येक प्रभावित स्थल पर बचाव अभियान की सफलता से सम्पन्नता के बाद स्थानीय जन समुदाय द्वारा आत्म विभोर होकर एन डी आर एफ के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करने पर मिलती थी।



एन डी आर एफ द्वारा मानवता की एक मिसाल

एन डी आर एफ ने भारत की तरफ से चलाये जा रहे प्रत्येक मानवीय प्रयास में योगदान दिया था। काठमाण्डू स्थित भारतीय दूतावास के द्वारा नेपाल में फँसे भारतीयों को सुरक्षित भारत लाने के लिए उठाये गये कदमों की हिस्सेदारी भी एन डी आर एफ ने की। काठमाण्डू स्थित 'तिलगंगा नया बस स्टैंड' पर एन डी आर एफ की एक टीम ने 28 अप्रैल 2015 से 4 मई 2015 तक भारत सरकार द्वारा भेजी गयी बसों के माध्यम से प्रभावित तथा फँसे हुए भारतीयों को अपने-अपने राज्य में भेजने में भारतीय दूतावास का पूर्ण सहयोग दिया था। विपरीत परिस्थितियों एवं खराब मौसम में भी फँसे भारतीयों को मदद पहुँचाते रहे। इस दौरान एन डी आर एफ ने पीड़ितों को आवश्यक चिकित्सा सुविधा भी प्रदान की थी। फँसे हुए भारतीयों ने अपने बीच एन डी आर एफ को पाकर राहत की साँस ली तथा गर्व की अनुभूति की। इस प्रक्रिया में तिलगंगा बस स्टैंड पर 702 लोगों को मुफ्त में चिकित्सा सुविधा एन डी आर एफ के द्वारा प्रदान की गयी थी। एन डी आर एफ की टीम ने तिलगंगा बस स्टैंड पर 15,310 भारतीयों को सड़क मार्ग से वापस स्वदेश जाने में मदद की थी।



भारतीयों को सुरक्षित भेजने की प्रक्रिया में हाथ बटाते एन डी आर एफ के सदस्य

एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम में महिला कर्मी भी थीं, जिन्होंने बढ-चढकर खोज एवं बचाव अभियान में हिस्सा लिया था। प्रत्येक प्रभावित क्षेत्रों में इन महिला सदस्यों ने प्रभावित जन समुदाय के बीच महिलाओं के आदर एवं सम्मान की पराकाष्ठा को संरक्षित रखा था। एन डी आर एफ की इन महिला बचाव कर्मियों ने प्रत्येक बचाव अभियान में मानवीय मूल्यों का समन्वय स्थापित किया था। यही कारण था कि प्रभावित जन समुदाय एन डी आर एफ को बेहद करीबी परिवारजन की तरह देख पा रहा था।

एन डी आर एफ की कार्य कुशलता तथा मानवीय संवेदना के प्रति सम्मान देखते ही बनता था। प्रत्येक बचाये गये जीवित पीड़ित तथा मृतक शरीर का आदर देखकर स्थानीय लोगो ने एन डी आर एफ को हृदय में स्थान दिया था। कई स्थलों पर विकसित राष्ट्रों के बचाव दल ने मृत शरीर को महत्व नहीं दिया था, परन्तु भारत की इस मानवता की मिसाल बने एन डी आर एफ ने मृत शरीर को सम्मान व आदर जीवित पीड़ित की तरह दिया था।

नेपाल में खोज एवं बचाव कार्य के दौरान फंसे शवों की दुर्गन्ध में घुसकर मलवों से शवों को निकालना एक अभूतपूर्व घटना थी। सामान्य मनुष्य के लिए जहाँ कुछ क्षण खड़ा रहना असहनीय था वहाँ ये बचाव कर्मी छत-विछत शवों को ध्वस्त इमारतों के संकरे स्थानों से घंटों की मशक्कत के बाद बाहर निकालते थे जबकि इन इमारतों के अंदर जाना स्वयं में एक जानलेवा खतरा हमेशा साथ लिए होता था। एन डी आर एफ के साहसिक बचाव कर्मियों ने मानवीय संवेदना की पराकाष्ठा की मिसाल समस्त अंतर्राष्ट्रीय बचाव दलों के सम्मुख प्रमाणित किया था।

एन डी आर एफ ने नेपाल में 25 अप्रैल 2015 से लेकर 4 मई 2015 तक चलाये खोज एवं बचाव अभियान के अन्तर्गत कुल 11 पीड़ितों को जीवित बचाया था तथा इस हादसे में शिकार 133 शव निकाले थे। 11 बचाये गये जीवित पीड़ितों में 10 पीड़ित 26 अप्रैल तथा 1 पीड़ित 27 अप्रैल को बचाया गया था। जबकि निकाले गये शव 26 अप्रैल को 47, 27 अप्रैल को 22, 28 अप्रैल को 16, 29 अप्रैल को 30, 30 अप्रैल को 7, 1 मई को 6, 2 मई को 1, 3 मई को 3 तथा 4 मई 2015 को 1, मलवों से बाहर निकालकर स्थानीय पुलिस की मदद से उनके परिजनों को सौंप दिये गये थे।

चिकित्सीय दल, प्रत्येक एन डी आर एफ की टीम का अभिन्न अंग होने के कारण प्रत्येक बचाव कार्य स्थल पर इन सदस्यों ने न सिर्फ फँसे हुए पीड़ितों का प्राथमिक उपचार किया, परन्तु वहाँ स्थानीय जन समुदाय को भी आवश्यक चिकित्सा सुविधा प्रदान की थी। प्रत्येक एन डी आर एफ की टीम में सभी जीवन रक्षक औषधियाँ उपलब्ध थी।

एन डी आर एफ द्वारा प्रत्येक बचाव अभियान स्थल पर स्वास्थ्य सुविधा भी प्रदान की गयी थी। इन स्थानों पर एन डी आर एफ के विशेषज्ञ तथा अनुभवी चिकित्सकों ने मानवीय आधार पर जन समुदाय को चिकित्सा सुविधा प्रदान की थी। जिन स्थलों पर चिकित्सा शिविर लगाया गया था उनमें प्रमुख न्यू बस पार्क एरिया, रामकोट, ब्रिजेश्वरी, शोभा भगतवी, गंगबू, चौमाती, तान्हू होटल, बस पार्क एरिया, तिलगंगा, बालाजू बैरक, व्हाइट गुम्पा तथा बालाजू बैरक सं-1 थे।



मानवीय मूल्यों का संरक्षण : एन डी आर एफ का मूलमंत्र

इन सब स्थलों पर एन डी आर एफ के चिकित्सकों ने स्थानीय तथा पीड़ित लोगो का इलाज किया था तथा इस प्रकार कुल 2004 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गयी थी।

मानवीय मूल्यों को महत्व देते हुए एन डी आर एफ ने अपने खोज एवं बचाव अभियान के दौरान काफी मात्रा में बहुमूल्य वस्तुएँ तथा धनराशि बरामद की थी, जिसे स्थानीय पुलिस को फौरन सौंप दिया जाता था। अलग-अलग क्षेत्रों से कुल 3,39,860 नेपाली रूपये, गहने, सोने के आभूषण, आई फोन, टेबलेट (मोबाइल फोन), लैपटॉप, ए टी एम कार्ड, चाँदी के आभूषण, कम्प्यूटर, कैमरा, एल ई डी टी वी, घड़ियाँ, भारतीय मुद्रा तथा जरूरी दस्तावेज बरामद किये थे जिसे कार्य स्थल पर स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया था। इन सब कृत्यों को देखकर नेपाल की जनता भावुक हो उठती थी। उनकी अश्रुपूरित करबद्ध विदाई ने एन डी आर एफ के सदस्यों को भी भाव विभोर कर दिया था। इन भावों की तुलना किसी भी प्रशस्तिपत्र से नहीं की जा सकती।



यू एस एड के साथ समन्वय स्थापित करते महानिदेशक

कुशल नेतृत्व

नेपाल भूकम्प उपरान्त खोज एवं बचाव कार्य के कुशल संचालन तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सटीक समन्वय की बागडोर एन डी आर एफ के महानिदेशक ओ पी सिंह ने स्वयं संभाली। वे 26 अप्रैल को काठमाण्डू पहुँच चुके थे तथा उन्होंने अपनी उपलब्धता को लगातार 5 मई तक भूकम्प प्रभावित नेपाल में सुनिश्चित किया। बल के महानिदेशक ओ पी सिंह ने समस्त खोज एवं बचाव अभियान की बानगी को नया आयाम दिया। वह एन डी आर एफ की प्रत्येक काम कर रही टीम के प्रणेता बने। प्रत्येक दल का बचाव कार्मिक अपने बीच अपने शीर्षस्थ कमाण्डर को पाकर जोश और उत्साह से भर उठता था। वह स्वयं मानवीय संवेदनाओं से इतने जुड़े हुए थे कि उन्होंने एन डी आर एफ के कार्य को मानवीयता की नई पहचान बना दिया वह भी विदेशी धरती पर। इसलिए एन डी आर एफ ने नेपाल के संकट को अपने देश के संकट के सामान ही महसूस किया था तथा वह किसी भी पल विभेद न कर सका कि वह दूसरे देश की धरती पर बचाव कार्य में लिप्त था। महानिदेशक की उपस्थिति मात्र ने सभी एन डी आर एफ की 16 टीमों तथा अन्य कमाण्डरों में स्फूर्ति व ऊर्जा का संचार किया था।



कार्यस्थल पर एन डी आर एफ के बचाव कार्यो की समीक्षा करते महानिदेशक

नेपाल भूकम्प की सूचना प्राप्त होते ही बल के महानिदेशक ने सभी एन डी आर एफ की बटालियनों को सतर्क कर दिया था तथा वह स्वयं भारत सरकार की शीर्ष समन्वय समितियों के अभिन्न अंग के रूप में कार्य करना शुरू कर चुके थे। नेपाल भूकम्प खोज एवं बचाव अभियान के सफल समापन व मानवीय सहायता की उत्कृष्ट मिसाल कायम करने के बाद, स्वदेश वापसी के उपरान्त महानिदेशक ओ पी सिंह ने समस्त अभियान व उसकी बारीकियों पर विस्तृत चर्चा की तथा अपने अनुभवों को एन डी आर एफ के सभी अन्य कमाण्डरो में बाँटा। उनकी कर्मठता एवं लगन का चर्मोत्कर्ष था नेपाल में एन डी आर एफ का सफल अभियान, जिसका श्रेय विश्व के अपने आप में अनूठे बल एन डी आर एफ के नायक के रूप में अर्थात् इस बल के महानिदेशक को ही जाता है। सिर्फ भारत ही ऐसा देश था जिसके बचाव दल का शीर्षस्थ कमाण्डर 'ग्राउन्ड- जीरो' पर खड़ा नेतृत्व प्रदान कर रहा था। खोज एवं बचाव के प्रत्येक पहलू पर उनकी पैनी नज़र व दिशा-निर्देशन ने एन डी आर एफ की उपलब्धियों को चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाया था। मैं स्वयं उनके प्रभावी नेतृत्व की बारीकियों का साक्षी बना था। कुशल नेतृत्व की बानगी उनसे की गयी चर्चा में झलकती थी, जो कुछ उनके शब्दों में इस प्रकार थी-

“26 अप्रैल 2015 को मैं सुबह 7 बजे नई दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर काठमाण्डू जाने के लिए भारतीय वायुसेना के आई एल-76 से उड़ने के लिए तैयार था। हमारी एन डी आर एफ की 7 टीमों पहले से ही काठमाण्डू पहुँच चुकी थी तथा उन्होंने बगैर देर किये वहाँ बचाव कार्य शुरू कर दिया था। अभी तक मेरे पास जो खबर थी, वह यह थी कि एन डी आर एफ की टीमों ने वहाँ अब तक कुछ लोगों को काठमाण्डू में मलवों से जीवित बचा लिया था। विस्तृत जानकारी की अभी प्रतीक्षा थी। मैं वहाँ सुबह 10 बजे से पहले पहुँचने के लिए सोच रहा था तथा वहाँ चल रहे खोज एवं बचाव अभियान को खुद देखना चाहता था। इसके अतिरिक्त हमारा प्रयास न सिर्फ नेपाली सेना अपितु अन्य देशों से आने वाली संस्थाओं से समन्वय व सहयोग स्थापित करना भी था। मुझे यह बताया गया था कि चीन की टीम नेपाल में हमारी टीमों के पहुँचने के

बाद पहुँच चुकी थी। मेरी पत्नी ने मेरे आवश्यक सामान को तैयार कर दिया था। चूँकि मैं वहाँ पर कुछ अधिक दिन रुकने वाला था, अतः मैंने सभी आवश्यक सामान को अपने साथ अपने सूटकेस में रख लिया था जैसे वर्दी, जैकेट इत्यादि। मैंने कुछ गर्म कपड़े भी अपने साथ रख लिये थे क्योंकि काठमाण्डू में रात का तापमान 13 डिग्री सेल्सियस से नीचे गिर गया था। मैं जब अपनी सारी तैयारी कर चुका था, तब मुझे ज्ञात हुआ कि भारतीय वायुसेना का विमान कुछ विलम्ब से उड़ान भरने वाला था जो लगभग सुबह 11 बजे जाने वाला था। बीबीसी के हवाले से खबर आ रही थी कि जो नेपाल में भूकम्प 7.9 तीव्रता का रिचर इकाई पर आया था वह पिछले 80 सालों बाद घटित हुआ था। यह सन् 1934 में आये भूकम्प के बाद बड़ी तीव्रता वाला था। सन् 1934 में आये भूकम्प ने काठमाण्डू के लगभग एक चौथाई हिस्से को पूरी तरह प्रभावित किया था तथा लगभग 1700 लोगो की मौत हुई थी। 25 अप्रैल 2015 को आया भूकम्प ठीक उसी प्रकार था जो कई वर्ष पूर्व आया था जिसका कारण सतह के भ्रंश में विकृति का रूपान्तरण था। इसमें कोई शक नहीं था कि 25 अप्रैल 2015 को आये भूकम्प ने दूर तक प्रभाव डाला था तथा प्राप्त समाचार के अनुसार लगभग 4000 लोगो की जाने गयी थीं। बांग्लादेश, भारत, तिब्बत तथा माउन्ट एवरेस्ट के इलाको तक इसका असर हुआ था। इसने हिमालय की पहाड़ियों पर हिमस्खलन को उत्प्रेरित किया था। मृतकों तथा घायलों की संख्या में आने वाले दिनों में बढ़ोतरी हो सकती थी तथा पहाड़ों पर भूस्खलन होने के कारण इस बात की आशंका थी कि क्षति पहले से कहीं ज्यादा हो सकती थी। अब तक एन डी आर एफ ने नेपाल में 7 जीवित व्यक्तियों को बचाया था तथा 33 मृत शरीर को मलवों से निकाला था। प्रत्येक अन्तराल के बाद आ रहे भूकम्प के झटकों तथा अनजान जगहों पर हमारे एन डी आर एफ के जवानों का कार्य अदम्य साहस का परिचायक बन रहा था। हमारे उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन), जो एन डी आर एफ मुख्यालय के 'कन्ट्रोल रूम' से खोज एवं बचाव कार्य पर नजर रखे हुए थे, ने बताया कि हमारे जवान नेपाली सेना के अतिरिक्त स्थानीय निवासियों से भी गाइड के रूप में मदद ले रहे थे। मैंने तुरन्त निर्देश दिया कि हमारा मुख्य कार्य बिन्दु उन इमारतों पर होना

चाहिए जहाँ फँसे या दबे हुए लोगों की संभावना थी। मैंने यह भी निर्देश दिया कि हमारी खुद की सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है। मैंने यह निर्देश अपने उपमहानिरीक्षक (ऑपरेशन) को दिया कि यह निर्देश जमीन (नेपाल में) पर कार्य कर रहे जवानों के बीच प्रसारित होना चाहिए। यह अहसास करते हुए कि भारतीय वायुसेना के विमान में और विलम्ब हो सकता है, मैंने निर्णय लिया कि नेपाल के लिए व्यावसायिक उड़ान ली जाये क्योंकि तब तक यह खबर आ रही थी कि दिल्ली काठमाण्डू के बीच उड़ाने शुरू हो चुकी थी। मैंने काठमाण्डू के लिए व्यावसायिक उड़ान के बारे में जानकारी ले ली थी। यह खबर आ चुकी थी कि 'आई एल-76' की उड़ान में और भी विलम्ब होना था तथा वह लगभग दोपहर एक बजे उड़ान भरेगा। सुबह 11 बजे 'इण्डिगो' का एक विमान काठमाण्डू के लिए था, अतः मैंने उसमें जाने का निर्णय लिया, जिससे मैं 'आई एल-76' से पहले काठमाण्डू पहुँच सकूँ। इस विमान में एन डी आर एफ के जवान, बचाव के उपकरण तथा प्रशिक्षित श्वान भी जा रहे थे। रणदीप कुमार राणा, उपमहानिरीक्षक, एन डी आर एफ भी इन्हीं के साथ जा रहे थे। 'इण्डिगो' से मैंने जाने का टिकट प्राप्त कर लिया था। मैंने जल्दी-जल्दी अपना सूटकेस तैयार किया तथा 10 बजे हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान किया। दिल्ली हवाई अड्डे पर प्रत्येक व्यक्ति ज्यादातर नेपाल में आये भूकम्प के बारे में चर्चा कर रहा था। वहाँ पर लगे सभी टी वी के पर्दे पर नेपाल में आये भूकम्प के विषय में ही समाचार बताये व दिखाये जा रहे थे। दूरदर्शन लगातार नेपाल में आये भूकम्प की विभीषिका के चित्र दिखा रहा था तथा उसके अनुसार रविवार की प्रातः तक 2000 से ज्यादा लोग मारे जा चुके थे। नेपाल सरकार भूकम्प की तबाही से बुरी तरह प्रभावित था। भारत से चिकित्सा सुविधायें तथा बचाव दल जा चुके थे तथा और भी भेजे जा रहे थे। समाचार एजेंसियों के अनुसार काठमाण्डू के अस्पताल पीड़ितों से भरे हुए थे तथा वहाँ चिकित्सीय आवश्यकताओं का अभाव पड़ रहा था। काठमाण्डू के एक अस्पताल में लगातार मृतकों को लाना जारी था तथा वहाँ एक पुलिस अधिकारी ने समाचार कर्मियों को बताया कि उसकी टीम रात में 165 मृतकों को ला चुकी थी। सरकारी तथा गैरसरकारी अस्पतालों में जगह का अभाव पड़ रहा था। सभी दूरदर्शन के चैनलों पर विशेषज्ञों

की परिचर्चा हो रही थी तथा उनके अनुसार योजना रहित निर्माण में अत्यधिक वृद्धि यह जानते हुई कि यह क्षेत्र भूकम्प प्रभावी था, इस त्रासदी का कारक था। काठमाण्डू ने अपना विस्तार लगभग सघन कंक्रीट जंगल के रूप में कर लिया था। वहाँ पर भवन निर्माण के लिए विभागीय नियम बने थे परंतु भवनो को भूकम्प निरोधी बनाया जाये इसकी कोई अनुपालना वहाँ नहीं थी। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, वैज्ञानिक अध्ययन के एक क्रम ने पहले ही चेताया था कि नेपाल में एक बड़े भूकम्प की आशंका थी। एक विशेषज्ञ ने परिचर्चा के दौरान बताया कि पिछले आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता था कि सन् 1934 में आये नेपाल के भूकम्प के पश्चात प्रत्येक 80 वर्ष बाद भूकम्प की सम्भावना थी।

सभी दूरदर्शन के चैनलों में भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा उठाये गये तात्कालिक कदम की सराहना हो रही थी। भारत नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की हर संभव मदद कर रहा था तथा वहाँ पर फँसे हुए भारतीयों को सुरक्षित लाने का प्रयास कर रहा था। अभी भी बहुत कुछ किये जाने की आवश्यकता थी क्योंकि नेपाल में हजारों लोग मारे जा चुके थे तथा कई ऐतिहासिक इमारतें ध्वस्त हो चुकी थी। तात्कालिक कदम के रूप में नेपाल को इस सदमे एवं त्रासदी के समय सहयोग प्रदान करना था तथा यह नेपाल के पुनर्निर्माण एवं संरक्षण में किसी भी सीमा से परे होकर मदद करना था। 'इण्डिगो' की उड़ान संख्या ई-31 जिसमें मैं बैठा था, अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय मीडिया कर्मियों से भरा हुआ था तथा विमान में वे लोग भी थे जो नेपाल में अपने परिवार व संबंधियों को देखने जा रहे थे। इस विमान ने लगभग 11 बजकर 25 मिनट पर उड़ान भरी। कुछ प्रेस कर्मियों को पहचाना जा सकता था- राहुल कँवल मेरे ठीक आगे के क्रम की सीट पर थे, ए बी वी चैनल के देवांग लगभग बीच में बैठे हुए थे। एक महिला मीडिया कर्मी जो 'वाशिंगटन-पोस्ट' के लिए काम करती थी, ने मुझसे बात की तथा नेपाल में एक दिन पूर्व किये जा रहे खोज एवं बचाव अभियान के विषय में जानना चाहा। एक अन्य महिला मीडिया कर्मी जिससे मैं बाद में काठमाण्डू हवाई अड्डे पर मिला था वह भी उसी उड़ान से जा रही थी। अनौपचारिक बातचीत के दौरान मैंने उन्हें पिछले

दिन से शुरू खोज एवं बचाव कार्यक्रम के विषय में जानकारी दी तथा अपनी बचाव योजना के विषय में भी बताया था। यह एक पहला बड़ा भूकम्प प्रभावित खोज एवं बचाव अभियान था जिसे एन डी आर एफ देश के बाहर अंजाम देने जा रहा था। जबकि इसके पूर्व हम एक अंतर्राष्ट्रीय खोज एवं बचाव कार्य सन् 2011 में जापान में एक साथ घटित तीन आपदाओं (फ्यूकीशीमा) में कर चुके थे। मैंने उन्हें बताया कि सभी एन डी आर एफ के कर्मी प्रशिक्षित हैं तथा बचाव अभियान में दक्ष हैं परन्तु प्रत्येक आपदा व त्रासदी हमारे लिए नयी होती है। नेपाल में स्कूल व कार्यालय में खोज एवं बचाव अभियान हमारी प्राथमिकता नहीं थी क्योंकि भूकम्प के दिन शनिवार होने के कारण वे बन्द थे। सिर्फ एक बार इमारतों व भवनों की प्राथमिकता की सूची बनाना था, फिर उन भवनों का आकलन करना था। मैंने उन्हें बताया कि हम कमजोर हो चुके भवनों व इमारतों में प्रवेश करने से पहले उसे स्थिरता प्रदान करते हैं जिसे 'शोरिंग' कहा जाता है। घटना स्थल पर मौजूद संसाधनों व लकड़ी के द्वारा क्षति ग्रस्त हुए भवनों के कमजोर हो चुके हिस्सों को मजबूती व स्थिरता प्रदान की जाती है। यदि भूकम्प उपरान्त पुनः झटके आते हैं तो यह सुनिश्चित किया जाता है कि इस प्रक्रिया से क्षतिग्रस्त भवनों को स्थिरता मिलती रहे। यदि वे गिरते हैं तो इनसे (शोरिंग विधि) आवाज आती है जिससे बचाव कार्य में जुटे कर्मी को सतर्क किया जा सकता है। मैंने उन्हें यह भी जानकारी दी कि प्रत्येक टीम घटनास्थल पर शीघ्रता से स्थापित होने वाले 'एंटीना' तथा 'सेटलाइट फोन' ले जाती है जिससे कि पुनः झटके के दौरान यदि वे फँस जाते हैं तो वह अपने 'कंट्रोल-रूम' से सम्पर्क साध सके। मैंने उन्हें बताया कि हमारे प्रशिक्षण का मुख्य ध्येय बचाव कर्मियों की सुरक्षा भी है। विमान में सवार कुछ सहयात्री नेपाल में फँसे अपने परिवार व संबंधियों को लेकर बहुत चिन्तित थे। उन्होंने मेरा विजिटिंग कार्ड अपने पास रख लिया ताकि जरूरत पड़ने पर वे मुझसे सम्पर्क कर सकते थे। मैंने उन्हें अपनी तरफ से हर संभव मदद का आश्वासन दिया था। सभी विमान में सवार यात्रियों की अपने संबंधियों से काठमाण्डू में शीघ्र मिलने की खुशी उस समय कम हो गयी, जब लगभग 12 बजकर 45 मिनट पर विमान के पायलट ने घोषणा की कि उनका काठमाण्डू के ए टी सी से

सम्पर्क नहीं हो पा रहा था। एक मिनट पश्चात विमान के पायलट ने पुनः बताया कि काठमाण्डू में आये पुनः भूकम्प के झटको के कारण वहाँ की ए टी सी को खाली कर दिया गया था, इसलिए वह उससे सम्पर्क नहीं कर पा रहा था। विमान के भीतर सभी लोगों की मनः स्थिति तुरन्त बदल गयी। कोई भी पायलट की इस घोषणा को पसंद नहीं कर रहा था विशेषकर वह भी उस समय जब विमान हजारों फीट ऊपर तथा आसमान के बीच में था। कुछ मिनट बाद विमान के पायलट ने पुनः घोषणा की कि एक दूसरे भूकम्प ने नेपाल में दस्तक दी है जिसकी तीव्रता 6.9 इकाई है। इस दूसरे भूकम्प के कारण ए टी सी भवन के सभी कार्मिकों ने कार्यस्थल छोड़ दिया था तथा ए टी सी में कोई नहीं था जो इस विमान को गाइड कर सके। बाद में हमें पता चला कि नेपाल में 25 अप्रैल 2015 के बाद उस समय तक 34 झटके आ चुके थे। इनमें अन्तिम भूकम्प का झटका 26 अप्रैल 2015 को 12 बजकर 39 मिनट पर आया था, उस समय हम सभी विमान में हवा में थे तथा उसकी तीव्रता रिचर पैमाने पर 6.9 थी। बाकी इससे कम तीव्रता के झटके थे। कुछ समय एक दम शांत होने के बाद, यह स्पष्ट था कि हम काठमाण्डू हवाई अड्डे पर उतर नहीं सकते थे क्योंकि वहाँ पर हवाई पट्टी को बन्द कर दिया गया था। सभी विमानों को दिल्ली के लिए मोड़ दिया गया था। अपरान्ह 1 बजकर 25 मिनट पर हमारा विमान दिल्ली वापस जा रहा था। हम सभी पुनः दिल्ली हवाई अड्डे पर 2 बजकर 30 मिनट पर उतर गये परन्तु विमान से बाहर आने की अनुमति नहीं थी। एक विमान कर्मी ने घोषणा की कि सभी लोग कृपया अपनी सीट पर बैठे रहें। विमान कर्मी प्रयास कर रहे थे कि वे काठमाण्डू वापस जा सकें। विमान में लगभग पाँच घण्टे बन्द रहने के दौरान मैंने नेपाल व भारत में भूकम्प प्रभावित गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। हमारी एन डी आर एफ की टीम काठमाण्डू घाटी के विभिन्न इलाकों में खोज एवं बचाव कार्य जारी रखे हुए थी। दिल्ली में राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन समिति की बैठक तभी ही खत्म हुई थी, जिसकी अध्यक्षता कैबिनेट सचिव ने की थी। हमारे महानिरीक्षक ने बैठक में हिस्सा लिया था तथा बैठक के सभी सदस्यों को एन डी आर एफ के दलों द्वारा काठमाण्डू में चलाये जा रहे अभियान की

जानकारी दी थी। महानिरीक्षक ने मुझे मोबाइल फोन पर बैठक की चर्चाओं के विषय में विस्तृत जानकारी दी। मुझे यह बताया गया था कि 26 अप्रैल 2015 को पुनः आये भूकम्प के बाद भारत सरकार ने अपने राहत एवं बचाव प्रयासों में तेजी ला दी है। भारतीय सेना के कमाण्डर, जिसका नेतृत्व मेजर जनरल जे.एस. संधू कर रहे थे को नेपाल में राहत कार्यों के समन्वय तथा नेपाल में फँसे भारतीयों को सुरक्षित वापसी कराने के लिए भेजा गया था। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी, जिन्होंने एक उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता की थी, ने समस्त अभियानों की समीक्षा की एवं वहाँ घटित क्षति की जानकारी ली थी। राहत एवं बचाव कार्य में तेजी तथा फँसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया था। नई दिल्ली से सभी राहत एवं बचाव कार्य के संचालन का नेतृत्व किया जा रहा था। यहाँ से 12 हवाई जहाज, 6 हेलीकाप्टर विशेष राहत सामग्री का भार, बचाव एवं चिकित्सीय दलों को काठमाण्डू के लिए भेजा गया था। भारतीय वायुसेना ने अभी तक लगभग 1000 भारतीयों को नेपाल भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों से बाहर निकाल लिया था। 26 अप्रैल 2015 को पुनः आये झटकों के कारण कुछ समय छोड़कर भारतीय वायुसेना ने दिन भर अपनी विशेष उड़ानों को जारी रखा था। राहत एवं बचाव कार्य अभियान के अन्तर्गत दूसरा कदम जमीनी रास्तों को खोलना था, जिससे सड़क मार्ग के द्वारा भारतीयों को सुरक्षित वापस लाया जाये। इन सभी को सीमा पर लगे भारतीय राज्यों के द्वारा उत्तर प्रदेश, बिहार एवं उत्तराखण्ड की बसों द्वारा लाना था। यह समस्त जानकारी मैंने हवाई जहाज में बैठे रहने के दौरान एकत्रित की थी। शाम को लगभग 5 बजे, विमान के पायलट द्वारा पुनः घोषणा की गयी कि उसे अभी अनुमति मिल गयी थी तथा हम पुनः काठमाण्डू जा रहे थे। 10 मिनट के भीतर 'इण्डिगो' ने पुनः उड़ान भरी। हम सभी ने राहत की सांस ली। परन्तु हमारी खुशियाँ सिर्फ कुछ समय के लिए ही थी क्योंकि लगभग एक घण्टे पश्चात पायलट ने हम सबको बताया कि मौसम खराब हो गया था तथा उसे उतरने की सलाह नहीं दी जा सकती थी। पायलट ने फिर भी प्रयास जारी रखा तथा वह लगभग डेढ़ घण्टे तक काठमाण्डू के ऊपर ही उड़ान भरता रहा। अन्ततः विमान ने लगभग 8 बजे रात में काठमाण्डू की हवाई

पट्टी को छू ही लिया। इस विमान यात्रा को दिल्ली से काठमाण्डू आने में लगभग 9 घण्टे लगे थे। वहाँ हमें यह भी जानकारी मिली थी कि तीन भारतीय वायुसेना के विमान 'ए एन-32', 'सी-17' व 'आई एल-76,' जिनको स्ट्रेचर तथा अन्य चिकित्सा सुविधा के संसाधन पहुँचाने की जिम्मेदारी थी, खराब मौसम होने की वजह से काठमाण्डू उतर नहीं सके थे तथा वापस लौट गये थे। खराब मौसम के अतिरिक्त काठमाण्डू हवाई अड्डे पर सघन यातायात, जिसके कारण विमानों को पार्किंग की असुविधा थी भी भारतीय वायुसेना के विमान का वापस लौट जाने के लिए कारण था। चौथा भारतीय वायुसेना का विमान, जिसमें एन डी आर एफ की दो टीमें तथा प्रशिक्षित श्वान दस्ते भी थे, एक मात्र विमान था जो रविवार के अपराह्न में काठमाण्डू उतर सका था। हम जब विमान से बाहर निकले तो काठमाण्डू में पूरा अँधेरा था तथा हल्की बारिश हो रही थी। मौसम विभाग की चेतावनी के अनुसार अगले 24 घण्टे नेपाल में तेज हवा के साथ बारिश होने की घोषणा की गयी थी। मैंने हवाई अड्डे पर जो पहली चीज देखी वह थी वहाँ स्थित सँकरे प्रतीक्षा-कक्ष में सैकड़ों आदमियों का खचाखच भरा होना। सभी यात्री खराब मौसम तथा बारिश में उड़ते विमानों को निहार रहे थे। प्रतीक्षा-कक्ष में एकत्रित अधिकांश लोग भारतीय, चीनी तथा कुछ अमेरिकी थे। नेपाल में हवाई जहाज का उतरना एक कठिन कार्य था, लेकिन जब हम हवाई जहाज से बाहर आये तो मेरे समक्ष दो विमानों ने किसी स्थान के लिए उड़ान भरी थी। लगभग 3 हजार लोग सामान संरक्षित क्षेत्र में एकत्र थे। अनगिनत आँखें सामान बेल्ट की तरफ देख रही थी। ज्यादातर लोग स्थानीय दिख रहे थे जो भारत तथा पश्चिम एशिया से यहाँ अपने परिवार व संबंधियों को देखने आये थे। कुछ लोग बांग्लादेश से भी थे। कुछ लोगो ने बताया कि उनके पास कोई विकल्प न होने के कारण वे यहाँ रात गुजराने के लिए बाध्य थे। उन्होंने बताया कि उनके परिजनो ने उन्हें सूचित किया था कि वे सभी खुले टेन्ट में रात गुजार रहे थे। भारत से तुरन्त आये एक नेपाली सरकार के अधिकारी ने बताया था कि भूकम्प के झटके पुनः आ सकते थे, अतः हवाई अड्डे पर ही रुकना सुरक्षित था। त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एन डी आर एफ के रणदीप कुमार राणा, उपमहानिरीक्षक, प्रदीप कुमार श्रीवास्तव,

कमाण्डेंट तथा कुछ अन्य अधिकारीगण मुझसे मिले। रणदीप कुमार राणा ने मुझे काठमाण्डू घाटी की यथास्थित की जानकारी दी। अभी तक की जानकारी के अनुसार भूकम्प के कारण 2500 से ज्यादा लोग मारे जा चुके थे। 26 मिलियन आबादी वाले इस हिमालय के देश में लोग भूकम्प तथा उसके उपरान्त झटको से बुरी तरह भयभीत थे। बारिश ने इनकी स्थिति और दयनीय बना दी थी। इस बात की आशंका थी कि 100 से ज्यादा लोग नेपाल में अभी भी लापता थे तथा माउन्ट एवरेस्ट पर भूकम्प उपरान्त हिमस्खलन ने सैकड़ों लोगों को फँसा कर रख दिया था। बेस कैम्प तबाह हो चुके थे तथा वहाँ पर मृतकों की संख्या की स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पा रही थी।



बचाव स्थल पर एन डी आर एफ के सदस्यों में जोश का संचार भरते महानिदेशक

रविवार 26 अप्रैल के दिन तक भूकम्प के झटके आते रहे थे। इनमें प्रमुख 6.9 इकाई तीव्रता का रविवार अपराह्न में आया था जब हम हवाई जहाज में ऊपर ही उड़ रहे थे। इसका एहसास उत्तर तथा पूर्व भारत एवं बांग्लादेश में हुआ था। जिसका दुष्परिणाम यह था कि इससे बचाव कार्यों में रुकावट आ रही थी। काठमाण्डू हवाई अड्डा बीच-बीच में कुछ समय के लिए बन्द किया जा रहा था, जहाँ पर हजारों लोग हवाई जहाज

से जाने की प्रतीक्षा में थे कि वह इस प्रभावित क्षेत्र से सुरक्षित बाहर जा सकें। हमारी एन डी आर एफ की टीमों इन सब व्यवधानों के बावजूद भी बचाव कार्य में जुटी हुई थी। मैंने सर्वप्रथम नेपाली सेना मुख्यालय जाने का निर्णय लिया, जिससे एन डी आर एफ के आने के बाद से चलाये जा रहे खोज एवं बचाव कार्य की समीक्षा हो सके तथा तात्कालिक व प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त की जा सके। भूकम्प के डर से सहमे हुए नेपाल के नागरिक फिर भूकम्प की आशंका से काठमाण्डू की सड़कों पर निकल आये थे। ज्यादातर लोग देश की राजधानी में अपने-अपने मकानों से बाहर खुली जगहों में पड़े हुए थे। कई लोगों को ड्रिप चढ़ाई जा रही थी तथा अधिकांश लोगों के चेहरे पर सदमे की छाप स्पष्ट नजर आ रही थी। मोबाइल फोन की संचार व्यवस्था ठप होने के कारण अफवाह का बाजार गर्म था तथा लोग दूसरे दिन भी खुली जगह में रात व्यतीत कर रहे थे। भारी वर्षा ने इनका जीवन और मुश्किल कर दिया था तथा इससे खोज एवं बचाव कार्यों में बाधा आ रही थी। बागमती नदी के किनारे पर सारा दिन लाशों का जलाया जाना जारी था कई जगहों पर सामूहिक दाह संस्कार किया जा रहा था। पूरे शहर में यहाँ से उठता हुआ काला धुआँ दिखाई दे रहा था। ज्यादातर इलाकों में बिजली व पानी की व्यवस्था ठप पड़ी थी। मैंने अपने सभी अधिकारियों को चेताया था कि पहले 72 घंटों हम सभी के लिए अत्यन्त ही निर्णायक थे। तीन दिन पश्चात जीवित लोगों के पाये जाने की संभावना क्षीण हो जाती है। इस तथ्य की संभावना बलवती थी कि कम चोट तथा आंशिक रूप से घायल लोगों की चिकित्सा सुविधा समय पर नहीं मिल सकती थी क्योंकि तात्कालिक तथा आपातकालीन चिकित्सा सुविधा पाने के लिए लोगों का जमावड़ा लगता जा रहा था। दूसरी प्रमुख चुनौती रसद आपूर्ति तथा इसकी बहाली की थी। नेपाल पहाड़ियों से घिरा हुआ देश है जिसकी प्रत्येक सड़कें घुमावदार तथा गीली होने पर चुनौती का रूप (भूस्खलन के कारण) प्रकट कर रही थी। नियमित दिनों में काठमाण्डू से आने व जाने वाले सड़क मार्ग पत्थर गिरने से बाधित होते थे, जो कि भूकम्प के बाद पूरी तरह से बन्द हो चुके थे। प्रारम्भिक संकेतों से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे समस्त क्षेत्र में मानवीय आपदा का सैलाब उमड़ गया हो इस विपदा की घड़ी में नेपाल को समस्त विश्व से मदद की आवश्यकता थी।”

26 अप्रैल को नेपाल की धरती पर पहला कदम रखते ही महानिदेशक ओ पी सिंह ने अब तक किये गये खोज एवं बचाव कार्यों की समीक्षा की थी। एन डी आर एफ की दक्षता का बेहतर उपयोग किया जा सके यह सुनिश्चित करने के लिए नेपाल की यथास्थिति की समीक्षा आवश्यक थी। अतः इस ध्येय के अन्तर्गत महानिदेशक ओ पी सिंह उसी समय सर्वप्रथम 'मल्टी नेशनल मिलिट्री कोऑर्डिनेशन सेन्टर', नेपाली सेना मुख्यालय में गये। वहाँ पर सभी पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की तथा वहाँ पर लगभग एक घण्टे रुककर विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की।



नेपाली सेना के द्वारा एन डी आर एफ की कार्य कुशलता की जानकारी प्राप्त करते हुए

उस समीक्षा के दौरान महानिदेशक ओ पी सिंह के साथ, रणदीप कुमार राणा, उप महानिरीक्षक तथा प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, कमाण्डेंट, भी उपस्थित थे। 26 अप्रैल की रात्रि प्रारम्भिक जानकारी, प्रभावित क्षेत्र, उपलब्ध संसाधनों से अवगत होने के पश्चात महानिदेशक ओ पी सिंह ने त्वरित खोज एवं बचाव अभियान की रणनीति बनायी तथा उसे शीघ्रता

से क्रिन्यावित करने का निर्देश दिया गया। उन्होंने एन डी आर एफ के उपलब्ध संसाधनों की प्रतिदिन समीक्षा की तथा उन्हें आवश्यकता एवं प्राथमिकता के आधार पर पुनः आवंटित किया। खोज एवं बचाव कार्य की अलख निर्विघ्न जलती रहे इसके लिए उन्होंने प्रत्येक टीम के संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की तथा खुद बचाव स्थल पर पहुँचकर हर टीम के जवानों के मनोबल की हौसला अफजाई की।



बचाव स्थल पर एन डी आर एफ के बचाव कार्य की समीक्षा करते महानिदेशक

26 अप्रैल की देर रात जब महानिदेशक एन डी आर एफ समस्त दिशा निर्देशों को सुनिश्चित करने के बाद काठमाण्डू स्थित होटल 'संगरीला' पहुँचे तो वे होटल का परिदृश्य देखकर अचरज में पड़ गये। समस्त निवासी खुले प्रांगण में सो रहे थे तथा कुछ लोग जिनमें विदेशी भी शामिल थे, होटल की लॉबी में जमीन पर सो रहे थे। चारों तरफ भय का मंजर था, आम जन समुदाय के मनः पटल पर व्याप्त भय की अनूभूति करने में उन्हें क्षण भर भी नहीं लगा। नेपाल (काठमाण्डू) प्रवास के पहले दिन ही महानिदेशक एन डी आर एफ ने उत्पन्न चुनौतियों तथा उसके कुशल निष्पादन की ब्यूह रचना तैयार की। बाद में यह उनकी दिनचर्या का यह हिस्सा बन गया। वह प्रत्येक रात्रि 'संगरीला' की ओट में दिन

भर के कार्यों की समीक्षा तथा अगले दिन की बचाव सम्बन्धी ब्यूह रचना में रात गुजारते थे।



शोभा भगवती ब्रिज पर खोज एवं बचाव की रणनीति बुनते स्वयं महानिदेशक

ओ पी सिंह ने स्वयं काठमाण्डू स्थित भारतीय दूतावास की प्रत्येक बैठकों में हिस्सा लिया था तथा वे वहाँ एन डी आर एफ के कार्यों से सभी को अवगत कराते थे।



काठमाण्डू स्थित भारतीय दूतावास की प्रतिदिन बैठक में हिस्सा लेते महानिदेशक

इन बैठकों के माध्यम से एन डी आर एफ के प्रति सभी की अपेक्षाओं से अवगत होते थे तथा फिर उस कसौटी पर शत प्रतिशत खरा उतरने की दिशा में कार्य किया जाता था।

इसी बैठक के दौरान काठमाण्डू स्थित सभी राष्ट्रों के दूतावास प्रमुखों की बैठक में एन डी आर एफ के द्वारा किये जा रहे खोज एवं बचाव कार्यों से सभी को अवगत कराने का कार्य वह स्वयं करते थे। यही नहीं उन्होंने अन्य राष्ट्रों के बचाव दल प्रमुखों के साथ समन्वय भी स्थापित किया था। एन डी आर एफ द्वारा स्थापित 'कन्ट्रोल रूम' के द्वारा महानिदेशक ओ पी सिंह ने भारतीय राजदूत के साथ भारत के कैबिनेट सचिव से 'वीडियो कान्फ्रेंसिंग' के द्वारा बचाव कार्य की प्रगति के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया था। इस माध्यम से उन्होंने भारत सरकार से सीधा सम्पर्क साध रखा था।



कुशल नेतृत्व की झलक : भारतीय दूतावास की समन्वय बैठक में अहम हिस्सेदारी

महानिदेशक ओ पी सिंह ने भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल, प्रधान मंत्री के अतिरिक्त सचिव डा. पी. के. मिश्रा एवं विदेश सचिव डा. एस जयशंकर के साथ काठमाण्डू के विभिन्न भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों का विस्तृत दौरा किया। वे भारत सरकार के इन प्रतिनिधियों को एन डी आर एफ द्वारा किये जा रहे खोज एवं बचाव कार्यस्थल पर भी ले गये तथा प्रत्येक बचाव स्थल पर बचाव कार्यों की प्रगति की समीक्षा

की थी। यही नहीं ओ पी सिंह ने कई अवसरों पर भारतीय राजदूत के साथ एन डी आर एफ द्वारा किये जा रहे खोज एवं बचाव कार्यस्थलों का दौरा किया तथा वहाँ उपस्थित कार्मिकों का हौसला बढ़ाया था। उन्होने नेपाल के प्रधानमंत्री के साथ भी कार्य स्थलों का दौरा किया तथा नेपाल के प्रधान मंत्री को एन डी आर एफ के खोज एवं बचाव कार्यो तथा विश्व के अनूठे बल की दक्षता से अवगत कराया। नेपाल के प्रधानमंत्री तथा नेपाल की सरकार ने एन डी आर एफ के कार्यो तथा मानवता के प्रति समर्पण की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

महानिदेशक ओ पी सिंह ने भारत के ही नहीं अपितु विश्व के सभी मौजूद मीडिया कर्मियों से सम्पर्क साधा था एवं स्वयं 'मीडिया प्रबन्धन' का नेतृत्व किया था। नेपाल की स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं से महानिदेशक ने भूकम्प आपदा तथा खोज एवं बचाव कार्य की विस्तृत चर्चा की। देश-विदेश के सभी मीडिया में एन डी आर एफ की दक्षता, संसाधन तथा इस बल के कार्यो को विशेष महत्व दिया गया था। यह उनके कुशल मीडिया प्रबन्धन का ही परिणाम था। मीडिया कर्मियों तथा संस्थाओं से उन्होने एन डी आर एफ द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में चलाये जा रहे खोज एवं बचाव अभियान के स्थान पर उपस्थित रह कर ही चर्चा की।



नेपाल के गृहमंत्री व भारतीय राजदूत के साथ बचाव स्थल का दौरा करते महानिदेशक

इस प्रकार देश-विदेश के मीडिया कर्मियों ने भी एन डी आर एफ की दक्षता का अवलोकन किया तथा उनकी कार्यकुशलता के प्रत्यक्षदर्शी रहे।

कुशल नेतृत्व का विकेन्द्रीकरण समस्त खोज एवं बचाव अभियान के दौरान पाया गया। सम्पूर्ण एन डी आर एफ की टीमों को अलग-अलग नेतृत्व प्रदान किया गया था। एन डी आर एफ के खोज एवं बचाव अभियान का दिशा-निर्देशन तथा उन पर नजर रणदीप कुमार राणा, उप महानिरीक्षक ने रखी थी। गाजियाबाद एन डी आर एफ बटालियन की टीमों का नेतृत्व प्रदान करने के लिए प्रदीप कुमार श्रीवास्तव कमाण्डेंट स्वयं मौजूद थे। कोलकता एन डी आर एफ बटालियन की टीमो का नेतृत्व मैं स्वयं, भटिंडा एन डी आर एफ की टीमों का नेतृत्व प्रशांत पंत, द्वितीय कमानधिकारी तथा पटना एन डी आर एफ बटालियन की टीमो का नेतृत्व मनीष रजनं, द्वितीय कमानाधिकारी कर रहे थे जब कि एन डी आर एफ द्वारा स्थापित 'कन्ट्रोल रूम' का बखूबी संचालन रोशन सिंह असवाल, उप समादेष्टा, गाजियाबाद एन डी आर एफ बटालियन ने किया। प्रभावी नेतृत्व हर जगह उपस्थित रहे, जिससे एन डी आर एफ का मनोबल प्रत्येक परिस्थितियों में ऊँचा रहे, इस महत्व को सदैव सुनिश्चित किया गया था। एन डी आर एफ के कुशल नेतृत्व को समस्त बचाव दल तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने एक मानदण्ड के रूप में स्वीकारा था, जिसकी सराहना चारों दिशा में हुई।



कार्यस्थल पर समन्वय की एक झलक

कुशल नेतृत्व प्रदान कर रहे, महानिदेशक ओ पी सिंह ने सभी खोज एवं बचाव दल द्वारा किये जा रहे बचाव अभियान स्थलों पर स्वयं पहुँचने का निर्णय लिया था। यही कारण था कि एन डी आर एफ के प्रत्येक बचाव दल ने बीच में कहीं न कहीं उनको खड़ा पाया, जिससे सभी कार्मिकों को अपनी क्षमता का शत प्रतिशत खोज एवं बचाव अभियान में झोंक देने की प्रेरणा मिलती रही थी।

‘तान्हू-होटल’ में चलाये जा रहे बचाव अभियान के समय जिसमे नेपाली सेना के मेजर विनोद का शव फँसा पड़ा था, महानिदेशक ओ पी सिंह स्वयं उपस्थित रहे तथा समय-समय पर दिशा निर्देश भी दिया। एन डी आर एफ तथा नेपाली सेना को यकीन नहीं हो रहा था कि विश्व के इस अनूठे बल का शीर्षस्थ नेतृत्व कार्य स्थल पर इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जवानों के सम्मुख खड़ा था। नेपाली सेना के इस मृतक मेजर विनोद के शव को बाहर निकालते समय सभी मानवीय संवेदनाओं को संरक्षित रखने के कार्य को सुनिश्चित करने का कार्य भी हमारे महानिदेशक ने स्वयं किया था, जिसकी अनुपालना प्रत्येक बचाव अभियान के दौरान की गयी थी।

‘शोभा भगवती ब्रिज’ के पास चलाये गये अनवरत् बचाव अभियान के दौरान वह नियमित रूप से वहाँ जाते थे जिससे एन डी आर एफ के प्रत्येक सदस्य का हौसला बुलंद था और वह थकने व हारने का नाम ही नहीं ले रहा था।



शोभा भगवती ब्रिज पर मीडिया को संबोधित करते महानिदेशक

महानिदेशक ओ पी सिंह के प्रतिदिन भ्रमण के कारण स्थानीय जन समुदाय उन्हें भली-भाँति पहचानने लगे थे तथा उनमें एक देवदूत की छवि देखने लगे थे। उनकी कटिबद्धता, समर्पण, मानवीय संवेदनाओं के प्रति आदर व सम्मान तथा नेतृत्व की पराकाष्ठा ने स्थानीय समुदाय के भीतर आत्मीयता का बोध करा दिया था। महानिदेशक ओ पी सिंह के मनः पटल पर 'शोभा भगवती ब्रिज' स्थित ध्वस्त इमारत के एक निवासी की कारुणिक, व्यथित एवं लाचार पीड़ित की छवि अभी भी उभरती है जो प्रत्येक दिन उनकी प्रतीक्षा करता था तथा आते ही अपनी पत्नी व बच्चों को सुरक्षित निकालने की प्रार्थना करता था। नियमित रूप से महानिदेशक ओ पी सिंह के दर्शन मात्र से ही उस पीड़ित व्यक्ति के भीतर आशा की लहर उमड़ पड़ती थी, मानो उनका प्रकट होना उसके परिवार का पुनर्मिलन का संयोग हो। वे सदैव बचाव अभियान जारी रखे हुए दल को इस पीड़ित व्यक्ति के परिवार को खोजने व निकलने का निर्देश देते थे। इतने मात्र से ही पीड़ित व्यक्ति के चेहरे पर उत्साह व उमंग स्पष्ट झलकने लगता था। सिर्फ एन डी आर एफ ही नहीं अपितु नेपाल का भूकम्प प्रभावित जन समुदाय महानिदेशक ओ पी सिंह को अपने बीच के ही अभिन्न अंग के रूप में पा रहा था। कुशल नेतृत्व की ऐसी मिसाल शायद कहीं और देखने को नहीं मिलेगी।

- निशीथ उपाध्याय



विश्वस में भी जिंदगी की तलाश

एन डी आर एफ - संसाधन एवं क्षमता

1. यात्रा वृत्तान्त

भारत की जमीनी सतह का 58 प्रतिशत से अधिक भूभाग भूकम्प प्रभावित क्षेत्र है। मौसम में बदलाव और योजना रहित शहरीकरण ने इस प्राकृतिक आपदा के खतरे को कई गुना बढ़ा दिया है। एन डी आर एफ की तरह के एक बल की आवश्यकता बहुत पहले से ही आन पड़ी थी जब तीन भयानक प्राकृतिक आपदाओं से देश सिहर उठा था। इनमें ओडिशा में आये 'सुपर चक्रवात' (1999) के कारण लगभग 10,000 लोगों की जान गयी थी, गुजरात भूकम्प (2001) के कारण लगभग 12,300 लोगों की जान गयी थी तथा दिसम्बर 2004 में आये 'सुनामी', जिसके कारण 13,377 लोगों को जान गँवानी पड़ी थी। ये तीन ऐसी प्राकृतिक आपदाएं थी जिसने एन डी आर एफ के गठन पर विचार करने के लिए विवश किया था।

अल्प समय में घटित दो प्राकृतिक आपदाओं 'ओडिशा सुपर चक्रवात' (1999) तथा 'गुजरात भूकम्प' (2001) ने देश को सोचने पर विवश किया कि राष्ट्रीय स्तर पर विशेषज्ञ रूप से एक बचाव संस्था की निश्चित रूप से आवश्यकता है जो आपदा के समय प्रभावी कदम उठा सके। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, गृह मन्त्रालय, भारत सरकार ने सन् 2003 में एक 'स्टीयरिंग समिति' की संरचना की जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन संघ गृह सचिव ने की तथा चार अर्द्धसैनिक बलों के महानिदेशक इसके सदस्य थे। इस समिति ने इस सोच के सभी पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। इस समिति की सिफारिशों के परिणाम स्वरूप सर्वसम्मति से सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल तथा भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस की दो-दो बटालियनों को आपदा प्रबन्धन बटालियनों में परिवर्तित कर दिया जाना चाहिए।

सन् 2005 में राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण ने अपने संविधान में यह निहित किया कि एन डी आर एफ वास्तव में एक सही मायने में विशेषज्ञ दल बन सके। सितम्बर 2005 में संचयित इस विचार को राष्ट्रीय

आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण ने सुनिश्चित किया कि इस बल को प्रशिक्षण तथा आवश्यक उपकरण मुहैया कराया जा सके। इस परिकल्पना के तहत राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण ने अपनी प्रथम बैठक 8 अक्टूबर 2005 को सभी अर्द्धसैनिक बलों के महानिदेशको के साथ की जिसमें एन डी आर एफ को पूर्ण रूप से सक्रिय करने हेतु विचार विमर्श किया गया। जिसमें सभी महत्वपूर्ण विषय पर विस्तृत चर्चा एवं उसकी पहचान की गयी। इसी क्रम को बढ़ाते हुए संघ के तत्कालीन गृह सचिव ने राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण तथा अर्द्धसैनिक बलों के महानिदेशको की 16 जनवरी 2006 को बैठक बुलाई। इसके तहत अगले क्रम में भारत के अति महत्वपूर्ण 19 जनवरी 2006 के गृह मंत्रालय के एक आदेश के अन्तर्गत 8 अर्द्धसैनिक बटालियनों को एन डी आर एफ की बटालियन के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। यही कारण है कि प्रतिवर्ष 19 जनवरी को एन डी आर एफ स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।



नेपाल खोज एवं बचाव अभियान के लिए कूच करता विश्व का अनूठा बल

पूर्व में कार्मिको की स्थायी उपलब्धता अपने आप में एक बड़ा चिंता का विषय था क्योंकि सन् 2007 से पूर्व एन डी आर एफ के कार्मिक देश में नियमित रूप से कानून व्यवस्था के लिए भी भेजे जाते थे, जिससे बल की क्षमता वृद्धि (प्रशिक्षण न कर पाने की वजह) पर सीधा असर पड़ रहा था। एक अभूतपूर्व प्रगति के अन्तर्गत, श्री एम के नारायण जो तत्कालीन

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार थे, ने राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण की एक बैठक में 25 अक्टूबर 2007 को एन डी आर एफ को सिर्फ आपदा सेवाओं के लिए ही सुनिश्चित करने का प्रावधान प्रधानमंत्री के समक्ष सुझाया था। इस सुझाव को तत्कालीन प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया। भारत सरकार की एक सूचना के द्वारा 14 फरवरी 2008 को यह घोषित किया गया कि एन डी आर एफ एक प्रतिनियुक्ति बल के रूप में केवल आपदा प्रकरण के लिए कार्य करेगा जिसका सर्वोच्च कमाण्डर महानिदेशक एन डी आर एफ होगा।

एन डी आर एफ जो समय के साथ-साथ राष्ट्र की अग्रणी आपदा मोचन बल के रूप में सन् 2006 में स्थापित हुई, जिसने देश में राहत केन्द्रित आपदा प्रबन्धन का स्वरूप ही बदल दिया। फलस्वरूप यह प्रत्येक आपदा में बचाव कार्य के लिए एक कुशल बल बन गया। एन डी आर एफ का जन्म 'आपदा प्रबन्धन अधिनियम-2005' के अन्तर्गत अध्याय-VIII की धारा 44(i) के अन्तर्गत निहित था। जिसके द्वारा एक पूर्व प्रतिक्रियात्मक, पवित्र कार्य तथा संयुक्त आपदा प्रबन्धन के उद्देश्य से परिपूर्ण इस बल का गठन हुआ। इसका विशेष लक्ष्य बचाव एवं आपदा की गंभीरता को कम करना तथा आपदा पूर्व तैयारी है।

वर्तमान समय में एन डी आर एफ सम्पूर्ण विश्व में एक मात्र बल है, जो स्वतन्त्र रूप से सिर्फ आपदा बचाव के लिए ही स्थापित है। इस बल में सभी कार्मिक 5 वर्षों के लिए प्रतिनियुक्ति पर आते हैं जिसमें केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल- सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल तथा सशस्त्र सीमा बल शामिल हैं। ये कार्मिक निर्धारित अवधि के तदुपरान्त अपने-अपने बलों में वापस चले जाते हैं। एन डी आर एफ की बटालियन वर्तमान समय में भारत के विभिन्न 12 जगहों पर स्थापित है जिसका निर्धारण देश के आपदा संभावित क्षेत्रों को मद्देनजर किया गया है जिससे आवश्यकता पड़ने पर आपदा प्रभावित क्षेत्र में नजदीक स्थित बटालियन की टीमों को फौरन राहत, खोज एवं बचाव कार्य के लिए रवाना किया जा सके और आपदा स्थल तक पहुँचने में लगने वाले समय को कम से कम किया जा सके।

किसी भी कुशल बल का मुख्य महत्वपूर्ण आधार प्रशिक्षण ही होता है, अतः राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण का मुख्य कर्तव्य आपदा मोचन के लिए प्रशिक्षण मापदण्ड प्रपत्र तैयार करना तथा इसे अन्तरिम रूप देना

था। इस प्रपत्र के आधार पर एन डी आर एफ में 16 विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों को चिन्हित किया गया, यह प्रशिक्षण राज्य आपदा मोचन बल एवं अन्य साझा संगठनों के लिए भी मान्य किया गया। सभी एन डी आर एफ के कार्मिकों को अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों के अनुसार प्रशिक्षण प्राप्त हो सके इस ध्येय के साथ इस बल के प्रशिक्षकों को विश्व की अग्रणी संस्थाओं में प्रशिक्षण के लिए भेजने का प्रावधान रखा गया, जिनमें प्रमुख थे-‘ए डी पी सी बैंकाक’, ‘यू एस एड पीर प्रोग्राम’, ‘स्विस डेवलेपमेन्ट कार्पोरेशन बर्न’, ‘एडवान्स सर्च एण्ड रेस्क्यू ट्रेनिंग सेन्टर प्लोरिडा’, ‘सिविल डिफेन्स एकेडमी सिंगापुर’, ‘रक्षा अनुसंधान विकास संस्थान ग्वालियर’, ‘मिलिट्री इंजीनियरिंग कॉलेज पूना’ एवं ‘भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र मुम्बई’ इत्यादि।

भारत सरकार की ‘सचिव-समिति’ की सिफारिशों के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में नवम्बर- 2011 में एन डी आर एफ की बटालियनों की टीमों को दूर-दराज स्थलों तक स्थापित करने के लिए देश के विभिन्न संभावित आपदा स्थलों को चुना गया था। जिससे एन डी आर एफ को संभावित प्राकृतिक आपदा वाले स्थानों पर स्थायी रूप से तैनात किया जा सका। इससे आपदा के दौरान बचाव कार्य के लिए आपदा स्थल तक पहुँचने के समय को और कम किया जा सका तथा स्थानीय जन समुदाय में आत्म विश्वास की भावना बलवती हुई। इन्हीं स्थानों के द्वारा दूर-दराज के समुदाय की आपदा से पूर्व की तैयारी एवं बचाव क्षमता की वृद्धि के लिए प्रशिक्षण कार्य हेतु भी निर्देशित किया गया है। आपदा कार्य प्रक्रिया के अन्तर्गत ‘पूर्व सक्रियता’ तथा ‘पूर्व स्थल तैनाती’ के विचार को किसी भी प्रकार की आपदा पूर्व तैयारी का अंग माना गया। जिससे समय रहते आपदा से होने वाली संभावित क्षति को कम किया जा सके।

एक दशक से भी कम समयावधि के इस अनूठे एन डी आर एफ ने अपने साहसिक कार्यों से देश में ही नहीं, विश्व में भी पहचान बनायी है। जैसे-जैसे एन डी आर एफ ने समय के साथ अपनी कार्यकुशलता को अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों के समीप पहुँचाया, वैसे-वैसे राज्य सरकारों द्वारा एन डी आर एफ पर राहत, खोज एवं बचाव कार्य के लिए निर्भरता बढ़ती गयी। पिछले वर्षों में एन डी आर एफ को देश के विभिन्न स्थानों पर 200 से ज्यादा अवसरों पर तैनात किया गया तथा इस बल के द्वारा लगभग 4,75,500 लोगों को जीवित तथा 2262 शवों को निकाला गया है।



नेपाल में प्रतिकूल परिस्थिति में जिंदगी बचाने का प्रयास करते एन डी आर एफ के सदस्य

सन् 2013 को एन डी आर एफ को दो प्रख्यात सम्मान प्राप्त हुए थे। इनमे प्रथम भारतीय प्रबन्ध संस्थान (रायपुर) ने 'इण्टरनेशनल कान्फ्रेन्स आफ ह्यूमैनिटेअरिअन् लॉजिस्टिक्स' (नवम्बर 2013) के आयोजन में एन डी आर एफ द्वारा किये गये मानवीय प्रयासों को पहचाना तथा सराहा गया था। इस आयोजन के अन्तर्गत एन डी आर एफ को खोज एवं बचाव कार्य की उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मान दिया गया था। दूसरा प्रमुख महत्व 'सी एन एन आई बी एन' द्वारा एन डी आर एफ को उत्तराखण्ड प्राकृतिक आपदा उपरान्त किये गये सराहनीय कार्य के लिए 'उत्कृष्ट सफलता पुरस्कार' प्रदान किया गया था।

2. संसाधन

एन डी आर एफ सभी अत्याधुनिक तथा आवश्यक आपदा बचाव उपकरणों एवं संसाधनों से लैस है। प्रायः एन डी आर एफ की जरूरत 'बाढ़-बचाव' एवं 'ध्वस्त इमारत खोज एवं बचाव' अभियान के लिए होती है। वर्तमान समय में इस तरह की आपदाओं की आवृत्ति बढ़ती जा रही है। अतः एन डी आर एफ प्रत्येक आपदा के दौरान किये गये खोज एवं बचाव अभियान के उपरान्त अपनी आवश्यकताओं एवं संसाधनों की पुनः समीक्षा करता है। इस प्रकार नये तथा आवश्यक संसाधनों से इसे समय के साथ-साथ लैस कराया जाता है।

एन डी आर एफ के पास 'ध्वस्त इमारत खोज एवं बचाव' (सी एस एस आर) आपदा से निपटने के लिए सभी संसाधन उपलब्ध है। इस बल

के पास सभी प्रकार के 'कटर' है जिनसे कंक्रीट, लोहा, धातु, ईंट-पत्थर व लकड़ी से बनी इमारत को काटा जा सकता है।



नेपाल भूकम्प में अनवरत बचाव कार्य जारी रखते एन डी आर एफ के सदस्य

सभी प्रकार के 'हाइड्रोलिक कटर' तथा 'स्प्रेडर' भी उपलब्ध है। ध्वस्त मलवे में दबे व फँसे हुए जीवित पीड़ित का सही स्थान पता करने वाले सेंसर आधारित उपकरण भी उपलब्ध है। मलवे में दबे व फँसे पीड़ित से सीधा संपर्क तथा उसकी स्थिति का आकलन करने के लिए एन डी आर एफ की टीमों के पास 'विकिटम लोकेटिंग कैमरा' उपलब्ध है। सभी प्रकार के भार क्षमता वाले 'लिफ्टिंग बैग' तथा ध्वस्त इमारत को कुछ समय के लिए स्थायित्व प्रदान करने वाले संसाधनों से प्रत्येक टीम लैस है। रेल तथा भीषण सड़क दुर्घटना के समय बचाव कार्य के लिए आवश्यक 'गैस तथा कोल्ड कटर' भी उपलब्ध हैं। एन डी आर एफ के प्रत्येक कार्मिक को अत्याधुनिक 'पर्सनल प्रोटेक्टिव उपकरण' उपलब्ध कराये गये हैं। धुएँ व गर्द को बाहर निकालकर बचाव कर्मियों के काम में निर्विघ्न एवं स्वच्छ वातावरण उपलब्ध करने वाले उपकरण तथा संयंत्र भी मौजूद है। बोर-वेल एवं गहरी खाई में बचाव अभियान के लिए काम आने वाले उपकरण भी एन डी आर एफ की टीमों को उपलब्ध हैं। खोज एवं बचाव के दौरान जीवित पीड़ितों के स्थान को चिह्नित करने में मदद करने वाले विशेष प्रशिक्षण प्राप्त श्वान भी प्रत्येक टीमों के साथ रहते हैं।

प्रायः बाढ़ बचाव अभियान के लिए एन डी आर एफ को बुलाया जाता है। इस आपदा के दौरान कुशल बचाव कार्य एन डी आर एफ की नियति बन चुकी है। अतः एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम को बाढ़ के दौरान आवश्यक राहत एवं बचाव कार्य के सभी संसाधनों से सुसज्जित किया गया है। प्रत्येक टीम के पास समुचित 'इन्फ्लेटेड बोट', 'एफ आर पी बोट', 'राफ्ट', तथा विभिन्न हार्स पावर क्षमता वाले 'ओ बी एम' इंजन उपलब्ध है। समुचित मात्रा में बचाव कार्य में काम आने वाले 'लाइफबूय', 'लाइव जैकेट', 'गोताखोर सेट', 'अन्डर वाटर संचार उपकरण', 'अन्डर वाटर टार्च' तथा अन्य उपकरण एवं संसाधन उपलब्ध है। प्रत्येक टीमों में प्रशिक्षित एवं अनुभवी गोताखोर भी उपलब्ध हैं। इन हालातों में काम करने के लिए बचाव कर्मियों को 'मील रेडी टू ईट' तथा 'पीने का पानी' उपलब्ध कराया जाता है। जिसे बचाव कर्मियों अपने गन्तव्य के लिए प्रस्थान करने से पूर्व ही साथ ले जाते हैं, जिससे बाढ़ बचाव अभियान को निरन्तर एवं निर्विघ्न चलाया जा सके।

एन डी आर एफ दल आपदा प्रभावित क्षेत्रों में दिन-रात राहत, खोज एवं बचाव अभियान जारी रखते हैं। आत्मनिर्भरता के लिए एन डी आर एफ के पास रात्रि में कार्य जारी रखने के लिए 'लाइटनिंग टावर' भी उपलब्ध है, जिससे कार्य स्थल पर समुचित प्रकाश की व्यवस्था की जाती है।



कार्यस्थल पर समुचित प्रकाश के लिए एन डी आर एफ की आत्मनिर्भरता

यही नहीं बाढ़ आपदा की स्थिति में बचाव कार्य जारी रखने के लिए 'फ्लोटिंग-पम्प' भी उपलब्ध है जिससे जल भराव के क्षेत्र में क्रियान्वित किया जा सकता है।

एन डी आर एफ का प्रत्येक कार्मिक 'मेडिकल फर्स्ट रेस्पांडर' के रूप में प्रशिक्षित है तथा वह आपदा के समय अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है। प्रत्येक टीम को 'मेडिकल फर्स्ट रेस्पांडर' के सभी संसाधनों से लैस किया गया है। एन डी आर एफ के चिकित्सीय दल के पास सभी जीवन रक्षक औषधियाँ तथा उपकरण उपलब्ध है। आपदा स्थल पर 'फील्ड चिकित्सालय' तथा 'माइनर ओटी' की व्यवस्था के लिए सभी संसाधन उपलब्ध है। आपदा स्थल पर 'आघात प्रबन्धन' के संसाधन तथा आवश्यकता स्थल पर 'आक्सीजन सिलेण्डर' भरने के संसाधन भी उपलब्ध कराये गये हैं। प्रत्येक दल के सदस्य को 'चिकित्सा बैग' उपलब्ध कराया गया है, जिससे वह आपदा पीड़ित को उसी जगह पर प्राथमिक चिकित्सा सुविधा प्रदान करता है। एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम में सभी सुविधाओं से सुसज्जित 'एम्बुलेन्स' भी शामिल है, जिसके द्वारा आपदा पीड़ितों को बेहतर चिकित्सा प्रबन्धन के लिए चिकित्सालयों में भेजा जाता है।

एन डी आर एफ की समस्त बटालियन 'रासायनिक जैविक विकिरण एवं नाभकीय' आपदा की स्थिति में बचाव कार्य करने में सक्षम है। इस विधा में दक्षता हासिल करने के लिए एन डी आर एफ की समस्त टीमों के पास समुचित संसाधन उपलब्ध है। प्रत्येक प्रकार के 'मानिट्रिंग', 'डिटेक्शन', 'आइडेन्टीफिकेशन' एवं 'एनेलाइजिंग' उपकरण एवं संसाधन हर टीम में उपलब्ध है। प्रत्येक टीम में हर तरह के 'डोजीमीटर' भी उपलब्ध है। एन डी आर एफ के पास वर्तमान समय में मानव, स्थान, उपकरण एवं वाहन को 'डीकॉन्टामिनेट' करने के सभी संसाधन उपलब्ध है। टीमों के पास 'पर्सनल प्रोटेक्टिव डीकॉन्टामिनेशन यूनिट' (पी पी डी यू) भी उपलब्ध है। जिससे स्थानीय प्रभावित जनसमुदाय को डिकॉन्टामिनेट किया जा सकता है। एन डी आर एफ के प्रत्येक कार्मिक के पास एन बी सी सूट उपलब्ध है। बल के पास 'परमिएबुल' तथा 'नानपरमिएबुल' सूट भी उपलब्ध है। प्रत्येक प्रकार के 'मास्क' तथा 'कैनिस्टर' मौजूद हैं।



सुरक्षात्मक पोशाकों के साथ विकिरण आपदा निरोधी अभियान

रासायनिक आपदा की अवस्था में एन डी आर एफ के कार्मिकों द्वारा राहत एवं बचाव कार्य जारी रखने के लिए 'ए', 'बी' व 'सी' सूट भी उपलब्ध है। किसी भी प्रकार के 'लीकेज' को रोकने तथा बन्द करने के भी संसाधन एन डी आर एफ के पास उपलब्ध है। प्रदूषित वातावरण में बचाव कार्य जारी रखने के लिए टीमों के पास 'सेल्फ कन्टेन्ड ब्रीदिंग आपरेटस (एस सी बी ए)' उपलब्ध है। जैविक आपदा की स्थिति के लिए सर्वेक्षण उपकरण भी है। एन डी आर एफ की बटालियन के पास 'हजमत हैजार्ड वाहन' भी उपलब्ध है जिसके द्वारा चलायमान होकर वातावरण की अशुद्धि का सर्वेक्षण तथा पहचान किया जा सकता है। विकिरण एवं नाभकीय आपदा के दौरान प्राप्त 'स्रोत' को अलग-थलग करने तथा उसे सुरक्षित जगह पर ले जाकर निष्क्रिय करने के संसाधन भी उपलब्ध है। भारतीय परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा एन डी आर एफ के कुछ वाहिनी मुख्यालय को 'क्षेत्रीय आपातकालीन केन्द्र' के रूप में भी चिह्नित किया है। इन जगहों पर विशेष उपकरण एवं संसाधन उपलब्ध कराये गये हैं।

एन डी आर एफ द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में राहत, खोज एवं बचाव कार्य करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण एवं संसाधन उपलब्ध है। यही नहीं आवश्यकता पड़ने पर हेलीकाप्टर के द्वारा आपदा स्थल पर उतरने की स्थिति में आवश्यक संसाधन एन डी आर एफ के पास उपलब्ध है। सभी प्रकार के उपकरण जो कि पर्वतीय क्षेत्रों में बचाव कार्य के लिए

जरूरी है तथा ऐसे दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में बचाव कार्य करने के लिए बने रहने की स्थिति में आवश्यक संसाधन से भी एन डी आर एफ की टीमों को लैस किया गया है।



नेपाल भूकम्प में पीड़ित से सम्पर्क साधने के संसाधन से लैस एन डी आर एफ

एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम किसी भी आपदा के दौरान स्वतन्त्र रूप से आत्मनिर्भर होकर काम करती है। इसके लिए इन्हे हर संसाधन मुहैया कराया गया है। प्रत्येक टीम को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समुचित वाहन, टेन्ट, शेल्टर उपलब्ध कराये गये हैं। सभी प्रकार के उपकरण एवं संयंत्रों को आपदा स्थल पर चलाने के लिए बड़े तथा छोटे जेनरेटर भी उपलब्ध कराये गये हैं। प्रत्येक टीम के सदस्य निरंतर बचाव कार्य जारी रख सके तथा विपरीत परिस्थितियों में प्रशासनिक आवश्यकताओं को न्यूनतम करने के लिए प्रत्येक कार्मिक को 'मील रेडी टू ईट' उपलब्ध कराया जाता है। आपदा स्थल पर संचार व्यवस्था स्थापित एवं बनाये रखने के लिए प्रत्येक टीम में 'एच एफ', 'वी एच एफ', 'प्रोटोफोन' उपलब्ध कराया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक टीम में 'सेटेलाइट फोन', 'क्विक डिप्लायमेन्ट एंटीना (क्यू डी ए)', 'मोबाइल फोन' तथा 'डेटा कार्ड' भी उपलब्ध कराया गया है।

इस प्रकार आपदा स्थल से संदेश स्वर, लिखित तथा फिल्म के माध्यम से प्रेषित किया जाता है। प्रत्येक टीम में संचारकर्मी टीम का हिस्सा है जो संचार व्यवस्था स्थापित करने व कायम रखने के लिए कटिबद्ध है।



स्वतन्त्र व आत्मनिर्भर संचार व्यवस्था की एक झलक

भारी तबाही, आपदा की यथास्थित तथा आपदा के वर्तमान स्वरूप का आकलन करने के लिए एन डी आर एफ के पास 'यू ए वी' ड्रोन 'नेत्र' भी उपलब्ध है। जिसके द्वारा आपदा की यथास्थित तथा चल रहे आपदा बचाव अभियान का 'विडियो' बनाया तथा देखा जा सकता है। 'नेत्र' का प्रयोग नेपाल में किये गये राहत, खोज एवं बचाव कार्य के दौरान किया गया था।



एन डी आर एफ के ड्रोन द्वारा आपदा स्थल की यथा स्थिति पर नजर

एन डी आर एफ के पास 'आल टेरैन व्हेकिल' भी उपलब्ध है, जिसका प्रयोग आपदा के समय राहत एवं बचाव कार्य के दौरान किसी भी जमीनी सतह की बनावट में चलाया जा सकता है। इस प्रकार खोज

एवं बचाव कार्य में प्राकृतिक बाधा को न्यूनतम किया जाता है। 'आल टेरैन व्हेकिल' का उपयोग जम्मू और कश्मीर बाढ़ आपदा बचाव अभियान के दौरान किया गया था।

प्रत्येक एन डी आर एफ की बटालियन के पास 'राष्ट्रीय आपातकालीन भण्डार' (एन ई आर) रखा गया है, ताकि भीषण आपदा के समय इस भण्डार को तुरन्त आपदा पीड़ित समुदाय के बीच राहत स्वरूप वितरित किया जा सके।

आपदा रहित समय में एन डी आर एफ, स्थानीय समुदाय की आपदा निरोधी क्षमता की वृद्धि के उद्देश्य स्वरूप जागरूकता अभियान, स्कूल सुरक्षा कार्यक्रम, आपदा प्रबन्धन प्रदर्शनी तथा संयुक्त अभ्यास कार्यक्रम में भागीदारी निभाता है। इस जागरूकता अभियान के लिए सभी संसाधन पर्याप्त मात्रा में एन डी आर एफ की टीमो में उपलब्ध हैं। एन डी आर एफ की टीमों इस प्रकार सड़क, रेल, जल व वायुमार्ग से कहीं भी आपदा राहत, खोज एवं बचाव कार्य के लिए अविलम्ब प्रस्थान करने में सक्षम है।

3. क्षमता

एन डी आर एफ का प्रत्येक सदस्य 'मेडिकल फर्स्ट रेस्पान्डर' के रूप में दक्ष है। प्रत्येक कार्मिक अपने प्रारम्भिक आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण के दौरान प्राथमिक स्वास्थ्य उपचार में गहन प्रशिक्षण प्राप्त करता है। प्रत्येक टीम में 'मेडिकल फर्स्ट रेस्पान्डर' के लिए आवश्यक संसाधन एवं उपकरण होते हैं। अतः किसी भी प्राकृतिक तथा कृत्रिम आपदा में राहत एवं बचाव कार्य के दौरान आपदा पीड़ित को घटनास्थल पर ही उपचार मुहैया कराया जाता है, जिससे उसके जीवित बने रहने की संभावना प्रबल होती है। प्रत्येक कार्मिक हर अवस्था तथा हर परिस्थितियों में सर्वप्रथम पीड़ित को प्राथमिक चिकित्सा सुविधा घटना स्थल अर्थात् जहाँ पर पीड़ित को खोजा गया है वहीं पर प्रदान करता है जिससे पहले पीड़ित को जीवन रक्षक उपायो एवं औषधियों से लाभान्वित किया जा सके। एन डी आर एफ के कार्मिकों द्वारा खोज एवं बचाव अभियान के दौरान यह कोशिश होती है कि पीड़ित की यथास्थित में और गिरावट न हो सके।



‘मेडिकल फर्स्ट रिस्पॉन्डर’ की भूमिका में एन डी आर एफ

समुचित एवं आवश्यक चिकित्सा सुविधा पहुँचाने या पीड़ित तक पहुँचाने के लिए एन डी आर एफ का कार्मिक हर प्रयत्न करता है, इसी उद्देश्य के तहत उसे प्रशिक्षण दिया जाता है। समय के साथ प्रत्येक कार्मिक पुनः प्रशिक्षण तथा विशेष प्रशिक्षण प्रक्रिया से होकर गुजरता है। जीवन रक्षक एवं जीवन उपयोगी दक्षता को और प्रभावी बनाने के लिए एन डी आर एफ की टीमों के साथ विशेषज्ञ चिकित्सक तथा ‘पैरामेडिक्स’ रहते हैं। एन डी आर एफ के चिकित्सकों को ‘आपदा प्रबन्धन के लिए आवश्यक विशेष प्रशिक्षण’ से होकर गुजरना पड़ता है। विशेष रूप से ‘ट्रामा पीड़ितों’ के लिए देश एवं विदेश की संस्थाओं में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। एन डी आर एफ का प्रत्येक कार्मिक जिसे ‘मेडिकल फर्स्ट रेस्पॉन्डर’ (एम एफ आर) के रूप में भी पहचाना जाता है, वह इस विधा में सभी अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों पर खरा उतरता है। समय के अनुसार सभी अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों के दिशा निर्देश का पालन अपने बचाव कार्य के दौरान सुनिश्चित करता है जिससे वह सिर्फ राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खोज एवं बचाव कार्य में अन्य संस्थाओं के समतुल्य रह सके।

एन डी आर एफ की प्रमुख विशेषता यह है कि इस बल की टीमें ध्वस्त इमारतों व भवनो में प्रवेश कर जीवित बचे पीड़ितों को बाहर सुरक्षित

निकालने की क्षमता में प्रवीण है। प्रत्येक टीम पुनः छोटी-छोटी टीमों में विभाजित होकर खोज एवं बचाव कार्य करती है। इस बल की प्रत्येक टीम का सदस्य 'ध्वस्त इमारत खोज एवं बचाव' के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त है। इसके लिए वह एन डी आर एफ में कदम रखते ही गहन प्रशिक्षण से होकर गुजरता है। बुनियादी प्रशिक्षण के पश्चात् उनकी योग्यता के आधार पर इन्हें 'ट्रेनिंग आफ ट्रेनर' तथा 'मास्टर आफ ट्रेनर' प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। इसके अतिरिक्त देश एवं विदेशों में भी विशेषज्ञ प्रशिक्षण के लिए इन्हें भेजा जाता है। आपदा रहित समय में दल के सदस्य विभिन्न प्रकार की एवं जटिल परिस्थितियों का स्वरूप तैयार कर प्रशिक्षण करते हैं। ध्वस्त इमारत में प्रवेश कर सुरक्षित खोज एवं बचाव कार्य के लिए इन्हें अपने प्रशिक्षित श्वानों से भी मदद मिलती है। इसके लिए दल के सदस्य अपने प्रशिक्षित श्वानों के साथ सामूहिक प्रशिक्षण लेते हैं।



नेपाल भूकम्प में खोज अभियान के भागीदार एन डी आर एफ का 'श्वान दस्ता'

किसी भी ध्वस्त इमारत में प्रवेश करने के पूर्व सुरक्षित प्रवेश द्वार बनाने के लिए धाराशायी इमारत को अस्थायी स्थायित्व देने की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए घटना स्थल पर उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करके सुरक्षित प्रवेश द्वार बनाया जाता है। जिससे बचाव कर्मी सुरक्षित रहते हुए ध्वस्त इमारत में प्रवेश कर सकें तथा खोज अभियान जारी रख सकें। इस स्थायित्व की आवश्यकता तब तक होती है जब तक कि बचाव कर्मी

अपना खोज एवं बचाव कार्य समाप्त कर वापस सुरक्षित लौट नहीं आते हैं। इस प्रक्रिया को 'शोरिंग' कहा जाता है। एन डी आर एफ का प्रत्येक सदस्य इस प्रक्रिया में दक्ष होता है। 'ध्वस्त इमारत खोज एवं बचाव' की विधा में महारत हासिल करने के लिए एन डी आर एफ 'प्रोग्राम फार इन्हेन्समेन्ट आफ इमर्जेन्सी रिस्पान्स' (पीर) एवं 'इण्टरनेशनल सर्व एण्ड रेस्क्यू एडवाइजरी ग्रुप' (इनसराग) के दिशा निर्देशों का पालन करता है। इस प्रकार इस बल की टीम अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों पर खरी उतरती है। 'ध्वस्त इमारत में खोज एवं बचाव' कार्य में निपुणता हासिल करने के लिए सभी आवश्यक अत्याधुनिक उपकरण एवं संयंत्र एन डी आर एफ की टीमों में उपलब्ध है। समयानुसार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खोज एवं बचाव उपकरणों एवं संयंत्रों को मुहैया कराया जाता है तथा प्रशिक्षण भी दिया जाता है। प्रत्येक टीम के सदस्यों को अपने दायित्व की पहचान होती है तथा वे उसे अंजाम देने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। 'इनसराग' के मापदण्डों के अनुसार एन डी आर एफ एक 'भारी टीम' तैयार करने की प्रक्रिया में है जिसका निकट भविष्य में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'इक्सटर्नल क्लासिफिकेशन' होना तय हुआ है। भारत में इस भारी एन डी आर एफ की टीम की तैयारी व निगरानी स्विटजरलैंड के विशेषज्ञ दल द्वारा की जा रही है। एन डी आर एफ की टीमों में सभी प्रकार के कंक्रीट, ईट, धातु एवं लकड़ी को काटने वाले संयंत्रों से सुसज्जित है।



नेपाल भूकम्प में एन डी आर एफ की क्षमता का एक दृश्य

एन डी आर एफ की क्षमता 'रासायनिक जैविक विकिरण एवं नाभकीय' आपदा से निपटने में भी है। शुरुआती दौर में सिर्फ चार एन डी आर एफ की बटालियनें जो कि क्रमशः कोलकाता, अराकोनम, पूना एवं गाजियाबाद में स्थित थीं, वे 'रासायनिक जैविक विकिरण एवं नाभकीय' आपदा के लिए विशेष रूप से दक्ष थीं। वर्तमान समय में एन डी आर एफ की समस्त बटालियनें इस आपदा से निपटने में सक्षम हैं। प्रत्येक बटालियन को सर्वेक्षण, पड़ताल, पहचान तथा निष्क्रियता के उपकरणों से लैस किया गया है। प्रत्येक कार्मिक इन उपकरणों के प्रयोग में सक्षम है। प्रत्येक टीम इस आपदा से निपटने के लिए आवश्यक वर्गों में विभाजित होती है। जिससे आपदा के समय अपने-अपने निर्धारित कर्तव्यों का निर्वाह कर सके। इस कार्यकुशलता में निपुण होने के लिए एन डी आर एफ को विशेष प्रशिक्षण प्राप्त है। इस दिशा में भारत सरकार के 'परमाणु ऊर्जा विभाग' का मार्गदर्शन तथा दिशानिर्देश मिलता रहता है। रासायनिक आपातकालीन स्थिति से निपटने में दक्षता हासिल करने के लिए भारत के 'रक्षा अनुसंधान विकास संगठन' द्वारा एन डी आर एफ को प्रशिक्षण दिया जाता है। जैविक आपदा से निपटने की तैयारी के लिए राष्ट्रीय स्तर की जैविक प्रयोगशाला के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। एन डी आर एफ इस तरह की आपदा से निपटने की क्षमता के लिए समय-समय पर विभिन्न सहयोगी संस्थाओं के साथ साझा संयुक्त अभ्यास करता रहता है। इस तरह के अभ्यास देश के राष्ट्रीय महत्व वाले, भीड़-भाड़ वाले इलाके तथा संभावित खतरे वाले स्थानों पर आयोजित किये जाते हैं। देश के समस्त परमाणुविक संस्थानों के समीप किये जाने वाली 'आफ साईट इमरजेन्सी' योजनाओं के लिए एन डी आर एफ स्थानीय प्रशासन एवं परमाणु संस्थान के विशेषज्ञों के दल के साथ साझा अभ्यास नियमित रूप से करते हैं जिससे किसी भी प्रकार की उत्पन्न हुई दुर्घटना के फलस्वरूप आपदा से निपटा जा सके।

एन डी आर एफ के पास वह सभी आवश्यक सर्वे, पहचान तथा पड़ताल के उपकरण हैं जिससे सतह, वायु तथा जल की भी निगरानी की जा सकती है। इसके लिए अनेक प्रकार के सेन्सर तथा गाड़ियाँ भी मुहैया करायी गयी हैं। किसी भी विपरीत परिस्थिति में दूषित स्थान, जन समुदाय, उपकरण एवं वाहनो को पुनः शुद्ध करने तथा उपयोग में लाने के लिए सुरक्षित प्रक्रिया (डिकान्टामिनेशन) में एन डी आर एफ ने अपनी क्षमता विकसित की है। इसके लिए इस बल के पास समस्त किट एवं

संयंत्र भी उपलब्ध है। एन डी आर एफ को सभी प्रकार की आपदा एवं परिस्थितियों से निपटने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतिरोधात्मक पोशाकें उपलब्ध करायी गयी हैं, जिससे बचाव कर्मी अपना तथा पीड़ितों का बचाव कर सकता है।



विकिरण स्रोत को निष्क्रिय करने की क्षमता की एक झलक

एन डी आर एफ की प्रायः सर्वाधिक नियमित रूप से आवश्यकता बाढ़ बचाव अभियान के दौरान पड़ती है। एन डी आर एफ की टीमों बाढ़ से उत्पन्न आपदा में बड़ी दक्षता के साथ बचाव अभियान करती है तथा पीड़ित जन समुदाय को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाती है। प्रत्येक कार्मिक बाढ़ आपदा बचाव कार्य के लिए प्रशिक्षित है। एन डी आर एफ के कार्मिक को अनिवार्य रूप से तैराकी का बुनियादी प्रशिक्षण दिया जाता है। समय के साथ इन्हें एडवान्स तैराकी प्रशिक्षण के लिए विभिन्न राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थानों में भी भेजा जाता है। प्रत्येक बटालियन मुख्यालयों में तैराकी प्रशिक्षण व क्षमता वृद्धि के आवश्यक सुविधायें मुहैया कराई गई है। जिससे शीघ्रता से बाढ़ में फँसे लोगो तक पहुँचाया जा सकता है तथा उन्हें सुरक्षित स्थानो पर लाया जाता है। प्रत्येक कार्मिक इन उपकरणो एवं संसाधनो के साथ बाढ़ आपदा में हर हालत में बचाव के लिए सक्षम है तथा एन डी आर एफ की टीमों में प्रशिक्षित गोताखार तथा गोताखोर-सेट

उपलब्ध हैं। बाढ़ बचाव अभियान में अपनी क्षमता में वृद्धि के लिए एन डी आर एफ राष्ट्र की अग्रणी संस्थाओं से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं तथा संयुक्त अभ्यास में हिस्सा लेते हैं, इस प्रकार बचाव कर्मियों की क्षमता वृद्धि निरन्तर होती रहती है।



एन डी आर एफ द्वारा बाढ़ बचाव अभियान का एक दृश्य

एन डी आर एफ के कार्मिक भारतीय नौ सेना, भारतीय तट रक्षक तथा राष्ट्र की प्रमुख प्रशिक्षण संस्थाओं से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं तथा लगातार अपनी क्षमता का अभ्यास एवं पुनः अभ्यास करते रहते हैं। एन डी आर एफ के कार्मिक बाढ़ आपदा से उत्पन्न विभिन्न तात्कालिक मुसीबतों एवं समस्याओं से भली भाँति अवगत है। बाढ़ आपदा की स्थिति में एन डी आर एफ का चिकित्सीय दल सभी आवश्यक औषधियों के साथ प्रभावित जन समुदाय को उनके पास जाकर चिकित्सा सुविधा मुहैया कराते हैं। इस कार्य के लिए एन डी आर एफ प्रभावित क्षेत्रों में 'चिकित्सा शिविर' लगाते हैं तथा विपरीत परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार अपनी नाव से 'फ्लोटिंग हॉस्पिटल' संचालित करते हैं। इस प्रक्रिया में कार्मिकों को 'मेडिकल फर्स्ट रेस्पान्डर' की भूमिका भी पीड़ितों को मदद पहुँचाने का काम करती है। एन डी आर एफ का पशु चिकित्सीय दल बाढ़ प्रभावित स्थानीय समुदाय के पशुधन को तात्कालिक चिकित्सा सुविधा प्रदान करते हैं। बाढ़ बचाव अभियान के दौरान एन डी आर एफ की टीमें स्थानीय प्रशासन को राहत सामग्री पहुँचाने में भी मदद करती है। बाढ़ आपदा के समय एन डी आर एफ दिन और रात राहत एवं बचाव कार्य करते हैं। आपदा रहित समय में एन डी आर एफ के सदस्य बाढ़ संभावित क्षेत्रों में जागरूकता अभियान के अन्तर्गत स्थानीय समुदाय के पास उपलब्ध

स्थानीय संसाधनों से बाढ़ बचाव के तरीकों के विषय में जानकारी भी देते हैं। जिससे वास्तविक आपदा की स्थिति में नुकसान को कम किया जा सके।

एन डी आर एफ की क्षमता पर्वतीय क्षेत्र में राहत, खोज एवं बचाव कार्य में भी है। एन डी आर एफ के चुने हुए सदस्यों को देश के प्रतिष्ठित पर्वतीय संस्थानों में कठिन प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजा जाता है। पर्वतीय क्षेत्र में राहत एवं बचाव कार्य को कुशलता से अंजाम देने के लिए एन डी आर एफ के पास सभी आवश्यक उपकरण एवं साजो सामान मौजूद है। सभी कार्मिक इन उपकरणों की मदद से पर्वतीय ठंडे इलाकों में खोज एवं बचाव कार्य में सक्षम है। एन डी आर एफ के कार्मिक इस विधा में निपुण होने के लिए पहलगाँव, गुलमर्ग, माउन्ट आबू, दार्जिलिंग, चमोली, पिथौरागढ़, मनाली इत्यादि दुर्गम स्थलों पर गहन प्रशिक्षण के लिए भेजे जाते हैं। प्रत्येक टीम के पास पर्वतीय क्षेत्र में आपदा राहत एवं बचाव कार्य के संसाधन उपलब्ध है। यही नहीं दुर्गम स्थलों पर पहुँचने के लिए एन डी आर एफ के कार्मिक हवाई जहाज तथा हेलीकाप्टर से उतरने में भी दक्ष है। इस क्षमता की वृद्धि के लिए कार्मिकों को हेलीकाप्टर से अपने उपकरणों के साथ उतरने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस विधा में निरन्तर अभ्यास करने के लिए 'हेलीस्लिदरिंग' को अनिवार्य रूप से अपने बुनियादी आपदा प्रबन्धन पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। सभी वाहिनी के प्रशिक्षण क्षेत्र में इस विधा में अभ्यास करने की व्यवस्था है। समय-समय पर एन डी आर एफ के कार्मिक भारतीय सेना व वायुसेना के साथ साझा अभ्यास भी करते हैं। इस प्रकार एन डी आर एफ की टीमों छोटी-छोटी टीमों में विभाजित होकर दुर्लभ, दुर्गम व दूर-दराज इलाकों में पहुँचकर तात्कालिक राहत एवं बचाव कार्य करती हैं। हेलीकाप्टर के माध्यम से एन डी आर एफ की चिकित्सीय टीम अपने संसाधनों के साथ आपदा पीड़ितों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करती है। इस विधा में एन डी आर एफ की महिला सदस्य भी दक्ष हैं।

एन डी आर एफ ने 'बोरवेल' व 'कुँओ' में गिरे या फँसे पीड़ितों को बाहर निकालने में भी अपनी क्षमता बढ़ायी है। इस अभियान के लिए आवश्यक उपकरण एवं संसाधन इस बल की टीमों में उपलब्ध है। अपनी कुशलता की वृद्धि तथा अभ्यास के लिए एन डी आर एफ के सदस्य निजी संस्थाओं के भी संपर्क में रहते हैं तथा समय-समय पर प्रशिक्षण के लिए जाते रहते हैं।

ग्रामीण व दूर दराज के इलाकों में पर्याप्त संख्या में पाये जाने वाले पशुधन को देखते हुए, हाल ही में 'राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण' ने 'वर्ल्ड सोसाइटी फार द प्रोटेक्शन आफ एनिमल' एवं 'तमिलनाडु वेटेरनरी एण्ड एनिमल साइन्स यूनिवर्सिटी' के साझा प्रयास से एन डी आर एफ के प्रशिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण की व्यवस्था की है। इस प्रशिक्षण के माध्यम से एन डी आर एफ के कार्मिकों को आपदा बचाव कार्य के दौरान 'आपदा में पशु-प्रबन्धन' के अनिवार्य पहलुओं पर ध्यान देने के लिए प्रशिक्षण दिया गया है।

एन डी आर एफ भारत का प्रमुख संगठन है जो देश में आपदा के दौरान बचाव के लिए कटिबद्ध है। राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन के निर्मित संविधान के प्रति कटिबद्ध भारत सरकार एन डी आर एफ के प्रशिक्षण, संसाधन तथा निरन्तर क्षमता में वृद्धि के लिए पूर्ण सहयोग प्रदान करती है। एन डी आर एफ की विशेष टीम को आवश्यक विशेषज्ञ प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। एन डी आर एफ के प्रशिक्षण का मुख्य आधार 'प्रोग्राम फार इन्हेन्समेन्ट आफ इमॅजेन्सी रिस्पान्स' (पीर) द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण है जो अंतर्राष्ट्रीय मापदण्ड की कसौटी पर है। एन डी आर एफ के लिए विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों का निर्धारण देश की भागौलिक संवेदनशीलता को देखते हुए किया गया है जहाँ पर सभी संसाधन उपलब्ध है। एन डी आर एफ ने 'मेडिकल फर्स्ट रेस्पान्डर' तथा 'कोलैप्स स्ट्रक्चर सर्च एण्ड रिस्क्यू' (सी एस आर आर) का प्रशिक्षण 'पीर' की नियमावली तथा पद्धति के अनुसार किया है। इसी को आधार मानकर वह स्थानीय समुदाय व अन्य सहयोगी संस्थाओं को प्रशिक्षण भी देता है। जिससे आम नागरिक की भी आपदा से निपटने व तैयारी की क्षमता में वृद्धि हो सके। 'पीर' के द्वारा निर्देशित मापदण्डों के आधार पर एन डी आर एफ के 'मास्टर आफ ट्रेनर' तैयार किये जाते हैं, जिससे वे अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों पर सदैव खरे उतरें।

यही कारण है कि अधिकांश 'पीर' प्रशिक्षित कार्मिक एन डी आर एफ के सदस्य ही हैं, जो आपदा के समय प्रभावित क्षेत्रों में बचाव कार्य में भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त एन डी आर एफ आपदा रहित अवधि में दूर-दराज के इलाकों में पहुँचकर आपदा निष्पादन की तैयारी, बचाव एवं जागरूकता के लिए कार्यक्रम चलाती है तथा प्रशिक्षण प्रदान करती है। यह एक गौरव का विषय है कि एन डी आर एफ के सभी कार्मिक 'प्री-हॉस्पिटल चिकित्सा' में प्रशिक्षित हैं, यहाँ तक कि वे आपातकालीन

परिस्थितियों में 'शिशु-जन्म' में भी मदद कर सकने में सक्षम है। मुण्डली (ओडिशा) में एन डी आर एफ वाहिनी में 'मास्टर इनस्ट्रक्टर वर्कशाप' (एम आई डब्लू) के दौरान बड़ा ही रोचक प्रसंग सामने आया। सितम्बर 2013 के दौरान एन डी आर एफ के कार्मिक (जो कि मेडिकल फर्स्ट रेस्पाण्डर में प्रशिक्षित थे) बाढ़ बचाव अभियान में भोजपुर में तैनात थे। एक विपरीत परिस्थिति जो बाढ़ बचाव कार्य के दौरान के समय आई। स्थानीय समुदाय को सुरक्षित स्थानों पर 'स्पीड-बोट' से स्थानान्तरित किया जा रहा था। इस दौरान एक महिला जो प्रसव पीड़ा में थी उसने एन डी आर एफ की 'इन्प्लेटेबल बोट' में बच्चे को जन्म दिया। एन डी आर एफ द्वारा प्रदत्त सहायता की बच्चे के माता-पिता तथा स्थानीय समुदाय ने अन्यन्त सराहना की। वे एन डी आर एफ की समर्पण भाव की सेवा से इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने उस नवजाव शिशु का नाम 'एन डी आर एफ सिंह' रख दिया। एन डी आर एफ के कार्मिकों ने बच्चे की सुरक्षित जन्म में मदद की थी, तदुपरान्त माँ को तुरन्त 'आवश्यक चिकित्सा प्रबन्धन' के लिए चिकित्सालय पहुँचाया गया था। बाद में पता चला कि 'जच्चा एवं बच्चा' दोनों स्वस्थ एवं सकुशल थे। देश को एन डी आर एफ के समर्पण पर गर्व है।

एन डी आर एफ अपनी क्षमता व दक्षता का प्रदर्शन आम नागरिकों के बीच विभिन्न प्रदर्शनियों के द्वारा करती रहती है। जिसके द्वारा आम नागरिकों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के बीच जागरूकता अभियान चलाया जाता है यह नागरिकों की आपदा प्रतिरोधी क्षमता विकसित करने की दिशा में एक साहसिक कदम है।

4. अंतर्राष्ट्रीय राहत एवं बचाव कार्य

जापान (फूकूशिमा) आपदा : नेपाल में किये गये वृहद खोज एवं बचाव कार्य के अतिरिक्त एन डी आर एफ ने अपनी प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पहचान मार्च 2011 में बनायी थी, जब इस दल की एक टीम को जापान के 'ओनागावा' में खोज एवं बचाव कार्य के लिए तैनात किया गया था। इस आपदा का कारक जापान में आये अनिश्चित भूकम्प ने वहाँ 'सूनामी' की स्थिति पैदा कर दी थी तथा परिणामस्वरूप 'फूकूशिमा' स्थित नाभकीय संयंत्र में विकिरण रिसाव पैदा हो गया था। इस प्रकार जापान एक साथ तीन भयानक आपदाओं से ग्रस्त हो गया था। एन डी आर एफ द्वारा किये गये अभूतपूर्व कार्य की सराहना सिर्फ जापान के स्थानीय समुदाय ही

नहीं अपितु जापान की सरकार ने भी किया था। विशेषरूप से भारत में जापानी दूतावास ने दिसम्बर 2013 में दिल्ली में आयोजित एक समारोह में जापान के सम्राट अकिथो तथा महारानी मिशिको ने विशेषरूप से एन डी आर एफ के कार्यों की दिल खोलकर सराहना की तथा इस दल के नायक आलोक अवस्थी, कमाण्डेंट को उनके दल द्वारा मार्च 2011 में घटित सूनामी में राहत एवं बचाव कार्य के लिए सम्मानित भी किया।



एन डी आर एफ का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय बचाव दल

11 मार्च 2011 को एक भूकम्प ने जापान के पूर्वी क्षेत्र 'थोहोक्' में हलचल मचा दी थी इसके उपरान्त सूनामी तथा फूकूशिमा नाभकीय संयंत्र में विकिरण आपदा घटित हुई थी। एन डी आर एफ की एक टीम आलोक अवस्थी, कमाण्डेंट के नेतृत्व में 27 मार्च 2011 को सांय 'जापान एयर लाईन्स' के विमान से नई दिल्ली से रवाना हुई थी। इस टीम में कुल 46 कार्मिक शामिल थे। यह टीम जापान में 'नारिता हवाई अड्डे' पर 28 मार्च 2011 की प्रातः पहुँच गयी थी। इस टीम का श्री संजय पांडा तत्कालीन उप मिशन प्रमुख, भारतीय दूतावास, जापान ने हवाई अड्डे पर स्वागत किया था। वहीं पर इस टीम को जापान की संस्कृति तथा किये जाने वाले कार्यों के विषय में जानकारी दी गयी। टीम सड़क मार्ग से 'रिफू-चो' के लिए रवाना हुई थी जिसके रास्ते में ही फूकूशिमा पड़ता था। टीम के सदस्यों ने रास्ते से ही विकिरण स्तर को 'पर्सनल डोजीमीटर' के द्वारा मापना शुरू कर दिया था। 320 किमी की दूरी तय करके टीम मियागी में 'सेन्देई शहर' के समीप 'रिफू-चो' शाम 7 बजकर 45 मिनट पर पहुँच गयी थी। पोर्टेबल शेल्टर व आर्कटिक टेन्टो में कैम्प

रात्रि में ही बनाया गया तथा 'मील रेडी टू ईट' ही खाया गया। दस दिनों तक कोई पानी नहीं, कोई बिजली नहीं, कोई नहाना नहीं, कोई हाथ धुलाई नहीं तथा शून्य से निम्न तापमान में इस टीम ने कार्य किया। एन डी आर एफ की यह टीम पूरी तरह से आत्मनिर्भर थी। इनके पास 54 कार्मिकों के लिए 10 दिन का 'मील रेडी टू ईट' व 10 दिन का पीने का पानी था तथा इसके अतिरिक्त आपातकालीन राशन भी साथ था। सभी संचार के उपकरण जिसमें एच एफ, वी एच एफ तथा सेटेलाइट फोन भी उपलब्ध थे। टीम पूरी तरह से नाभकीय आपदा के लिए सभी आवश्यक उपकरण, ध्वस्त ढाँचे में बचाव के समय के उपकरण, बाढ़ से बचाव के संसाधन तथा प्राथमिक चिकित्सा के सभी संसाधन ले गई थी। 29 मार्च 2011 को टीम अपने बेस कैम्प से 59 किमी दूर 'ओनागावा' के लिए रवाना हुई जहाँ उसका स्वागत वहाँ के मेयर ने किया। मियागी परिक्षेत्र में 'ओनागावा' सर्वाधिक प्रभावित हिस्सा था। कई लोग यहाँ से अभी भी लापता थे। टीम ने प्रारम्भिक आकलन करने के बाद ध्वस्त हुए मकानों में लापता लोगों की तलाश शुरू कर दी थी। ध्वस्त इमारतों में प्रवेश करने के लिए उन्होंने 'शोरिंग' की तथा कहीं-कहीं पर मकानों में खोज अभियान जारी रखने के लिए घरों की दीवारों व छतों को काटकर प्रवेश करना पड़ा। एन डी आर एफ की टीम ने बगैर भारी मशीनरी के ध्वस्त मलवों के भीतर से 7 शवों को बाहर निकाला। इस टीम ने अपने खोज अभियान के दौरान बरामद किये गये 50 मिलियन येन मुद्रा तथा बेशकीमती पाई वस्तुओं को स्थानीय प्रशासन को सौंप दिया। इनके कार्यों के लिए जापान सरकार ने जापान में स्थित भारतीय दूतावास को प्रशस्ति पत्र भी सौंपा।

05 अप्रैल 2011 को 'ओनागावा' शहर के कम्यूनिटी हाल में स्थानीय समुदाय ने इस एन डी आर एफ की टीम को धन्यवाद प्रेषित किया था। टीम की ईमानदारी, समर्पण, संस्कृति के प्रति संवेदना तथा भावनात्मक लगाव की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी। एन डी आर एफ की यह टीम पहला अंतर्राष्ट्रीय राहत एवं बचाव कार्य अभियान समाप्त करके 8 अप्रैल 2011 को दिल्ली वापस आ गयी थी।

5. देश में राहत एवं बचाव कार्य

कोसीबाढ़ : 18 अगस्त 2008 को अपराह्न 2 बजे, कोसी नदी ने नेपाल में कुसाहा बाँध को तोड़ दिया था, जो कोसी बाराज से 12 किमी धारा के प्रवाह की तरफ था। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि बिहार राज्य

के जिले सुपौल, अररिया, माधेपुरा तथा सहरसा बुरी तरह से बाढ़ ग्रस्त हो गये थे। एन डी आर एफ की पहली परीक्षा सन् 2008 में बिहार में आये कोसी बाढ़ के दौरान हुई, जब इस बल की टीमो को कोसी बराज में दरार पड़ते ही प्रभावित क्षेत्रों में तैनात किया गया था। इस भयावह स्थिति से निपटने के लिए एन डी आर एफ ने युद्ध स्तर पर कार्यवाई की थी, जिसके तहत 'हाई-स्पीड मोटराइज्ड बोट' (153) को हवाई जहाज से राहत एवं बचाव कार्य के लिए उतारा गया था। एन डी आर एफ की टीमो ने जिन संसाधनों का प्रयोग किया था उनमें मुख्य 'स्पीड बोट', 'लाइफ ब्वाय', 'लाइफ जैकेट', 'नायलान की रस्सी', 'फिशिंग नेट', 'प्लास्टिक शीट', 'जेनरेटर', 'इम्पलेटेबल लाइटनिंग टावर', समुचित औषधियाँ बाढ़ पीड़ितों के बचाव अभियान में लगायी थीं।



कोसी बाढ़ में एन डी आर एफ द्वारा बचाव अभियान

इस अभियान में 480 प्रशिक्षित कार्मिकों को 5 अत्यधिक प्रभावित जिलों में तैनात किया गया था। एन डी आर एफ के तुरन्त हस्तक्षेप से एक लाख से ज्यादा लोगों को प्रारम्भिक स्थितियों में बचाकर सुरक्षित स्थलों पर पहुँचाया गया था। त्वरित एवं कुशल राहत एवं बचाव अभियान से तत्कालीन बिहार के मुख्यमंत्री काफी प्रभावित हुए तथा उन्होंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर एन डी आर एफ की कार्यकुशलता की सराहना की थी।

मायापुरी आपदा : 8 अप्रैल 2010 को दिल्ली के मायापुरी स्थित बाजार में एक कबाड़ की दुकान से अज्ञात रेडियेशन निकलने से स्थानीय 8 लोगो को अस्पताल में दाखिल कराना पड़ा था। इस अज्ञात रेडियो धर्मी पदार्थ की खबर से पूरे इलाके में अफरातफरी का माहौल बन गया था। गाजियाबाद स्थित एन डी आर एफ की 'रासायनिक जैविक विकिरण एवं नाभकीय टीम' को तुरन्त घटना स्थल पर भेजा गया। एन डी आर एफ की इस टीम ने अन्य राष्ट्रीय विशेषज्ञ दल के साथ मिलकर रेडियो धर्मी पदार्थ को पहचाना तथा उसके स्थान को भी खोज निकाला था। जाँच स्वरूप उस पदार्थ की पहचान 'कोबाल्ट -60' के रूप में हुई। एन डी आर एफ की टीम ने इस रेडियो धर्मी पदार्थ को सुरक्षित अलग करके निर्धारित मानदण्डों के अनुसार उसे निष्क्रिय कर दिया था। तत्पश्चात् इलाके में रेडियो धर्मिता को कम किया जा सका तथा जन जीवन सामान्य हुआ।

उत्तराखण्ड प्राकृतिक आपदा : 16 जून 2013 की रात्रि बाढ़ तथा भारी बारिश ने केदारनाथ घाटी को बुरी तरह प्रभावित किया था, इसका दुष्परिणाम यह था कि राज्य में अब तक की सबसे भयावह आपदा की स्थिति बन गयी थी। जून 2013 में उत्तराखण्ड में घटित प्राकृतिक आपदा के दौरान एन डी आर एफ की 14 टीमों (449 सदस्यों) को बुरी तरह से प्रभावित इलाकों में तैनात किया गया था। तुरन्त प्रभाव से एन डी आर एफ की खोज एवं बचाव टीम को प्रभावित क्षेत्रों केदारनाथ, गौरीकुंड, सोनप्रयाग, गुप्तकाशी, रामबारा, हर्षिल, जंगलेपानी, जंगलेछत्ती तथा गौरीछत्ती में बचाव अभियान के लिए भेजा गया था।

अत्यधिक खराब तथा प्रतिकूल मौसम के बावजूद एन डी आर एफ ने अपना राहत एवं बचाव कार्य जारी रखा। इस दिन-रात चलाये गये अभियान में एन डी आर एफ के नौ कार्मिकों, भारतीय वायुसेना के पाँच तथा भारत तिब्बत सीमा के छह कार्मिकों ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था। यह एक हेलिकाप्टर दुर्घटना के दौरान हुआ था। इस दुर्घटना ने एन डी आर एफ के अदम्य साहस एवं उत्साह में तनिक भी कमी नहीं आने दी थी। अत्यधिक प्रतिकूल मौसम एवं विषम परिस्थितियों के बावजूद एन डी आर एफ ने 9,657 लोग जो मुसीबत में फँस गये थे, उन्हें सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाया था। एन डी आर एफ ने 306 तीर्थ यात्रियों एवं पीड़ितों के शवों को बाहर निकाला तथा राज्य प्रशासन की राहत वितरण चिकित्सा सुविधा प्रदान करने में मदद की। एन डी आर एफ ने 920 पीड़ितों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की थी।



उत्तराखण्ड आपदा में पर्वतीय क्षेत्रों में पहुंचते एन डी आर एफ के सदस्य

फायलिन चक्रवात : प्राकृतिक आपदा से कुशलता पूर्वक निपटने का अति महत्वपूर्ण उदाहरण अक्टूबर 2013 में आये 'फायलिन' चक्रवात के दौरान एन डी आर एफ द्वारा किया गया राहत एवं बचाव कार्य था। भारतीय मौसम विभाग द्वारा सही समय पर आपदा का पूर्वानुमान तथा चेतावनी ने एन डी आर एफ के अभी तक के किसी भी प्राकृतिक आपदा में सर्वाधिक एवं विशाल तैनाती के लिए विवश कर दिया था। एन डी आर एफ ने ओडिशा, आन्ध्रप्रदेश तथा बंगाल के तटीय इलाकों में 53 टीमों (लगभग 2,320 कार्मिक) को समय पूर्व तैनात किया था। एन डी आर एफ की टीमों ने 6,555 लोगों को सुरक्षित स्थलों पर पहुँचाकर उनकी जान बचायी थी तथा स्थानीय प्रशासन को राहत सामग्री के वितरण, चिकित्सा सुविधा, सड़क मार्ग को पुनः खोलने तथा मलबों को हटाने में मदद की थी। समय पूर्व एन डी आर एफ की तैनाती, राहत, खोज एवं बचाव अभियान ने समस्त फायलिन तूफान के दौरान एवं उपरान्त मृतकों की संख्या को 30 से नीचे ही रखने में कामयाबी हासिल की जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ एवं उसकी सहयोगी संस्थाओं ने समस्त जगत में सराहना की।



फायलिन चक्रवात में एन डी आर एफ द्वारा प्रभावितों को सुरक्षित स्थलों पर स्थापन

‘मालिन गाँव’ भूस्खलन आपदा : महाराष्ट्र के पुणे जिले की तहसील अम्बेगाँव का एक रिमोट गाँव था ‘मालिन’। ‘मालिन’ एक छोटा सा गाँव था जो कि शक्तिशाली ‘सायधारी’ की ढलान पर महाराष्ट्र के पश्चिमी-घाट पर स्थित था। यह एक भारी भूस्खलन की त्रासदी से प्रभावित हुआ।

30 जुलाई 2014 की प्रातः 8 बजकर 20 मिनट, पर भारी वर्षा के दौरान भारी भूस्खलन हुआ, जिसका आकार 100×150 मीटर था जिसमें ‘मालिन’ गाँव के 46 घर पूरी तरह से दब गये थे। प्रारम्भिक सूचना के अनुसार 158 लोग मलवे में दब गये थे, बाद में जिला प्रशासन ने यह संख्या 160 बतायी थी। गाँव के 40 परिवार प्रभावित थे तथा 9 लोग घायल थे, जिनमें 8 लोगों को एन डी आर एफ ने बचाया था।

30 जुलाई 2014 को प्रातः पुणे स्थित एन डी आर एफ के ‘कन्ट्रोल-रूम’ में सूचना प्राप्त होते ही, 50 सदस्यीय दल विनोद पी जोसेफ, सहायक समादेष्टा के नेतृत्व में सभी आवश्यक बचाव उपकरण एवं संसाधनों के साथ सुबह रवाना कर दिया गया था। दूसरे बचाव दल जिसमें 50 बचाव कर्मियों के साथ सच्चिदानन्द गावेड, उप समादेष्टा को घटनास्थल पर उसी दिन अपराह्न रवाना किया गया। घटना की गम्भीरता को देखते हुए पुणे स्थित एन डी आर एफ से अन्य 6 टीमों जिसमें 189 कार्मिक शामिल थे आलोक अवस्थी, कमाण्डेंट के नेतृत्व में घटना स्थल पर अपराह्न ही रवाना किया गया। इसके अतिरिक्त मुम्बई स्थिति 2 टीमों जिसमें 71 व्यक्ति शामिल थे, गौतम सरकार, सहायक समादेष्टा के नेतृत्व में मुम्बई से शाम रवाना हुई थी।

इस राहत, खोज एवं बचाव कार्य में एन डी आर एफ के कुल 360 कार्मिकों ने आलोक अवस्थी, कमाण्डेंट के नेतृत्व में 8 दिनों तक 24x7 बचाव कार्य जारी रखा था। आलोक अवस्थी तथा अन्य अधिकारियों ने स्थानीय निवासियों की मदद से 'घटना स्थल' का एक 'आई-स्केच' तैयार किया। तत्पश्चात् एक वृहद खोज एवं बचाव कार्य की योजना इस 'आई-स्केच' के आधार पर बनायी गयी। प्रारम्भिक चरण में खोज एवं बचाव अभियान के लिए श्वान का प्रयोग, तकनीकी खोज एवं जवानों के द्वारा स्वयं खोज की पद्धति अपनायी गयी। सतह पर खोज अभियान के समय एन डी आर एफ के जवानों ने 3 फिट नीचे कीचड़ में पीड़ितों को तलाशने का कार्य किया।

भूस्खलन वाली जगह पर पहाड़ी के ऊपर एन डी आर एफ ने 'आब्जर्वेशन-पोस्ट' स्थापित किया था। जिसके द्वारा किसी भी खतरे की स्थिति उत्पन्न होने पर झंडे, मेगाफोन तथा रेडियो सेट के द्वारा चेतावनी दी जा सके। इसके अतिरिक्त 'बुबरा' नदी के किनारे तथा 'दिम्भे बाँध' पर पीड़ितों की तलाश के लिए नाव से खोज अभियान भी चलाया गया था।

इस अभियान के दौरान जमीनी सतह को जे सी बी के द्वारा हटाया गया था जिससे पीड़ितों को खोजा जा सके। इन मलवों में पीड़ितों को तलाशना एन डी आर एफ के लिए एक कठिन कार्य था। इस दौरान 'नेत्र' (यू ए वी) के द्वारा घटना स्थल का हवाई सर्वेक्षण भी किया गया तथा तैयार की गयी फिल्म को 'भारतीय भू सर्वेक्षण' के वैज्ञानिकों को जाँच हेतु सौंप दिया गया था।



मालिन गाँव भूस्खलन आपदा में बचाव अभियान में जुटे एन डी आर एफ के सदस्य

पूरे राहत, खोज एवं बचाव अभियान के दौरान एन डी आर एफ ने 8 जीवित व्यक्तियों को बचाया था। इस बल द्वारा 146 मृत शरीर मलवो से निकाले गये थे। इसके अतिरिक्त 10 क्षत-विक्षत मानव अंगो को भी बरामद किया था जो चिकित्सको के मतानुसार 5 व्यक्तियों की थी। 58 जानवरों के शवों को भी बाहर निकाला गया था।

जिलाधिकारी पुणे ने 6 अगस्त की शाम राहत, खोज एवं बचाव कार्य समाप्त करने की घोषणा की थी। घटना स्थल पर खोज एवं बचाव कार्य करने वाली एन डी आर एफ एक अकेली संस्था थी। स्वतन्त्रता दिवस (15 अगस्त 2014) के अवसर पर महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल श्री आर के शंकर नारायण ने एन डी आर एफ को 'मालिन-गाँव' में किये गये बचाव कार्य के लिए सम्मानित किया था। कई स्वयं सेवी संगठनों तथा गैर सरकारी संगठनों ने बल के कार्मिकों के हाथों में राखी बाँधी थी।

जम्मू कश्मीर बाढ़ बचाव अभियान : सन् 2014 में आयी जम्मू एवं कश्मीर बाढ़ ने न सिर्फ प्रकृति की ताकत का प्रदर्शन किया, अपितु अपने देश की क्षमता की भी व्याख्या की कि हम इस प्रकार की प्राकृतिक आपदा से निपटने में कितने सक्षम हैं। 2 सितम्बर 2014 से जम्मू कश्मीर तथा आस-पास के राज्यों में भारी वर्षा प्रारम्भ हुई। लगातार हो रही मूसलाधार वर्षा होने के कारण इस राज्य की सभी नदियों में जलस्तर उफान पर पहुँच गया था तथा अपने किनारों को तोड़कर पानी शहरों व गाँवों की सड़कों में जा घुसा था। प्रत्येक जगह डूबने की स्थिति बन पड़ी थी। अचानक एवं तेजी से बढ़े जलस्तर ने भूमि स्तर से 15 फिट की ऊँचाई या कहीं-कहीं उससे भी ज्यादा प्राप्त कर ली थी। बाढ़ की स्थिति श्रीनगर जिले में श्रीनगर शहर, बेमिना, राजबाग, बट्मालू, टंकपुरा, एम आई जी, एल आई जी, अब्दुल, शाहेना कालोनी, बदगाम, किलगाम इत्यादि में बनी हुई थी। भारत सरकार ने इस स्थिति का आकलन करने के बाद इसे 'राष्ट्रीय आपदा' घोषित कर दिया था।

4 सितम्बर 2014 को दोपहर गृह मंत्रालय के निर्देश पर एन डी आर एफ की टीमों को बाढ़ में राहत एवं बचाव के लिए जाने का निर्देश प्राप्त हुआ। इस बाढ़ आपदा में राहत एवं बचाव अभियान में कुल 22 टीमों को बाढ़ प्रभावित इलाकों में भेजा गया था। त्वरित गति से राहत एवं बचाव कार्य प्रारम्भ हो सके, अतः 22 में से 20 टीमों को विशेष विमानों के द्वारा श्रीनगर उतारा गया था। एन डी आर एफ द्वारा इस अभियान में लगभग

1,60,000 लोगो को बचाया गया था। जम्मू में लगभग 24,437 लोगो को सुरक्षित जगहों पर स्थानान्तरित किया गया था।



एन डी आर एफ द्वारा जम्मू कश्मीर बाढ़ आपदा में बचाव कार्य की झलक

रणदीप कुमार राणा, उप महानिरीक्षक, एन डी आर एफ ने समस्त बचाव अभियान को संचालित किया था। वह एन डी आर एफ के चल रहे अभियान के विषय में सभी को अवगत भी करते थे। रणदीप कुमार राणा ने एफ एम रेडियो के माध्यम से सभी बाढ़ पीड़ित समुदाय को बाढ़ के दौरान आवश्यक बचाव एवं उपाय की जानकारी दी थी। इस प्रकार एन डी आर एफ सभी के मनः पटल पर छा गया था।

ओ पी सिंह, महानिदेशक ने स्वयं श्रीनगर जाकर राहत एवं बचाव कार्य का निर्देशन किया था। महानिदेशक नियमित रूप से एन डी आर एफ के जवानों से मिलते थे तथा उनकी मौके पर हौसला अफजाई करते थे। चलाये जा रहे राहत एवं बचाव अभियान के दौरान महानिदेशक सदैव नागरिक स्वयं सेवकों तथा पीड़ितों से मुलाकात करते थे तथा उनकी मुश्किलों एवं तात्कालिक आवश्यकताओं के विषय में जानकारी हासिल करते रहते थे। पीड़ितों की आवश्यकताओं को देखते हुए महानिदेशक ने एन डी आर एफ की छह नावों को 'फ्लोटिंग-हॉस्पिटल' के रूप में पीड़ितों के बीच कार्य करने का निर्देश दिया। यह चिकित्सालय बाढ़ में फँसे लोगों के पास जाकर उन्हें चिकित्सा सुविधा प्रदान करता था। महानिदेशक स्वयं नियमित रूप से शाम 7 बजे से 8 बजे तक बचाव कर्मियों को सम्बोधित करते थे तथा एन डी आर एफ के तैनात अधिकारियों को रात्रि 10 बजे से 11 बजे तक सम्बोधित करते थे जिसका परिणाम यह हुआ

कि सभी एन डी आर एफ के कर्मियों में एक ऊर्जा का संचार हुआ। एन डी आर एफ ने इस बचाव अभियान में सदैव बच्चों, बूढ़ों, महिलाओं तथा शिशुओं को प्राथमिकता दी। एन डी आर एफ ने कुल 2888 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की थी। श्रीनगर क्षेत्र के राज बाग, टंगपुरा, बक्शी स्टेडियम, पारिमपुरा, बेमिना, पहलगॉव, मलंगपुरा, बेगपुरा, चूरसू, अवान्तिपुरा, बागुमपुरा में चिकित्सा शिविर लगाये गये थे। महानिदेशक ने स्वयं भारत के गृह मन्त्री श्री राजनाथ सिंह के साथ 6 सितम्बर को श्रीनगर के अधिकांशतः प्रभावी इलाकों का दौरा किया। महानिदेशक ने पुनः 10 एवं 16 सितम्बर को श्रीनगर का दौरा किया तथा एन डी आर एफ द्वारा किये जा रहे राहत एवं बचाव कार्यों की समीक्षा की थी। इस अभियान में सर्वप्रथम एन डी आर एफ ने दूर-दराज तथा कठिन इलाकों के लिए 'आल-टरैन व्हेकिल' का प्रयोग किया था।

बिलासपुर सुरंग बचाव अभियान : 12 सितम्बर 2015 की रात्रि 8 बजे 'हिमालय कन्सट्रक्शन कंपनी' (आई एल एण्ड एफ एस) के तीन मजदूर सुरंग संख्या-4 में 'किरतपुर-मनाली फोर लेन प्रोजेक्ट' जो बिलासपुर जिले के तिहरा गाँव में स्थित है, में फँस गये थे। इन तीन मजदूरों में से दो मजदूर मनीराम एवं सतीश तोमर को एन डी आर एफ ने सुरक्षित 21 सितम्बर सायंकाल 4 बजकर 22 मिनट पर बाहर निकाल दिया था। ये मजदूर सुरंग में लगभग 212 घंटे फँसे रहे थे। इस बचाव अभियान में एन डी आर एफ के बचाव कार्मिकों ने पहाड़ी की चोटी से लगभग 42 मीटर लम्बवत नीचे सुरंग में प्रवेश कर इस बचाव अभियान को सफल बनाया। इसने घटना स्थल पर कन्सट्रक्शन कंपनी के 'आपदा प्रबन्धन समूह' के साथ बैठक की तथा यह निर्णय किया कि फँसे मजदूरों तक पहुँच या सम्पर्क का कार्य किस प्रकार सम्पन्न किया जाये। तदुपरान्त 16 सितम्बर 2015 को सुरंग में फँसे दो मजदूर सतीश तोमर व मनीराम से 4 इंच चौड़ा तथा 47 मीटर गहरे छिद्र बनाकर उनसे सम्पर्क साधा गया। इनसे कैमरा, माइक्रोफोन तथा स्पीकर से सम्पर्क साधा गया तथा खाने व पीने की चीजे भीतर पहुँचायी गयी। 18 सितम्बर की सायं एन डी आर एफ ने पाया कि उस समय एक मीटर चौड़ा वर्टिकल शाफ्ट की बोरिंग का कार्य शेष था।

एन डी आर एफ ने स्थिति की समीक्षा की तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सूर्यादय होते ही (19 सितम्बर को) बचाव कार्य किया जायेगा जिससे अति सकरे सुरंग से पीड़ितों को बाहर निकाला जा सके। 20 सितम्बर 2015 को एन डी आर एफ ने सीमित खतरा उठाते हुए बचाव कार्य प्रारम्भ कर दिया। 21 सितम्बर को एन डी आर एफ का पहला बचाव कर्मी उप निरीक्षक नरेश पाल शापट के द्वारा सुरंग में उतर गया। इसने सुरंग की बाहरी दीवारों के स्थायित्व का परीक्षण किया। वह एकदम नीचे पहुँचा तथा उसने पाया कि अन्तिम एक मीटर गहराई सिर्फ 8 इंच ही चौड़ा था। उसने नीचे अपने साथ ले गये 'चिपिंग-हैमर' के द्वारा उसे चौड़ा करने का प्रयास किया। वहाँ पर लगभग एक घंटे तक काम करने के पश्चात उसने बताया कि सतह एक कठोर चट्टान की थी तथा छिद्र को चौड़ा करने में समय लगेगा। इस जानकारी के फलस्वरूप छिद्र को और चौड़ा करने का प्रयास पुनः शुरू हुआ। 21 सितम्बर 2015 अपराह्न एन डी आर एफ के कांस्टेबल अशोक समोटा हाथ में 'आर आर सॉ' लेकर नीचे सुरंग में उतर गये। इसने 32 मिमी स्टील की राड को काटकर नीचे सुरंग में प्रवेश किया। वह नीचे 3 फिट पानी के भीतर पहुँचा तथा फँसे पीड़ित तक पहुँचने में सफलता पायी। कांस्टेबल अशोक समोटा ने फँसे व्यक्ति मनीराम को 'हार्निस' के साथ संलग्न कर दिया तथा ऊपर उठाने का संकेत दिया। फँसे व्यक्ति को बड़ी सावधानी तथा धीरे-धीरे 'विन्च' की मदद से ऊपर उठाया जा रहा था जिससे कि वह कही पुनः फँसने न पाये। कुछ समय पश्चात् मनीराम को सुरंग से बाहर निकाला गया। जिसका वहाँ उपस्थित जन समुदाय, प्रशासन तथा मीडिया ने गर्मजोशी



एन डी आर एफ द्वारा सुरंग से सुरक्षित निकाला गया पहला मजदूर मनीराम

से स्वागत किया। इसे अविलम्ब एम्बुलेन्स की मदद से बेहतर स्वास्थ्य प्रबन्धन के लिए चिकित्सालय भेज दिया गया। 'हार्सनेस' को पुनः सुरंग में नीचे उतारा गया तथा नीचे मौजूद कांस्टेबल अशोक समोटा ने दूसरे फँसे व्यक्ति सतीश तोमर को 'हार्निस' से संलग्न कर के ऊपर उठाने का संकेत दिया। कुछ समय पश्चात् सतीश तोमर को भी 'विंच व पुली' की मदद से बाहर निकाला गया।

कांस्टेबल अशोक समोटा ने सुरंग में और किसी के न फँसे होने



एन डी आर एफ द्वारा सुरक्षित बाहर निकाला गया दूसरा मजदूर सतीश तोमर

को सुनिश्चित किया। बचाव कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् कांस्टेबल अशोक समोटा को भी सुरंग से बाहर निकाला गया। बाहर आते ही इस जाबाँज, साहसिक बचाव कर्मी का तालियों की गड़गड़ाहट के साथ गर्म जोशी से स्वागत किया गया। एन डी आर एफ के इस सुरक्षित, सफल एवं साहसिक बचाव अभियान की सभी ने खूब सराहना की तथा इनकी बहादुरी की चर्चा सभी राष्ट्रीय मीडिया में भी की गयी। एन डी आर एफ के इस बचाव अभियान को जयदीप सिंह, कमाण्डेंट ने स्वयं घटना स्थल पर रहकर संचालित किया था।

चेन्नई बाढ़ आपदा : तमिलनाडु प्रदेश तथा पांडिचेरी मध्य अक्टूबर से नवम्बर 2015 के बीच उत्तर पूर्व मानसून से प्रभावित हुआ, जिसने भारत के कोरोमण्डल तटीय क्षेत्र में प्रवेश किया था। यह उत्तर पूर्व

मानसून अति सक्रिय रहा जिसने पिछले एक शताब्दी का सर्वाधिक वर्षा का रिकार्ड तोड़ दिया था। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि चेन्नई ने वर्ष 2015 में पिछले 100 वर्षों का सर्वाधिक गर्म तथा वर्षा वाला मानसून का अनुभव किया। अतिरिक्त भारी वर्षा के कारण यह मानसून दिसम्बर 2015 तक सक्रिय रहा था।

2015 में यह उत्तर पूर्व मानसून भारी वर्षा तथा विनाश की दृष्टि से दो चरणों में सक्रिय रहा था। प्रथम चरण 9 नवम्बर से 19 नवम्बर 2015 तथा द्वितीय चरण 1 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2015 की अवधि में अपना प्रभाव दिखाया था। प्रथम चरण में राहत एवं बचाव कार्य के लिए एन डी आर एफ की कुल 15 टीमों तैनात की गयी थी, जिनमें 11 टीमों अर्नाकुलम (तमिलनाडु) तथा 4 टीमों गुंटूर (आन्ध्र प्रदेश) से थीं। इन टीमों ने सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र, चेन्नई, मंथराकुप्पम नयेवेली, मारुथावल्लीपुरम, तिरवुल्लौर, कुदुरे कुड्डालौर, कांचीपुरम, पोन्नैरी, तम्बाराम, मनाली न्यू टाउन इत्यादि में तैनात रहकर राहत एवं बचाव कार्य किया। इन टीमों ने बचाव कार्य के साथ स्थानीय प्रशासन को राहत कार्यों में भी मदद की। इस प्रथम चरण की बाढ़ आपदा के दौरान एन डी आर एफ ने 4889 व्यक्तियों को सुरक्षित बचाया तथा 5 मृत शरीर को भी आपदा स्थल से बाहर निकाला था।

पुनः 1 दिसम्बर को संभावित बाढ़ के द्वितीय चरण के खतरे को



महिलाओं, बच्चों एवं बुजुर्गों का प्रथम बचाव करते एन डी आर एफ के सदस्य

देखते हुए एन डी आर एफ की 11 टीमों को चेन्नई, काँचीपुरम तथा तिरुवल्लूर जिलो में राहत एवं बचाव कार्य के लिए लगाया गया। बढ़ते हुए बाढ़ के प्रकोप को देखते हुए 2 दिसम्बर को एन डी आर एफ की अन्य 19 टीमों को बाढ़ बचाव अभियान के लिए समस्त तमिलनाडु के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तैनात किया गया। इस प्रकार 2 दिसम्बर तक एन डी आर एफ की 30 टीमों ने तुरन्त इस बाढ़ आपदा में राहत एवं बचाव कार्य प्रारम्भ कर दिया।

एन डी आर एफ की टीमों को चेन्नई के अतिरिक्त पांडिचेरी, मीनाम्बक्कम, अम्बातौर, थुराईपक्कम, काँचीपुरम, नेयवली, वल्लचेरी, नंदानम इत्यादि प्रभावित क्षेत्रों में तैनात किया गया था।

एन डी आर एफ की 30 टीमों के अतिरिक्त तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने केन्द्र सरकार से और मदद की मांग की तदुपरान्त 4 दिसम्बर को एन डी आर एफ की अन्य 20 टीमों को बाढ़ बचाव अभियान में उसी दिन उतारा गया। इस प्रकार 4 दिसम्बर तक चेन्नई आपदा में एन डी आर एफ की कुल 50 टीमों राहत एवं बचाव अभियान में जुटी थी। एन डी आर एफ की टीमें अर्नाकुलम (तमिलनाडु), गुंटूर (आन्ध्र प्रदेश), गुवाहाटी, पुणे, भटिंडा, पटना, गाजियाबाद व मुंडली (ओडिशा) से आयी थीं। अतिरिक्त 20 टीमों को चेन्नई, वेल्लूर, तूटीकोरिन, तिरुवन्नेलवी, तिरुवल्लूर, काँचीपुरम क्षेत्र में तैनात किया गया था।

चेन्नई हवाई अड्डा बाढ़ की वजह से बन्द कर दिया गया था। अतः एन डी आर एफ की टीम को विशेष वायुयान से नौसेना के एयरबेस आई एन एस राजाली (अर्नाकुलम) में उतारा गया था। एन डी आर एफ की इन 50 टीमों में 1715 बचाव कर्मी, 194 वोट, 1706 लाइफ जैकेट, 21 सेटलाइट फोन तथा 9 क्यू डी ए उपलब्ध थे। बाढ़ बचाव कार्य 1 दिसम्बर से 5 दिसम्बर 2015 तक चलाया गया तथा इस अभियान के द्वारा 22450 व्यक्तियों को बचाया गया था व 9 शवों को निकाला गया था।

बाढ़ बचाव कार्य उपरान्त एन डी आर एफ को राहत अभियान के



चेन्नई बाढ़ आपदा में राहत एवं बचाव करते एन डी आर एफ के सदस्य

उपयोग किया गया। यह राहत अभियान 12 दिसम्बर 2015 तक चलाया गया। एन डी आर एफ ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सा शिविर भी लगाया था। एन डी आर एफ के द्वारा इन शिविरों में 359 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गयी।

एन डी आर एफ एक के कुशल राहत एवं बचाव अभियान की प्रशंसा स्थानीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मीडिया ने की। पूरे बचाव अभियान में एन डी आर एफ ने अपनी दक्षता, संचार व्यवस्था, नेतृत्व, सहयोग एवं समन्वय के कौशल से समस्त भारत को मुरीद कर दिया था।

उपर्युक्त संदर्भित देश में किए गए प्रमुख खोज एवं बचाव कार्य के अतिरिक्त एन डी आर एफ के द्वारा किए गए राहत, खोज एवं बचाव की संख्या बहुतायत है जिनका विस्तार से वर्णन करने के लिए एक अलग विषयवस्तु की आवश्यकता महसूस होती है। प्रत्येक राहत, खोज एवं बचाव कार्य में सफलता के कीर्तिमान स्थापित किये हैं। एन डी आर एफ की कटिबद्धता तथा मानवता के प्रति समर्पण को देखते हुए, इस अनूठे बल के प्रति जन समुदाय तथा प्रशासन की अपेक्षा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। समय के साथ एन डी आर एफ की पहचान जन मानस के मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ती है। यही कारण है कि एन डी आर एफ की राष्ट्रीय उपलब्धियों को पंक्तिबद्ध करना कठिन होता है क्योंकि इस बल का उल्लेख किसी आपदा के लिए करते समय, दूसरी उपलब्धियों प्रकट होती है। अतः एन डी आर एफ द्वारा देश में राहत एवं बचाव कार्य

की गाथा एक अनवरत् प्रक्रिया है। मानवता की सेवा का हर नया कदम राहत एवं बचाव कार्य की दिशा में सिर्फ एक मील का पत्थर है। एन डी आर एफ द्वारा किये राहत एवं बचाव कार्य का उल्लेख एक नियंत्रित श्रृंखला है, जो प्रत्येक क्षण चलायमान है।

6. तैयारी ही बचाव है

मूलभूत उद्देश्य 'विशेष बचाव दल' के अतिरिक्त एन डी आर एफ जन समुदाय की आपदा से निपटने की क्षमता में निरन्तर वृद्धि के अभियान में भी लिप्त है। इस दिशा में यह बल अत्यधिक एवं उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। 'राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण' के तीन मुख्य स्तर की सोच के अर्न्तगत एन डी आर एफ देश के विभिन्न राज्यों जिनमें 'राज्य आपदा मोचन बल' (एस डी आर एफ) स्थापित है को प्रशिक्षण तथा उन्हें स्थापित व कार्यकुशल बनाने में सम्पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहा है। मुख्यतः तीन स्तर का आपदा प्रबन्धन इस प्रकार निर्धारित किया गया है एन डी आर एफ देश की सर्वोपरि संस्था है, जो आपदा स्तर-III की स्थिति में कार्य करती है, 'राज्य आपदा मोचन बल' जो कि राज्य स्तर-II की स्थिति में कार्य करने के लिए अपेक्षित है तथा जिले स्तर की आपदा-I की स्थिति में स्थानीय प्रशासन, पुलिस, फायर सेवा व होम गार्ड जैसी संस्था कार्य करने के लिए सक्षम होनी चाहिए। इन संस्थाओं व सेवाओं को दक्ष करने में एन डी आर एफ सहयोग प्रदान कर रही है।

एन डी आर एफ की गतिविधियाँ सिर्फ आपदा के दौरान तक ही सीमित नहीं हैं अपितु एन डी आर एफ सक्रिय रूप से अपनी जिम्मेवारी के इलाकों को भली भाँति जानने के लिए उन स्थलों पर स्वयं जाकर गहन अध्ययन करती है। जिससे प्रत्येक टीम अपने जिम्मेवारी के इलाको की प्राकृतिक चुनौतियों से भली भाँति अवगत रहे। इसके द्वारा प्रत्येक टीम अपनी जिम्मेवारी के इलाके की भौगोलिक संरचना, आपदा संभावित क्षेत्रों तक पहुँचाने के सभी रास्ते, स्थानीय उपलब्ध संसाधन तथा अन्य रसद सामग्री की प्रथम तात्कालिक जानकारी प्राप्त की जाती है तथा जानकारियों को समय के साथ-साथ संशोधित किया जाता है। यह सब जानकारियाँ आपदा के समय राहत एवं बचाव कार्य के दौरान वरदान सिद्ध होती है। जब एन डी आर एफ बचाव में लिप्त नहीं होती है तब वह स्थानीय समुदाय की क्षमता वृद्धि, तैयारी व बचाव जानकारी को तैयार रखने में जुटी होती है। सभी इस तथ्य को स्वीकार

करते हैं कि भारत में बेहतर आपदा प्रबन्धन के लिए स्थानीय समुदाय को आपदा निरोधी तैयारियों के लिए सजग एवं सतर्क रहना होगा क्योंकि स्थानीय समुदाय ही किसी भी आपदा के समय प्रथम बचाव कर्मी होता है। यदि स्थानीय लोग सही मायने में आपदा प्रबन्धन में प्रशिक्षित हैं तो किसी भी संभावित आपदा में जान-माल की क्षति को कम किया जा सकता है। किसी भी आपदा में स्थानीय जन समुदाय 'प्रथम बचाव दल' के रूप में कार्य करता है। इसी तथ्य को केन्द्र बिन्दु मानकर एन डी आर एफ विभिन्न राज्यों में स्थानीय जन समुदाय की आपदा प्रबन्धन की क्षमता वृद्धि तथा जन जागरूकता अभियान के अन्तर्गत प्राथमिकता के आधार पर प्रशिक्षण सम्पन्न कराती है तथा यह प्रयास निरन्तर चलता रहता है। पिछले नौ वर्षों में एन डी आर एफ के कार्मिकों ने 30.5 लाख लोगों को प्रशिक्षण देकर इस अभियान के अन्तर्गत तैयार किया है। इस बल के मुख्य लक्ष्य समूह ग्रामीण, स्थानीय समुदाय, स्कूल बच्चे तथा स्थानीय स्वयं सेवी होते हैं जो राज्य सरकार द्वारा चयनित होते हैं। एन डी आर एफ देश के विभिन्न भागीदार तत्वों एवं संगठनों के साथ मिलकर एक दूसरे की क्षमता वृद्धि हेतु 'संयुक्त अभ्यास' समय-समय पर तथा विभिन्न स्थितियों में आयोजित करते रहते हैं जिससे सभी की क्षमता में निरन्तर वृद्धि होती रहे। ये अभ्यास, औद्योगिक आपदा, शहरी बाढ़, चक्रवात एवं तूफान, भूकम्प, रेल दुर्घटना एवं 'रासायनिक जैविक विकिरण एवं नाभकीय' आपात स्थिति इत्यादि पर आधारित होते हैं। इस प्रकार अभी तक एन डी आर एफ देश भर में कुल 615 'संयुक्त अभ्यास' की भागीदार बनी है।

जनवरी 2016 तक एन डी आर एफ ने कुल-2369 फैमैक्स तथा 'सामुदायिक जागरूकता अभियान' विभिन्न राज्यों में चलाया है जिसके माध्यम से 40,77,388 लोगों को आपदा बचाव, तैयारी एवं प्रबन्धन के लिए तैयार किया गया है। अपनी तथा सभी सहयोगी संस्थाओं की क्षमता वृद्धि एवं तैयारी परखने के लिए एन डी आर एफ ने अब तक कुल-615 संयुक्त अभ्यास कराये हैं तथा उनमें भाग लिया है जिसके द्वारा 3,88,895 लोगों को प्रशिक्षित किया गया है तथा उनकी क्षमता में वृद्धि की गयी है। एन डी आर एफ ने 1082 खोज एवं बचाव अभियान में भागीदारी की है तथा कुल 4,73,497 मानव जीवन को बचाया तथा 2,262 शवों को निकालकर उनके परिजनो के सुपुर्द किया है।

एन डी आर एफ ने अभी तक बहुत से संयुक्त अभ्यास में हिस्सेदारी की है, जिससे सभी साझीदार संस्थाओं को प्रशिक्षित किया जा सके कि



मानवदूत के पर्याय एन डी आर एफ के सदस्य

आपदा के समय किस प्रकार बेहतर तरीके से उससे निपटा जा सके चाहे वह प्राकृतिक तथा मानव जनित ही आपदा क्यों न हो। आपदाओं जैसे- बाढ़, भूकम्प, स्कूल बचाव, रेल आपदा, बहुमंजिल इमारत, ध्वस्त इमारत में खोज एवं बचाव, प्राथमिक उपचार, 'रासायनिक जैविक विकिरण तथा नाभकीय' आपात स्थित पर आधारित विषयों पर राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त अभ्यास आयोजित किया है, जिसके द्वारा लगभग अब तक 38 लाख से ज्यादा नागरिक लाभान्वित हुए हैं। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप आज एन डी आर एफ देश की अग्रणी आपदा निरोधी संस्था के रूप में जानी जाती है। चाहे शांति का समय हो या त्रासदी की घड़ियाँ, सभी समयों पर एन डी आर एफ के सदैव सजग और देशवासियों के प्रति समर्पित रहने के कारण ही आम नागरिक आज राहत की साँस ले पा रहा है।



नेपाल भूकम्प में कंक्रीट काटकर प्रवेश द्वार बनाते एन डी आर एफ के सदस्य

एन डी आर एफ - भविष्य की ओर

1. आत्मविश्लेषण

प्राकृतिक आपदाएँ हर साल दुनिया में तबाही मचाती हैं। धरती के अस्तित्व के साथ ही इनके आने का क्रम भी जारी है। अब प्राकृतिक आपदायें न केवल काफी ज्यादा संख्या में आ रही हैं बल्कि उनकी तीव्रता भी भयावह हुई है। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इसके जिम्मेदार हम ही हैं, लिहाजा इनसे बचने और बचाने की चिंता हमें करनी चाहिए। भारत अपनी भू-जलवायु एवं सामाजिक आर्थिक विशिष्टताओं के कारण, प्राकृतिक एवं मानव जनित आपदाओं की दृष्टि से एक अति संवेदनशील देश है। देश के अधिकांश राज्य आपदा प्रवृत्ति हैं। लगभग 58.6 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र कम या अधिक प्रबलता के भूकम्प के प्रति संवेदनशील है। 4 करोड़ हेक्टेयर भूमि (सम्पूर्ण जमीन का 12 प्रतिशत) बाढ़ और नदियों के क्षरण से प्रभावित है। कुल 75.16 किमी लम्बी समुद्री सीमा का लगभग 5700 किमी क्षेत्र तूफान और सूनामी की दृष्टि से अति संवेदनशील है। कृषि योग्य भूमि का लगभग 68 प्रतिशत हिस्सा सूखे से प्रभावित है। देश के पर्वतीय क्षेत्र भूस्खलन व हिमस्खलन की दृष्टि से अति संवेदनशील है।

प्राकृतिक आपदा सार्वभौमिक सत्य है। पहले भी आती थी, आज भी आ रही है और आगे भी आते रहने का अनुमान है। मानवीय गतिविधियों के चलते इनकी प्रवृत्ति और तीव्रता में आगे चलकर वृद्धि से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। इनसे केवल सचेत रहकर ही जान-माल के नुकसान को कम किया जा सकता है। नेपाल और भारत के हिस्सों में आए भूकम्प ने मानवता की चूल्हे हिला कर रख दी थी। त्रासदी ने अपनी आंशिक ताकत दिखायी और पूरी दुनिया को सकंभ में डाल दिया था। अपने एक ही झटके से पूरी बस्ती को उजाड़ दिया था। सबके पीछे छोड़ दिया था चीत्कार, रुदन, क्रंदन, बेहाली और बेबसी। इंसानियत को मिली हर चोट से उसने सीखा है। तभी इंसानी सभ्यता न सिर्फ अपना अस्तित्व बचाए हुए है बल्कि समय के साथ अधिक पुष्पित और पल्लवित हुई है। हमने ऐसी आपदाओं से बचने के लिए आपदा प्रबंधन तंत्र विकसित किये हैं। इसी के बूते कुछ दशक पहले ऐसे हादसों में मारे जाने वाले

की संख्या का ग्राफ घटकर बहुत नीचे पहुँच चुका है। अब आवश्यकता इस ग्राफ को शून्य करने की है। इसके लिए सरकार से लेकर समाज तक को जागरूक होना पड़ेगा। ऐसी आपदाओं के समय जब आम लोग अपनी हिफाजत का हुनर खुद सीख जायेंगे तो सब कुछ ठीक होने में देर नहीं लगेगी। भूकम्परोधी भवन निर्माण तकनीकी से दुनिया के कई देशों में आपदाओं को शिकस्त देने का काम किया जा रहा है। इस विपत्ति से सर्वाधिक प्रभावित देश होने के कारण, हमें भी आम लोगों से लेकर शासन-प्रशासन तक में चेतना जगानी होगी। ऐसे में भूकम्प जैसी आपदाओं से नुकसान को न्यूनतम करने की विधा सीखने की जरूरत आज हम सब के लिए एक बड़ा मुद्दा है।

भूकम्प से किसी शहर के प्रभावित होने की दर उसके बांशिदो, सरकारों, पड़ोसियों की इमारत और नागरिक आधार भूत ढाँचे की तकनीकी पर निर्भर करती है। इस मामले में 'टोक्यो' और 'सेन फ्रांसिस्को' जैसे शहरों से सबक लिया जा सकता है। वहाँ नियमित रूप से ऐसे झटके आते रहते हैं, लेकिन भूकम्प रोधी इंजीनियरिंग की बदौलत इमारतें हिलती तो हैं लेकिन ढहती नहीं। लोगों को इस तरह की इमारत की माँग करनी चाहिए और इसकी दर कैसे कम की जा सकती है इस पर विचार होना चाहिए। आपदा प्रबंधन के ज्ञान से आम नागरिक अभी भी पूरी तरह से अनजान हैं। आपदा के समय बचाव के लिए किस प्रकार के कदम उठाये जाने चाहिए, इससे आम नागरिकों को अभी भी जागरूक कराने की आवश्यकता है। यही कारण है कि किसी प्रकार की आपदा आने पर लोग बचाव के लिए सरकारी तंत्र का मुँह देखने लगते हैं। अपने ही देश में नहीं बल्कि पूरे विश्व में आपदा प्रबंधन की स्थिति में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। अगर ऐसा होता तो नेपाल और भारत में आए भूकम्प से क्षति को कम किया जा सकता था। ऐसे में विश्व के सभी देशों को इस विषय पर मिलकर काम करने की जरूरत है, जिससे आपदा आने पर होने वाले क्षति को न्यूनतम किया जा सके। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ व मानव निर्मित कारणों के चलते केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में आपदाओं का खतरा बढ़ रहा है। इसका सामना करने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की एक रिपोर्ट के अनुसार अतीत में आए भूकम्प से 95 प्रतिशत मौतों के लिए प्रमुख रूप से इमारतों की खराब अभियन्त्रिकी जिम्मेवार हैं। यह स्थिति बताती है कि हल्के से लेकर

उच्च तीव्रता वाले भूकम्प में हमारी इमारतें कितनी तैयार हैं। 2001 में गुजरात भूकम्प तथा 2005 में कश्मीर भूकम्प में लाखों इमारतें नष्ट हुई थी। इन दोनों भूकम्पों समेत हाल में नेपाल के भूकम्प क्षेत्र में आबादी की बनावट बहुत सघन नहीं थी, लेकिन फिर भी हजारों लोग मारे गये। यदि इतनी तीव्रता का भूकम्प भारत के महानगरों में से एक में घटित हो तो तबाही का विस्तार कितना भयावह होगा, कल्पना मात्र से ही हम सिहर उठते हैं। निकट भाविष्य में भूकम्प की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। अब सवाल उठता है कि हम इसके लिए कितने तैयार हैं। यह धारणा है कि भूकम्प के दौरान अधिकांश नुकसान जमीन के कंपन के कारण होता है। जमीन में कंपन एक जटिल और प्राकृतिक घटना है। ऐसे में इमारतों की इंजीनियरिंग ऐसी होनी चाहिए कि वे उस झटके को सह सकें। जब किसी इमारत के नीचे जमीन हिलती है तो इमारत को नष्ट होने के बजाय हिलना चाहिए।



नेपाल भूकम्प के दौरान एक नष्ट इमारत, जो ध्वस्त नहीं हुई थी

आम धारणा है कि ऐसी परिस्थितियों में बड़ी इमारतें छोटे भवनों की तुलना में अधिक खतरनाक होती हैं, लेकिन वास्तव में सच्चाई इसके विपरीत है। लम्बी संरचनाएँ अधिक लचीली होती हैं। वे भूकम्प के कंपन को अवशोषित कर अपनी पूरी ऊँचाई में वितरित कर देती हैं। इससे भूकम्प का प्रभाव कमजोर हो जाता है। इसके विपरीत छोटी इमारतों के मामले में भूकम्प की शक्ति, स्थान के अभाव में संकेद्रित हो जाती है, क्योंकि ऊर्जा को निकालने का स्थान नहीं मिलता। फलस्वरूप इमारत ढह

जाती है। किसी संरचना की डिजाइन और इंजीनियरिंग की तरह उसके नीचे की जमीन भी महत्वपूर्ण होती है। रेतीली मिट्टी या भराव क्षेत्र की तुलना में 'आधार-शैल' (बेडरॉक) में कंपनी को अवशोषित करने की अधिक क्षमता होती है। इसलिए मुलायम मिट्टी की तुलना में सॉलिड-रॉक पर बने भवन कम प्रभावित होते हैं। यदि मुलायम मिट्टी में जल भी हो तो भूकम्प में इनकी स्थिति और भी कमजोर हो जाती है। इस प्रक्रिया को द्रवीकरण कहते हैं। ऐसी इमारतें भूकम्प में ढह जाती हैं। वर्तमान में इन इंजीनियरिंग और जमीनी सतह समस्याओं से निपटने के लिए देश में सुदृढ़ सीस्मिक कोड और दिशा-निर्देश हैं। 2001 के गुजरात भूकम्प के बाद इस तरह की आंशका वाले शहरों में नई इमारतों के निर्माण को इससे सुरक्षित बनाने के लिए इन नियमों को अनिवार्य बनाया गया था लेकिन इनका क्रियान्वन प्रभावी ढंग से नहीं होने के कारण हमारी इमारतों का बहुत बड़ा भाग असुरक्षित है। सन् 2006 की 'तेजेन्द्र खन्ना समिति' में पाया गया कि देश की राजधानी के भीतर 70 से 80 प्रतिशत इमारतों में बिल्डिंग और विकास नियंत्रण नियमन का उल्लंघन है। यदि हमारी राष्ट्रीय राजधानी में यह स्थिति है तो अन्य शहरों की दशा के बारे में सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। नये निर्माण के लिए सीस्मिक कोड अच्छे हैं लेकिन मौजूदा बिल्डिंगों को सुरक्षित रखने के लिए उसमें नये संयोजन की बड़ी जरूरत है। दिसम्बर 2014 में, सर्वोच्च न्यायालय ने व्यवस्था की थी कि जिन इमारतों में 100 से अधिक लोग रहते हैं, वहाँ पर स्पष्ट रूप से यह लिखा होना चाहिए कि वह भवन भूकम्परोधी है। भूकम्प से बचने का सबसे सुरक्षित तरीका यही है कि सीस्मिक कोड प्रावधानों का नए और मौजूदा भवनों के निर्माण में प्रभावी क्रियान्वन किया जाये।

भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदा से भवन निर्माण में कुछ आवश्यक उपायों को अपनाकर कैसे बचा जा सकता है, इसका उदाहरण जापान है। दुर्भाग्य से भारतीय उपमहाद्वीप में भवन निर्माण में भूकम्प रोधी तकनीकी की अनदेखी होती है। यह अनदेखी इसलिए और अधिक परेशान करने वाली है, क्योंकि यह क्षेत्र भूकम्प की दृष्टि से दुनिया के सर्वाधिक खतरनाक इलाकों में गिना जाता है। विडम्बना यह है कि भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल जैसे देशों में मकानों के निर्माण के दौरान इस पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। चूँकि आम जनता का एक बड़ा हिस्सा भूकम्प रोधी तकनीकी को व्यर्थ का खर्चा मानता है। इसलिए इस तकनीकी को लेकर अपेक्षित जागरूकता भी नहीं हो पा रही है।

नेपाल को यह अहसास हुआ कि भवन निर्माण में भूकम्प रोधी तकनीकी की कितनी उपयोगिता होती है। नेपाल जैसा ही अनुभव बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी किया जा रहा है। समस्या केवल यह नहीं है कि भवन निर्माण में भूकम्परोधी तकनीकी की अनदेखी होती है, बल्कि यह भी है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में भवनों को बनाने में अन्य नियमों कायदों का भी ध्यान नहीं रखा जाता। सस्ता घर बनाने अथवा अधिक से अधिक लाभ कमाने की चाहत में हर कोई बड़ी आसानी से सुरक्षा से समझौता कर लेता है। आज ऐसा कोई शहर अथवा कस्बा दूढ़ना मुश्किल है जहाँ जर्जर, अवैध और नक्शे के विपरीत बने मकानों की बाढ़ न आ गयी हो। नेपाल में आये भूकम्प ने पूरे उपमहाद्वीप में सरकारों, स्थानीय प्रशासन तथा आम जनता को जागने का अवसर दिया है।

शहरी आबादी के भीतर किराये पर मकान देने व किराये के उद्देश्य से भवन निर्माण करने की जोर पकड़ती प्रवृत्ति ने भवन निर्माण कोड़ का मजाक बना कर रख दिया है। धन प्राप्त करने के लालच ने सभी गुणवत्ता के मानदण्डों की खिल्ली उड़ा कर रख दिया है। सीमित संसाधनों एवं अपर्याप्त स्थान वाली इमारत में अधिकाधिक किरायेदार रखने की होड़ ने समाज को सदैव गंभीर खतरे में जीने को विवश कर दिया है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण काठमाण्डू में 'शोभा भगतवी ब्रिज' के किनारे पर ध्वस्त बहुमंजिला इमारत में देखने को मिला था। इस तरह की कई संरचनाये थी जो भूकम्प में ध्वस्त हुई थी।

भूकम्प संभावित क्षेत्र में यह सही समय है कि अब कंक्रीट इमारतों के बजाय हल्के भार वाले 'प्रीफैब्रिकेटेड' मकानों के निर्माण पर बल देना चाहिए जैसा कि जापान तथा उत्तर चीन में है। इसके लिए स्थानीय समुदाय को अपनी मनः स्थिति में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इस तरह के मकान के निर्माण में कम लागत व समय लगता है। सरकार को भी इस प्रकार के भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि संभव हो तो इस प्रयास के लिए कुछ छूट भी दी जाये। व्यावसायिक समुदाय को भी इस प्रकार की संरचना में अपना व्यवसाय चलाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

भूकम्प से निपटने के मामले में तमाम तरह के सबक सीखने की आवश्यकता है और ये सब सीखे जायेंगे जब सरकारी तंत्र के साथ आम लोग भी सजग होंगे। यह हर्ष का विषय है कि भारत आपदा प्रबंधन

की कसौटी पर खुद को दिन प्रतिदिन बेहतर करता जा रहा है। भारत सरकार ने जिस तत्परता व कटिबद्धता के साथ नेपाल में मदद पहुँचाई और लोगो को बचाने का अभियान छेड़ा था, उसकी प्रशंसा सभी ने की। भारत के राहत एवं बचाव अभियान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खूब सराहना मिली। भारत ने नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य युद्ध स्तर पर किया था। नेपाल में चलाया गया भारत का बचाव अभियान इसलिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण था कि इसके द्वारा नेपाल को यह अहसास करने के लिए विवश होना पड़ा कि उसका असली मित्र भारत ही है।



एन डी आर एफ की कटिबद्धता की एक झलक

सर्वाधिक चिंता का विषय यह है कि भूकम्प से पहले की जागरूकता अभी भी लोगो में देखने को नहीं मिल रही है। देश के एक बड़े भूभाग में अभी भी भवन भूकम्प के लिहाज से सुरक्षित नहीं है। तमाम विकास प्राधिकरणो, स्थानीय निकायो व पंचायतो को निर्देशित किया जाना चाहिए कि भवन निर्माण से पहले भूकम्परोधी प्रमाण पत्र अवश्य ले लिया जाये। भूकम्प के लिहाज से अधिक संवेदनशील 'जोन पाँच' व 'जोन चार' में तो भवन निर्माण से पहले सम्बंधित क्षेत्र की धरातलीय क्षमता का भी आकलन कर लिया जाना चाहिए। उसी के मुताबिक भवनो की ऊँचाई के मानक बनाये जाने चाहिए व उसे सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। जो भवन बन चुके हैं, उन्हें 'रेट्रोफिटिंग' तकनीकी के आधार पर मजबूती प्रदान की

जानी चाहिए। इसमें कुल भवन की लागत का 10 से 20 प्रतिशत तक ही खर्च आता है। भूकम्प के प्रति आम नागरिक को जागरूक करने का कार्य हम सभी का है। विभिन्न स्तर पर प्रचार व प्रसार के द्वारा जनता को बताया जाना चाहिए कि भूकम्प से पहले व भूकम्प के समय क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इसके लिए नेपाल में आये भूकम्प को उदाहरण के तौर पर लेना चाहिए। 18वीं सदी से ही अब तक मध्य नेपाल तीन शक्तिशाली भूकम्प झेल चुका है। पूरी हिमालयन बेल्ट में भविष्य में बड़े भूकम्प आने की आशंका है। वैज्ञानिक कई ऐसे क्षेत्र चिन्हित कर चुके हैं, जहाँ लम्बे समय से भूगर्भीय ऊर्जा बाहर नहीं निकली है। भूकम्प का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता, न ही इसे रोका जा सकता है। हम सिर्फ इससे बचाव व कम नुकसान के रास्ते तलाश सकते हैं ताकि आपदा न बन सके विपदा।

काठमाण्डू में भूकम्प के बाद नई और पुरानी इमारतों की हालत देखने के बाद स्पष्ट है कि हमारे यहाँ के हालात भी उससे अलग नहीं हैं। इस हालात में विशेषज्ञों की राय में कम से कम अपनी इमारत की यथास्थित को जानने के लिए 'रेपिड विजुअल स्क्रीनिंग तकनीकी' का प्रयोग किया जा सकता है।

इस संदर्भ में एक अच्छी पहल यह हुई है कि पूरे विश्व के कुल 184 देशों ने मार्च 2015 के महीने में जापान में एक बैठक की और भूकम्प समेत आने वाले किसी भी आपदा के लिए मिलजुल कर काम करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। इस बैठक से यह बात उभर कर सामने आई कि दक्षिण एशिया क्षेत्र में कभी भी कोई बड़ी आपदा आ सकती है। ऐसी स्थित में जान माल की क्षति की संभावना कम से कम हो और स्थितियों से प्रभावी रूप से निपटा जा सके, इसके लिए सभी देशों ने मिलजुल कर काम करने और सहयोग करने की बात कही। यह एक अच्छा संकेत है, क्योंकि वैश्विक स्तर पर आपदाओं को लेकर अभी तक ऐसे किसी सहयोग और संगठन का अभाव था। इस अभाव को दूर करने की जरूरत एक लम्बे अर्से से महसूस की जा रही थी। आपदाओं से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 'एन डी आर एफ' और राज्य के स्तर पर 'एस डी आर एफ' (राज्य आपदा मोचन बल) के गठन ने बहुत ही अच्छे नतीजे दिये हैं। केन्द्र और राज्य सरकारें आपदा की किसी भी स्थित में मिलजुल कर कार्य करती हैं। भारत में सघन आबादी वाले क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ यदि कभी इतनी अधिक तीव्रता वाला भूकम्प आए तो स्थितियाँ बड़ी भयावह होंगी,

क्योंकि यहाँ पहले से बनी तमाम इमारतें जहाँ जर्जर और कमजोर स्थिति में हैं, वही नयी इमारतों को बनाते समय इसमें पर्याप्त भूकम्परोधी मानकों का अनुपालन शायद ही किया जाता है। इसके लिए हमें पुराने भवनों का सर्वे करना होगा और यह जानना होगा कि उनमें कितने रहने योग्य हैं तथा भूकम्प जैसी किसी स्थिति का सामना करने योग्य है भी या नहीं। आपदा के समय चलाए जाने वाले राहत कार्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि हम पहले से ही अपनी तैयारी को मजबूत रखें। ऐसा करने से बड़े पैमाने पर जान-माल की क्षति को रोका जा सकता है। हमें अपनी तैयारी को दीर्घकालीन और तात्कालिक रूप से विभाजित करके देखना होगा। इसके लिए हमें व्यापक रणनीति तैयार करनी होगी, इसमें सार्क देशों के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर और स्थानीय स्तर पर आपदा से निपटने की योजना होनी चाहिए। भूकम्प से सम्बन्धित शोध के मुताबिक बड़े भूकम्पों के आने का 50 साल का चक्र पूरा हो रहा है इसलिए अति संवेदनशील क्षेत्रों में हमें विशेष सतर्कता और तैयारी रखनी होगी। प्राकृतिक और मानवीय गतिविधियों के कारण हिमालयी क्षेत्र में भूकम्प की संभावना बनी हुई है। धरती के अंदर कुछ ऐसे बदलाव हो रहे हैं, जो भूकम्प सरीखी त्रासदी को जन्म देते हैं। हमें इन प्रभावों को समझना होगा और उनके अनुरूप अपनी तैयारी करनी होगी। भारत ने पिछले कुछ वर्षों में अपने आपदा प्रबन्धन का कौशल दुनिया को दिखाया है। यह सिलसिला आगे भी इसी तरह जारी रहना चाहिए। किसी देश की ताकत की पहचान इससे भी होती है कि वह आपदाओं का सामना किस तरह करता है और कितना सफल होता है।



आपदा की हर स्थिति में खोज एवं बचाव कार्य में निपुणता की एक झलक

नेपाल भूकम्प में एन डी आर एफ द्वारा किया गया राहत एवं बचाव कार्य बल को सर्वोत्तम बनाने की दिशा में एक कदम हैं। प्रत्येक बड़ी आपदा हमें अपनी दक्षता एवं कार्यकुशलता को परखने का एक अवसर प्रदान करती है। अतः हमें नेपाल भूकम्प में किये गये राहत एवं बचाव अभियान की समीक्षा करनी चाहिए। इस दौरान आने वाली दिक्कतों एवं मुसीबतों की व्याख्या तथा आत्मविश्लेषण करना चाहिए, जिससे एन डी आर एफ समय के साथ-साथ और सक्षम बन सके। हमारी कोशिश इस प्रकार होनी चाहिए कि प्रत्येक आपदा के दौरान राहत एवं बचाव कार्य में इससे पूर्व बचाव अभियान में आयी अड़चनों से निपटने की तैयारी हो। प्रत्येक आपदा कार्य हमें कुछ और सीखने के लिए एक आधार देता है। हर आपदा एन डी आर एफ के लिए एक अनूठी होती है। जो हमें अपनी क्षमता व दक्षता की तैयारी व वृद्धि के लिए प्रेरित करती है। नेपाल भूकम्प में राहत एवं बचाव कार्य के दौरान एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम का प्रयास यह था कि किसी भी बचाव कर्मियों को बचाव कार्य के दौरान चोट न लगे तथा वह हर परिस्थितियों में सुरक्षित रहे। नेपाल भूकम्प के दौरान किये गये राहत एवं बचाव कार्य को इस बल के साहसी जवानों ने निर्विघ्न चलायमान रखा था। जबकि परिस्थितियाँ बिल्कुल प्रतिकूल थी तथा कई दिनों तक बचाव अभियान 24x7 चलाया गया था। एन डी आर एफ के जवानों ने उस आपदा स्थल पर विशेष रूप से कार्य किया जिन जगहों पर अन्य अंतर्राष्ट्रीय बचाव दल ने 'स्वयं के खतरे की संभावना' का तर्क देते हुए कार्य करने से इंकार कर दिया था। एन डी आर एफ के जवानों ने अपने शरीर के लिए उत्पन्न खतरो की परवाह न करते हुए, मानवता की सेवा की मिसाल कायम की थी।



मानवता की सेवा के लिए संतुलित खतरा उठाने की काबिलियत की एक झलक

इस राहत एवं बचाव कार्य से हमने यह सीखा है कि किस प्रकार सुरक्षित रहते हुए, विपरीत परिस्थितियों में भी राहत एवं बचाव कार्य को भविष्य में भी जारी रखा जाये। यह हमारी तैयारी का एक अध्याय होना चाहिए। प्रत्येक परिस्थितियों में समय महत्वपूर्ण होता है, जितना समय गँवाया जाता है उतना ही पीड़ित को जीवित निकालने की संभावना क्षीण होती जाती है। इस प्रकार नेपाल भूकम्प ने तत्परता, सभी संसाधनों की उपलब्धता एवं उनकी कार्यकुशलता का पाठ पढ़ाया है। इस कार्य में दिन- रात थकान व आराम की परवाह नहीं करनी पड़ी। इस लक्ष्य को एन डी आर एफ ने नेपाल भूकम्प के खोज एवं बचाव कार्य के दौरान सिद्ध किया था। खोज एवं बचाव कार्य को अनवरत जारी रखने के लिए प्रयोग किये जाने वाले संसाधनों में तथा उनके पुर्जों में टूट-फूट भी हो सकती है। अतः इस दिशा में भी हमें सदैव तैयार रहना पड़ेगा, जिससे हमारी क्षमता में विराम न लग सके। कठिन व दुर्गम इलाकों में बचाव कार्य को जारी रखने के लिए एन डी आर एफ के कार्मिकों को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सुदृढ़ रहना पड़ेगा तभी हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मानदण्डों पर खरे उतर सकते हैं। यह सीख एन डी आर एफ ने नेपाल खोज एवं बचाव अभियान के दौरान गाँठ बाँध ली थी।

नेपाल भूकम्प के खोज एवं बचाव कार्य के दौरान हमें ध्वस्त इमारतों में प्रवेश द्वार बनाने की आवश्यकता पड़ रही थी। अतः ध्वस्त इमारतों को तात्कालिक स्थायित्व प्रदान करने के लिए 'शोरिंग' की जरूरत थी, जिससे बचाव कर्मी सुरक्षित प्रवेश कर सके तथा बचाव कार्य उपरान्त बाहर सुरक्षित निकल सके। अतः परिस्थितियाँ विवश करती थी कि 'शोरिंग' के लिए संसाधन घटना स्थल पर पड़े मलवों में से ही चुना जाये। यह संसाधन न हमारे पास था और न ही स्थानीय प्रशासन हमें उपलब्ध करा सकने की स्थिति में था। अतः मौजूदा हालात में उपलब्ध संसाधनों से ही 'शोरिंग' करने की दक्षता ने एन डी आर एफ की कार्यकुशलता को चरम सीमा पर पहुँचाया था। इस प्रकार की दक्षता के साथ हमें भविष्य के लिए भी तैयार रहना होगा।

शुरुआती दिनों में लगातार तेज बारिश तथा बाद के दिनों में रुक-रुक कर बारिश ने भी एन डी आर एफ के मनोबल की परीक्षा ली थी। परन्तु हमारे जवानों का समर्पण एवं उत्साह चरम पर था। वे तनिक भी डिगे नहीं। इस अदम्य साहस का परिचय हमें भविष्य में भी देना होगा। इसलिए एन डी आर एफ को मानसिक रूप से कठोर एवं सुदृढ़ बनाये

रखने पर विशेष बल दिया जाता है। भीषण आपदा के दौरान स्थानीय प्रशासन की तरफ से किसी भी प्रकार की मदद की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। अतः एन डी आर एफ को भविष्य में भी नेपाल भूकम्प खोज एवं बचाव कार्य की तरह ही सम्पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर रहना होगा, यही समय की माँग है।



नेपाल में गौरी शंकर गेस्ट हाउस में बचाव अभियान के दौरान शोरिंग का एक दृश्य

नेपाल भूकम्प में खोज एवं बचाव अभियान के दौरान एन डी आर एफ ने लगातार कई दिनों तक बचाव कार्य किया। अतः 'एक बार प्रयोग हेतु' बने 'हैन्ड ग्लव्स' तथा 'फेस-मास्क' कुछ ही अन्तराल में समाप्त हो चुके थे। यह आवश्यक वस्तुएँ पर्याप्त मात्रा में स्थानीय बाजारों में भी उपलब्ध नहीं थी। अतः विवश होकर बचाव कार्मियों को कई दिनों तक इन्हीं से काम चलाना पड़ा था जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त ही हानिकारक था। संतोष का क्षण तब आया जब निरन्तर बचाव अभियान के उत्तरार्ध में कई स्वयंसेवी संगठन, गैर सरकारी संगठन इस दिशा में आगे आये तथा उन्होंने धूम-धूम कर प्रत्येक खोज एवं बचाव कार्य स्थल पर पहुँचकर मुफ्त में 'फेस-मास्क' तथा 'लेटेक्स-ग्लव्स' वितरित किया था। एक-दो दिन पश्चात् हमारे खोज एवं बचाव कर्मियों को शुद्ध पेय जल की भी समस्या का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि साथ लाया गया पीने का पानी समाप्त हो चुका था। परन्तु कुछ दिन पश्चात् कई गैर-सरकारी संगठन एवं स्वयंसेवीयो ने स्थान-स्थान पर जाकर पानी

की बोटल मुहैया करायी थी। एन डी आर एफ द्वारा निरन्तर व निर्विघ्न बचाव कार्य जारी रखते समय शवों की तीव्र दुर्गन्ध का सामना करना पड़ रहा था। मानवीय संवेदना तथा कटिबद्धता की मिसाल कायम करते हुए एन डी आर एफ के साहसी जवानों ने उन स्थलों पर बचाव कार्य उसी तन्मयता के साथ जारी रखा, जहाँ पर कुछ सेकेण्ड ठहरना भी मुश्किल था। समय के साथ यह दुर्गन्ध और भी तीक्ष्ण होती गयी। लेखक द्वय को जीवन में प्रथम बार इस दुर्गन्ध का अहसास हुआ था। इस प्रकार बचाव स्थल प्रदूषित हो गया था, परन्तु साधुवाद, उन गैर-सरकारी संगठनों एवं स्वयंसेवीयों का जो जगह-जगह पर फिनायल का छिड़काव कर रहे थे। कुछ विदेशी स्वयं सेवी आपदा स्थल पर चल रहे बचाव अभियान में कोई व्यवधान ना हो, अतः वह प्रेशर पम्प के द्वारा शुद्धिकरण द्रव का छिड़काव करते देखे गये थे।

खोज एवं बचाव कार्य के समय एन डी आर एफ ने बचाव प्रक्रिया को स्थान व परिस्थितियों के अनुसार तब्दील भी किया था। घटना स्थल पर उपलब्ध संसाधनों का बहेतर प्रयोग करने की कला भी बखूबी अपनायी। ध्वस्त इमारत के मलवों में बिखरे पड़े गैस-सिलेन्डर को अपने उपकरण संचालित करने से पूर्व, जवानों ने इसे निकालकर घटना स्थल से दूर सुरक्षित निष्क्रिय किया था, जिससे बचाव अभियान के दौरान कोई दुर्घटना न घटित हो सके।



खोज एवं बचाव अभियान में सावधानी बरतते एन डी आर एफ के सदस्य : नेपाल भूकम्प

इस प्रकार का सोच विचार तथा कदम-कदम पर सावधानी बरतना एक कुशल बचाव दल का घोटक है जिसे एन डी आर एफ के जवानों ने बखूबी अंजाम दिया था।

एन डी आर एफ के प्रत्येक कार्मिक ने नेपाल भूकम्प उपरान्त खोज एवं बचाव अभियान के दौरान मानवीयता की अद्भुत मिसाल कायम की थी। जिससे प्रत्येक जन समुदाय प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। बचाव कर्मियों ने शवों को भी पूरे सम्मान के साथ प्राथमिकता दी थी। प्रत्येक आपदा उपरान्त पीड़ितों को मानसिक आघात से उभरने के लिए एक विशेषज्ञ मनोचिकित्सक की निगरानी में रखने की सदैव सलाह दी जाती है परन्तु यह प्रक्रिया जितनी आवश्यक आपदा पीड़ितों के लिए है उतना ही खोज एवं बचाव कर्मियों के लिए भी नितान्त आवश्यक है। एन डी आर एफ में इस विषय पर विशेष बल दिया जाता है। प्रत्येक स्तर का कमाण्डर अपने अधीनस्थ की गतिविधियों पर नजर रखता है तथा प्रत्येक व्यवहारिक बदलाव को चिन्हित करता है। इसका रिकार्ड रखा जाता है। यदि आवश्यकता पड़े तो विशेषज्ञ मनोचिकित्सक की सलाह लेने का भी प्रावधान है। आपदा सेवा समाप्त कर वापस लौटने पर प्रत्येक कार्मिकों का वाहिनी मुख्यालय में स्वास्थ्य परीक्षण होता है तथा इसका रिकार्ड भी रखा जाता है। कुछ अन्तराल पश्चात् पुनः स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है तथा हर बदलाव पर नजर रखी जाती है।

2. मंजिल की ओर हर कदम

एन डी आर एफ का हर कदम, निकट भविष्य में विश्व के प्रतिष्ठित बचाव दल के रूप में पहचान बनाने की दिशा में है। एन डी आर एफ की भविष्य के लिए तैयारी शुरू हो गयी है, जिससे यह विश्व का अनूठा बल अंतर्राष्ट्रीय मानदण्डों की हर कसौटी पर खरा उतर सके। इस बल के पास वह सभी आधुनिक संसाधन व उपकरण उपलब्ध है, जो वर्तमान समय में विश्व के किसी भी विकसित राष्ट्र के बचाव दल के पास है।

एन डी आर एफ को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है तथा कुछ निर्धारित अन्तराल उपरान्त उन्हें पुनः प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे उनकी दक्षता तथा कार्यकुशलता में कमी होने की संभावना न रहे। प्रत्येक आपदा खोज एवं बचाव कार्य के उपरान्त एन डी आर एफ के संसाधनों की पुनः समीक्षा की जाती है। जिससे इसे नये-नये आवश्यक संसाधनों व उपकरणों से लैस किया जा सके।



आपदा स्थल पर एन डी आर एफ से संसाधन एवं उपकरणों की झलक : नेपाल भूकम्प

बहुत ही कम समय की जीवन यात्रा में एन डी आर एफ ने सफलता के नये आयाम कायम किये हैं। दिन प्रति दिन एन डी आर एफ की माँग बढ़ती जा रही है, जिससे साफ परिलक्षित है कि आम जनसंख्या की एन डी आर एफ के प्रति अपेक्षा में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। यह हमारे लिए एक चुनौती है तथा एन डी आर एफ को सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही होगा। हर आपदा के दौरान किये गये खोज एवं बचाव कार्य में एन डी आर एफ एक कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। नेपाल भूकम्प के दौरान एन डी आर एफ द्वारा किये गये त्वरित एवं वृहद राहत एवं बचाव कार्य ने उसे अब एक अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिला दी है। नेपाल में चलाये गये खोज एवं बचाव कार्य में एन डी आर एफ ने अग्रणी भूमिका निभायी थी। इस प्रकार सभी अंतर्राष्ट्रीय बचाव दल को अपने विषय में चर्चा करने के लिए विवश किया था। अतः भविष्य के लिए एन डी आर एफ की जिम्मेदारी बढ़ी है। इस कर्तव्य परायणता का बोध करते हुए एन डी आर एफ का हर कदम भविष्य में एक प्रतिष्ठित तथा सभी मानदण्डों पर खरा उतरने वाले बचाव दल के रूप में पहचान बनाने की दिशा में है। एन डी आर एफ की अपने सुनहरे भविष्य के प्रति परिकल्पना तथा प्रतिबद्धता है।

वर्तमान भौगोलिक-मौसम परिवेश में होते हुए बदलाव तथा बढ़ते हुए प्राकृतिक आपदा की आवृत्ति विशेषकर दक्षिण एशियाई देशों में तथा 25 अप्रैल 2015 को आये नेपाल में भूकम्प को देखते हुए यह विचार किया

गया कि सदस्य देशों के बीच आपदा से निपटने की साझा क्षमता व तैयारी की जाये। जिससे किसी भी निकट भविष्य में घटने वाले आपदा के दौरान दक्षिण देशों के सदस्य मिलकर काम करें। इस प्रकार संयुक्त प्रयास से जान-माल की क्षति को न्यूनतम किया जा सके। इस साझा प्रयास की आवश्यकता नेपाल भूकम्प के दौरान महसूस की गयी थी। प्राकृतिक आपदा का आकार, आवृत्ति तथा जटिलता समय के साथ बढ़ती जा रही है। इस प्रवृत्ति से कोई भी सदस्य देश (दक्षिण) अछूता नहीं है। इन परिस्थितियों में स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समन्वय वर्तमान में अनिवार्य ही नहीं अपितु समय की माँग है। पिछले दिनों की अपेक्षा, राष्ट्र अपनी योजना को तैयार कर सकता है तथा इसका क्रियान्वयन सभी सदस्य देशों के साथ मिलकर कर सकता है। जिससे भविष्य में उत्पन्न प्राकृतिक आपदा के समय इससे बेहतर तरीके से निपटा जा सके। दक्षिण एशिया की खासियत है कि सभी सदस्यों की भौगोलिक परिस्थितियाँ लगभग एक जैसी हैं। सभी एक तरह की प्राकृतिक आपदा से ग्रसित हो सकते हैं। योजना विहीन, खराब स्थितियों में मानव के स्थापन, असुरक्षित भवन निर्माण की प्रक्रिया तथा सघन जनसंख्या विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, ने आपदा को कई गुना बढ़ा दिया है। जिससे हर क्षेत्र संभावित खतरे से ग्रसित है। दूसरी तरफ, आपदा से निपटने तथा आपदा उपरान्त पुनर्स्थापन की प्रक्रिया में आवश्यक संसाधन सीमित होते जा रहे हैं। इस स्थिति में आपदा प्रबन्धन की प्रक्रिया ने सभी सरहदों को लांघ दिया है।

कई सदस्य देशों में आपदा से निपटने की तैयारी अपर्याप्त है। जिसका कारक आपदा प्रबन्धन की क्षमता का दुर्बल होना है। इसका दूसरा कारण संस्थाओं तथा सरकारी तंत्र के बीच साझा मसौदे का न होना भी हो सकता है। अतः अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा सीमापार सहयोग एवं समन्वय आपदा परिणामों को न्यूनतम करने की दिशा में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग न सिर्फ आपदा के दुष्परिणामों से निपटने में आवश्यक है, अपितु सदस्य देशों के बीच स्थिरता एवं आर्थिक विकास के लिए भी आवश्यक हैं। दक्षिण एशियाई देशों के परिप्रेक्ष्य में, कई आपदा से मिले सीख, विशेषकर नेपाल भूकम्प ने क्षेत्रीय समन्वय को मजबूत करने की आवश्यकता पर सोचने के लिए विवश किया है, विशेषकर आपदा प्रबन्धन की तैयारी, विदेशी मदद तथा सैन्य मदद की दिशा में। सन् 2011 में दक्षिण एशियाई देशों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये थे कि प्राकृतिक आपदा के समय सभी देशों

के संयुक्त प्रयास शामिल किये जाये तथा इस दिशा में सहयोग और बढ़ाया जाये।

इन विचारों के साथ नेपाल भूकम्प उपरान्त 'साउथ एशियन एनुवल डिस्आस्टर मैनेजमेन्ट इक्सर्साईज' (सैडमेक्स) की परिकल्पना की गयी। यह विचार किया गया कि यह अभ्यास वार्षिक रूप से प्रत्येक सदस्य देशों में रोटेशन के आधार पर आयोजित किया जायेगा। 'सैडमेक्स' का उद्देश्य प्रत्येक सदस्य को यह अवसर देना है कि वह अपने आपदा प्रबन्धन की योजना पर खुलकर चर्चा करे तथा आवश्यकतानुसार उसे पुनः परिभाषित कर सके। इस प्रकार प्रत्येक सदस्य अपने संसाधनों की आवश्यकता पर भी बल दे सकता है। इस अभ्यास के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर घटित आपातकालीन आपदा से निपटने के लिए क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवीय मदद को समन्वित कर सकने की प्रक्रिया पर संयुक्त रूप से अवसर प्रदान करना है। 'सैडमेक्स' के लिए भारत ने पहल किया तथा प्रथम 'सैडमेक्स-2015' को भारत में आयोजित किया गया। भारत सरकार ने 'सैडमेक्स-2015' को आयोजित करने की जिम्मेवारी एन डी आर एफ को सौंपी थी, जिसे एन डी आर एफ ने बखूबी अंजाम दिया। इस दिशा में 3 व 4 सितम्बर को एन डी आर एफ ने 'सैडमेक्स-2015' की विस्तृत रूपरेखा की चर्चा करने के लिए 'एडवान्स कोऑर्डिनेशन कान्फ्रेंस' नयी दिल्ली में आयोजित की, जिसमें दक्षिण एशिया के प्रत्येक सदस्य देशों के आपदा प्रबन्धन के तीन सदस्यों ने भाग लिया था।



‘सैडमेक्स’ के दौरान आपदा प्रबन्धन रणनीति को साझा करता विदेशी प्रतिनिधि मंडल

सभी ने अपने-अपने देशों की आपदा प्रबन्धन योजना के विषय से सदस्य देशों को अवगत कराया। अगले चरण में एन डी आर एफ ने 'सैडमेक्स-2015' को 23 नवम्बर से 26 नवम्बर 2015 तक नई दिल्ली तथा गाजियाबाद में आयोजित किया।

इस अभ्यास में प्रत्येक सदस्य देशों से दस लोगो ने भाग लिया तथा साझा रूप से 'संयुक्त अभ्यास' के हिस्सेदार बने। इस 'सैडमेक्स-2015' के द्वारा 'दक्षेस' देशों के आपदा प्रबन्धन घटकों को भीषण प्राकृतिक आपदा में सभी सीमाओं से परे रहकर किस प्रकार मानवीय मदद पहुँचायी जाये की रणनीति पर कार्य करने का अवसर मिला। एन डी आर एफ द्वारा आयोजित प्रथम 'सैडमेक्स-2015' को अभूतपूर्व सफलता मिली तथा एन डी आर एफ की इस पहल की चारों तरफ सराहना हुई।



‘सैडमैक्स’ के समापन पर प्रतिनिधि मंडल के साथ भारत के गृहमंत्री

संयुक्त राष्ट्र संघ की सहयोगी संस्था ‘इन्टरनेशनल सर्च एण्ड रेस्क्यू एडवाइजरी ग्रुप’ (इनसराग) द्वारा एन डी आर एफ की टीम का ‘इक्सटर्नल क्लासिफिकेशन’ की प्रक्रिया प्रगति पर है। एन डी आर एफ की एक ‘भारी-टीम’ को ‘इनसराग’ द्वारा क्लासिफिकेशन किये जाने की तैयारी की जा रही है। इसके लिए एन डी आर एफ की टीम को किसी एक बटालियन में केन्द्रित किया जाना है। एन डी आर एफ की ‘भारी-टीम’ को इनसराग के मानदण्डों के अनुसार तैयार करने हेतु स्विटजरलैण्ड के

विशेषज्ञों की टीम की मदद ली जा रही है। शीघ्र ही एन डी आर एफ की इस टीम को 'इक्सटर्नल क्लासिफिकेशन' के लिए 'इनसराग' के समक्ष पूरी तैयारी के साथ प्रस्तुत किया जायेगा। भविष्य में एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम को 'इनसराग' के द्वारा क्लासिफाइड कराने की योजना है। हालाँकि वर्तमान समय में एन डी आर एफ की प्रत्येक टीम 'इनसराग' द्वारा निर्धारित मानदण्डों के आधार पर ही काम कर रही है।



नेपाल में संयुक्त राष्ट्र संघ की अन्डर सेक्रेटरी जनरल वलेरी अमोस के साथ महानिदेशक

एन डी आर एफ की कार्य प्रणाली आधुनिक तकनीक पर आधारित है। भविष्य में एन डी आर एफ 'आधुनिक तकनीक आधारित आपदा प्रबन्धन' को केन्द्र बिन्दु मानकर काम करने की योजना पर काम कर रहा है। भविष्य में प्रत्येक राहत, खोज एवं बचाव अभियान तकनीकी पर आधारित ही होगा। इसके लिए एन डी आर एफ को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। एन डी आर एफ को अत्याधुनिक उपकरणों एवं संयंत्रों से लैस किया जा रहा है जिससे प्रत्येक बचाव कर्मियों के साथ आधुनिक तकनीक समाहित हो।

एन डी आर एफ को अत्याधुनिक संचार उपकरणों से भी लैस किया जा रहा है। प्रत्येक परिस्थितियों में एन डी आर एफ की संचार व्यवस्था ठप न हो सके इस दिशा में विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। प्रत्येक टीम को स्वतन्त्र रूप से तथा स्वनिर्भित संचार उपकरण तथा प्रशिक्षित

कर्मों उपलब्ध कराये गये हैं। भविष्य में एन डी आर एफ के संचार तंत्रों को 'उपग्रह' के द्वारा जोड़ने का प्रयास चल रहा है। इसमें प्रतिकूल परिस्थितियों तथा भीषण आपदा के उपरान्त एन डी आर एफ संचार व्यवस्था कायम करने के लिए आत्मनिर्भर रह सकेगा। इस प्रकार यदि आपदा के दौरान जब समस्त सार्वजनिक संचार माध्यम बाधित हो जाये, तब इन परिस्थितियों में एन डी आर एफ के संचार प्रणाली के द्वारा इस बल का ही नहीं मिलाप अपितु स्थानीय प्रशासन तथा पीड़ित समुदाय भी संचार कर सके, ऐसी व्यवस्था तैयार की जा रही है। इस दिशा में 'राष्ट्रीय आपातकालीन संचार' (एन ई सी) की व्यवस्था कायम की गयी है। 'चेन्नई बाढ़ आपदा' (दिसम्बर-2015) के उपरान्त एन डी आर एफ की आत्मनिर्भर इस संचार व्यवस्था का 'रोड-मैप' तैयार कर लिया गया है जिसे शीघ्र ही क्रियान्वित कर दिया जायेगा।

एन डी आर एफ द्वारा भविष्य में आपदा पीड़ित समुदाय के पशुधन की क्षति को न्यूनतम करने के लिए 'पशु आपदा प्रबन्धन' को भी अपने कार्य प्रणाली में समावेशित करने की योजना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एन डी आर एफ के पशुचिकित्सकों तथा कार्मिकों को इस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस सन्दर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित संस्थानों का भी सहयोग लिया जा रहा है।

प्रारम्भ में एन डी आर एफ की सिर्फ चार बटालियनों को ही 'रासायनिक जैविक विकिरण एवं नाभकीय' आपदा के लिए दक्ष किया गया था। परन्तु समय की माँग को देखते हुए अभी सभी बटालियनों को इस आपदा से निपटने के लिए दक्ष कर दिया गया है। सभी बटालियनों को समान संसाधन, उपकरण तथा प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। जिससे प्रत्येक बटालियन की टीमों आवश्यकता पड़ने पर इस आपदा से निपटने में स्थानीय प्रशासन की मदद कर सकेंगी। भारतीय परमाणु ऊर्जा विभाग, भविष्य में देश के प्रत्येक क्षेत्र में 'रासायनिक जैविक विकिरण व नाभकीय' आपदा के समय त्वरित कार्यवाई हेतु देश के विभिन्न हिस्सों में 'क्षेत्रीय आपातकालीन केन्द्र' स्थापित करने पर विचार कर रहा है, जिसके लिए 'एन डी आर एफ' के कुछ वाहिनी मुख्यालय को भी चिन्हित किया गया है। इसके लिए विशेष संसाधन एवं उपकरण मुहैया कराये जा रहे हैं। एन डी आर एफ भविष्य में अपनी क्षमता को 'क्षेत्रीय आपातकालीन केन्द्र' को ध्यान में रखकर भी विकसित कर रहा है।

एन डी आर एफ द्वारा भविष्य के लिए उठाये गये कदमों में विशेष कार्य राज्यों को 'राज्य आपदा मोचन बल' (एस डी आर एफ) को स्थापित व क्रियान्वित करने में राज्य सरकार की मदद करना है। इसके लिए एन डी आर एफ जिन राज्यों में 'एस डी आर एफ' स्थापित हो चुकी है वहाँ पर उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य कर रहा है। सिर्फ प्रशिक्षण ही नहीं अपितु 'एस डी आर एफ' को सभी संसाधनों एवं उपकरणों से लैस करने में मदद भी कर रहा है। भविष्य में एन डी आर एफ का ध्येय 'एस डी आर एफ' की क्षमता एवं दक्षता को अपने समतुल्य खड़ा करना है। इस प्रकार भविष्य में राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन के उद्देश्य को राज्य के कोने-कोने में पहुँचाया जा सकेगा तथा आपदा के दौरान होने वाली क्षति को न्यूनतम किया जा सकता है।

भविष्य में एन डी आर एफ की तैयारी सभी को दक्षता आधारित प्रशिक्षण देने की है। एन डी आर एफ न सिर्फ राज्य सरकारों को ही, अपितु भारत सरकार के उपक्रम, गैर सरकारी संगठन, स्वयं सेवी संगठन तथा निजी संगठनों को भी आपदा प्रबन्धन विषय पर प्रशिक्षण दे रहा है। यह प्रशिक्षण स्कूली-बच्चों तथा कालेजों में भी दिया जा रहा है। जिससे हमारा समाज आपदा निरोधी हो तथा हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहे। भविष्य में एन डी आर एफ बल वृहद रूप से सामुदायिक जागरूपता अभियान चलाने जा रहा है जिससे प्रत्येक नागरिक आपदा प्रबन्धन के बुनियादी उपायों से परिचित हो सकेगा।

भविष्य में एन डी आर एफ द्वारा आपदा प्रबन्धन के क्षेत्र में 'परामर्श सेवा' उपलब्ध कराने की है। यह सेवा सभी क्षेत्रों में मुहैया करायी जायेगी। एन डी आर एफ अपने अनुभवी व दक्ष कार्मिकों के बीच 'साधन-व्यक्ति' (रिसोर्स पर्सन) को चिन्हित कर रही है। इनका भविष्य में एक पैनल बनाया जायेगा, जो एन डी आर एफ, एस डी आर एफ तथा अन्य सरकारी व गैर सरकारी संगठनों की क्षमता वृद्धि के लिए उपयोग किये जायेंगे। इन 'रिसोर्स पर्सन' का उपयोग राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जरूरत पड़ने पर किया जायेगा।

एन डी आर एफ भविष्य में अपने बुनियादी पाठ्यक्रम 'मेडिकल फर्स्ट रिस्पान्डर' को प्रशिक्षण के द्वारा जन-जन तक पहुँचाना चाहता है, जिससे देश का प्रत्येक नागरिक प्राथमिक उपचार के विषय में निपुण हो सके। इस तरह निकट भविष्य में किसी भी रेल दुर्घटना या सड़क दुर्घटना के

दौरान जन हानि को न्यूनतम किया जा सकेगा। एन डी आर एफ का ध्येय यह भी है कि हमारे देश में कोई भी व्यक्ति खून की कमी से न मरे। 'प्राथमिक उपचार' के महत्व तथा दक्षता का इतना प्रचार व प्रसार एन डी आर एफ द्वारा किया जाना है कि प्रत्येक नागरिक जागरूक रहे तथा 'ब्लड-डोनेशन' एवं 'ब्लड-बैंक' में स्वतः सक्रिय भूमिका निभाये। एन डी आर एफ सभी जीवन रक्षक प्राथमिक उपचार को जन-जन तक अपने 'स्कूल सुरक्षा कार्यक्रम' तथा 'सामुदायिक जागरूकता' अभियान के द्वारा पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है जिसे भविष्य में क्रियान्वित करना है।

किसी भी आपदा के समय पूर्व नियोजित 'आपदा प्रबन्धन' की योजना सुचारु रूप से कार्य कर सके इसके लिए आवश्यक है कि स्थानीय सरकार की सहयोगी संस्थाओं को अपने कर्तव्यों के विषय में जानकारी हो। अतः सभी साझा संस्थाओं को आपदा से निपटने के लिए अपने कर्तव्यों का बोध एवं निर्वाह करने की काबलियत होनी चाहिए। इसके लिए नियमित रूप से संयुक्त-अभ्यास का महत्व होता है। एन डी आर एफ समय-समय पर राज्य सरकार तथा अन्य सरकारी तंत्रों के साथ संयुक्त अभ्यास की हिस्सेदार बनती है। जिससे आवश्यकता पड़ने (आपदा के समय) पर आपदा-प्रबन्धन की व्यवस्था को सुचारु रूप से शीघ्रता के साथ क्रियान्वित किया जा सके। इस क्षेत्र में एन डी आर एफ अहम भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

हम होंगे कामयाब

एन डी आर एफ हर पल अपनी क्षमता की वृद्धि करता जा रहा है। इसके लिए वह नियमित रूप से प्रशिक्षण करते हैं तथा कराते भी है। यही नहीं समय - समय पर स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संस्थाओं के साथ संयुक्त अभ्यास भी करते रहते हैं परन्तु इन्हें अपनी दक्षता की परख के लिए 'विषय - वस्तु' की आवश्यकता होती है। यह विषय वस्तु सिर्फ आपदा के दौरान किये गये बचाव कार्य से ही प्राप्त होता है। प्रत्येक आपदा के दौरान किये गये खोज एवं बचाव अभियान की समीक्षा अनिवार्य रूप से की जाती है, इस समीक्षा का मन्तव्य उत्पन्न कठिनाइयों एवं मुश्किलों से निपटने की तैयारी में वृद्धि करना होता है। प्रत्येक आपदा अपने आप में अनूठी एवं नयी होती है, जो एन डी आर एफ के लिए एक नयी चुनौती के रूप में उभर कर सामने आती हैं और ढेरों नये बचाव के तरीके दे जाती है। इन चुनौतियों से कुशलता पूर्वक निपटने की क्षमता के लिए हर कार्य की समीक्षा तथा आत्मविश्लेषण आवश्यक है। इस प्रकार एन डी आर एफ निरन्तर अपनी क्षमता में हर एक नयी आपदा के अनुभवों का विश्लेषण करने के बाद वृद्धि करता रहता है।

एन डी आर एफ के प्रत्येक कार्मिक में हर परिस्थिति में अपने मिशन को कामयाब बनाने की दृढ़ इच्छाशक्ति का होना जरूरी है। इसी इच्छाशक्ति ने उन्हें हर आपदा में मिली चुनौती को सफलतापूर्वक पार कर कुशल बचाव कार्य करने की मिसाल कायम करने की प्रेरणा दी हैं। समय की माँग पर एन डी आर एफ हर बार खरा उतरा है। यह सिर्फ एन डी आर एफ की जटिलतम परिस्थितियों में भी मानवता की सेवा करने की प्रबल इच्छा शक्ति का ही उदाहरण है। अतः इस बलवती इच्छा शक्ति के बलबूते एन डी आर एफ कामयाबी की सीढ़ियाँ चढ़ता जा रहा है।

वर्तमान समय में एन डी आर एफ को सभी आवश्यक तथा आधुनिक संसाधनों एवं उपकरणों से लैस कराया गया है। एन डी आर एफ के उपकरणों की सूची में वृद्धि समयानुसार होती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय

बचाव दल के पास उपलब्ध संसाधन एवं उपकरण के समकक्ष एन डी आर एफ को तैयार किया गया है तथा इसमें निरन्तर वृद्धि हो रही हैं। इसकी मिसाल नेपाल भूकम्प के दौरान सभी अंतर्राष्ट्रीय बचाव दल के साथ काम करने के दौरान देखी गयी थी। कई बचाव कार्य स्थल पर एन डी आर एफ के संसाधनों व उपकरणों का प्रयोग अन्य अंतर्राष्ट्रीय बचाव दलों द्वारा किया गया। अंतर्राष्ट्रीय मानदण्डों की कसौटी पर खरे उतरते संसाधनों एवं उपकरणों के साथ एन डी आर एफ भविष्य में भी कामयाबी की मिसाल कायम करने के लिए अग्रसर है।

आधुनिक संसाधनों एवं उपकरणों के साथ प्रभावी भागीदारी के लिए एन डी आर एफ को प्रशिक्षण दिया जाता है। समय - समय पर एन डी आर एफ के कार्मिकों को उच्चतर एवं विशेष प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भेजा जा रहा है, जिससे वह समय के साथ प्रत्येक आधुनिक उपकरणों एवं विधाओं से भली भाँति अवगत रहे। प्रशिक्षण तथा पुनः प्रशिक्षण के प्रति एन डी आर एफ के कार्मिकों की जिज्ञासा तथा रुचि के लिए उन्हें लगातार प्रेरित किया जा रहा है। अपने कुशल प्रशिक्षण की बदौलत एन डी आर एफ भविष्य में भी कामयाबी के लिए प्रतिबद्ध है।

आधुनिक संसाधनों एवं उपकरणों के साथ प्रशिक्षित एन डी आर एफ के कार्मिकों में वह आवश्यक दक्षता भी पायी जाती है, जिससे वह हर परिस्थितियों एवं परिवेश में कामयाब हो सके। इस क्षमता को परखने की एक कठिन प्रक्रिया है, जिसके विभिन्न चरणों से एन डी आर एफ के सभी सदस्यों को होकर गुजरना पड़ता है। इस प्रकार एन डी आर एफ के कार्मिकों में एक दक्षता उत्पन्न करायी जाती है जिससे वह गहन प्रशिक्षण के द्वारा अपने उपकरणों एवं संसाधनों को अपने कार्यकाल का अभिन्न अंग समझते हैं। कामयाबी का यह एक मूल मंत्र है।

उपर्युक्त सभी गुणों से परिपूर्ण एन डी आर एफ को कुशल नेतृत्व प्रदान किया जाता है। यह नेतृत्व प्रत्येक चरण का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक स्तर पर नेतृत्व में उन सभी आवश्यक दक्षताओं को सुनिश्चित किया गया है जो कि एक आम बचाव कर्मी से अपेक्षित हैं। कुशल नेतृत्व की प्रक्रिया का विकेन्द्रीकरण किया गया है। यही कारण है कि नेतृत्व की झलक सिर्फ 'टीमों' में ही नहीं अपितु 'सब - टीमों' में भी दिखायी देती है।

अतः एन डी आर एफ के पास कामयाबी के सभी मूलमंत्र इच्छा शक्ति, साहस, मनोबल, संसाधन, उपकरण, प्रशिक्षण, दक्षता तथा कुशल नेतृत्व उपलब्ध हैं। इसलिए एन डी आर एफ की हर टीम 'हम होंगे कामयाब' के संकल्प के साथ ही अपना हर कदम आपदा प्रभावित क्षेत्र में रखती हैं। यह सार्वभौमिक सत्य है कि शत प्रतिशत आदर्श की परिकल्पना सिर्फ एक क्षदम भुलावा मात्र ही हैं परन्तु यही भुलावा हमें अपनी लक्ष्य सिद्ध हेतु हर प्रयास में सफलता के प्रति प्रेरित करता है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि प्रत्येक जानी अनजानी जगहों पर जटिलतम परिस्थितियों में भी एन डी आर एफ मानवीय मूल्यों से ही सदैव प्रेरित होकर निरंतर अग्रसर हो, मानव 'मानव के लिए' ही नहीं अपितु मानव 'सभी जीवों के लिए' के बौद्ध दर्शन को लक्ष्य बना कर इसे चरितार्थ करने का संकल्प लेकर हम आगे बढ़ते रहें।

भूकम्प

सुनसान खण्डहरो के नीचे,
दबे शहर और कसबों का
पीछा करती है मृत्यु,
जैसे यूँ ही बहा दिया सारा जीवन,
आपदा के ज्वार भाटा ने।

कुछ जीवन बाकी,
किन्तु घायल
चोटिल,
अनाथ, अपंग
जैसे प्रकृति के क्रोध
का विवरण सुनाने को,
शेष निढाल
साथ अपने लिए कुछ भयानक
दृश्य,
बिखरते स्वप्न
उजड़ते घर पल-पल
काँपती धरती।

टूटे मकानों के साथ ध्वस्त सपने,
महत्वाकांक्षाएँ और सब कुछ,
इतने सबके बाद भी
कुछ जिंदगियाँ सँवरने को तैयार,
इन क्रूर, संवेदनशील, सफेदपोशों के बीच
प्रकृति से लुटी-पिटी जिंदगियाँ
कुछ और दुःख, कुछ और असह्य
भय समेटे,
आस लगाये बैठी है, मुर्दे हो चुके सरकारी तंत्र से,
पहचान रहित व्यक्तित्व कुछ भी शेष नहीं,
सिवाय चलते-फिरते गुमनाम
नर कंकालों के

जैसे एक काली चादर
एक अनछुआ कैनवास ।

प्रार्थना करो उनके लिए,
उनकी आत्मशक्ति के लिए,
ताकि जीवन फिर भर उठे रंगों से ।
प्रार्थना करो कि पुनः ज्वलित हो
ज्वाला आशा की,
मिटा दे सारा निराशामय अंधकार,
जीवन फिर से हो सके खुशहाल ।

- ओ पी सिंह

225

अखबारों की सुर्खियों से

ains, hope keeps NDRF

TO THE RESCUE

The Nepal operation is the second international mission the NDRF personnel have been sent on



Personnel leave for Kathmandu on Monday to assist in the search and rescue operation in Nepal.

AP PHOTO

WHAT IS NDRF?

- The National Disaster Response Force (NDRF) was established in 2006 for disaster management and specialised response to natural and man-made disasters.
- It was established by subsuming the eight disaster response battalions of BSF, CRPF, ITBP and SSB.
- Currently, the force has more than 10,000 personnel whose battalions are deployed in 9 different locations in the country.

THE TEAM

Ten NDRF teams consisting of around 45 men — all with specific roles — and sniffer dogs have been sent. Functions such as preparing rescue ropes, sending them down, handling hot air pillows, hoisting them etc are shared by the members. They work like one coordinated unit.

BADGE OF HONOUR

The NDRF has shown its worth in many operations, including during the floods in Uttarakhand, Jammu and Kashmir, earthquake and tsunami in Japan, the Leh cloudburst and train accidents.

QUICK RESPONSE

- As soon as reports of the earthquake came, 2 teams on wheels were deployed.
- Within four hours of the quake, 10 teams were on its way to Kathmandu with all necessary equipment.
- Six more teams are on their way to assist operations.

EQUIPMENT

In case of a quake, they carry:

- Life detectors that sense body heat in a collapsed structure.
- Handheld gas detectors.
- Thermal imaging cameras that work in the dark.
- Multigas detectors.
- Victim location equipment and breaching systems.
- Different kinds of hammers, cutters and drills.
- Sniffer dogs.



6,200+ DEAD
14,000 INJURED



● रविवार को भी आया 6.9 तीव्रता का भूकंप ● एवरेस्ट पर हिमस्खलन फिर शुरू



अयोध्या, फैज, अयोध्या और अयोध्या
अयोध्या को अयोध्या से है। अयोध्या

अयोध्या में अयोध्या को अयोध्या से है। अयोध्या



WB LAUNCHED

West Bengal Chief Minister Mamata Banerjee on Monday announced that the state government would form a crisis management group in Darjeeling to provide help to tremor-affected people in the region.

Banerjee said that her administration also opened a round-the-clock helpline in north Bengal to provide assistance to earthquake-ravaged people in Nepal. Darjeeling district has a significant population of Nepali-speaking people. The district also shares vass borders.

अखबारों की सुर्खियों से

More NDRF teams sent to Nepal; foreigners saved

DC CORRESPONDENT
NEW DELHI, APRIL 28

Stepping up its relief and rescue operations in Nepal, India on Tuesday deployed six more teams of the National Disaster Response Force. With this, the total deployment of NDRF teams in Nepal has increased to 14, with 35 teams having been rushed there immediately after the earthquake hit the neighbouring country.

The NDRF personnel

who were working almost round the clock, in extremely difficult conditions, have so far rescued several people and pulled out 73 bodies from the debris at different locations in Nepal.

India has also evacuated 770 people of 15 nations, including the United States, Britain, Russia and Germany, the MEA said. "Friends in need, India assisted in evacuation from Nepal of 170 nationals from 15 countries via commercial

trains via commercial IAF aircraft," spokesman Vikas

added. Nepal on Thursday thanked India for taking the initiative to launch relief operations aftermath of the quake. The toll in India following Saturday's earthquake in Nepal is rising with 15,000 people killed and 30,000 injured, according to the Indian government.

IS DELHI PREPARED TO FACE CALAMITIES?

Delhi, April 28

Three years after it became general news that the capital city is not prepared to face natural disasters, Delhi's preparedness has not improved. In fact, it has worsened, if not dangerously so, due to sheer inaction by successive governments. According to senior government officials, the Delhi government currently has 300 odd staff members handling disaster management, which is a far cry from the 10,000 staff members required for such a task.

This is despite the fact that a major quake did hit the Delhi region in 1907, which saw the participation of 1.8 crore Delhi residents and 1.8 crore people from the surrounding areas.

In 2011, student representatives from the Indian Institute of Technology (IIT), Mumbai, had made a study of government disaster management plans for the city.



DELHI NDRF: A National Disaster Response Force team of a relief camp.

In addition to similar conditions, several measures were suggested and agreed to be taken to improve disaster management in the capital city.

Currency counter, transit camp for returning Indian

Steps To Ease Journey Home From Raxaul

New Delhi (The Press Trust of India)



Foreigners who return from Nepal, India has set up a transit camp for them at Raxaul, near the border with Nepal. The camp is equipped with a currency counter, a transit camp for returning Indian, and a transit camp for returning Indian.

एनडीआरएफ की छह और टीमों भेजी गई

पेज 1 का बाकी

टीम में करीब 45 कर्मी हैं।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने यहां कहा, 'तीन नई टीमों विमान से कोलकाता से काठमांडो पहुंचीं और तीन अन्य टीमों पटना से सड़क मार्ग से नेपाली राजधानी के लिए गई हैं। उनके किसी भी वक्त वहां पहुंचने की संभावना है।' तनू अस्पताल, बालाजूत्रा, बालखु, गुडबाल, बृजेश्वरी, चावमाटी, बसुंदरलामुनताल, महाराजगंज, गंगाभू और शोभा भगवती पुल जैसे इलाकों में एनडीआरएफ के बचावकर्मी तैनात हैं।

अधिकारी ने कहा, 'अब तक नेपाल में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल ने 11 लोगों को बचाया है और 73 शव मलबे से निकाले हैं।' उन्होंने बताया कि एनडीआरएफ की टीमों ने राहत व बचाव अभियान के दौरान सोने की दो चूड़ियां, सोने के हार, मंगल सूत्र और 1,06,769 नेपाली रुपए और एक मोबाइल फोन भी बरामद किए हैं।

अधिकारी ने बताया कि एक मानवरहित यान भी काठमांडो लै जाया गया है जिसका उपयोग संसाधनों व कार्यबल की तैनाती की योजना तैयारी करने के लिए प्रभावित क्षेत्रों का आकलन करने में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने बचाव अभियान के लिए नेपाली राजधानी में डेरा डाले हुए एनडीआरएफ प्रमुख ओपी सिंह से बातचीत की। एनडीआरएफ प्रमुख ने उन्हें जमीनी स्थिति व अभियान से जुड़ी नई जरूरतों के बारे में बताया।

अखबारों की सुर्खियों से

पाल में दस हजार लोगों के मारे जाने की आशंका भारत ने राहत का दायरा बढ़ाया, संयुक्त राष्ट्र ने 1.5 करोड़ डॉलर जारी किए

एनडीआरएफ की छह और टोर्ने भेजी गई नई दिल्ली, 28 अप्रैल (एनए)। भारत ने नेपाल में जारी भूकंप से बचाव अभियान में संयुक्त राष्ट्र की राहतबल की छह और टोर्ने भेज दी हैं। इन टोर्ने के साथ संयुक्त राष्ट्र की राहतबल में कुल टोर्ने की संख्या 12 हो गई है। भारत ने अपने सैन्य और नागरिक राहतबल को नेपाल में भेजा है। इन टोर्ने के साथ संयुक्त राष्ट्र की राहतबल में कुल टोर्ने की संख्या 12 हो गई है।	नेपाली का अस्पताल के अंदर जलने से इनकार काठमांडू, 28 अप्रैल (एनए)। नेपाल में जारी भूकंप के बाद नेपाली अस्पतालों में जलने से इनकार किया गया है। नेपाली अस्पतालों में जलने से इनकार किया गया है। नेपाली अस्पतालों में जलने से इनकार किया गया है।	भारत का हिमालय एक से दस फुट उठार की ओर खिसका नई दिल्ली, 28 अप्रैल (एनए)। भारत में जारी भूकंप के बाद भारत का हिमालय एक से दस फुट उठार की ओर खिसका गया है। भारत में जारी भूकंप के बाद भारत का हिमालय एक से दस फुट उठार की ओर खिसका गया है।	नेपाल के प्रधानमंत्री के अनुसार, नेपाल में भूकंप के बाद नेपाली अस्पतालों में जलने से इनकार किया गया है। नेपाल के प्रधानमंत्री के अनुसार, नेपाल में भूकंप के बाद नेपाली अस्पतालों में जलने से इनकार किया गया है।
--	--	--	---

India ready for long-haul relief operation India instructs officials to do whatever necessary to demonstrate India's long-term commitment



India's quick assistance to Nepal. The relief work is being carried out by the Indian National Disaster Response Force (NDRF) and the Indian Army. The relief work is being carried out by the Indian National Disaster Response Force (NDRF) and the Indian Army.

NDRF work makes case for SAARC centre

sent search-and-rescue teams to Nepal, the NDRF has the largest presence on the ground with 16 teams, comprising 704 personnel. China is next with 168 personnel, followed by Bangladesh (140) and United States (120).

More than the numbers, it is the NDRF work on the ground that has people asking for the "India team".

Of the 14 who have so far been rescued

is also in Nepal, told *The Sunday Express* those chances are now dimming. "The golden rule is that after 90 hours, chances of finding live victims in the debris, rubble are very, very low."

Singh said the priority now was relief and rehabilitation. "We will stay till there is need. We have teams, sniffer dogs working at several locations."

Singh added that this was the second

INSARAG or International Search and Rescue Advisory Group, a network of over 80 countries and organisations under the United Nations, sets minimum international standards for urban search and rescue (USAR) teams in earthquake response.

According to Singh, one USAR heavy team of NDRF is to undergo classification in December 2016.

"If we have the classification, the

More NDRF teams, UAV rushed

■ 170 foreigners evacuated too ■ US praises India's role

AGE CORRESPONDENT
NEW DELHI, APRIL 28

Stopping up its relief and rescue operations in quake-hit Nepal, India on Tuesday deployed six more teams — of the National Disaster Response Force. With this fresh reinforcement, the total deployment of NDRF teams in Nepal, has increased to 16, with 10 teams having been rushed there immediately after the earthquake had hit the neighbouring country.

While three new teams have landed in Kathmandu today from Kolkata via air, three others have moved by road from Patna to the Nepalese capital. They are expected to reach any time," a senior NDRF official said.

The NDRF teams are currently deployed in areas like Tanu Hospital, Balautra, Balkhu, Goodbal, Brijeshwari, Maharaajganj, Gangabhu, (two teams) and Shobha Bhagwati Bridge (two teams).

The NDRF personnel, who working around the clock in extremely difficult conditions, have so far rescued 11 people and



भूकम्प पूर्व सांस्कृतिक धरोहर संपदा धनी राष्ट्र नेपाल

1. नेपाल : एक तथ्य

147,181 वर्ग किमी (56,827 वर्ग मील) क्षेत्र तथा 270 लाख जनसंख्या वाला संघीय लोकतान्त्रिक गणराज्य नेपाल विश्व का 93वाँ बड़े क्षेत्र वाला देश है जो कि विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से 41वाँ बड़ा राष्ट्र है। यह हिमालय की गोद में स्थिति है जिसके उत्तर में चीन गणराज्य तथा दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में भारत है। नेपाल राष्ट्र की राजधानी काठमाण्डू है जो कि देश का सबसे बड़ा शहर भी है। विश्व की समस्त 10 सर्वोच्च ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में 8 ऊँची पर्वत श्रृंखला सिर्फ नेपाल में पड़ती है, विश्व की सर्वोच्च ऊँची चोटी माउन्ट एवरेस्ट नेपाल में ही स्थित है। विश्व की समुद्र तल से 20,000 फीट (6,096 मीटर) से ऊँची 240 पर्वत श्रृंखलाएँ यहीं पर स्थित हैं।

नेपाल एशिया का सर्वाधिक उच्च शतक वाला क्षेत्र है जो कि दो बड़े राष्ट्र भारत व चीन से घिरा है। इसका विस्तार उष्ण कटिबंधीयवन सम्पदा से लेकर उच्च पर्वत श्रृंखलाओं तक है। यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसकी सभ्यता व संस्कृति अक्षुण्य तथा राष्ट्रीय अभिमान का पर्याय है। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण यह देश अपनी परम्पराओं, संस्कृति एवं सभ्यता से अटूट लगाव रखता है। यहाँ के लोग पारम्परिक रूप से राष्ट्रवादी, सुदृढ़ तथा शालीनता के लिए जाने जाते हैं। विश्व में विशेषकर गोरखा सैनिक तथा शेरपा पर्वतरोही ने विशेष स्थान बनाया है, यही कारण है कि विश्व का प्रत्येक व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है।



नेपाल का प्राकृतिक सौन्दर्य परिपूर्ण पर्वतीय क्षेत्र

नेपाल एक विभिन्न सतह संरचना का देश है जो कि हिमालय की तलहटी भारत से लेकर उत्तर सीमान्त चीन व भूटान तक एक सम्मिश्रित भौगोलिक क्षेत्र का धनी है। नेपाल मध्य हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं का केन्द्र बिन्दु है जो कि हिमालय श्रृंखलाओं के एक तिहाई हिस्से पश्चिम में महाबोत नदी से पूर्व में तीस्ता नदी तक लगभग 800 किमी तक फैला है। नेपाल कुल पाँच सतह संरचना में बाँटा हुआ है तथा प्रत्येक संरचना का अपना एक मूल भौगोलिक इतिहास है : गंगा तटवर्ती क्षेत्र, तराई क्षेत्र, शिवालिक क्षेत्र (उप हिमालय क्षेत्र), निचला हिमालय क्षेत्र, उच्च हिमालय क्षेत्र और तिब्बतीय हिमालय क्षेत्र।

दक्षिण एशिया का एक छोटा देश, जो चारों तरफ से जमीनी सतह से घिरे रहने के बावजूद, नेपाल प्रत्येक प्राकृतिक भागौलिक विविधता, जलनिकास, वर्षा, मौसम व समाजिक आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं समृद्ध देश के रूप में पहचाना जाता है। ऊँचाई की दृष्टि से इस देश की भौगोलिक ऊँचाई 70 मीटर (कंचन कलाँ, तराई क्षेत्र) से लेकर 8848 मीटर अर्थात् माउन्ट एवरेस्ट चोटी (या सागर माथा), विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटी तक है। इसके अतिरिक्त यह देश विश्व की दूसरी उत्कृष्ट चोटियों के लिए भी जाना जाता है। इसी तरह यह देश सर्वाधिक भागौलिक प्रभुता कटिबंधीय-उष्णकटीबंधीय वन सम्पदा से सम्पन्न है। विशेष मौसम विविधता के कारण वर्षा प्रारूप 16 सेमी (160 मिमी) से 55 सेमी (550 मिमी) है।

समस्त नेपाल का प्रसार अक्षांश 26°22' उत्तर और 30°27' उत्तर से 80°4' तथा 88°12' पूर्व तक है। कुल भागौलिक क्षेत्र लगभग 147,181 वर्ग किमी है जिसमें 137000 वर्ग किमी जमीनी सतह तथा 4000 वर्ग किमी जल संसाधन है।

चारों तरफ से भूमि से घिरा देश नेपाल, उत्तर में तिब्बत, भारत के प्रदेश सिक्किम व पश्चिम बंगाल से पूर्व, दक्षिण में बिहार तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश से घिरा है।

यदि भौगोलिक तथा जल सम्पदा के परिप्रेक्ष्य में चर्चा करें तो समस्त नेपाल तीन भौगोलिक भागों में तथा जल संसाधनों में बाँटा है। एक तरफ नेपाल का भौगोलिक क्षेत्र मुख्यतः तीन भागों दक्षिण से उत्तर में बाँटा जा सकता है - तराई, पहाड़ी क्षेत्र एवं पर्वतीय क्षेत्र। तीन मुख्य नदियाँ

कोसी, गंडक (नरायणी) तथा नदी कनाले पूरे देश को तीन मुख्य जल संसाधन क्षेत्र में विभाजित करती है। सभी तीनों नदियाँ अन्ततः गंगा में जाकर समाहित होती है।

तराई क्षेत्र स्वयं में विशेष भागौलिक, जल संसाधन तथा मौसम गुणों से सम्पन्न है जो कि प्रत्यक्ष रूप से वहाँ के लोगों की संस्कृति एवं सामाजिक - आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है। पूर्व - पश्चिम से फैला हुआ तराई क्षेत्र मूल रूप से दलदल कछार भूमि है जिसकी सीमा भारत से लगी हुई है। यह भारत की गंगा तटीय क्षेत्र का हिस्सा है जो कि उत्तर से शुरू होकर शिवालिक की पहाड़ियों में समाहित हो जाता है। तराई क्षेत्र का कुछ भाग जहाँ पर जल पर्याप्त है, वहाँ के लोगों द्वारा कृषि कार्य हेतु उपयोग किया जाता है।

भारत की सीमा से सटे हुए होने के कारण नेपाल पड़ोसी राष्ट्र भारत के साथ सांस्कृतिक रूप से जुड़ा हुआ है विशेष कर भारत के बिहार एवं उत्तर प्रदेश राज्य के साथ।

पहाड़ी क्षेत्र, नेपाल के मध्य क्षेत्र भाग को दर्शाता है जो कि तराई क्षेत्र के उत्तर में स्थिति है। औसतन इस क्षेत्र की ऊँचाई 700 से 3000 मीटर तक है। पहाड़ी क्षेत्र कुल भागौलिक क्षेत्र का 41.7 प्रतिशत हिस्सा है। यह हिस्सा लघु हिमालय क्षेत्र का पर्याय है जो कि महाभारत रेंज से प्रारम्भ होता है। घाटी, देश की राजधानी काठमाण्डू तथा पोखरा इसी परिक्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। इस क्षेत्र की प्राकृतिक परिस्थितियाँ वहाँ के लोगों पर एक प्रभावित सामाजिक सांस्कृतिक असर डालती है। पहाड़ी क्षेत्र का दक्षिण ढलान से तराई के उत्तर तक तीव्र ढाल है जो कि प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद पूरी तरह घनी आबादी से घिरा है। यही कारण तराई तथा पहाड़ी क्षेत्र की आबादी के लिए सामाजिक - सांस्कृतिक बाधा के रूप में समझा जाता है। इस क्षेत्र के मूल निवासी हिन्दू पहाड़ी, नेवाड़ (काथण्ड) माजर, खाम मागर (पश्चिम पोखरा), गुरुंग (दक्षिण अमाप्वाना), तामांग (काठमाण्डू घाटी के वाह्य तरफ) हैं।

नेपाल परिक्षेत्र लघु हिमालय के उत्तर से प्रारम्भ होकर वृहद हिमालय तक पसरता है। जो कि नेपाल के 35.2 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र को घेरता है जो औसतन 3000 मीटर ऊँचा है। ज्यादातर ऊँची पहाड़ियों का शीर्ष जिनमें माउन्ट एवरेस्ट या सागरमाथा (8848 मीटर) तथा कंचनजंगा (8598 मीटर) इस भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

हिमालय श्रृंखला के उत्तरी क्षेत्र, हिमालय पार के परिक्षेत्र में आते हैं जो कि स्वतः ही एक प्राकृतिक जल भंडारण स्रोत है तथा दो प्रमुख नदियाँ ब्रह्मपुत्र (तिब्बत की यारलुंग तसंगपो) तथा गंगा पद्धित के बीच कार्य करता है। इस क्षेत्र में रहने वाली प्रमुख जनजाति भोटिया या भूटिया तथा शेर्पा हैं। तिब्बत की सीमा से लगे होने के कारण उनके समाज एवं संस्कृति पर तिब्बत का विशेष प्रभाव है।

2011 की जनगणना के अनुसार, नेपाल की अनुमानित जन संख्या 264 लाख तथा वार्षिक वृद्धि दर 1.35 प्रतिशत है।

प्राकृतिक बनावट की तरह, यह देश अपनी जनसंख्या में भी विविधता से परिपूर्ण है। विभिन्न जन समुदाय के लोग नेपाल में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्राकृतिक स्थितियों में रहते हैं। नेपाल की जनसंख्या का प्रमुख धर्म हिन्दू है जो कि समस्त जनसंख्या का 81.34 प्रतिशत है। दूसरा प्रमुख धर्म बौद्ध (9.04 प्रतिशत) तथा इस्लाम (4.39 प्रतिशत) है। नेपाल की राष्ट्रीय भाषा नेपाली है, जबकि नेपाल की परिधि में हिन्दी व मैथिली बोली जाती है। देश मुख्यतः पाँच उत्तर-दक्षिण प्रशासनिक विकास क्षेत्रों में बँटा है - पूर्वी विकास क्षेत्र, मध्य विकास क्षेत्र, पश्चिम विकास क्षेत्र, मध्य-पश्चिम विकास क्षेत्र तथा दूर - पश्चिम विकास क्षेत्र। समस्त क्षेत्र में कुल 75 प्रशासनिक जनपद हैं, जिनके अन्तर्गत कुल 3915 ग्राम विकास समितियाँ तथा 58 नगरपालिकाएँ हैं।

केन्द्रीय सांख्य ब्यूरो के अनुसार नेपाल की प्रमुख प्रभावी आय वर्ग 15-59 वर्षीय है जो कि समस्त जनसंख्या का 55 प्रतिशत (2001 की जनसंख्या के अनुसार) है। इस आयु वर्ग में 35-39 प्रतिशत जनसंख्या आर्थिक रूप से अति सक्रिय है। संतोषजनक आंकड़े दर्शाते हैं कि नेपाल की जनसंख्या में 60 वर्ष से उपर लोगों की बढ़ोत्तरी हुई है जो कि नेपाल की बेहतर चिकित्सा सुविधा तथा बेहतर वृद्ध देखभाल का सूचक है।

चौकाने वाला तथ्य यह है कि कृषि कार्य में संलग्न जनसंख्या में कमी देखने को मिली है जो कि तीव्र गति से गाँव से शहर की तरफ पलायन को दर्शाता है। विशेषकर पहाड़ी क्षेत्र से तराई क्षेत्र तथा अन्य शहरों की तरफ है। इस प्रक्रिया ने शहरी अर्थव्यवस्था व संसाधनों पर दबाव बढ़ाया है जो कि शहरी अव्यवस्था के कई कारणों का जनक है।

नेपाल की 2001 की जनगणना के आकड़ों के अनुसार, नेपाल में पुरुष व महिला के रोजगार का प्रतिशत लगभग बराबर है, महिला का

प्रतिशत 49.16 प्रतिशत जबकि पुरुष का 50.84 प्रतिशत है। जबकि लोगो का झुकाव कृषि से अन्य व्यवसाय की तरफ बढ़ा है। अभी भी 67.5 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लिप्त है, जबकि 10 प्रतिशत व्यावसायिक क्षेत्र में, उत्पाद एवं औद्योगिक क्षेत्र में 8.8 प्रतिशत तथा व्यक्तिगत व सामुदायिक क्षेत्र में 6.7 प्रतिशत जनसंख्या लिप्त है।

2011 की जनगणना के अनुसार नेपाल का सेक्स अनुपात 94.2 प्रतिशत है जिसमें 136.4 लाख महिलायें तथा 128.4 लाख पुरुष शामिल है। जिससे साफ परिलक्षित है कि नेपाल में महिलाओं की जनसंख्या अनुपातिक रूप से अधिक है।

प्रारम्भिक अनुमान के अनुसार वर्ष 2012-13 में नेपाल की प्रति व्यक्ति कुल आय दर 62,510 नेपाली रुपया (717 अमेरिकन डालर) थी। उसी वर्ष की आर्थिक वृद्धि दर 3.56 प्रतिवर्ष थी।

नेपाल का गरीबी आँकड़ा भी चेतावनी सूचक है। आय-वितरण में काफी अन्तर होने के कारण, लगभग एक चौथाई जनसंख्या (25.16 प्रतिशत) गरीबी - रेखा से नीचे है।

कृषि कार्य नेपाल की आर्थिक व्यवस्था में अहम भूमिका निभाते हैं। दूसरे शब्दों में देश की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर निर्भर है। कृषि - क्षेत्र ने नेपाल की वर्ष 2012-13 में 34 प्रतिशत देश की कुल आय वृद्धि दर में सहयोग दिया है। पूरे देश की कृषि योग्य भूमि 25 लाख हेक्टेयर है जिसका 30 प्रतिशत हिस्सा सिंचाई भूमि है। नेपाल की कृषि पद्धति मुख्यतः पारम्परिक है जो कि मानसून पर ज्यादातर निर्भर रहती है। धान यहाँ की मुख्य पैदावार है। इसके अतिरिक्त गेहूँ, मक्का, इत्यादि की भी खेती होती है, यह कुल नेपाल की 75 प्रतिशत उपजाऊ भूमि का हिस्सा है। जबकि हाल ही में, देश की कुल आय वृद्धि में कृषि का योगदान कम हुआ है। 'कृषि अतिरिक्त क्षेत्र' में वृद्धि हुई है। यह प्रति व्यक्ति अन्न उत्पादन की क्षमता में गिरावट का सूचक है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि तथा कृषि उत्पादन क्षमता इस देश में व्युत्क्रमात्मक रूप से सम्बंधित है।

2. नेपाल : भूगर्भ विश्लेषण

लोकतान्त्रिक गणराज्य नेपाल, भारत व तिब्बत की भूगर्भ सतह के बीच में स्थित है, इसीलिए यह एक भूकम्प सम्भावित सक्रिय क्षेत्र में आता

है। ऐतिहासिक आँकड़ों से ज्ञात होता है कि पूर्व में भी नेपाल में भीषण भूकम्प आ चुके हैं। भूकम्प से बचाव सिर्फ समुचित भूगर्भ अध्ययन से ही हो सकता है। यह अध्ययन वर्तमान में भूमि सतह पर होने वाले परिवर्तन के सूक्ष्म विश्लेषण से ही संभव है।

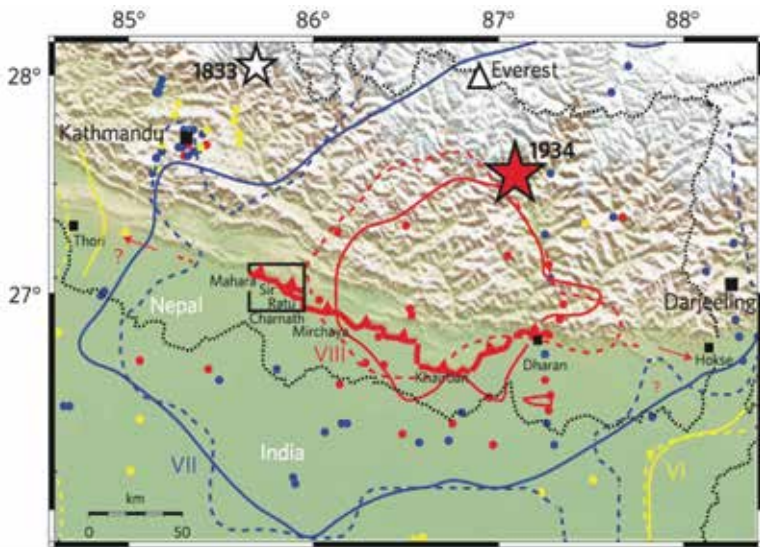
हिमालय का भूगर्भ शास्त्र सर्वाधिक नाटकीय तथा दिखायी देने वाली आधुनिक प्लेट है, जो भूगर्भ की सतही बलों का प्रतिफल है। यह हिमालय तिब्बत में 'नामचे- नारवा' तथा भारत के 'नंगा पर्वत' के बीच लगभग 2400 किमी तक फैला है जो कि दो महाद्वीपीय भूगर्भ सतहों के बीच टकराव का परिणाम है। इन भूगर्भ सतही बलों द्वारा सर्वोच्च पर्वत श्रृंखला का निर्माण हुआ है, जो बाद में मौसम तथा भूमि क्षय की दीर्घकालीन प्रक्रियाओं द्वारा इस स्वरूप में आया। हिमालय-तिब्बत क्षेत्र विश्व के लगभग पाँचवे हिस्से की जनसंख्या को ताजा जल प्रदान करता है तथा विश्व के एक चौथाई भूकम्प निरोधी बजट का अंश भी है। इस क्षेत्र की प्राकृतिक संरचनाओं व भूक्षेत्र ने कई अति नई एवं जटिल संरचनाओं को जन्म दिया है। अधिकतम उभार दर नंगा पर्वत पर लगभग 10 मिमी प्रति वर्ष, उच्चतम चोटी 8848 मीटर माउन्ट एवरेस्ट (चोमोलंगमा), सर्वाधिक क्षय दर 2 से 12 मिमी प्रति वर्ष, कई मुख्य नदियों का उद्गम तथा ध्रुव प्रदेशीय क्षेत्र से बाहर सर्वाधिक ग्लेशियर का केन्द्र है। यही ग्लेशियर हिमालय के नाम से जाना जाता है जो संस्कृत शब्द से जन्मा है, जिसका अर्थ है 'बर्फ का खजाना'।

हिमालय का निर्माण : पूर्व क्रैम्बियन तथा पेलियोलोजिक काल के अन्त काल में, भारत उप-महाद्वीप उत्तर की तरफ समारियन सुपरटेरेन्स, जो कि गोंडवाना का हिस्सा था, यूरेशिया से पालाके टेथिस महासागर के द्वारा अलग किया गया था। इस दौरान, भारत का उत्तर भाग पैन अफ्रिकन भूगर्भ युग (जिस दौरान पृथ्वी की बाह्य सतह पर्वत श्रृंखला में रही थी) के अन्तिम चरण से प्रभावित था।

पृथ्वी के इतिहास से वह युग जब भूगर्भ में कोयले की तह बनी, उस युग से पूर्व काल में भारतीय महाद्वीप और सामरिया सुपरटेरेन्स के बीच में एक प्राथमिक स्तर के अलगाव की शुरुआत हुई। यही अलगाव आगे चलकर प्रारम्भिक युग में समुद्र बन गया। जब कि उसी समय से गोंडवाना उत्तर दिशा में चलता चला गया। आजकल ईरान, अफगानिस्तान व तिब्बत इन्ही भूखण्डों का हिस्सा है। यह गोंडवाना

भूखण्ड महाद्वीप दो मुख्य भूखण्डों में विभाजित हो गया। पूर्व गोंडवाना के मुख्य हिस्से भारतीय महाद्वीप, आस्ट्रेलिया व अंटार्कटिका बने जबकि पूर्व पश्चिम गोंडवाना के बीच के विभाजित हिस्से ने समुद्री शिखर का रूप ले लिया। इस भारतीय सतह ने आस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका से पूर्व क्रीटेशियस काल में अलग होकर दक्षिण भारतीय महासागर का रूप ले लिया। प्रारम्भिक क्रीटेशियस काल में भारतीय सतहों ने बहुत तेजी से उत्तर दिशा की तरफ खिसकना शुरू कर दिया था। यह खिसकना लगभग 6000 किमी तक फैला था। यह महासागरीय सतहीय खिसकाव चलता रहा, जब तक कि महासागरीय-बेसिन का सम्पूर्ण अन्तिम जुड़ाव समाप्त नहीं हो गया। उसी समय मध्य हिमालय में दो महाद्वीपों की भूगर्भ सतहों का आपसी टकराव शुरू हुआ। इस टकराव का कारण भारतीय और एशियन प्लेट की पारस्परिक गति में बदलाव था। उसी समय से लगातार लगभग 2500 किमी दूरी के शिखर का ह्रास हुआ। भारत उसी समय से उत्तर पश्चिम हिमालय में घड़ी की विपरीत दिशा में 45 डिग्री घूर्णित हुआ, तो 10 से 15 डिग्री विपरीत दिशा में इसका घूर्णन एशिया के सन्दर्भ में 10 से 15 डिग्री उत्तर मध्य नेपाल में हो रहा है। जबकि ज्यादातर महासागरीय शिखर, तिब्बत के खण्ड की सतह के नीचे, भारत के उत्तरोत्तर खिसकाव के समय से ही चले गये थे। इसके लिए तीन मुख्य प्रक्रियायें उत्तरदायी मानी जाती हैं। पहली प्रक्रिया में भारतीय महाद्वीप की ऊपरी सतह का तिब्बत के नीचे चले जाना, दूसरी प्रक्रिया भूगर्भ सतहों का पलायन कहलाती है, जिसमें भारतीय प्लेट ने 'इण्डो चाइना' खण्ड को अपने रास्ते से निकाल फेंका तथा तीसरी प्रक्रिया के तहत भारतीय किनारों का क्षय स्थान पर अवसादी शिखर का मुड़ाव था। साथ में तिब्बतन शिखर का भी रूप परिवर्तित हो गया। यह तीसरी प्रक्रिया ही हिमालय के निर्माण के लिए उत्तरदायी है। तत्कालीन भूकम्पों के सन्दर्भ में, भारतीय और यूरेशियन महाद्वीप सतहों के टकराव को कारण माना जाता है। यह टकराव एक सतह के दूसरे सतह के नीचे खिसकने की वजह से है। हिमालय को चार मुख्य भूगर्भ सतहीय खण्डों में विभाजित किया गया है। जो हिमालय पर 2400 किमी तक फैला हुआ है, प्रथम, उपहिमालय जो हिमालय श्रेणी की तलहटी बनाता है और यह हिमालय के कारण निकले हुये अवसादों से बना हुआ है। सब हिमालय जो गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाये गये दोमट अवसादों के संग्रह से निर्मित है तथा यह प्रदर्शित

करता है कि हिमालय अभी भी बेहद सक्रिय क्षेत्र है। द्वितीय, लघु हिमालय जो ऊपरी प्रोटोजोइक से लेकर निचले अवसादों से निर्मित है, जिसमें कुछ ग्रेनाइट और अम्लीय ज्वालामुखी मृदा आती है। तृतीय, मुख्य हिमालय परिक्षेत्र जो ऊपरी हिमालय श्रेणी का मुख्य स्तम्भ है और इसमें सबसे ऊँचे क्षेत्र आते हैं। चतुर्थ, सिन्धु क्षेत्र जो भारतीय सतहों और काराकोरम सिन्धु भाषा-खण्ड के टकराव का क्षेत्र है।



नेपाल : भूगर्भीय क्षेत्र

नेपाल भूकम्प (दक्षिण-पूर्व झाम, चीन) का कारण था, डीकोलमेन्ट के साथ लगे 'थ्रस्ट फाल्ट' साथ ही में मुख्य हिमालय थ्रस्ट जो कि निचले थ्रस्ट तथा भारतीय सतहों तथा उत्तर में यूरेशिया के ऊपर अतिरिक्त राइडिंग परत के बीच परिभाषित है, भूकम्प का केन्द्र, नेपाल की राजधानी काठमाण्डू से लगभग 80 किलोमीटर पूर्व-पूर्वोत्तर था। भारतीय सतह यूरेशिया की सतह के साथ 45 मिमी प्रतिवर्ष की दर से संकुचित हो रही है। उत्तर-उत्तर पूर्व की तरफ यही संकुचन हिमालय श्रेणी की ऊँचाई को प्रतिवर्ष लगभग 18 मिमी बढ़ाने के लिए कुछ हद तक उत्तरदायी है।

भारतीय और यूरेशियाई सतहों की सीमाओं पर बड़े भूकम्पों का इतिहास रहा है। 25 अप्रैल सन् 2015 के पहले तक लगभग चार या उनसे अधिक (रिचर पैमाने पर 5) घटनाएं, इस क्षेत्र के 250 किमी फैलाव

में पिछली शताब्दी में घट चुकी है। एक रिचर पैमाने पर 6.9 तीव्रता के भूकम्प ने अगस्त सन् 1988 में (हाल में आये नेपाल भूकम्प की घटना के 140 किमी दक्षिण और पूर्व दिशा में) लगभग 1500 लोगों को मौत के मुँह में ढकेल दिया था। सबसे विध्वंसक रिचर पैमाने पर 8 की तीव्रता के भूकम्प ने 1934 में नेपाल बिहार सीमा पर एक लम्बे फाल्ट के क्षेत्र में दरार पैदा कर दी थी, जिसने काठमाण्डू को क्षत-विक्षत तो कर ही दिया था साथ ही 10600 लोगों की अकाल मृत्यु का कारण बना। बीसवीं शताब्दी के पहले भी एक बड़े भूकम्प ने सन् 1833 में एक प्रकार की भयानक दरार, 25 अप्रैल सन् 2015 के भूकम्प के स्थान पर ही पैदा कर दी थी। हिमालय क्षेत्र में भूकम्प का मुख्य कारण भारतीय और यूरेशियन सतहों का अन्तर महाद्वीपीय टकराव है, जो 40 से 50 मिमी प्रतिवर्ष की रफ्तार से संकुचित हो रहा है। भारतीय सतह का उत्तर दिशा में यूरेशियन सतह के नीचे संकुचन, बहुत सारे भूकम्पों को जन्म देता है। फलस्वरूप यह क्षेत्र दुनिया का सबसे भूकम्प सम्भावित क्षेत्र बन गया है। इस सतह की परिसीमाएं पश्चिम में सुलेमान श्रेणी, पूर्व में भारत म्यांमार वृतांश और पूर्व से पश्चिम में फैली हिमालय की श्रेणियाँ भी उत्तर भारत में हैं।

भारतीय-यूरेशियन सतह की परिसीमाएं एक बिखरी हुई सीमा बनाती हैं, जो भारत के उत्तर में 'सिंधु-तसांगपो संधि क्षेत्र' और दक्षिण दिशा में मुख्य 'फ्रन्टल थ्रस्ट' में स्थित है। यह 'सिन्धु-तसांगपो संधि क्षेत्र' हिमालय फ्रंट के लगभग 200 किमी उत्तर में स्थित है और एक खुली ओफियोलाइट श्रृंखला इसकी दक्षिणी सीमा बनाते है।

तिब्बतीय पठार हिमालय के उत्तर में स्थित है, इसका फैलाव लगभग 1000 किमी उत्तर- पूर्व और 2500 किमी पूर्व-पश्चिम बताया जाता है। यह क्षेत्र पूर्व-पश्चिम में सैकड़ों किलोमीटर लम्बे, भूवैज्ञानिक एवम् भूकम्पीय रूप में जटिल सतहीय संधियों से बना है। यह तिब्बतीय पठार 1000 किमी से ज्यादा क्षेत्र में असंख्य पूर्व पश्चिम दिशा में फैले, वाम पार्श्वीय, टकराव-खिसकाव दरारों से भरा है जिसमें लम्बा 'कुनलुन', 'हाईयूआन' और 'एल्टिन ताघ' है।

द्वितीय उत्तर-दक्षिण स्वाभाविक दरारें भी तिब्बतीय पठार को काटती है। टकराव से बनी दरारे तिब्बतीय पठार के उत्तर और दक्षिण

में स्थित हैं। सामूहिक रूप से इन दरारों के स्थान पर ही भारतीय और यूरेशियन सतहों का संकुचन चल रहा है। यहाँ टकराव से बनी दरारें 'थ्रस्ट-फाल्ट' उत्तर दक्षिण दिशा का संकुचन समायोजित करती हैं और यह स्वाभाविक तथा टकराव-खिसकाव पूर्व-पश्चिम फैलाव को समायोजित करता है।

तिब्बतीय पठार पश्चिमी सीमा पर, दक्षिण पूर्व अफगानिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के पास, भारतीय सतह यूरेशियन सतह के सन्दर्भ में तिरछी हो जाती है, जिसके फलस्वरूप सूलेमान श्रेणियों का निर्माण हुआ है। फाल्ट इन क्षेत्रों में, टकराव-खिसकाव, विपरीत-खिसकाव तथा तिरछी-खिसकाव की रफ्तार के रूप में आती है तथा ज्यादातर छिछले और बेहद विध्वंसक भूकम्प का कारण बनती है। सक्रिय, वाम झुकाव, टकराव-खिसकाव अपने साथ लिए चामन फाल्ट इस क्षेत्र का सर्वाधिक गतिशील फाल्ट है। हिन्दुकुश क्षेत्र की अनुप्रस्थ काट में एक लगभग लम्बवत उत्तर दिशा की तरफ, तेजी से झुका हुआ नीचे खिसकता हुआ खण्ड दिखायी देता है। जबकि अनुप्रस्थ काट में पूर्व में समीप ही स्थित पामीर क्षेत्र दक्षिण दिशा में झुका हुआ एक बेहद छिछले झुकाव का खण्ड है।

हालाँकि दूसरे मॉडल केवल दो में से एक सतह का नीचे खिसकना बताते हैं और यह जड़ित खण्ड कई जगहों पर घूर्णित और उल्टा हो गया है।

उत्तर दिशा की ओर में जाने पर 'तियानशान' एक सक्रिय भूकम्प प्रभावित महाद्वीपीय पर्वत श्रेणी है जो 2500 किमी 'तारीम बेसिन' के उत्तर में फैली हुई है। यह सीमा बहुतेरे पूर्व पश्चिम की तरफ झुके थ्रस्ट की दरारों से बनी है, जो एक संकुचन बेसिन और वृहद भू-दृष्य चित्रण बनाती है। ऐसा माना जाता है, कि क्षेत्रीय दबाव जो भारतीय ओर यूरेशियन सतहों के टकराव का कारण है, इस क्षेत्र में फाल्ट बनाने का कारण भी है। इस क्षेत्र के तीन मुख्य भूकम्प जो रिचर पैमाने पर 7.6 तीव्रता से ज्यादा थे, बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में घटित हुए। भूवैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि इस क्षेत्र में रिचर पैमाने पर 7.0 से ज्यादा तीव्रता के भूकम्प पैदा करने की क्षमता है और यह एक संभावित आपदा का सूचक है।

तिब्बतीय पठारों का उत्तरी भाग स्वयं ही तीन बड़े वाम-पार्श्विक, टकराव-खिसकाव फाल्ट पद्धति से भरा हुआ है। जिसमें 'एल्टिन', ताघ,

कुनलुन और हाईयूआन है। जिसमें 'एल्टिन-ताघ' दरार इसकी सबसे लम्बी टकराव-खिसकाव फाल्ट है और यही पर माना जाता है सबसे ज्यादा प्लेट संकुचन यहीं पर होता है।

टकराव-फाल्ट एल्टिन ताघ दरार की पूर्व और पश्चिमी सीमा पर जुड़ते हैं। इसमें कुनलुन फाल्ट, जो कि एल्टिन ताघ के दक्षिण में स्थित है, भूकम्पीय रूप से अति सक्रिय है।

लांगमेन शान टकराव श्रृंखला जो कि तिब्बतीय पठार की पूर्वी सीमा पर है, एक महत्वपूर्ण संरचना है तथा यह जटिल रूप से ऐठें हुए 'साँगपान गार्ज फोल्ड श्रृंखला' और थोड़े कम विरूपित 'सिचुआन बेसिन' के बीच में परिवर्तन क्षेत्र का काम करता है। 12 मई सन् 2008 को, इस थ्रस्ट श्रृंखला ने विपरीत दिशा में गति की तथा रिचर पैमाने पर 7.9 तीव्रता का 'वेनचुआन' भूकम्प पैदा किया, जिससे 87000 से ज्यादा अकाल मृत्यु हुई, करोड़ों अमेरिकी डालर धनराशि का नुकसान और बड़े पैमाने पर भूस्खलन हुआ। इसने अनेकों नदियों और झीलों को भी तबाह कर दिया।

तिब्बतीय पठारों के दक्षिण पूर्व में दक्षिण-पार्श्वीय, टकराव खिसकाव लाल नदी और वाम-पार्श्वीय, टकराव-खिसकाव जियांगशुईहे-जियाओजियांग दरार तंत्र है। कुछ अध्ययन यह बताते हैं कि तीव्र खिसकाव गति के कारण इन दरारों में भविष्य में भयावह भूकम्प आने की सर्वाधिक संभावना 65 किमी फैलाव में है जो कि 'डाओफ' और 'क्वआनिंग' के बीच है। इसमें 'कानडिंगे' में फैला 135 किमी क्षेत्र भी आता है।

सिन्धु-म्यांमार वृतांश में छिछले भूकम्प मुख्यतः टकराव- खिसकाव और विपरीत खिसकाव के मिश्रण में आते हैं जिसमें 'संगाइन', 'काबाउ' और 'डाउकी' फाल्ट है। 1930 और 1956 के बीच, छह (रिचर पैमाने पर 7.0 से ज्यादा तीव्रता के भूकम्प) दक्षिण-पार्श्वीय सागाइन दरार में आए, जिसने म्यांमार में अत्यधिक नुकसान किया। अनेक क्रमबद्ध भूस्खलन तथा मृदा द्रवीकरण लगभग 610 लोगों की मृत्यु का कारण बना था।

3. 'ओछा' द्वारा प्रसारित विज्ञप्ति

संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था 'आफिस फार द कोआर्डिनेशन आफ ह्यूमैनिटेरिअरिअन् अफेयर्स' (ओछा) ने 7 मई 2015 को एक विज्ञप्ति जारी किया, जिसमें नेपाल भूकम्प के उपरान्त राहत, खोज एवं बचाव में सक्रिय भूमिका निभाने वाले देश व उनकी टीमों का विवरण इस प्रकार था-

KEY NUMBERS

31 countries
2,242 personnel
76 teams
135 K9 dogs
16 lives saved
1,182 medically treated

OVERVIEW

At the request of the Government of Nepal, urban search and rescue (USAR) teams are working around the clock to locate, extract and provide initial medical support to victims trapped by collapsed structures. USAR teams are faced with a complex rescue operation. Daily coordination meetings take place at the Multi National Military Coordination Centre at the Nepal Army Headquarters.

COUNTRY IN FOCUS

16 teams
720 total personnel
8 K9 dogs
 India: 16 USAR teams with 45 personnel in each team.

INSARAG CLASSIFICATION

The INSARAG community acknowledges the importance of providing rapid professional USAR support during disasters which result in structural collapse. In an effort to achieve this objective and the need to ensure that only qualified and appropriate international USAR resources are deployed to an emergency, the INSARAG community has developed a voluntary, independent, peer review process, the INSARAG External Classification (IEC). To ensure that a USAR team's international response capability remains current and continues to subscribe to the INSARAG methodology, the INSARAG External Reclassification (IER) process has also been endorsed. Taken together these two processes form the INSARAG Classification System.

Creation date: 07 May 2015 Data source: UNDAC
 Feedback: change@un.org www.unocha.org www.reliefweb.int

COUNTRY NAME - PERSONNEL (PAX) - DOGS (K9)

IEC CLASSIFIED		PAX	K9	PAX	K9
	Emarcom - Russia	87	7	57	4
	UAE USAR - United Arab Emirates	87	6	44	2
	Poland - Poland	81	12	36	2
	JDR - Japan	71	4	35	5
	SCDF USAR - Singapore	69	4	26	0
	CISAR - China	62	6	20	0
	USAR NL - Netherlands	62	8	20	0
	ISAR Germany - Germany	58	7	15	4
	USAID 1 - USA	57	6	15	2

IEC NON-CLASSIFIED

	Israeli delegation IDF - Israel	85	2	10	2
	Algeria Civil Protection - Algeria	70	9	9	0
	Smart - Malaysia	48	0	9	5
	India USAR - India x 16	45	8	9	0
	MSB - Sweden	42	0	8	2
	Shenzhen Mountain Rescue - China	25	0	8	0
	Canadian Medical Assistance - Canada	24	3	8	0
	Israeli Joint Disaster Response - Israel	23	0	8	0
	SARAD/BrFire - UK/Germany	22	2	7	1
	Burnaby Fire Fighters - Canada	21	3	4	4
	Topos - Mexico	20	0	4	0
	Blue Sky Rescue 1 - China	19	0	4	2
	Thailand Rescue - Thailand	17	0	4	3
	RescueNet - International	16	0	4	0
	Israelid - Israel	15	0	4	4
	Blue Sky Rescue 2 - China	13	0	4	0
	GEA SAR - Turkey	13	0	3	0
	Kimse Yok Mu - Turkey	13	0	2	0
	YB Mountain and Water Rescue - China	12	0	2	0
	BSF Spain, ONOD - Spain	12	2	2	0
	Dempet Dhaula - Indonesia	4	0	4	0
	Japan Rescue Dog Association - Japan	4	2	4	0
	SNCR - Netherlands	4	0	4	0
	Poland Usar/medics - Poland	4	0	4	0
	ONG K9 - Spain	4	4	4	4
	EMPACT USAR - USA	4	0	4	0
	HUBA Rescue24 Int. - Hungary	3	0	3	0
	PHDS - France	2	0	2	0
	NOD - Singapore	2	0	2	0

आभार

नेपाल- भूकम्प बचाव अभियान के दौरान एन डी आर एफ के अधिकारियों, अधिनस्थ अधिकारियों तथा जवानों ने जिस अदम्य साहस की मिसाल कायम की थी, वह मानवता के प्रति समर्पित साधना थी। एन डी आर एफ ने जिस तरह विदेशी धरती पर अपनी कटिबद्धता तथा कार्यकुशलता का परिचय दिया था, वह सभी को अवाक करने के लिए पर्याप्त था। प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वयं की परवाह न करते हुए, राहत खोज एवं बचाव अभियान को अनवरत कई दिनों तक जारी रखा था। इस हौसले व जज्बे का प्रत्यक्षदर्शी एवं सहभागी होने का सौभाग्य कहें या दुर्भाग्य (आपदा घटित होने के कारण), हमें मिला था। नेपाल प्रवास के दौरान प्रत्येक पल हमारे मनः पटल पर एन डी आर एफ के कार्यों की एक फिल्म चलती रहती थी। एक बचाव स्थल से वापस लौटकर दूसरे बचाव स्थल तक जाने तक मन मस्तिष्क में पूरा ब्यौरा क्रमबद्ध तरीके से चलने लगता था। कई बार इतनी तकलीफदेह परिस्थितियों को कुछ देर तक भुलाने का असफल प्रयास किया परन्तु मानो हमारा दिलो - दिमाग फिल्मी कैमरा लिये घूम रहा हो। नित्य वापस अपने कमरे में आकर देखी व घटित हुई गतिविधियों का डायरी में नोट बनाता गया। स्वदेश वापसी के उपरान्त कई दिनों तक नेपाल प्रवास के दौरान लिखी डायरी से बचने का प्रयास करता रहा और वो मुझे बुलाती रही, देखते ही चिल्ला पड़ती थी “कहाँ भाग रहे हो। हमारे भीतर तुम्हारे अंकित शब्द हैं, इनसे वार्तालाप करो। इस गागर में सागर समाया है, खगाँलोगो कब ?” इस डायरी के शब्दों ने मानो फटकार लगानी शुरू कर दी थी। एक दिन साहस जुटा कर इन अनमोल रत्नों से रूबरू हुआ मानो किसी ने देखी हुयी फिल्म एक बार पुनः चला दी हो। उसी दिन हमने निश्चय किया कि इसे आप तक भी पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। इसे अभी नहीं प्रारम्भ किया तो कभी नहीं कर सकेंगे। एन डी आर एफ के राहत, खोज एवं बचाव अभियान ने हमें प्रेरित किया कि अपने संस्मरणों को एक पुस्तक का स्वरूप दिया जाये, हालाँकि उन संस्मरणों को शब्दरूप देना लगभग असम्भव है।

भूकम्प से बुरी तरह तबाह हो चुके नेपाल में एन डी आर एफ के जवान ऐसी भी इमारतों में बचाव कार्य करते देखे गये जो हर 'आपटर शाक' के साथ और भी जर्जर व खतरनाक होती जा रही थी। ये मौत की दहलीज पर खड़े होकर जिंदगी की दस्तक सुनने जैसा था। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानव सेवा के लिए खड़े होने की एन डी आर एफ की जिद ने कितने ही घरों में खुशियों की सौगात भर दी थी। उम्मीदों के कितने ही बुझते चिराग रोशन कर दिये थे। अतः हम एन डी आर एफ के समस्त कार्मिकों का जो नेपाल भूकम्प के समय नेपाल की घरती पर देवदूत बन कर अवतरित हुए थे का आभार प्रकट करते हैं, जिनकी प्रेरणा ने ही हमें पुस्तक लिखने के लिए बाध्य किया। इस पुस्तक को लिखने में एन डी आर एफ बल मुख्यालय के कार्मिकों ने भी हमें सहयोग दिया, हम उनके भी आभारी हैं।

स्रोत

1. काठमाण्डू में स्थापित एन डी आर एफ 'कंट्रोल-रूम' की सूचनाओं का संकलन एवं एन डी आर एफ बटालियनों की विस्तृत रिपोर्ट।
2. काठमाण्डू में स्थापित 'मल्टीनेशनल मिलिट्री कोआर्डिनेशन सेन्टर' की सूचनाओं का संकलन।
3. 'ओछा' द्वारा एकत्रित सूचनाओं का संकलन।
4. लेखक द्वारा नेपाल में एन डी आर एफ द्वारा किये गये 'राहत, खोज एवं बचाव' अभियान को नेतृत्व प्रदान करने के दौरान अनुभव एवं संकलित आँकड़े।
5. सहलेखक द्वारा नेपाल में 'राहत, खोज एवं बचाव' अभियान में भागीदारी के दौरान अनुभव एवं संकलित आँकड़े।
6. काठमाण्डू स्थित भारतीय दूतावास से प्राप्त तथ्य एवं आँकड़ों का संकलन।
7. राहत एवं बचाव कार्य के दौरान 'स्वयं-सेवी' तथा 'गैरसरकारी संगठनों' द्वारा संकलित आँकड़े।
8. आवश्यकतानुसार सूचना प्रौद्योगिकी (इंटरनेट) द्वारा ली गई जानकारी।

“इस आपदा की घड़ी में एन डी आर एफ पहला विदेशी बचाव दल था जिसे मैं पहली बार मिल रहा था। एक नेपाली नागरिक होने के कारण हम सभी अभिभूत हो रहे हैं कि हमारा पड़ोसी देश भारत हमारी मदद के लिए सबसे पहले आया था।”

— गंजुल शर्मा
सूर्यमधि (काठमाण्डू)

“हमारे लिए एन डी आर एफ एक देवदूत बन कर प्रकट हुआ है, इसलिए मैं अपने परिवार सहित एन डी आर एफ का आभार प्रकट करने आयी हूँ।”

— श्रीमती सुनीता सिवौला,
‘नामुना टोल’ (वसुन्धरा), काठमाण्डू से जीवित बचायी गयी पीड़िता



nidm

आपदा मुक्त भारत की ओर.....

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान
(गृह मंत्रालय, भारत सरकार)

आई आई पी ए कैम्पस, 5बी-आई पी इस्टेट, महात्मा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन: 011-23702432, 23705583, 237667146, फैक्स: 011-23702442, 23702446,
वेबसाइट: www.nidm.gov.in